स्त्रीत्व के बंधन



ग्रन्थ-विकास, जयपुर

मेरे परम

पूज्य पिताश्री को,

जिन्हे उनके जीते जी,

मै पूर्ण रूप से पहिचान न सकी,



प्रकाशक | ग्रन्थ-विकास
सी-37, राजा पार्क,
आदर्श नगर, जयपुर—302004

संस्करण | **1991**

मूल्य | एक सौ पच्चीस रुपये मात्र

मुद्रक | अजमेरा प्रिंटिंग वर्क्स, जयपुर

STRITIWA KE BANDHAN (NOVEL)—By ASHA ARORA

"बचाओ ! बचाओ !" की आवाज सुनकर चौकन्ने हो गये रामनाथ। वह रोज की तरह सुबह सवेरे घूमने निकले थे, शायद आज कुछ जल्दी ही निकल गये थे। अब नहर के किनारे ये चीखें सुनकर उन्होने सोचा कि कोई महिला नहर मे डूब रही है। क्योकि उन्हे तैरना नही आता था अत उन्होने सोचा कि स्वय कुछ सहायता न कर पायेगे अत स्वय भी चिल्लाने लगे, "बचाओ ! बचाओ !" वैसे यह अच्छा मौका था कुछ कर दिखाने का, तैरना आता तो नहर मे कूद जाते, लेकिन उन्हे जोश नही आया, घबराहट हो गयी।

उन्होने नहर के किनारे घाट पर से दो बदमाशो को भागते देखा, वे जिधर से निकल रहे थे, रामनाथ उधर गये। एक ग्रामीण किशोरी अपने अस्त-व्यस्त कपडो को ठीक कर रही थी। वह बुरी तरह डरी हुई थी। "बाई ! क्या बात है ?"—उनकी आवाज सुनकर किशोरी फूट फूट कर रोने लगी और रोते-रोते जमीन पर बैठ गयी।

"बताओ, क्या हुआ ? क्या मै तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूँ ?"

वह कुछ नही बोली।

श्री रामनाथ गोयल पूछते रहे और उन्हे कोई जवाब न दे—ये सहना उनकी आदत नही। "ठीक है, मै चलता हूँ," कहकर जैसे ही उन्होने उठने का प्रयास किया, वापस बैठना पड गया, क्योकि किशोरी ने कसकर उनका कुर्ता पकड रखा था। "अगर तुम कुछ बोलोगी नही तो क्या फायदा मुझे रोकने का ?" किशोरी ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। यह एक साधारण-सी शक्ल सूरत वाली लेकिन आकर्षक, सम्प्रति गम की मारी हिरनी-सी डरी हुई कन्या थी।

"कौन हो तुम ?"

"आप कौन है ?"

प्रत्युत्तर में प्रश्न सुनकर श्री रामनाथ को लगा कि वह एक बुद्धिमती व सजग किशोरी है।

"मैं एक व्यापारी हूँ, यहाँ कपडा की दुकान है मेरी, अब तुम बोलो।"

"साहब, नौगाव मे मेरे पिताजी मर गये, मा पहिले ही मर चुकी थी, यहाँ सुना था कि मेरे चाचाजी रहते है अत उन्हे खोजने आ गयी। उनका घर कही मिला नही अत यहाँ छुपकर सोयी थी रात को, लेकिन अभी ये गुड आ गये। अब हम कहाँ जायें साहब ?"

"अभी तो तुम मेरे साथ घर चलो, दिन मे ढूढगे तुम्हारे चाचाजी को।'

चकित-सी बालिका खडी हो गयी और वे दोनो चल दिये, रास्ते मे दोनो बाते करते रहे, श्री रामनाथ के घर पहुँच कर बालिका घूम-घूम कर घर को आश्चय से दखने लगी, खुला-खुला पक्का मकान बडे-बडे सजे कमरे, नौकर चाकर।

"तुम गाव से कुछ सामान नही लाई ?"

"लाई थी साहब, मगर "

"मगर क्या ?"

"वह तो साभ को ही ले भागा कोई, उसी मे पता था चाचा का और उसी मे पचास-साठ रुपये रहे है।"

"अच्छा आपके चाचा कौनसे मौहल्ले मे रहते ह ?"

"वह नमक की मडी मे रहते।"

"काम कहाँ करते हैं ? '

"वह बिजली विभाग मे बाबू है।"

श्री रामनाथ ने अपने मुनीमजी को नमक-मडी मौहल्ले मे भेजा कि वह बिजली विभाग के बाबू श्री निहालचद का पता लगाये। अपने पुत्र मुदित का उन्हे पता नही था कि वह तैयार होगा कि नही, लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि यह एक माता-पिता-विहीन कन्या की सहायता का

कार्य है तो वह शीघ्र तैयार हो गया, वह साइकिल पर निकल गया कि बिजली के तीनो दफ्तरो मे मालूम कर लेगा, उसे स्टेशन के बाहर वाले दफ्तर मे श्री निहालचद मिल गये, मुदित ने उनसे श्री मनोहरलाल की मृत्यु तथा सयोगिता के जयपुर-आगमन के बारे मे बात की तो वह बोले, "मै ऑफिस के बाद आऊँगा आपके घर।" मुदित को उनका कथन कुछ अजीब-सा लगा और सन्देह भी हुआ कि भाई की मौत की खबर सुनकर तथा उनकी इकलौती पुत्री के एकाकी भटकने की खबर सुनकर जो व्यक्ति उससे मिलने दौड नही पडा, वह उसे सँभाल लेगा ?

जब मुदित यह वरणन अपने पिता से कर रहा था तभी मुनीमजी आ गये और उन्होने श्री रामनाथ को जो वरणन सुनाया वह भी ऐसे ही भाव को प्रतिबिम्बित करता था। श्री निहालचद की पत्नी बोली—"मर गये ? बेटी की शादी करे बिना ! सगाई तो बडे ठसके से की थी कि बेटी बडे ऊँचे घर मे जायेगी," और फिर उन्होने उच्च स्वर मे स्यापा शुरू कर दिया जिसे सुनकर उनकी कुछ पडासिनें वहा आ गयी थी। ये वरणन सुनकर श्री रामनाथ को लगा कि अगर उस किशोरी के प्राकृतिक सरक्षक ध्यान न देंगे तो उन्हे स्वय ही उसकी शादी की व्यवस्था करनी होगी। वह ऑफिम मे 'लच' के समय का ध्यान रखते हुए वहा स्वय गये, वहा श्री निहालचन्द ने उन्हे बताया कि उसे भैया ने शहर मे रखकर पढाया-लिखाया था और शादी भी उसकी पसद की हुई लडकी मे कर दी थी। उन्होने शहर मे मकान बनवाने के लिये जमीन का बँटवारा कर लिया था, जबकि स्वर्गीय मनोहरलाल हर-वप अकाल पडने पर थोडी-थोडी जमीन बेचते रहे और बेटी की शादी के लिये पूरी ही बेच दी थी, लेकिन उन्होने रुपया कहाँ रखा, यह पता नही, अब हम ये जिम्मेदारी कैसे उठा सकते है ? श्री रामनाथ ने सोचा कि श्री निहालचद धन के खच से डरे हुये हैं। उन्होने कहा, "आप खच की चिन्ता न करे, वह म दूगा।" यह सुनकर श्री निहालचद और भी सशक्ति हो गये और बोले "कब से है सयोगिता आपके घर पर ?"

श्री रामनाथ को यकायक लगा कि वह यह प्रश्न सूचना के लिये नही वरन् कोई आरोप लगाने के लिये पूछ रहे है। बोले, "आज सुबह ही म उसे लाया हूँ।"

"कहाँ से ?"

"वह घाट पर सो रही थी कि अचानक कुछ बदमाश लडको ने उसकी इज्जत लूटने की कोशिश की,"—कहते हुए उन्हे लगा कि ये सब बातें वे मुदित से पहिले ही जान चुके है, फिर भी अनजान होने का बहाना कर रहे है। श्री रामनाथ इस सकल्प के साथ घर लौटे कि स्वय कन्या के भावी ससुराल मे जाकर शादी की बात कर आयेंगे। उन्होने मुदित से इसकी चर्चा की तो उसने चाचा-चाची को साथ लेकर जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

सध्या के समय जब श्री निहालचद श्री रामनाथ के घर पहुँचे तो सेवक ने उन्हे बैठक मे बिठला कर सयोगिता को सूचित किया। सयोगिता श्रीमदभगवद्गीता के सस्कृत-श्लोक तथा हिन्दी-अनुवाद टेप-रिकॉर्डर पर सुन रही थी जो श्री रामनाथ ने उसके लिये दुकान से भेजे थे। मुदित उसे टेप चालू-बन्द करने का तरीका बता गया था तथा फिर स्कूटर चलाना सीखने के लिये बाहर चला गया था। श्री रामनाथ अभी दुकान से नही लौटे थे। वह उठी और चाचा के सामने जाकर खडी हो गयी। उसकी आख चाचा के चेहरे पर थी। "क्या बात है बच्ची ? न कोई स्यापा न कोई दुआ सलाम !" वह बोले।

"नमस्ते।" दोनो हाथ जोडकर बोली वह, उसने अलगाव-सा महसूस किया।

"मेरे पास बैठ बिटिया।" चाची ने उसके कधो के गिद हाथ रख दिया। एक सहज अनुभूति सयोगिता को यह हुई कि ये दोनों मात्र दिखावा कर रहे हैं।

"मेरी चिट्ठी मिली थी आपको ?" उसने चाची से धीरे से पूछा।

"हाँ लाली, मिली तो थी, मगर इनके ऑफिस मे काम बहुत था, अभियान पै अभियान और खूब दौरे। इनके ऑफिसर ने छुट्टी नहीं दी इन्हें, फिर तुम क्रियाकम ता सब कर ही चुके थे।" सयोगिता का दिल क्रियाकम की तूफानी घटना को पुन दोहराने लगा, जब गाँव के पोस्ट-मास्टर साहब न चाचाजी के दफ्तर मे फोन किया था और वहाँ से जवाब मिला था कि वह दौरे पर गये हैं इसकी सूचना देने वह शाम को पाँच बजे याद आये थे और गवकी राय पर उसी शाम पिताजी की मिट्टी उठा

दी गई थी। उस दृश्य को मन मे देखने के बाद उसन चाची की ओर देखा, जो कह रही थी, "लेकिन चिट्ठी तो आपके चाचाजी ने भी डाली थी, तूने जवाब न दिया, वरना इस इतवार को तुम्हे लेने आते ये तो!"

सयोगिता को अपने पिता के कहे शब्द याद आने लगे—'अपना खून अपना ही होता है।' वह बोली "सच, मैं अभी चलूं।"

"अभी सेठजी से बात कर ले पहिले"—चाची बोली।

सेठजी के आने पर उनसे चाचाजी तथा चाचीजी की बाते हुई और उन्होने तय किया कि अगले ही दिन वे उस घर जायेगे जहा की वाग्दत्ता सयोगिता थी, तीनो सरक्षको की राय थी कि उसे जल्दी ही अच्छी तैयारियो के साथ ससुराल के लिये विदा करें। अगले दिन चाचाजी ने ऑफिस की छुट्टी की, सेठजी ने अपनी दूकान की और चाची ने गृह-कार्य की। अपनी चारो सतानो को निहालचद ने सेठजी के आग्रह पर उनके घर छोडा तथा वे तीनो सुबह ही टेक्सी द्वारा आगरा के लिये रवाना हो गये, वहा जाकर उन्होने जो भी बाते सुनी उनका सार यही था कि लडकी की सगाई के बाद उसके बाप का मर जाना एक बहुत ही बडा अपशगुन है और ऐसे मे यह शादी उन्हे मजूर नहीं। इन लोगो की मनुहारो की कोशिशो पर प्रतिबन्ध लग गया जब उन्हाने लडकी के गाँव छोडकर भागने के कारण उसके चरित्र पर शका उठाई, "हम तो ना लेगे ऐसी लडकी, आप चाहे जो क्हो"। यह मानो लडके के पिता का अतिम निर्णय था। लडका भी चुपचाप निर्विकार भाव से सुन रहा था, तीनो वहाँ से उठ कर चल दिये।

वापिसी के रास्ते मे चाचीजी ने प्रस्ताव किया, "सेठजी! अब तो आप ही तारो हमारी सयोगिता को"।

"क्या मतलब ?" यद्यपि सेठजी मतलब समझ गये थ, वे तो उसकी आत्मिक व दैहिक पवित्रता के कायल थ और उन्हे अन्दर से ऐसा लग भी रहा था कि सयोगिता से उनका सयोग होना है। "लेकिन हमारी उम्र मे इतना फक है, म हूँ पचास के ऊपर और वह होगी सोलह-सत्रह की"।

"अजी नही, वह पूरे अठारह की है, हमारी रूपा से पूरे एक साल बडी है।"

"अच्छा, उससे पूछेगे।"

"अजी लडकी जात से क्या पूछना ?"

चाची की बात को सेठ रामनाथ ने नही सुना। वह तो याद कर रहे थे माग्र रेट मैरिल स्मिथ गोयल को जो उनके बडे पुत्र डैनियल व मुदित की मा थी। जब उनके पिता ने उन्हे अपनी इच्छा लाद कर इजीनियरिंग के अध्ययन के लिये अमेरिका भेज दिया था तो वहा बडा एकाकी तथा निरीह महसूस करते थे वह, माग्र रेट उसी परिवार की लडकी थी जिसने उन्हे खर्चदाता मेहमान के रूप मे अपने घर पर रखा हुआ था। यह एक साधारण खाता-पीता अमेरिकन परिवार था जिसकी मुखिया माग्र रेट की विधवा माँ मिसेज स्मिथ थी। वह एक बुक स्टार मे सेल्स वूमेन थी और पुत्री यूनिवर्सिटी मे इजिनियरिंग पढती थी। कक्षा मे ही माग्र रट ने घर किसी पुरुप-सदस्य की उपस्थिति के हेतु रामनाथ को रहने के लिये निमन्त्रित किया था। माग्ररेट उसके नि स्पृह, कुछ-कुछ अन्तर्मुखी व्यक्तित्व को देखकर उसकी ओर आकर्षित हुई थी। वह जब भी घर मे निकलती, युवावर्ग उसके लिये आखें विछाये मिलता, लेकिन यह रामनाथ, कभी उसकी ओर आख उठाकर भी न देखता, यद्यपि वह उसकी उपेक्षा नही कर रहा होता था। वस माग्र रेट ने भी मन से ठान ही ली थी और सीधे रामनाथ से विवाह का प्रस्ताव कर दिया।

रामनाथ को लगा कि इन्कार करना तो लडकी का अपमान होगा। अत "पिता की राय लेनी होगी"—उत्तर दिया, यद्यपि उन्हे अदाज था कि उनके पिता इकार नही करेंगे। फिर उन्होने पत्र द्वारा उससे अनुमति मांगी थी। तभी पहली बार उनके पिता ने उन्ह टेलीफोन किया था। सहर्ष अनुमति दे दी थी। सामाजिक बधना के बावजूद वह तो खुशी महसूस कर रहे थ कि एक अमेरिकन लडकी उनके वेटे से इतनी प्रभावित है कि उससे शादी को तैयार है। "मेरा आना जरूरी है क्या ?" उन्होने पूछा था। वैसे रामनाथ जानते थे, उनके आने का अर्थ है छ महीने के लिये दुकान का काम ठप्प और बढा हुआ खर्च।

"वैसे तो " रामनाथ खखारने लगे थे कि क्या कहे, तभी टेलीफोन कट गया था और उनके पिता ने न आने का निर्णय स्वयं ले लिया था। सातवें दिन उनका पत्र आ गया था जिसमे लौटती डाक से शादी की तस्वीरें भेजने का आग्रह था। फिर रामनाथ ने भी कोई देरी या कजूसी न की, तुरन्त शादी के बाद वे हनीमून पर गये। वहाँ आटोमेटिक कैमरे से भी तस्वीरें खीचते और खिंचवाते भी इफरात से और अपने पिता को उन्होंने खूब ही पार्सल द्वारा भेजी। ऐसी भी जिनको मार्ग्रेट भी अपने पिता को भेजने का साहस न करती। फिर तो उनके दिन ऐसे बीते जैसे किसी परी-कथा मे बच्चो के।

शादी के एक साल के अन्दर ही डेनियल आ गया था। यद्यपि मार्ग्रेट शुरू मे इतनी जल्दी संतान के खिलाफ थी। शुरू मे उसने रामनाथ को गर्भपात के लिये राजी करने की बहुत कोशिश की और रामनाथ तयार भी हो गये थे, लेकिन जब पारिवारिक डॉक्टर ने ही प्रथम अवसर पर ऐसा न करने की सलाह दी तब वह चुप हो गई।

दोनो जने पढने मे लगे रहते और उसकी नानी भी उनकी परवरिश मे रुचि लेती। अगर रामनाथ कभी अलग मकान लेने की बात कहते तो नाराज हो जाती। डैन की देखभाल की कोई समस्या नहीं थी और मनोविज्ञान अतिरिक्त विषय की छात्रा रही होने के कारण मार्ग्रेट सोचती थी कि दो बच्चो मे कम अंतर उनके चहुँमुखी विकास के लिये अच्छा है अत अगला साल बीतते न बीतते मुदित आ गया था। मुदित के जन्म पर रामनाथ ने मार्ग्रेट की खूब सेवा की। मार्ग्रेट व बच्चे के कपड धोना, उसके खाने, बार-बार पेय पिलाने का ध्यान रखना, वह जिस चुस्ती-फुर्ती से करते थे, उसे देख कर मार्ग्रेट भी चकित थी। मार्गेट तो स्तन-पान के खिलाफ थी लेकिन रामनाथ ने उसे बहुत से लाभ गिनाये थे, उसे इस संदर्भ मे एक पुस्तक भी लाकर दी, तब वह मुश्किल से उसके लिये राजी हुई थी। जब मार्ग्रेट उसे कोई काम बताती तो वह मुस्कुराते हुए कहते, "एट युअर सर्विस।"

मार्ग्रेट की आँखो मे संतुष्टि का एक भाव तैरता रहता। एक दिन उन्होने उक्त कथन के स्थान पर कहा, "युअर स्लेव" तो मार्ग्रेट ने भी कह दिया "वह तो तुम हो भी!" सुनकर रामनाथ के चेहरे का भाव ऐसे

बदला जैसे किसी ने चाबुक से वार कर दिया हो उस पर। दोनो आखे बद हो गयी उसकी और चेहरा अपमान से भिच गया।

मार्ग्रेट को एकदम अपनी गलती महसूस हुई और उसने उन्हे सहलाना चाहा, "मेरा मतलब है भारत मे!" उनकी पीडा की गहराई और बढ गयी, कम नही हुई। "उफ! मेरा मतलब है कि प्यार मे तो तुम मेरे और मै तुम्हारी गुलाम ही हैं न! मै तुमसे प्यार करती हूँ और मेरा तुम्हे चोट पहुँचाने का इरादा नही था।" रामनाथ ने मार्ग्रेट को देखा, वह सच कह रही थी। वह बिस्तर से उठकर रामनाथ को सँभालने आई और जैसे ही मार्ग्रेट न उसे छुआ उसे सँभाल कर रामनाथ वापस बिस्तर तक ले गया। मार्ग्रेट उसके कपडे नही छोड रही थी। वह भी लेट गया उसके साथ, लेकिन उसके विचार दूर भारत का चिंतन कर रहे थे। वे दोनो सो गये।

उठने पर उनके मन मे भारत जाने की कब से उमडती-घुमडती इच्छा अपना स्पष्ट रूप ले चुकी थी। 'मार्ग्रेट को बताये या नही? यदि हाँ, तो कसे?' ये विचारणीय बिन्दु थे, क्योकि पूर्व मे भारत-यात्रा के प्रस्तावो पर उसने अपना निश्चित विरोध ही व्यक्त किया था। रामनाथ ने अगले दिन हवाई जहाज के टिकट के लिये काउटर पर 100 डॉलर अग्रिम जमा करा दिये, शेष वह दस दिन बाद देगा जबकि उसे टिकट मिल जायेगी। दो दिन तक रामनाथ खोया-खोया-सा रहा। मार्ग्रेट से यह जब्त नही हुआ तो शाम को जब ग्रैनी दोना बच्चो को खिला रही थी मार्ग्रेट ने दरवाजा उढकाया और कुर्सी पर बैठे अध्ययनरत रामनाथ के पास एक और कुर्सी सरका ली। वह फिर भी विचलित नही हुआ तो वह उसके कधे पर सर रखकर बोली, "बताओ नाथ! असली बात क्या है कि तुम इतने खोये-खोये हो?"

वह कुछ नही बोला तो मार्ग्रेट जमीन पर उतर गयी और उसकी गोद मे सर रख दिया। "अभी तक मुझसे नाराज हो?"

'नही।" रामनाथ ने उसके बालो पर अपना हाथ रख दिया।

"फिर खोये-खोये क्या हो?" मार्ग्रेट ने प्रश्नवाचक निगाह से रामनाथ को देखा।

"म भारत जा रहा हूँ।"

"हमे छोड कर ?"

"तुम्हे छोड कर जाने का क्या सवाल है ? तुम चलो।"

"कितन दिन के लिये ?"

"जब तक तुम चाहो।"

और फिर थोडी देर रुककर पूछा, "चलोगी ?"

"हाँ।"

और उन दोनो ने एक दूसरे का एक दृढ आलिगन कर लिया। कमरा बद किया और उन्हे ऐसा लगा जैसे वे पहली बार एक-दूसरे को जान रहे है। वह क्षण अच्छी तरह याद है रामनाथ को। कुछ देर बाद जब मिसेज स्मिथ ने दरवाजा खटकाया तो रामनाथ उठ। उन्हे लगा कि मार्ग्ररेट उतनी तृप्तिपूर्ण उत्फुल्लित नही है जैसी वे समझ व चाह रहे थे। अगर यह न चाहेगी तो म अकेला ही एक बार जाकर आऊँगा—यह निश्चय कर उन्होने उसे उठाया। एक बार फिर आलिगन-चुबनो का आदान-प्रदान हुआ और फिर वे बढे भोजन-कक्ष की तरफ।

"मम्मा, म कल 'पासपोट ऑफिस' जाऊँगी। आपका 'पासपोट' भी बनवा ले ? मै और रामनाथ कुछ दिन के लिये भारत जा रहे है।"

वृद्ध महिला कुछ चकित होकर अपनी पुत्री को तकने लगी। जो पुत्री भारत जाने को सिवाय धन व समय की बर्बादी के कुछ मानती ही नही थी उसने अपने पति के साथ भारत जाने का निर्णय ले लिया था। यह अब कैसे तैयार हो गई ?—वह सोच रही थी।

"छुट्टी तो किसी को भी लेकर जानी होगी। मै चला जाऊँगा।"—रामनाथ बोले।

"नही, नही। अपना काम खुद को भी तो करना चाहिये, म ही जाऊगी।"—उसने इतने निर्णयात्मक तरीके से कहा था कि उसके बाद की कही कोई बात ही याद नही उन्हे।

अगले दिन कॉलेज से लौटने पर जो हृदय-विदारक दृश्य देखा उन्होने, उसकी छाप तो उनके स्मृति-पटल पर ज्यो की त्यो अकित है।

घर पर भीड़ लगी थी। बड़े हॉल मे मार्ग्रेट का शव कधे तक ढका हुआ था। उसका चेहरा खुला हुआ था। जैसे किसी अप्रिय चेष्टा मे तनावग्रस्त हो। "कैसे?" कहते हुए रामनाथ मानो अपनी सास के ऊपर गिर पड़े थे, जिन्होंने अपनी खुली बाहो म उन्हे समेट लिया था। "सारे दिन इधर-उधर जाकर पासपोर्ट तैयार कराये होगे, लौटते वक्त ये कार-एक्सीडेंट हो गया। पुलिस वाले लाय ह अभी।"

सास ने दयालुता-पूर्वक हिन्दू कॉलोनी का श्मशान देखकर उसका दाग हिन्दू-तरीके से कराने की व्यवस्था की। फिर एक पखवाड़ा बीतते न बीतते उन्होने पूछ ही लिया था। "मम्मी! ये आपका पासपोर्ट काम म लाना है या नही?" लेकिन सास ने वही ठहरने का निर्णय लिया था।

उसके बाद वे तीन माह के मुदित को लेकर भारत आ गये थे। सास ने डेनियल का वही रोक लिया था कि रामनाथ के वापस आने की उन्हे उम्मीद थी। दूसरे वे अकेले रहने की कल्पना मात्र से डरती थी। लेकिन रामनाथ लौटकर नही गये सो नही ही गये। क्योकि सर्वाधिक तो उनका ध्यान गाधीजी के स्वतन्त्रता आदोलन मे लग गया था। फिर उन्होने सोचा, मेरी आगे की जिन्दगी का क्या होना है, क्या म अमेरिका जाकर अपनी इजिनियरिंग की पढाई करने मे कोई दिलचस्पी रखता हूँ? 'नही"—निर्णयात्मक उत्तर हमेशा उन्होने अपने आप से पाया। देश के स्वतन्त्र होने का एक अर्थ है। एक महान कार्य मे सहयोग देकर म अपनी जिन्दगी को सार्थक बना सकूगा, जबकि किसी की महत्त्वाकाक्षा के लिये काय करने पर तो जीवन बलि के बकरे के तुल्य ही हो जायेगा। गाधीजी के साथ पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के उद्देश्य से वे सविनय अवज्ञा, विदेशी कपड़ो की होली तथा जनता को जागरूक करने के काम मे लग गये। उन्होने यही वृहत्तर, चुनने योग्य लक्ष्य रखा जिसको अपनाकर वे कभी नही पछताये, अपनी सास को लिख दिया कि वे जब चाहे डेनियल को लेकर आ सकती है या फिर जब वे चाहे रामनाथ आकर उसे ले जायेग।

उनकी शादी के बहुत से प्रस्ताव अच्छे घरो से आये लेकिन रामनाथ ने अपने पिता से सख्त मनाही कर दी थी। साथ ही यह भी कहा था कि अगर उन्होने जबरदस्ती की तो वे घर न आकर किसी आश्रम मे ही

निवास करने लगेगे । यह धमकी असरदार सिद्ध हुई, क्योकि पुत्र जब जेल से बाहर हो तब घर मे तो रहता था ।

वक्त बीतता रहा। पिता तथा पुत्र मुदित को पालते रहे । यद्यपि वे बहुत लाड प्यार से उसे रखते थे लेकिन जिन्दगी का एक मात्र मकसद उन्होने उसे नही बना लिया था । देश के आजाद होने पर उन्होने खूब जश्न मनाया और तभो, सतालीस वष की आयु मे रामनाथ ने सोचा कि अब कोई धन्ध से लगना होगा । पिता की चलती हुई दुकान थी ही, उसी पर वे भी बैठन लगे ।

अपने पिता के जीवनकाल तक वह दूसरी शादी के प्रस्तावो से बचते ही रहे थे । लेकिन अब यह तो एक ऐसा प्रस्ताव था जिसके लिय उनका दिल गवाही दे रहा था—"हाँ कह दो, एक बार फिर बहार आने दो जीवन मे !" चाची कह रही थी—"म तैयार कर लूगी उसे ।" लेकिन रामनाथ ने कहा—"कोई जबरदस्ती न करना । मेरे सामने ही बात करो तो अच्छा है ।"

आगरा से वापस लौटने तक रात के दस बज गये थे । वे तभी रामनाथ के घर ही पहुँचे जहाँ छ किशोर खेल रहे थे और खाने पर उनका इन्तजार कर रहे थे । श्री रामनाथ का विचार था कि पहले सब खाना खा ले और तब सयोगिता से प्रस्ताव किया जाये और कुछ दिन उसे सोचने का समय दिया जाये । लेकिन उसकी चाची ने तो सीधे सयोगिता को कमरे मे ले जाकर समझाया कि "उन लोगो ने तो इन्कार कर दिया है ।" और कहा, "घर से भागने के कारण खूब बदनाम हो गयी हो । अब तुम्हे कौन ब्याह सकता है ? हा, ये रामनाथजी तैयार हो जायें शायद ! लगता तो है ।"

"लेकिन ये तो ।"

"तू उमर की सोच रही है, भरोसा तो किसी का होता नही और फिर तेरी मर्जी है । यहाँ तुझ किसी बात की कमी नही होगी, ना ही कोई तकलीफ होगी, देखा जाय तो तू किस्मत वाली है कि इतना सज्जन पुरुष मिला है । वैसे तो हमारा घर खुला है तेरे लिये ।"

सयोगिता के अदर यह खासियत थी कि वह किसी व्यक्ति के बोलने पर उसके शब्द नही, उनके पीछे छुपी भावना को भी समझ लेती थी ।

वह इस बात से पूर्णतया सहमत थी कि यह पुरुष सज्जन है, उसका मानसिक स्तर भी ऊँचा है जैसा कि स्वय अपना भी समझती थी, वह खुद व्यवहार के एक श्रद्धा-योग्य व्यक्ति है लेकिन एकदम मे ऐसा निर्णय लेना ! "चाची मुझे सोचने के लिये थोडा समय दो !" इतना बोल सकी वह ।

चाची ने अपनी टोकरी मे से मिठाई का वह डिब्बा निकाला जो आगरा वालो के यहाँ देने के लिये रखा हुआ था—"मुदित ! ये ले खुशी के लड्डू, तेरी माँ आ रही है ।" मुदित चकित था । चाची ने अपने बच्चा को भी मिठाई खिलाई और चाचा को भी । "लेकिन बात क्या है ?" अन्दर मे आते हुए रामनाथ ने अपने हाथ मे पकड लिया लड्डू ।

"अजी कहे है, 'जरा सोचूगी ।' भला इससे ज्यादा क्या कह सके है कोई लडकी ? अगर उसे इन्कार होता तो एकदम से कह देती ।"

'अच्छा, अभी ये लडडू डिब्बे मे रखा है, फ्रिज मे रख देता हूँ इसे, मैं कोई और लडका देख सकता हूँ उसके लिये ।"

भोजन के बाद श्री रामनाथ ने कहा, "दो बच्चे तो सो गये हैं, आप लोग यही ठहर सकते हैं या जायेंगे ?"

"बच्चे यही ठहर जायेंगे और हम तो जाना चाहेंगे ।" निहालचद ने अपनी साइकिल निकाली और सपत्नीक चले गये ।

अगले दिन सुबह पाच बजे रामनाथ उठे तो सयोगिता ने आकर उनके चरण स्पश कर लिये । बाकी सब अभी छत पर सो ही रहे थे । वे दोनो दालान मे बैठ गये । श्री रामनाथ ने पूछा, "क्या बात है ?"

"जी रात मे चाची ने जो कहा था "

"तो ?"

"म राजी हूँ ।"

"तुम क्यो राजी हो गयी हो, म कारण जानना चाहता हूँ ।"

"जी आप तो मुझे बहुत स्नेही लगे, एकदम मेरे बापू की तरह । कही कोई ऐसा वैसा मिल गया तो "

"कैसा ?"

"मेरे चाचा जैसा। या कोई भी तरह बुरा आदमी।"

"मै नही हो सकता बुरा ?"

सयोगिता ने नीचे सिर झुका कर इन्कार मे सिर हिला दिया। श्री रामनाथ को लगा, कितनी सहजता से उसने उन्हे अपना मत दे दिया है, अच्छा लगा उन्हे।

"घूमने चलोगी ?"

"कहाँ ?"

"चाचा के यहाँ चले या घाट पर ?"

मुस्कुराती हुई गयी सयोगिता और चप्पल पहिन कर आ गयी उनके साथ।

चाची घर की बाहरी दीवार पर से उपले उतारने के लिये बाहर निकली थी। वह उनको आते देखकर ही समझ गई। उपले वही छोड-कर दौड पडी और सयोगिता को गले लगा लिया। "मै न कहती थी, सयोगिता इतनी भाग्यशाली और समझदार लडकी है कि इसके सग सब अच्छा ही अच्छा होगा।" चाचा से बोली वह। उन्होने श्री रामनाथजी के तिलक लगाया और ग्यारह रुपये प्रदान किये जिसमे से उन्होने एक ही स्वीकार किया कि शगुन का तो एक ही काफी है। चाची चीनी निकाल लायी। बोली, "वो लड्डू तो आप के यहा ही रह गया।"

"हां मै घर जाकर खा लूगा अभी वह।"

"अच्छा अब सयोगिता बेटी यही रहेगी शादी होने तक, चाहे हमारे बच्चे वही रह लेगे। कब होगी शादी ?"

"मुझे तो भई, मगलवार उपयुक्त लगता है, क्योकि उस दिन दूकान की भी छुट्टी रहेगी, फिर मैं इन्हे थोडा घुमा लाऊँगा।"

"कहाँ ?"

"कोई पहाड, मसूरी, शिमला या जहा आप कहे।" सभी हँसने लगे। रामनाथ ने यह बात सब को हँसाने के लिये कही थी या चाची की पूछताछ से चिढकर—सयोगिता समझ नही पाई।

दो दिन बाद मंगलवार था। जितने निमंत्रण भेजे जा सकते थे, भेजे गये। कई रिश्तेदार, मित्र तथा परिचित आये और शादी की रात को एक अच्छी दावत हुई। यूं उनकी जिन्दगी में एकदम ही बदलाव आ गया।

शादी का निर्णय करते वक्त रामनाथ के सामने यह व्यवस्था करना मुख्य कार्य था कि संयोगिता कहीं पर सम्मानपूर्वक तथा अधिकारपूर्वक रहे। इस कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने की खुशी उन्होंने प्राप्त की। शादी का निमन्त्रण पत्र उन्होंने अपनी पूर्व सास को भी भेजा था। यद्यपि उन्हें मालूम था कि उन्हें देर से मिलेगा तथा उनका इस अवसर पर आना तो कतई संभव न होगा लेकिन निमंत्रण पत्र आमन्त्रण के लिये नहीं, सूचना देने के लिये भी भेजे जाते हैं, ऐसा ही एक यह था।

शारीरिक स्तर पर रामनाथ ने यह आदत डाल ली थी कि वह प्रातः भ्रमण व दिनभर के कामकाज के अतिरिक्त संध्या को खेलते, साइकिल चलाते और अपने आप को इतना थका लेते कि उन्हें खूब गहरी नींद आये। रामनाथ ने शादी के वक्त भी यही सोचा था कि उनकी पत्नी कम-उम्र है, वे कभी उससे पहल नहीं करेंगे, जब वह समझदार हो जायेगी तो स्वयं ही संकेत देगी, लेकिन उनका ख्याल गलत था, वह तो संकेत दे रही थी, लेकिन उनका महाउदार चित्त उन्हें ग्रहण नहीं कर रहा था। शादी के बाद जब वे पुष्पसज्जित पलंग पर न आकर कमरे की दीवार से लगे एक सोफे पर बैठ गये, फिर कुछ समय बाद वहीं लेट गये तो संयोगिता का तो अपना अपमान महसूस हुआ। वह पलंग से उठकर गयी और उनके पास जमीन पर घुटनों के बल बैठ गयी। "कोई गलती हुई है मुझसे ?"

"तुमसे क्या गलती हुई होगी ?"

"आप बैठने नहीं मेरे पास ?"

"देखो, तुम अभी बहुत छोटी हो, और पास बैठने से " दिल धड़क रहा था उनका, चेहरा लाल हो गया उनका।

"मैं पत्नी हूँ आपकी और मैं कोई छोटी बच्ची नही हूँ।"

"तुम कुछ जानती भी हो!" परे सरकते हुए उन्होने कहा।

"म सब कुछ जानती हूँ।" सयोगिता लिपट गयी उनसे।

"क्या?" उन्होने अपने को हौले से छुडाने का प्रयास करते हुए पूछा।

"मेरी शादीशुदा सहेलियो ने सब बताया है मुझे'—उसने उनका प्रयास सफल न होने दिया। श्री रामनाथ ने सयोगिता के माथे को चूम लिया, उन्हे आश्चर्य हुआ–यह तो एक पूरा नारी है जिसे वे एक बालिका मात्र समझे थे।

अगले दिन वह उसे घुमाने के लिये शिमला ले गये। वही से उन्होने अपनी पूव सास को एक पत्र लिखा जिसमे उन्होने सयोगिता के साथ शादी करने मे उसकी स्थितियो व परिस्थितियो का वरान किया, साथ ही उन्होने अपने और सयोगिता के खूब फोटो खीचे, क्योकि उन्हे मालूम था, अब श्रीमती स्मिथ की बारी है फोटोज की माग करने की।

एक दिन रामनाथ ने प्रस्ताव किया कि वे जाको पहाडी पर स्थित हनुमान मदिर देखने के लिये घोडो पर चलें तो सयोगिता एकदम से छिटक गयी और बोली, "नही पैदल चलेगे।"

उन्होने सोचा, डरती है शायद। पूछा, "डरती हो?" सलज्ज मुस्कान के साथ उसने इन्कार मे सिर हिला दिया। "मैं तो बचपन मे खूब बैठी हूँ घोडो पर। एक घाडी काची तो पिताजी न मेरे लिये ही खरीदी थी।"

"थक जाओगी पैदल। बहुत चढाई है"

"म नही थकूगी।" सयोगिता ने थोडी जिद के साथ कहा, "गाँव मे खेतो मे खूब मेहनत करने की आदत पड जाती है लेकिन अगर आपको थकने का डर है ता " उसके चेहरे से मुस्कान जा रही थी। रामनाथ का दिल डूबने लगा। कितना चाहने लगे थे वे इस बच्ची को। रामनाथ लेटे या बैठे होते और सयोगिता कमरा साफ करती, कमरे के अन्दर मामान उठा रख रही होतो तो एक सुघड किशोरी लगती और पास आती तो उन दोनो के दिल धडकने की रफतार मे एक दूसरे से मुकाबला कर रहे होते।

"आप घोडे पर चलना, म पैदल ही चलूगी।" मुस्कान जा चुकी थी।

"ठीक है, पैदल चलते है।" रामनाथ ने कह दिया, यद्यपि वह स्वय नही जानते थे कि वह एक बार मे ऊपर तक पहुच पायेंगे या नही, लेकिन वे चले। जब भी वह थकने लगते, सयोगिता आकर उनका हाथ थाम लेती। सहारा देती और उनके दिल मे साहस बढ जाता। सयोगिता को लगा कि वे शायद कुछ सकुचा रहे है। लगभग दो किलोमीटर चढाई चढकर वे थक गये और रुकने का प्रस्ताव किया। इसका एक कारण यह भी था कि उन्हे एक समतल जगह दिखाई दे गयी थी। सयोगिता ने रामनाथ से अनुमति लेकर उन्हे एक कहानी सुनाना शुरू किया।

"एक व्यक्ति जो कि अपनी प्रौढावस्था मे था, उसकी पत्नी न रही। बेटे थे और बहुए थी, लेकिन दिनभर कमाने के बाद घर आने पर उसे चैन न मिलता। हारकर उसने दूसरी शादी कर ली। और इसके औचित्य की परख करने के लिये उसने एक दिन रात के खाने के वक्त अपनी बडी बहू से कहा, 'बहू, आज मगोडी की सब्जी खाने की इच्छा है।' बहू ने उत्तर दिया, 'पिताजी ! अभी तो मगोडी है नही, आप साझ को क्यो नही बोले, अब बाजार बद है, आप को खुद ही ले आनी थी, अब हम क्या कर सकते है ?' वह अपनी छोटी बहू के पास गया और वही इच्छा व्यक्त की। वह बोली, 'पिताजी ! सुबह तक इन्तजार कीजिये, म कल बना दूगी आपके लिये।' बहू के पास से वह व्यक्ति अपनी पत्नी के पास गया और यही इच्छा व्यक्त की। उसकी पत्नी ने एक पल सोचा फिर हाथ-चक्की मे मूग व उडद की थोडी दाल पीसी, उबलते हुए पानी मे मगोडिया छोड कर पका ली और फिर छोक कर सब्जी बना दी। उसने यह काय फुर्ती से किया और भोजन के वक्त सब्जी परोस कर कहा, 'अगर आप को पसद न आये तो कृपया माफ करियेगा।' प्रौढ व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा—'आज मुझे सुनिश्चित हो गया है कि मने विवाह करके काई गलती नही की है।'

"आप भी कृपया किसी भी तरह मेरी परीक्षा लीजिये, मै पूरी तरह तयार हूँ, लेकिन आप कृपया कोई दुराव न रखे मुझसे। अन्यथा तो जिन्दगी एक बोझ बन जायगी।"

"अच्छा बताओ घोड पर क्या नही बैठी ? यही सोचकर न कि म थक जाऊँगा ?"

सयोगिता का मुँह लाल हो गया। सलज्ज मुस्कान के साथ उसने इन्कार मे सिर हिला दिया।

"फिर बताओ क्यू ?"

"मैने सोचा कि अगर कोई तीसरा आना हो, तो ऐसा न हो—" उन्होने बच्चे के बारे मे अभी तक सोचा ही न था, और यह बच्ची उसे कल्पना मे ही सहेज रही है।

"दूसरी बात यह बताओ कि मेरे साथ तुम खुश तो हो ?"

"हाँ इतनी खुश हूँ कि जितनी मै हो सकती हूँ। आप के साथ सुरक्षित व आनन्दित हूँ मैं। आप मुझे कभी मारियेगा नही, मै आपके काबिल बनने की कोशिश हमेशा करूँगी।" और रामनाथ सोच रहे थे कि किसी व्यक्ति को खुश रखने की आकाक्षा ने उन्हे कितना सजीव बना दिया है, उस व्यक्ति के आभारी हैं वे।

दोनो एक-दूसरे मे खोये हनुमान मदिर पहुँचे। वहाँ से प्रसाद खरीद कर चढाया, खाया और रामनाथ बैठने के लिये कोई उपयुक्त स्थान तलाश कर रहे थे और सयोगिता यू ही एक पेड के नीचे खडी होकर पहाडी के ऊपर स्थित विस्तृत समतल फैलाव को चकित होकर निहार रही थी। रामनाथ ने सयोगिता की उस जीवन्त छवि को स्मरणीय बनाने हेतु अपने कैमरे मे कैद करना चाहा कि एक बदर ने पेड पर से झुककर सयोगिता के हाथ मे से प्रसाद का लिफाफा लेते हुए अपने को भी अकित करा लिया और इस तस्वीर ने बाद मे एक प्रतियोगिता मे पुरस्कार भी प्राप्त किया।

शिमला से लौटने पर उन्हे मिसेज स्मिथ का पत्र मिला जिसमे रामनाथ को उन्होने एक जीवित व्यक्ति जैसा जीवन जीने के लिये बधाई दी। निमत्रण पत्र देर से मिलने के कारण आने मे असमथता प्रकट की। साथ ही लिखा था कि उनका भारत आने का मानस बन रहा है। साथ ही उन्होने एक पत्र सयोगिता को भी लिखा कि वह इस रिश्ते से उनकी बेटी बन गयी है कि रामनाथ उसके जवाई हैं। यह पत्र उन्होने अग्रेजी मे लिखा था। सयोगिता ने अपना जवाब उन्हें रामनाथ के द्वारा लिखवा दिया कि अपनी माता को फिर से पाकर वह निहाल हो

गयी है और उनसे मिलना चाहती है। साथ ही यह भी कि वह अंग्रेजी सीखकर उन्हें पत्र लिखेगी। अगले ही दिन से उसे अंग्रेजी सिखाने के लिये एक टयूटर रख दिया गया।

प्रकृति के किसी अध्येता ने कहा है—जो बीज वर्षा में अंकुरित नहीं हो पाते वे शरद में भी उग जाते हैं। यह सच है। सयोगिता अपनी बाल्यावस्था में तो अंग्रेजी नही सीख सकी थी लेकिन उसका विचारशील मस्तिष्क था, स्वाभाविक समझ थी, श्री रामनाथ के योग्य बनने की आकांक्षा और एक स्नेही दिव्य माता को पत्र लिखने का आमन्त्रण वह दिन-ब-दिन सीखती रही। उसके शिक्षक भी उसकी तीव्र प्रगति देखकर चकित थे, शीघ्र ही उसने अपनी दिव्य माता को एक पत्र लिखा, श्री रामनाथ से चैक कराया कि गलतियाँ आदि निकाल दें और उन दोनों में पत्रों का आदान-प्रदान आरम्भ हो गया।

सयोगिता श्रीमती स्मिथ के पत्रों में मातृ-सुलभ सद्भावना पाती थी और उनके स्नेह से स्वयं को समृद्ध महसूस करती थी, जैसे कि मूलधन रामनाथ पर मिलता हुआ ब्याज, लेकिन सयोगिता जिस खुशी का आने से पहिले ही दिल में सजोकर रख रही थी उसकी सूचना उन्हें स्वयं न दे सकी। यह कार्य तो श्री रामनाथ ने ही सम्पन्न किया। उन्होंने डाक्टर से बातकर लिख दिया कि प्रसव जुलाई माह के अन्त में होगा। श्री रामनाथ श्रीमती स्मिथ को अब पहिले से अधिक लिखने लगे थे। गर्भिणी सयोगिता से रामनाथ ने उसकी हार्दिक इच्छा पूर्ति करने हेतु पूछी तो उसने कहा, "एक गाय पालनी है।"

शादी के दस महीने बाद पच्चीस जुलाई सन् 1953 को सयोगिता ने एक पुत्री को जन्म दिया, उसी दिन श्री रामनाथ की बावनवीं वर्षगांठ भी थी। अपने गर्भवती होने के काल में सयोगिता सोचती रही थी कि अगर पुत्री हुई तो क्या उसका उचित स्वागत होगा। उसने अपने गांव में देखा था कि कन्या के जन्म पर सब घर वालों के मुँह लटक जाते थे, कोई उत्सव नहीं होता था और बहुत से घरों में तो स्यापा होने लगता था कि एक जिन्दगी की जिम्मेदारियां उठाने वाले सहारे की बजाय एक बोझिल जिम्मेदारी सिर पर आ पड़ी है, लेकिन वह स्वयं अपवाद रही थी। उसके पिता उसे बताते थे कि उन्होंने उसका नामकरण संस्कार कराया था तथा उसके मुंडन व कर्ण-छेदन संस्कारों पर भी भाजों के

आयोजन किये थे। ये वर्णन सुनकर उसकी अपने पिता मे आस्था जागती थी साथ ही अपने महत्त्व व सार्थकता का बोध होता था। यही भावनाये अपनी पुत्री को महसूस कराने की दृष्टि से सयोगिता चाहती थी कि अगर उसकी पुत्री हो तो उसका जन्मोत्सव सम्पन्न किया जाये। बच्ची के जन्म के आधा घन्टा बाद तक सयोगिता को डाक्टर के आदेश पर लेबर रूम मे ही रखा गया कि कही कोई प्रसवोत्तर उलझन न हो जाये। सयोगिता का पोर पोर दुख रहा था, उसने अपनी आँखे बद कर ली और शादी से अब तक के समय की घटनायें एक-एक कर एक स्वप्न की तरह उसे दिखने लगी, यद्यपि वह नीद मे नही थी। वह सुन सकी कि कब बच्ची को कॉटज वाड मे भेजा गया। आधे घटे की अवधि पूर्ण होने पर नस तथा अन्य सहायको ने स्ट्रेचर पर उतरने मे उसकी सहायता की तथा उसे कॉटेज वाड मे पहुँचाया गया। वहा पर थे श्री रामनाथ, जो नवजात बच्ची को गले से लगाय बैठे थे। बीच-बीच मे वे बच्ची के माथे पर चुबन अ कित कर देते थ। सयोगिता को बिस्तर पर लिटाया गया। रामनाथ सयोगिता के निकट कुर्सी पर बैठ गय। गहरी कृतज्ञता और स्नेह के साथ उन्होने सयोगिता को देखा और उसका हाथ थाम कर बोले, "तुम्हारा बहुत आभारी हूँ मैं! कितनी प्यारी बच्ची है!"

सयोगिता भावविह्वल हो रही थी। भरे गल से उसने कहा, "कही लडकी होने का दुख तो नही आपका?" रामनाथ के स्नेहसिक्त चेहरे पर एक शिकन उभरी। "क्या बात करती हो सयोगिता! भगवान ने इतनी स्वस्थ व सुन्दर कन्यारत्न दी है हमे! गोद और बाहे पसार कर इसका स्वागत करता हूँ मैं! और तुम भी कभी ऐसी बात दिल मे न लाना। इसका जन्मोत्सव भी धूमधाम से करना है।" उन्होने बच्ची के माथे पर एक गहरा चुम्बन लिया, सयोगिता ने उनका हाथ कसकर पकड लिया और मुस्कराते हुए आखे बद कर ली। उसे लगा कि यह एक परिपूर्ण क्षण था कि उसका स्नेही पति नवजात बच्ची को अपन कलेजे से लगाये उसके सामने बैठा है और वही बात कह रहा है जो स्वय उसके दिल मे थी। यद्यपि सयोगिता तो जन्मोत्सव की भावनात्मक तथा रामनाथ सामाजिक उपयोगिता के कायल थे। सयोगिता ने अपनी आखे बद की और सो गयी।

सयोगिता ने आखे खोली तो श्री रामनाथ ने पूछा "इसका जन्मोत्सव किसी खास दिन करना है या मम्मी के आने पर?"

"कब आ रही है वे ?"

"मने उन्हे लिख दिया था कि प्रसव जुलाई माह के अन्त मे होगा। उनके कागजात तैयार है। टिकट पता नही किस तारीख का मिला होगा। बच्ची के जन्म की सूचना भेज दूँ तार द्वारा।" बच्ची पिता की गोद मे सो गयी थी, जैसे आराम कर रही हो। रामनाथ बच्ची को सयोगिता के पैरो के पास लगे पालने मे लिटाने लगे तो उसने जोर-जार से रोना शुरू कर दिया।

"यह नही चाहती कि आप जायें।"

"और तुम ?" उन्होने बच्ची को वापस उठाते हुए उसकी आखो मे सीधे देखा। सयोगिता के दिल को छू गयी उनकी निगाह। उसने मुस्कान से प्रत्युतर दिया और उसे लगा कि अब उसका पारिवारिक जीवन सही मायने मे शुरू हो गया है।

"अब तुम थोडा आराम करो, मै बाहर कुछ व्यवस्थाये कर के आता हूँ" सयोगिता से कहकर उसके माथे पर हाथ फेर कर श्री रामनाथ ने बच्ची का नस को सभलाया और बाहर चल गये।

अस्पताल से घर के रास्ते मे ही डाक-तार-भवन पडता था। श्री रामनाथ ने तार देनें से पहले सोचा कि पहिले आज की डाक देख ली जाये। वही पर उन्हे श्रीमती स्मिथ का पत्र मिल गया कि वह तीस जुलाई को भारत पहुँच रही है। श्री रामनाथ को याद आया कि इक्तीस को ही बच्ची छ दिन की होगी, जब उसका छठी का उत्सव किया जाना है। घर जाकर उन्होने सेवक को आदेश दिया कि वह श्रीमती स्मिथ के लिये एक कमरा तैयार करे। वे डाक्टर द्वारा बताया हल्का भोजन मिश्रानी को बनाने के लिये कहन अन्दर रसोई मे गये तो उन्हान देखा कि रूपा वही बैठी है। उसने बताया कि वह यूँ ही उधर से गुजरती हुई आ गयी थी और जब उसे समाचार मिला कि वह एक बच्ची की मासी बन गयी है तो वह जल्दी से समाचार सुनाने अपन घर चल दी।

एक घटे के अन्दर चाची अस्पताल पहुँच गयी थी। और उन्होंने सयोगिता का जा लताडना शुरू किया, "हम सबर न कर सकी थी, लली

हम सभालते ! मगर, तभी तो न, जब अपना समझा होता। और पैदा कर दी तूने लडकी ! लडका के लिये हमसे कोई सलाह ले ली होती," तो सयोगिता को ये बात कोई बहस करने योग्य नही लगी। उसने अपनी आँखो को यूं झपकाया जैसे बहुत नीद आ रही हो। और मुश्किल से आधी आखे खोलकर नस को देखा। "मरीज को परेशान करना नई मागता। आप आराम करने दो उसे, अबी आप जाइये।" वह बोली।

सयोगिता ने आँखे बद कर ली थी। गुस्से से फनफनाते हुए चाची बडबडाती हुई बाहर निकल गयी "कैसा घमड आ गया है लडकी को ! अभी तो लडकी पैदा कर के दी है। लडका होता तो पता नही क्या करती ! म तो तब तक नही आऊगी जब तक कवर साहब खुद बुलाने नही आयेगे।" सयोगिता को चाची की बातो का प्रत्युत्तर देना एक स्तरहीन विचार लगा। वह एक नीद मे सो गयी।

जब सयोगिता गभवती ही थी तब श्री रामनाथ ने अपनी सास श्रीमती स्मिथ को लिखा था कि शिशु के जन्म के समय वे माता तथा बच्चे की देखभाल कैसे करेगे इस बात से थोडा घबरा रहे है। प्रत्युतर मे उन्होने लिखा कि अगर आवश्यकता हो तो वे उनकी सहायता के लिये आ सकती है। श्री रामनाथ न वापस लिखा कि वे उन्हे तकलीफ देना नही चाहते यद्यपि उनके आन पर निश्चिन्त व आभारी महसूस करेगे ही। इस बार श्रीमती स्मिथ का जो पत्र आया उसमे लिखा था कि उन्होने अपने व दोहिते डेन के पासपोट तथा वीसा के लिये आवश्यक फाम्स भर दिये हैं यद्यपि अभी छुट्टी स्वीकृत न होन के कारण डेन का आने का पक्का नही है। उन्होने लिखा कि भारत-दशन की उनकी आकाक्षा सच होने जा रही है इस बात की उन्हे बेहद खुशी है।

श्रीमती स्मिथ के इस पत्र से श्री रामनाथ को बहुत राहत मिली, दूसरी ओर सयोगिता भी बहुत खुश हुई, क्योकि उसे जो डर था कि इस अवसर पर चाची अधिक आने लगेंगी तथा अपनी मनमानी यूं करेगी कि बिना मागे सलाहे देती रहेगी और अपनी हिदायते मनवाने पर बाध्य करेगी, जिसमे कि जैसा उनका तरीका था लानत, मलामते भेजेगी, वह दूर हो गया। चाची स्वय को बहुत बुद्धिमान एव दूसरो को बहुत मूख समझती थी। कोई भी काय जिसमे वे शामिल हो उसमे अपनी बात मनवाने के लिये पीछे पडना और अन्त मे स्वय निष्कष निकाल कर उसका

ढिंढोरा पीटना कि उनके हस्तक्षेप के बिना काम बिगड़ गया होता, यह इनके स्वभाव की सामान्य विशेषता थी, भले ही अन्य पक्ष इस मामले म अनुभव कर रहे हो कि उनके सुझावो ने कार्य को लम्बा, बोझिल व उबाऊ बना दिया था। दूसरो को अपने ऊपर आश्रित समझना व उनके अनिर्णय की स्थिति व घबराहट पर स्वय खुश हो लेना उनकी भावनात्मक खुराक थी। ऐसे लोगो से व्यवहार का सर्वोत्तम तरीका रामनाथ ने सयोगिता को बताया था, यही है कि उनसे एक निश्चित दूरी बनाकर रखी जाय जिसे रामनाथ सम्मानजनक दूरी कहते थे।

भारत जाने का कार्यक्रम बनने के बाद मे ही श्रीमती स्मिथ वीसा, पासपोर्ट बनवाने के काम म व टिकट मिलने के बाद पैकिंग आदि मे व्यस्त हो गयी थी। यात्रा के मध्य मे बारी बारी से बाहर नीचे का दृश्य देखती, सहयात्रियो को रुचिपूर्वक देखती व थकान मिटाने के लिये नींद लेती रही और इन कार्यो मे हार्दिक रूप मे व्यस्त रही। परन्तु जब भारत मे उतरने के लिये इटरकॉम पर एक महिला की आवाज उभरी तो उनके मन म एक पल के लिये यह प्रश्न गूं जा कि उनकी यात्रा मानवीय सम्बन्धो म मधुरिमा की हीनता के कारण कही एक व्यर्थ का प्रयास सिद्ध न हो।

हवाई अड्डे पर रामनाथ उन्हे लेने आ गये थे। और वे दोनो अनायास एक प्रगाढ आलिगन मे बध गये तो उनको अपनी आशका व्यर्थ लगने लगी। जब वे भरतपुर पहुँच कर सयोगिता से मिली तो उन्हे वह बहुत ही अच्छी लगी। सहज, विनीत और सद्भावना से ओतप्रोत। उन्होन नवजात शिशु का मुआयना किया। उसने अपने नन्हे हाथ मे उनकी उँगली थाम ली व हाथ पैरो से कसरत करते हुए उनसे जो निगाह मिलाई वो मिलाए ही रखी और ऊँह ऊँह करके वह उनसे बातें भी करने लगी। नानी माँ न उसमे मुखर व स्नेही होने के लक्षण देखे व उनकी घोषणा कर दी। सयोगिता बच्ची के व्यवहार को देख कर चकित थी इस वातावरण मे श्रीमती स्मिथ ने अपनी यात्रा मे उठी आशका को दूर फेंक दिया। वह अपनेपन के भाव से अभिभूत हो चुकी थी।

× × × ×

पुत्री के जन्म के छठे दिन, उसकी छठी मनायी गयी। उसी दिन नानी मा ग्रा पहुँची थी। पडितजी के द्वारा हवन करवाया गया तथा नानी माँ को बच्ची की ग्राँख मे काजल लगाने को कहा गया तो उन्होने इस वात को गलत बताते हुए इसका विरोध किया। "क्यू बच्चे की ग्राख मे कावन डालते हो?" ग्रत पडित जी ने माथे के किनारे पर उँगली से टीका लगवाकर रास्ता निकाल लिया। ग्रागतुको को पेडे वाट गये। नानी माँ साथ मे सूती, मुलायम रूबिया की विभिन्न रगो की ग्राठ दस फ्राकें व सूट लायी थी जो वह एक वप की उम्र तक पहन सकती थी, इनमे चार फाके तो विल्कुल छोटी-छोटी थी, इनमे से एक मे ग्रासमानी धरती पर रग विरगे पीले, गुलाबी व हरे व काले पिल्ले, विल्ली, तोता, कौग्रा बने हुये थे। एक मे सफद धरती पर रानी रग के विंदु बने हुए थे ग्रौर गले व वाह के ग्रतिरिक्त गोल चोली पर तथा घेर के नीचे झालर के जोड पर रानी रग की ही पाईपिग लगी हुई थी। एक हल्के पीले रग की फ्रॉक थी जिसमे चोली के वीच लगी हुई पट्टी पर गहरे नीले रग के फूल कढे हुए थे, ग्रौर चौथी फॉक जामुनी रग की थी जिस पर विभिन्न रगो से युक्त फला का कढा हुग्रा मोटिप चिपका हुग्रा था ये सभी फ्रॉकें पीछे से पूरी खुली हुई थी तथा उनमे टिच वटन लगे हुए थे।

नानी मा ने देखा कि बच्ची के पास लगोटियाँ कम ह ता वह पुरानी, धुली हुई सफेद चादरें लेकर मशीन निकाल कर बैठ गयी ग्रौर शाम तक उन्होने दजन भर लगोटिया सी डाली। उन्होने बच्ची की मालिश, नहलाने-धुलाने व देखभाल का जिम्मा ग्रपने ऊपर ले लिया। उन्होने सयोगिता को बच्चो की मालिश का सही ढग सिखाया। उन्होने सयोगिता को बताया कि शिशु ग्रकारण कभी नही रोता। वह भूख-प्यास के कारण व लघुशका-दीघशका के लिये रोता है। इसके ग्रलावा शिशुग्रो के पेट मे ग्रक्सर हवा भर जाती है, ग्रफारा जैसा ग्रा जाता है ग्रौर वह दद के कारण रोने लगता है। उस समय शिशु को कधे से लगाकर रखने से उसे ग्राराम मिलता है व डकार ग्राने से ग्रफारा दूर हो जाता है। ये जानकारी उन्होने प्रैक्टिकल द्वारा दी।

11,293

दसवें दिन बच्ची का नामकरण सस्कार किया गया। यह इतनी धूमधाम से किया गया कि इसमे खाना खाने वाली ब्राह्मणों [illegible]ने

दीपिका के स्कूल मे प्रवेश लेने के पश्चात् उसे बताया कि उसके नाम करण की दावत उसे अभी तक याद है। एक बार दोनो माताओ की उपस्थिति मे नन्ही ब्राह्मण-कन्या लक्ष्मी ने पूछा कि अब ऐसी बढिया दावत कब होगी तो दीपिका ने जवाब दिया, "और बच्चा होगा तब करेगे।"

रामनाथ अपने विवाह मे जिन लोगो को नही बुला पाये थे और जो लोग उन्हे उलाहना दे चुके थे उन सबके नाम रामनाथ ने अपनी शादी के मेहमानो की सूची मे जोड लिये थे। कुछ लोग नानी मा को देखने की इच्छा व इन सभी का सयुक्त रूप से रहन-सहन देखने की जिज्ञासा से आ गये थे। बच्ची का नाम "नूतन" रखा गया। पडितजी ने दूसरा विकल्प दिया कि "दीपिका" भी रखा जा सकता है। नानी माँ को इनके अर्थ समझाये गये और उन्होने दूसरा वाला ही पसद किया। रामनाथ यू मानते थे कि जन्मपत्री मे जो नाम हो उससे अलग रखने से यह फायदा है कि ग्रह प्रतिकूल होने पर भी जीवन को असह्य होने से बचाया जा सकता है। उन दोनो के दीपिका नाम रखने के कारणो को सुनकर सयोगिता ने भी इसके लिये अपनी स्वीकृति दे दी।

श्रीमती स्मिथ तीन माह तक भारत मे रही। शुरू के एक माह तो वह भरतपुर मे घर पर ही रही और फिर रामनाथ का बडा पुत्र डेन गोयल जो पूव मे छुट्टिया न मिलने के कारण भारत न आ सका था, अब आ गया। 23 अगस्त को उसका तार मिला और चौबीस को वह पहुँच रहा था। रामनाथ उसे दिल्ली जाकर लिवा लाये। अगले एक पखवाडे तक पूरा परिवार विभिन्न स्थाना पर घूमने गया। वे काश्मीर, वैष्णोदेवी, नेपाल गये और फिर दक्षिण मे बम्बई, गोआ व ऊटी। भरतपुर का घना अभयारण्य उन्होने वापिस आने के बाद ही देखा।

नानी मा के ठहराव के दौरान जा त्यौहार पडे, रक्षाबधन व जन्माष्टमी, वे सभी ने खूब उत्साहपूर्वक मनाये। अन्य जश्न जो मनाये गये, उनमे मुदित का उदयपुर मे बक अधिकारी के पद पर नियुक्त हाना, रामनाथ की शादी की वषगाठ तथा नानी माँ का सत्तरवां जन्म दिन था।

मुदित डन से मिलने उदयपुर से आया। एक दिन सारा परिवार साथ बैठा गपशप कर रहा था तभी रामनाथ ने अचानक मुदित से कहा,

"डेन के आने के उपलक्ष्य मे भी तो कोई उत्सव होना चाहिये। तुम्हारी शादी कैसी रहेगी ?" प्रत्युतर मे मुदित मुस्कराया और बोला "मै कम से कम अपनी पहली तनख्वाह तो प्राप्त कर लू।" रामनाथ भाँप गये कि इस विषय पर मुदित विचार करता रहा है। अपनी पसद की लडकी पूछने पर उसने सयोगिता की चचेरी बहन रूपा की ओर इशारा कर दिया और डेन की उपस्थिति मे यह समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

रामनाथ ने डेन से कहा कि वह भी विवाह कर ले तो उसन बताया कि भारतीय मूल की उसकी मगतर उमा वही फ्लोरिडा मे है और वे उसकी नौकरी लगने का इतजार कर रहे है।

डेन को एक माह की छुट्टी मिली थी। उसके जाने तक नानी मा को आये दो माह हो जाने थे। जब उन्होने डेन के साथ जाने की अनुमति चाही तो सबका दिल भर आया। रामनाथ स्वय को भावुक नही मानते थे फिर भी उन्होने श्रीमती स्मिथ से कहा, "क्या ऐसा नही हो सकता कि आप भारत मे कुछ समय और रह जाये ?" प्रत्युतर मे उन्होने उसकी बाह थपथपा दी थी। मगर सयोगिता के आग्रह, डन की अनुमति और बच्ची से मोह के कारण वे एक माह और रुकने को तैयार हो गइ। दीपिका के तीन माह की होने पर उसका अन्न-प्राशन सस्कार किया जाना था। नानी मा को भी उसी दिन का वापसी का टिकट मिला था अत दिल्ली के कमला होटल मे रामनाथ ने विशेष आदेश देकर खीर बनवाई और चाँदी की चम्मच से सभी ने दीपिका को खिलाई। इस प्रकार अन्तिम दिन के अन्तिम जश्न के बाद मिसेज स्मिथ अपने अमेरिका स्थित घर के लिये रवाना हो गई।

× × × ×

यू तो रामनाथ ने अपने दोनो पुत्रो को भी शैशव से ही पालने मे पत्नी को अपना सहयोग दिया था और उनके विकास को बडी रुचि व आनद के साथ देखा था, परन्तु दीपिका के पालन पोषण मे वह अतिरिक्त रुचि इसलिये लेते थे कि उन्हे लगता था कि वे उससे बावन साल

बडे हैं अत उसके बडे होने तक, उसके जीवन मे व्यवस्थित होने तक पता नही वे रहेगे भी या नही । वह जानते थे कि उनका स्नेह बच्ची का आत्मविश्वास देगा । अगर वह उसे स्नेह देगे तो आगे की जिन्दगी मे भी कही से प्राप्त हो सकेगा । तभी वह दुनिया मे स्नेह, सद्भावना व ईर्ष्या, द्वेष से प्रेरित व्यवहारो को समझ सकेगी तथा स्वय को दूसरो के स्नेह पाने के काबिल बनाने का प्रयास करेगी । क्योकि अगर माता-पिता से ही बच्चे को निश्छल, नित्य, अचल, अटल स्नेह न मिले तो अन्य कही से प्राप्त होने की सभावनाये भी अति क्षीण हो जाती है ।

वे चाहते थे कि बच्ची एक स्वस्थ, विवेकशील, परिश्रमी व कर्मठ जीवन जिये । इसके लिये वे उसे स्वनिर्णय का अधिकार भी देते थे जिसके परिणाम को देखकर बच्ची अपने निर्णय के औचित्य या अनौचित्य को समझ जाये । वे इसे प्राकृतिक रूप से सीखने का अवसर प्रदान करना मानते थे । माता-पिता की हिदायत मात्र पर चलते रहने का कोई आदर्श स्थिति नही मानते थे । वे सयोगिता को भी कथा-कहानियो की ढेर सारी पुस्तके लाकर देते रहते थे । उन्होने दीपिका को बचपन से ही रामायण व महाभारत महाकाव्य सुनाने की आदत डाली ।

यू तो उन्होने ये महाकाव्य अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिये वर्षो पूर्व खरीदे थे और पढ लिये थे परन्तु बच्ची के प्रति एक उचित अध्यवसाय समझते हुए वह रोजाना, उनका एक आख्यान पढ लेते और बच्ची को सुनाते । इसके अलावा दुकान पर वे व्यस्त रहते, अध्ययन का अपना शौक पूरा करते व सयोगिता के साथ कुछ समय अवश्य ही बिताते थे । सयोगिता का सक्षिप्त नाम गीता था । प्यार का नाम रामनाथ ने रानी रखा हुआ था और वह अक्सर उसे 'गीता रानी' के नाम से सबोधित करते थे । सयोगिता उन्हे मात्र नाथ कहती ।

उनके सोने के कमरे मे दो पलग दो कोनो मे बिछे हुये थे, एक तो रामनाथ का व दूसरे को दीपिका अपना व सयोगिता का पलग समझती थी । रामनाथ जब उसे कहानी सुनाते तो अक्सर दीपिका के पलग के पास कुर्सी डाल कर बैठे हुए । तभी वे अन्य विषयो पर भी चर्चा कर लेते । अध्ययन के विषय मे रामनाथ सदा कहते कि यह सबसे बढिया शौक है क्योकि हमारे पूर्वजो का व वर्तमान काल के विचारको का जो

श्रष्ठतम ज्ञान है वह पुस्तको मे सचित है । हम क्या पढे, इस विषय मे हमारी रुचि भिन्न-भिन्न हो सकती हे, परन्तु यदि हम मानव है तो हमे श्रपनी बुद्धि को खुराक श्रवश्य ही देनी चाहिये, श्रध्ययन ही हमारी वौद्धिक खुराक है। तथा विचार-विमश उसका पाचन है। वे स्वय इजीनियरिंग से लेकर साहित्य, श्रथशास्त्र व श्रतरिक्ष विज्ञान तक की पुस्तके पढते रहते । सयोगिता उसके पास मे लेट कर कहानी सुनाती थी । सयोगिता ने दीपिका को कह रखा था कि उसे सुबह चार बजे उठकर चक्की पीसनी होती है श्रगर कभी सयोगिता बिस्तर मे ना हो तो दीपिका चिन्ता न करे । दीपिका जव कभी रात को जागी तो बिस्तर पर हमेशा उसने श्रपने श्रापको श्रकेला पाया श्रौर वह यही मानती रही कि सुबह के चार बज गये होगे श्रौर श्रम्मा चक्की पीसने की तैयारी मे लगी होगी ।

रोजाना श्राठ बजे दीपिका का सोने का वक्त होता श्रौर वह श्रपने पिता से कहानी सुनाने का श्राग्रह करती । वे उसे एक श्रारयान सुना देते । श्रगर तव तक भी दीपिका को नीद ना श्राती तो वे कहते, "श्रव श्रपनी मा से सुनो" तब सयोगिता भी उसे पचतन्त्र की कहानियो मे से या श्रन्य कहानिया सुनाती ।

× × × ×

बहुत समय तक यौन सबधो तथा व्यवस्था के बारे मे बाते करना एक 'टेबू' (निषिद्ध विषय) बना रहा । लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मिडिल कक्षा मे छात्राश्रो के लिये मासिक धर्म श्रादि पाठ्य श्रनिवार्य विषय गृह-विज्ञान की पुस्तक मे श्रध्यायो के रूप मे जोडे गये । बालको के लिये शायद "इरेक्शन एण्ड डिस्चाज" के बारे मे नैतिक-विज्ञान मे श्रध्याय जोडे गये थे ।

दीपिका की कक्षा मे जो गृहविज्ञान की नियमित श्रध्यापिका थीं वे तो यौन विषयो के बारे मे कुछ श्रधिक ही चौकन्नी थी, क्योंकि

दीपिका ने देखा था कि शिशुओं की देखभाल सबधी अध्याय जब आया तो वह अध्यापिका पुस्तक मे पढ रही थी कि माता को शिशु को स्तनपान कराना चाहिये क्योकि माता का दूध शिशु के लिये सम्पूर्ण आवश्यक तत्त्वो से युक्त आहार है, तो दीपिका ने देखा कि वह पहला वाक्याश पढ कर मुस्कुरा दी और यह मुस्कान इतनी गाढी हो गयी थी कि अध्यापिका नही चाहती थी कि बच्चियाँ उन्हे मुस्कुराते हुए देख ले, अत शीघ्र ही खडी होकर मुडी और श्यामपट्ट पर प्रश्न लिख दिया—"शिशु की देख-भाल किस प्रकार की जानी चाहिये ?" उसके बाद उन्होने कहा कि बच्चियाँ कक्षा मे इस अध्याय का स्वय मौन पाठ कर ले और प्रश्न का उत्तर घर से कर लाये। इसके बाद भी जब कनखियो से दीपिका ने उन्हें देखा तो वह मन्द-मन्द मुस्कुरा रही थी।

उनका यह इस विषय पर विशेष रूप से चौकन्ना होना सामान्य ही था, क्योकि इस विषय पर वार्ता उन्हे गुप्त रूप से ही की होगी, अत उन्होने अपनी एक सह-अध्यापिका कुमारी सुशीला पोद्दार से कहा कि वह 'मासिक धर्म' अध्याय कक्षा आठवी को पढा दे, क्योकि वह तो बोल नही पायेगी। यह वार्तालाप दीपिका ने तब सुना जब कि वह अपनी कक्षा की कापिया इकट्ठी कर स्टाफ रूम मे रखने गई। बहरहाल इनकी कक्षा न लेने वाली अध्यापिका सुशीला पोद्दार जो कि काफी स्मार्ट समझी जाती थी, और उससे भी ज्यादा अपने आपको समझती थी, क्योकि वह गायन एव नाटक के कार्यक्रमो मे काफी भाग लेती रहती थी चाहे वे विद्यालय के अन्दर हो या बाहर, यह कुमारी सुशीला पोद्दार उनकी कक्षा मे आयी और उन्होने सभी बच्चो का अभिवादन लिया और बोली, "बच्चो, आज हम अध्याय न नौ पढेंगे जिसका शीर्षक है—मासिक धर्म।

"मासिक धर्म के बारे मे आप लोग क्या जानते है ?" कोई जवाब न पाकर उन्होने कहा, "आपकी माताजी को ऐसा होता होगा।" यह व्याख्या सुनते ही दीपिका का हाथ उछल कर कधे से 90 डिग्री के कोण मे सीधे ऊपर आ गया। कई छात्राओ के चेहरे शर्म से लाल हो गये व जमीन की ओर मुड गये। दीपिका के अभी कोई स्त्रीत्व के विकास शुरु नही हुए थे, अत यह शिक्षिका थोडी चकित तो हुई, । उन्होने कहा, "हाँ, बताओ।"

दीपिका खडी होकर बोली, "मंदिर में रोजाना लगने वाले भोग, कभी-कभी आने वाले सन्यासियो के स्वागत तथा त्यौहारो पर उत्सवो के आयोजन के लिये वहा पर नियमित रूप मे जाने वालो को हर माह एक निश्चित राशि जमा करानी होती है—यह मासिक धम होता है—श्यामलाल जी के मदिर मे यह राशि पाच रुपये महीना है—हमारी अम्मा देती ह ।"

"अच्छा बैठ जाओ ।"

दीपिका को अजीब-सा लगा कि उन्होने न तो 'सही है' कहा, न गलत बताया—फिर उन्होने कहा कि हर माह स्त्रियो को रक्तप्रवाह होता है जिसकी अवधि दो से सात दिन हो सकती है । यह 28 दिन से लेकर 31 दिन की आवृत्ति पर हो सकता है । आप मे से कुछ बच्चियो को यह चालू भी हो गया होगा—"किन को चालू हो गया है ?" हाथ उठाने की प्रतीक्षा की उन्होने । कोई हाथ नही उठा । "अच्छा, आप बताना नही चाहती ।" एक ठहराव के बाद बोली । "जिनको अभी चालू नही हुआ है उन्हे दो-तीन माह मे हो ही जायेगा । ऐसे वक्त मे आराम करना चाहिये, पेय पदाथ अधिक पीने चाहिये तथा पौष्टिक भोजन करना एव सफाई रखनी चाहिये ।" इन बिन्दुओ को आप गृह-काय मे लिखकर लाना ।

दीपिका ने पूछा, "यह रक्तप्रवाह कहाँ से होता है ?"

"जब होगा तो आपको मालूम पड जायेगा । आप लोग यह अध्याय अब अपने आप पढ लेना ।"

यह कह कर अध्यापिका तो चली गयी और दीपिका ने आज 31 अक्टूबर से तीन माह बाद की तारीख 31 जनवरी निर्धारित कर ली कि इस दिन तक अपने शरीर के किसी हिस्से से रक्तप्रवाह होने का इन्तजार करे । कुछ नही हुआ । बस 30 जनवरी को गेद खेलते वक्त गिर जाने से हाथ मे से जो रक्त-प्रवाह हुआ तो दीपिका ने सोचा अब यह कम से कम दो दिन तो होगा ही वह बिस्तर पर जाकर आराम करने के लिये लेट गई और अम्मा से बोली कि पीने के लिये कोई पेय पदार्थ लाओ । वह ठडा कोला ले आयी । चुस्कियाँ लेती हुई बोली,

"अच्छा, अम्मा, रात के लिये पौष्टिक भोजन बनाना और घर की सफाई अच्छी तरह कर दो, मै आराम करने के लिये सो रही हूँ।" अम्मा देखने लगी कि लडकी क्या बडबडा रही है। वह सुबह उठी तो चकित थी कि खरोच पर पपडी आ गई थी उसने सोचा यह तो पहले भी होता था, मिस ने तो कुछ और कहा था। फिर वह बात को लगभग भूल गई।

\+ \+ \+ \+

दीपिका के बचपन की पक्की सहेली सरला एक बार उनकी सामान्य परिचिता अनुपमा से कुछ वार्तालाप कर रही थी और दीपिका के सरला के घर जाने पर पहिले तो किसी ने भी उसकी तरफ नजर नही उठायी तो उसे बुरा लगा। 'चलो म खुद ही पूछ लेती हूँ कि ये गुपचुप बात क्या कर रही है'—दीपिका ने सोचा और मुस्कुरा कर पूछा, "क्या बात कर रही हो तुम दोनो?" तो किसी ने भी उसे जवाब नही दिया, और एक दूसरे से ही निगाहे मिलाये रखी तो दीपिका को लगा कि यह तो उसकी सरासर अवमानना थी कि उसकी पक्की सहेली उसकी बात का जवाब न देकर यू उसकी उपेक्षा करे। वह सोच रही थी, 'सुबह जब वह केलिडोस्कोप के लिये काच कटवाने के लिये मेरे साथ एक किलोमीटर दूर गयी व वापस आयी थी तो विभिन्न रोचक बातो के बीच सरला ने कहा था, "दीपिका, तू मेरी सबसे अच्छी सहेली है।" और अब अनुपमा के बारे मे बोलती ही नही!' उस शाम वह खेली नही और घर आकर उदास बैठ गयी। शाम को जब पिता आये और उन्होने उसकी उदासी का कारण पूछा तो दीपिका ने पहिले तो उन्हे टालना चाहा परन्तु उनके जोर देने पर पूरी घटना सुना दी, "पिताजी वह मुझे प्यार नही करती होगी न!" अन्त मे उसने कहा।

तब रामनाथ ने कहा, "इसके उत्तर मे तुम्हे एक घटना सुनाता हूँ। एक बार राजा भोज महाविद्वान् लेखक कालिदास के घर गये और अन्दर घुसते हुए सीधे उनके शयन-कक्ष तक पहुँच गये जहाँ कालिदास अपनी पत्नी से निजी वार्ता कर रहे थे। प्रवेश-द्वार की ओर कालिदास

की पीठ एव उनकी पत्नी का मुह था । राजा को यू घुसते देख कालिदास की पत्नी ने कहा, "आइये मूर्खाधिराज !" तिस पर राजा एकदम सकपका गये और उल्टे पाव लौट गये । परन्तु कवि-पत्नी की बात उन्हे चुभती रही ।

"अगले दिन जब कालिदास दरबार मे गये तो उनसे अपने अपमान के कारण की टोह लेने की इच्छा से उनसे कहा, "आइये मूर्खाधिराज !" इस पर कालिदास ने कहा —

"खादन्न गच्छामि हसन्न जल्पे,
गत न शोचामि कृत न मन्ये,
द्वाभ्या तृतीयो न भवामि राजन् !
किं कारण भोज ! भवामि मूख ?

"अर्थात् हे राजन् ! न म खाते हुये चलता हूँ, न हँसते हुये बोलता हूँ, न बीती बात पर अफसोस करता हूँ, न अपने द्वारा किय गये परोपकार को याद रखता हूँ, और न दो के बीच तीसरा होता हूँ, फिर भी क्या कारण है कि मूख समझा गया हूँ ?

"यह सुनकर राजा को अपनी गलती मालूम पड गयी और उनके दिल का मैल जाता रहा । "बिटिया ! हमे अपना व्यवहार ऐसा रखना चाहिये कि उसके औचित्य पर कोई टिप्पणी न कर सके — तभी वह सही होगा । तुम्हे कैसा लगेगा, अगर इस वक्त जब तुम और मैं किसी गहन वार्ता मे सलग्न हैं तो तुम्हारी माँ भी बीच मे आकर पूछे "क्या बात है ?" तो वह एक बाधा ही डालेगी । नही क्या ?"

"हाँ पिताजी ।" दीपिका ने उत्तर दिया और हल्के दिल से वह पिता के साथ खाना खाने चली गयी ।

× × × ×

फ्लोरिडा से डैनियल का पत्र रामनाथ के पास आया कि नानी माँ श्रीमती स्मिथ का, लगता है अन्तिम समय आ गया है। वह उन्हे खूब याद करती है और स्वय डैन को उनके आने से बहुत भावात्मक सहारा मिलेगा।

रामनाथ गये। श्रीमती स्मिथ के प्राण मानो उन्हे देखने के लिये ही अटके हुए थे। उनके स्पश करते ही छोड दिये। फिर उनके अन्तिम सस्कार के बाद उन्होने डैन से बात की। उसने होटल मैनजमेट मे कोस किया था और अभी एक होटल मे नौकरी कर रहा था। उसकी पत्नी उमा भारतीय-मूल के अमेरिका मे बस गये माता-पिता की पुत्री थी उसने होर्टिकल्चर की पढाई की थी और एक फाम पर पैस्ट कन्ट्रोलर का काम कर रही थी।

रामनाथ ने प्रस्ताव किया, "तुम क्यो नही अपना खुद का एक होटल खोल लेते? और उमा, तुम क्यू नही अपना स्वय का फाम बना लेती?" दोनो दम्पति प्रभावित हुए, "क्या भारत मे हमारे लिये ऐसी सभावनायें है?" उन्होने पूछा।

"मेहनत करोगे तो हर जगह सभावनाये है। मुझसे किसी भी प्रकार की सहायता चाहिये तो मै करूँगा। डैन, मै तुम्हे एक अच्छे होटल का मालिक, और तुम्हे", उमा से बोले, "एक बडे फाम की मालिक देखना चाहता हूँ। बोलो आप क्या सोचते हो?"

उन दोनो मे से कोई तत्काल बोला तो नही, परन्तु दोनो ही सोच रहे थे कि भारत मे बसना उनके लिये एक स्थायी रोमाचकारी अनुभव सिद्ध हो सकता है। वे अमेरिका मे यू तो खुश थे, परन्तु उनका भारतीय अश उन्हे वहा के लोगो मे व्याप्त भौतिकतावाद के खोखलेपन का भी अहसास कराता था।

अपने ठहराव के दौरान रामनाथ ने उन्हे भारत मे आकर निवास करने का कायल करन का प्रयास किया। उन्होने अपने स्वय के अनुभव सुनाये कि कैसे उन्होने गाधीजी के अनुयायी बनने मे दिली सुकून पा लिया था। उन्होने व्याख्या की कि भावनात्मक एव आध्यात्मिक पक्ष भारत मे ही मजबूत है, यद्यपि भौतिक प्रगति अमेरिका मे अधिक हुई है। उनके चेहरे पर चमक व उत्सुकता देखकर रामनाथ लगभग भविष्यवाणी

कर सकते थे कि यह युवा जोडा उधर आयेगा। तत्काल उत्तर की अपेक्षा रखे बिना रामनाथ ने उन्हे भारत मे स्थायी रूप से बसने के लिये आने का हार्दिक निमन्त्रण वारम्बार दिया।

भारत लौटकर उन्होने होटल के लिये उपयुक्त भवन व बढिया कृषि योग्य टुकडा खोजना भी शुरु कर दिया और उनका वर्णन पुत्र व पुत्रवधू से करने लगे। "भरतपुर तो एक बडे होटल के हिसाब से बहुत छोटी जगह है। तुमने जयपुर देखा है। पसद हो तो लिखो ताकि वहाँ जमीन देखे।" उन्होने डैन को लिखा।

वर्ष बीतते न बीतते यह युवा जोडा यहाँ आ गया व अपने आपको स्थापित करने के सघर्ष मे रत हो गया था। पहिले उन्होने उमा गोयल के नाम से जयपुर शहर की बाहरी सीमा पर एक कृषि भूमि का टुकडा खरीद कर एक छोटा-सा निवास बनाया जिसके चारो ओर फूल खिलाये तथा आम, जामुन, अमरूद, अ गूर, चीकू आदि फलो के खूब पौधे लगाये। डेनियल ने शुरु मे एक होटल ग्रुप मे सलाहकार की नौकरी कर ली, साथ ही शहरी सीमा मे स्वय के होटल भवन का निर्माण कार्य शुरु किया। रामनाथ ने उन्हे तन, मन, धन से सहयोग दिया।

× × × ×

जब दीपिका तेरह वर्ष की हुई तो जिस घर मे वह पैदा हुई थी वह छोडकर भाई मुदित के पास रहने के लिये उदयपुर चली गई क्योकि वह अब ग्यारहवी कक्षा पास कर चुकी थी और उसके शहर भरतपुर मे लडकियो के लिये कोई अलग कॉलेज नही था।

पिता रामनाथ वैसे तो दीपिका को बहुत अधिक प्यार करते थे एव चाहते थे कि वह उनके साथ ही रहे परन्तु बेटी की अत्यधिक उत्सुकता को देखते हुए वे एक गहन विचार मे खो गये, उन्होने उसे

जाने दिया, पिछले दिनो गर्मी की छुट्टियों मे जब मुदित अपनी पत्नी रूपा एव अपने चार बालको- रीटा, रीना, मोहित व सौरभ को लेकर नैनीताल गया था तो दीपिका ने अपने पिता मे कहा था, पिताजी क्या मे भी उनके साथ चली जाऊँ ?"

तो उन्होने पूछा था, "उनके साथ क्या जाना चाहती हो ?" दीपिका ने उत्तर दिया, "आप और अम्मा तो मुझे कही लेकर चलते नही है, रीटा मुझे चिढाती है ।"

"क्या कहती है रीटा ?"

"कहती है, तुम तो कही घूमने जा नही सकती, हम जायेंगे ।"

"बेटे यह सोचो कि वह तुम्हे यही चिढा रही है तो वहाँ क्या करेगी ? और तुम्हे बाहर जाने को इतनी ही इच्छा थी तो कभी हमसे कहा तो होता न !"

"मैं ने अम्मा से कई बार कहा है ।"

रामनाथ ने सयोगिता से पूछा तो उसने कहा "हाँ, दीपिका कई बार कहती है कही बाहर घूमने चलो, परन्तु मने यही सोचकर कभी सहमति नही दी कि कहा जायेंगे, मेरे पिता का घर तो अब गाव मे रहा नही, मेरी धममाता भी स्वर्गवासी हो गयी, डैनियल व उमा स्वय को स्थापित करने के सघर्ष मे लगे है, रहा मुदित तो उनके घर हम कैसे जाने का सोच सकते हैं क्योकि उन्होंने तो हमे कभी खुले दिल से निमन्त्रित किया नही है । कहा जायेंगे म यह निश्चय नही कर पायी अत न तो मैंने उसे कोई आश्वासन दिया, ना ही आपसे इस बारे मे चर्चा की ।"

"दीपिका यहाँ आओ" रामनाथ ने आवाज लगायी ।

दीपिका आकर बैठ गयी और फिर तीनो जने चर्चा करने लगे कि उन्हे कहाँ जाना चाहिये । दीपिका नैनीताल जाने का आग्रह कर रही थी क्योकि मुदित का परिवार वही जा रहा था । सयोगिता यूँ मुदित के पीछे-पीछे चल देना उपयुक्त नही समझती थी । माउट आबू जायें ।या या मसूरी फिर शिमला कौनसी जगह चलें-यह विचार विमर्श काफी देर तक करने के बाद उन तीनो ने निश्चय किया कि वे मसूरी जायेंगे ।

उस दिन 28 अप्रेल थी जबकि श्री रामनाथ ने दिल्ली से देहरादून तक के अग्रिम टिकट प्राप्त कर लिये। देहरादून से आगे उन्हे सडक द्वारा यात्रा करनी होगी।

उन्हे 23 मई 1965 को यह यात्रा शुरू करनी थी, वापसी मे वे अन्य विभिन्न स्थानो को देखते हुए आयेगे, जिनमे हरिद्वार व दिल्ली मे एक-एक दिन ठहरेगे भी।

तीनो व्यक्तियो के जाने की तैयारियाँ होने लगी। दीपिका ने अपने लिये नयी फ्रॉकें खरीदी व आग्रहपूवक सयोगिता के लिये दो साडियाँ खरीदी, कई ब्लाउज-पेटीकोट बनवाये। पिता के साथ जाकर उनके लिये धोती व कुर्ता खरीदे। सब के लिये नये जूते व नयी चप्पले, तो पिता दीपिका के मुख पर छाये उत्साह के उजास को देख-देखकर प्रसन्न होते रहते। यू खरीददारी और पैकिंग चल ही रही थी और श्री रामनाथ ने दूकान पर कार्यरत चोखे को उनके बाहर रहने के दस दिन के दौरान घर पर सोने के लिये भी कह दिया था कि तारीख 22 की दोपहर को गाय के जो कि दो माह से गाभिन थी, गभपात हो गया। अम्मा ने दीपिका को गाय के ओसारे मे आने से निषेध कर दिया था, अत वह वहा गयी तो नही, लेकिन गाय का रभाना जब चरम सीमा पर पहुँच गया तो घर व ओसारे के बीच लगे किवाड के छेद मे से झाक कर देखा। ढेर सारा खून फश पर बिखरा हुआ था, गाय की आखो मे याचक का भाव था कि उसे कोई बचाये, मा सयोगिता गाय (गगा) के दोनो पैर पकडे हुए थी और मवेशी डॉक्टर उसके पीछे की ओर झुके हुए कोई इजेक्शन दे रहे थे शायद। गगा दद मे अपना सिर इधर-उधर तेजी से फेक रही थी तो दीपिका को अपनी सखी हिना की याद हो आयी। कुछ दिन पूव जब उसे तेज बुखार के कारण डिप्थीरिया हो गया था तो वह कैसे अपना सिर इधर-उधर फेक रही थी। दीपिका ने स्थिति की गभीरता को समझा और रात को जब पिता ने पूछा कि बाहर चलने के बारे मे उसका क्या विचार है तो दीपिका ने जवाब दिया कि गाय को यू रुग्णावस्था मे छोडकर जाने के बारे मे वह सपने मे भी नही सोच सकती। "पिताजी मुझे मालूम है कि कर्तव्य का स्थान आमोद प्रमोद से पहिले है। अभी गाय को हमारी आवश्यकता है। अपन फिर कभी घूमने चलेंगे।"

श्री रामनाथ दीपिका को इतना प्यार करते थे कि विभिन्न घटनायें उसके मन पर कैसा असर करती हैं—इस बात पर सतत् विचार करते थे, उन्हे दीपिका के प्रत्युतर पर सतुष्टि हुई और इस बात से आश्वस्त होकर कि वह बाहर जाने के लिये इतनी बेचैन नही है कि वे स्वय उसे लेकर, सयोगिता को छोडकर जायें, उन्होंने 23 तारीख को टिकट वापसी के लिये स्टेशन भेज दिये, उन्हे खुशी इस बात की थी कि दीपिका भले ही घूमने न जा सकी हो लेकिन वे जा सकते हैं—इस सामर्थ्य का आभास तो उसे मिल ही गया है जो कि अपने आप मे एक भावनात्मक सहारा देने वाली अनुभूति है।

उक्त घटना के एक वर्ष बाद जब दीपिका ने एक दिन श्री रामनाथ से पूछा, "पिताजी, म कॉलेज मे पढने के लिये उदयपुर चली जाऊ ?" तो उन्हे थोडा धक्का लगा था।

"क्यो ?" उन्होने पूछा।

"यहाँ कोई लडकियो का कॉलिज नही है। और वहाँ मुदित भाई रहते है ही। म वही रहकर पढना चाहती हूँ," तो रामनाथ ने व्यस्तता का अभिनय किया और जवाब दिया "बेटे, इस बारे मे अपन परसो बात कर सकते है ?" तो दीपिका ने सहमति व्यक्त कर दी थी।

श्री रामनाथ विचार करते रहे, इस बच्ची की किशोरावस्था शुरू हो गयी है और इसमें यह प्रतिकार करना सीख रही है। पिछले वर्ष इसने जो अपने भाई के परिवार के साथ बाहर जाने का प्रस्ताव रखा था उस बारे में वार्तालाप पर झट बचपने पर आ गयी थी "रीटा मुझे छेडती है" परन्तु इस बार मामला कुछ दूसरी तरह का है। भाई के घर जा कर रहने को यह कुछ साहसिक कार्य, कुछ उत्तेजना भरा कार्य समझती है। अब रामनाथ के सामने प्रथम विकल्प तो यह है कि वे 'ना' कह दें। अगर उन्होने ऐसा किया तो दीपिका रुक तो जायेगी परन्तु शायद अभी तथा जिन्दगी मे आगे यही सोचती रहे कि उसके पिता ने उसके बेहतर विकास के अवसर पर रोक लगा दी थी। दूसरे, अगर वे उसे जाने दे तो उन्हे कितना सूना सूना लगेगा, कितनी याद आयेगी उसकी, उनका दिल भर आया और आखे नम हो गयी। उन्हे अपनी पहली पत्नी मेरिल के साथ बिताया हुआ वक्त याद हो आया जबकि वे अक्सर तीव्र भावनात्मक

ज्वार भाटे से गुजरते वक्त रोया करते थे। "मै तो समझती थी कि पुरुष रोया नही करते"—उसने आश्चर्य से भर कर उनसे कहा था, तब से ही उन्होने अपने आँसुओ पर बाध बना लिया है, अन्यथा उससे पूर्व तो माँ की ज्यादा याद आने पर या पिता के कडाई से बोलने पर वह अपना तकिया भिगोने के बाद ही प्रकृतिस्थ हुआ करते थे।

उन्हे अपनी किशोरावस्था का समय याद आया। कितने ही सहपाठी घर से भाग जाया करते थे और वापस आकर अपने अनुभवो मे शायद, गप्पें जोड-जोड कर सुनाते थे तो साथीगण अत्यन्त प्रभावित होकर सुनते थे। उनके मन मे कई बार कुछ विशेष कर गुजरने की इच्छा होती थी परन्तु पिता अपने सपनो का बधन डाल देते थे। "मै चाहता हूँ कि तुम एक उच्च पदस्थ इजीनियर बनो इसलिये तुम मनोरम की शादी मे किसी से ज्यादा घुलना-मिलना नही, असल मे वहाँ ठहरना ही नही, बस भेंट पकडायी और चले आना। मै तुम्हारी इतनी इच्छा देख कर ही तुम्हे वहाँ जाने की अनुमति दे रहा हूँ, अन्यथा यह रकम घसीटा को दुकान पर भी भेटस्वरूप दे सकते हैं"—और रामनाथ यद्यपि उनके आगे बोल नही पाते थे, परन्तु कहना चाहते थे कि मनोरम आप के नौकर का लडका ही सही मगर उनका सहपाठी भी है और उसकी शादी मे वह बारात मे भी जाना चाहते हैं। वह पिता के इस सपने से उद्दीप्त होते थे कि अमरीका जाकर पढाई करनी चाहिये लेकिन उन्हे जब छोटी-छोटी खुशियो से वचित किया जाता तो उनकी टीस उन्हे सालती ही थी और सच तो यह है कि आज तक सालती है।

एक बार उनके शहर मे दस दिन का कैम्प लगा था जिसमे कि डॉ हेडगेवार स्वय आकर कुछ दिशा निर्देश देने वाले थे। रामनाथ डॉ हेडगेवार से बेहद प्रभावित थे। उन्होने चुपके-चुपके वितरित पत्रक-पैम्फलेट मे उनके जो प्रेरणादायक भाषण पढे थे उन्होने उनके मम को छू लिया था। एक भाषण मे उन्होने कहा था, "हमे राम और कृष्ण की केवल पूजा ही नही करनी है, हमे उनके जैसा बनना भी है।" गाधीजी ने उनके बारे मे कहा था, मै डॉ हेडगेवार की व्यक्ति-सगठन की क्षमता से अत्यधिक प्रभावित हुआ हूँ। यह मानव की बेहतरी की भावना को उभार कर उसे बेहतर जीवन के लिये श्रम करने हेतु प्रेरित करते है।

रामनाथ की बहुत इच्छा थी कि वे इस कैम्प मे शामिल हो, परन्तु पिता ने उनको उपस्थित न होने दिया—वैसे तो कारण उन्होने यह बताया था कि स्कूल के व्यवस्थापकगण अग्रेजो के क्रोध के पात्र बन सकते है तथा भाग लेने वाले विद्यार्थियो को स्कूल से निकाला जा सकता है परन्तु रामनाथ समझ गये थे कि पिता उन्हे अपने से दूर रखने की कल्पना मात्र से सिहर उठते थे और साथ रखने के लिये बहाने गढ लिया करते थे।

ऐसी घटनायें बारम्बार घटित होती तो रामनाथ यद्यपि शारीरिक रूप से तो पिता के पास रह जाते थे परन्तु मन से उनसे दूर होते चले जाते थे। उनके मन मे प्रश्न उठते, "क्या सतान का यही कर्तव्य है कि वह चौबीसो घट अपने जन्मदाता की निगाहो के सामने ही बना रहे? अपनी बेहतरी, अपने विकास के लिये या किसी की सहायता के लिए क्या वह कही नही जा सकती?"

उन्ह कोई स्पष्ट उत्तर मिला भी हो परन्तु पिता के साथ विवाद, बहस और झगडे को टालने की गरज से वे अपनी किशोरावस्था भर चुप ही बने रहे।

अब जब दीपिका को दूर शहर मे मुदित नाई के साथ रहने का विचार एक साहसिक काय के रोमाचकारी अनुभव की नाई आकर्षित कर रहा था तो रामनाथ को लगा कि उनके दूर जाने के कारण कितने ठास और अथपूर्ण हुआ करते थे और दीपिका के कितने काल्पनिक और हवाई हैं! परन्तु किशोरवस्था की किसी भी कामना को यू कुचलना ता उपयुक्त नही है—इससे तो ऐसी ग्रन्थिया बन सकती है जो आगामी जीवन मे भटकन भर सकती है कि वह अपनी दमित इच्छाओ को पूण करने की प्रतिक्रियावादी प्रक्रिया मे ही बद्ध हो जाये। बहुत सोचने के बाद उन्होने दीपिका को यू समझाने का प्रयास किया।

"क्या तुम मानती हो कि जो व्यक्ति दूसरे की रोटी पर जीता है उसे जलील समझा जाता है?"

"पिताजी मै उनकी रोटिया खाने नही जा रही हूँ मै तो बस पटन जा रही हूँ" फिर पिता की विह्वलता देख कर बोली, "आप मेरा खर्चा भेज देना!" और उनकी गोद मे सिर रख दिया।

"क्या तुम वही पढ सकती हो, यहाँ नही ?" रामनाथ ने पूछा तो दीपिका के चेहरे पर यह सोच कर उदासी तिर आयी कि उसे अपने इन्ही पिता के साथ रहना होगा जिन्हे वह "हाय पप्पा !" भी नही बोल सकती। 'पिताजी' ही बोलना पडता है, जो कि हमेशा खद्दर की हाथ की धुली धोती ही पहिनते है और जिन्हे वह किसी पॅट पहिनने वाले सजीले सज्जन से नही मिलवा सकती। माता सयोगिता कभी रूपा भाभी की तरह बन-ठन कर काला चश्मा लगा कर बाहर नही निकलती वह या तो गृह कार्य मे व्यस्त रहती हैं या गाय गगा की सेवा मे। वह रूपा मासी के साथ शापिग करने जायेगी तो कितनी उत्फुल्लित महसूस करेगी ! उसने जब अपनी मित्र-मण्डली के बीच ऐलान किया था कि वह तो पढने बाहर जा रही है तो उनकी निगाहे कितनी ईर्ष्या से भर गयी थी जैसे वह दीपिका की खुशकिस्मती का लोहा मान रही हो। अब उसके न जाने पर सभी उसका मौन या मुखर उपहास ही तो करेंगी !

"पिताजी मुझे वही जाने दो !" उनके सामने नतमस्तक होकर हाथ जोड कर वह बोली। रामनाथ ने उसके जुडे हुए हाथो को थपथपाकर उसके सिर पर हाथ फेरा, "ठीक है बेटी, जैसी तुम्हारी इच्छा !" और दीपिका ने उनकी कृतज्ञ होकर मन ही मन कहा, "आप कितने अच्छे हो पिताजी।"

× × ×

दीपिका मुदित के घर जाकर रहने के लिये अपने माता पिता का घर छोडकर जब रवाना हुई तो उसके साथ मे केवल मुदित भाई ही थे। स्टेशन तक तो दीपिका प्रफुल्लित ही थी और छोटी-छोटी बातें मुदित भाई से करती रही। परन्तु जब उनकी रेलगाडी चलने लगी तो मुदित भाई तो अखबार पढने मे खो से गये। और घटो तक खोये रहे। फिर एक स्टेशन आने पर उन्होने अखबार तह करके रख दिया और एक पत्रिका खरीद ली। दीपिका को तीव्रता से अपने पिता की याद आने

लगी। यद्यपि ऐसा अवसर कभी गुजरा न था, परन्तु उसे लगा कि रामनाथ साथ होते तो उसे एक पत्रिका पहिने दिलाते। फिर स्वय लेते। वह तो अखबार पढने की बिलकुल शौकीन न थी अत पिता स्वय ता लेट जाते और उसे पास मे कुर्सी पर बैठकर अखबार सुनाने के लिय कहते थे, जब गाडी चल पडी तो दीपिका ने अपने सकोच से सप्रयास उबरते हुए कहा, "भैया वा अखबार था न ! "

"अखबार चाहिये ? सुबह से पढा नही था क्या ?" यह कहकर उन्होने निकाल कर दिया, दीपिका ने अखबार को थोडा पढा और फिर अपने घर की याद मे उसकी आखो मे आसू आने लगे। दीपिका ने अपने आप को यूँ रोकर एक तमाशा न बनाने के लिये समझाया और अखबार मोडकर एक किनारे रखकर अपनी आँखें बन्द कर ली।

साझ घिर आयी थी। एक स्टेशन पर गाडी रुकी। मुदित भाई वहा से उठकर चले गये। और थोटी देर मे एक बेयरा आया जो अपने हाथ मे खाने की एक ट्रे लिये हुए था 'सीट न 21 की दीपिका आप ही है ?"

"हाँ।"

"अच्छा, साहब ने यहा पर ये खाना देने को बोला है।"

दीपिका ने खाना रखवा लिया। मुदित भाई आ जाये तब खायेंगे। खाना तो अच्छा दिखता है, चावल भी है इसमे। दीपिका को चावल बहुत पसन्द थे परन्तु उसको माँ बहुत ही कम बनाती थी क्योकि उनका कहना था "चावल दीपिका को नुकसान करेगें, शरीर मोटा हो जाता है इनसे," परन्तु सब्जी कम है। ठीक है, ट्रेन मे जैसा भी मिल जाये।

मुदित आये ता खाना देखकर बोले, "खत्म नही किया अभी तक ? अभी वो बर्तन लेने आ जायेगा।"

"भैया, मै आपका इन्तजार कर रही थी, आप भी तो खायेंगे न !"

"नही मुझे भूख नहीं है। तुम जल्दी खत्म कर दो।"

दीपिका न खा लिया। पहली बार आज भोजन मे चावल होते हुए भी उसे भोजन अरुचिकर लगा। उसने खाना खाकर हाथ धो लिये और

बहुत देर तक प्यासी बैठी रही। फिर बेयरा के आने पर उसने पानी पिया।

रात को नौ बजे के लगभग न जाने कौन-सा स्टेशन आया। तब मुदित भाई को भूख लगी थी। उन्होंने बिस्किट के दो पैकेट खरीदे व दो कुल्हड चाय। दीपिका ने एक चाय ले ली और बिस्किट के लिये भाई के लहजे मे ही उत्तर दिया, "मुझे भूख नही है।"

चाय पीने के बाद भाई ऊपर की बर्थ पर जाकर सो गये थे। अखबार दीपिका के सिरहाने ही रखा था। वह सोच रही थी कि निकालकर पढे कि मुदित भाई ने हाथ बढा कर बत्ती बन्द कर दी और कहा, "सो जाओ भई दीपिका!"

अगली सुबह वे उदयपुर पहुँचे तो रीटा, रीना, मोहित व सौरभ अपने पिता को देखकर खूब किलक रहे थे। भैया ने उन चारो को खूब प्यार किया। मासी एव भाभी रूपा का चेहरा उदासीनता से भरा हुआ था। दीपिका को पता नही चला कि उसका आना उन्हे कैसा लगा है। दीपिका का स्वागत रीटा ने किया। वह उसे उसका कमरा व बगीचे मे फूल दिखाने ले गयी। वे दोनो घास पर घूम ही रही थी कि मासी की आवाज आयी, "रीटा, अन्दर आओ!" दीपिका भी साथ गई। उसने देखा, सब बच्चो के साथ मुदित भाई मेज पर बैठे हुये थे और भाभी एक बडी ट्रे को मेज पर खाली कर रही थी। उसमे चार गिलास दूध के व तीन चाय के थे। "सब बच्चो दूध पी लो," उन्होने व्यस्तता से कहा। दीपिका को बुरा नही लगा कि उसे बडी माना गया और उसके लिये चाय परोसी गयी है।

दीपिका ने बडे अदब से उनके पास जाकर कहा, "मै आपको भाभी कहूँ या मासी?"

"कुछ भी कहो, मै कौन-सा किस रिश्ते से इन्कार कर रही हूँ", और यह कह कर बिना उससे नजर मिलाये वह खाली ट्रे लेकर रसोई मे रखने चली गयी। दीपिका जान गयी कि उन्हे उसका आना अच्छा नही लगा है। सबने साथ बैठकर दूध-चाय पिये और फिर चारो बच्चो के स्कूल जाने का समय हो गया। रूपा चिल्ला रही थी, "मै तुम सब का

खाना बनाती हूँ। सौरभ, तुझे आज तैयार नही कर पाऊँगी, तू आज की छुट्टी कर दे," दीपिका बोली, "भाभी, नाश्ता मैं तैयार करती हूँ आप सौरभ को तैयार कर दो।"

दीपिका चकित थी कि कैसे उसके मुँह से 'भाभी' संबोधन निकल गया। उसके बाद उसे लगा कि यह उपयुक्त ही था। क्योंकि इससे वह बड़ा की श्रेणी मे आ जाती है। दीपिका ने अपनी माता के पास कभी-कभार ही पकाने का काम किया था। परन्तु यहाँ झटपट उसने गैस पर एक तरफ आलू गोभी की सब्जी छौंक दी और दूसरी तरफ तवा रखकर दस बारह पराठिया सेंक दी। पराठिया बनी तब तक सब्जी बन चुकी थी और रीटा ने आकर चार खाने के डिब्बे लगा दिये।

रीटा दीपिका से बोली, "दीदी! आप चखकर देखो कैसा खाना बनाया है आपने।" और जब दीपिका ने कहा कि मैं बाद मे खा लूंगी अभी तो तुम स्कूल भागो, तो रीटा ने आग्रहपूर्वक अपने डिब्बे मे से एक टुकडा तोड उसमे सब्जी रख कर जो दीपिका के मुँह मे रखा तो भाभी जो सौरभ को तैयार करके आ चुकी थी, रीटा को डाटने लगी," उधर बस निकल जायेगी और तुम यूं ही चहलबाजी करती रह जाओगी। ऐसे ऐसे खिलवाड करने के लिये दिन भर पडा है।" तो दीपिका को अपने मुँह का भोजन एक कडवा बेस्वाद ग्रास प्रतीत हुआ, जिसके बारे मे वह सोचने लगी कि इसे थूक दे या निगल जाये, पर थूकने जाने मे भी उसे एक प्रकार का भयबंधन, एक पहरा महसूस हुआ। वह सुबह रीटा द्वारा बताये कमरे मे गयी और वहाँ बैठकर जैसे-तैसे उसने कौर निगल लिया। उसने निश्चय किया कि वह पढाई करने आयी है पढाई पर ही ध्यान देगी और रीटा से भी कह देगी, ऐसी चुहले न किया करे।

मुदित भाई ने उसे बुलाकर कहा कि वह पौने दस बजे घर से निकलेंगे अगर वह तयार हो जाये तो वे उसे कॉलिज छोड देंगे। वह फाम खरीद ले, अपनी अंकतालिका साथ मे नत्थी कर उसे जमा करा दे और आज ही हो सके तो अपनी फीस भी जमा करा दे। दीपिका ने प्रतिवाद किया कि वह ये सारे काम अकेली नही कर पायेगी, तो मुदित भाई ने गर्म होकर उत्तर दिया कि अगर पहले से ही सोच लोगी कि नही कर सकूगी तो कभी कुछ नही कर पाओगी, जिन्दगी की चुनौतियो का मुकाबला कैसे कराेगी।

दीपिका को यद्यपि भाई का यह बात कहने का लहजा खला परन्तु उसने चुनौती को स्वीकार कर लिया और महिला कॉलेज में जाकर फार्म खरीद कर भरा और फिर अंकतालिका संलग्न कर फीस भी जमा करा दी। उन दिनों सन् 1966 में कॉलेजों में प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सूची बाद में निकलने का कायदा नहीं था वरन् जितने भी विद्यार्थी प्रवेश चाहते थे उन सब को मिल जाता था। दीपिका को भी मिल गया, कॉलेज से घर पास ही था और वापस लौटते हुये दीपिका अपने भैया व भाभी के व्यवहार के बारे में सोच रही थी, "क्या इसे ही बेगानापन कहते हैं ?" दीपिका सोच रही थी कि वह एक प्रकार से यहाँ बिल्कुल अकेली महसूस कर रही है परन्तु उसने वस्तुनिष्ठ तरीके से सोचने का प्रयास किया और निष्कर्ष निकाला कि उसे भैया-भाभी से भावनात्मक सहारे की उम्मीद नहीं करनी चाहिये। दूसरे उसे घर का काम भी खूब करना चाहिये जिससे चाहे यूं कह लो कि भाभी खुश रह पाये यूं कि एक कार्यरत व्यक्ति के रूप में वह अपना खर्चा निकाल ले या कि उनके साथ रहने का व्यावहारिक अधिकार प्राप्त कर ले।

घर जाकर दीपिका सो गयी और सपने में उसे अपने माता-पिता दिखाई दिये व पिता के कथन याद आये "जिन्दगी में जो निर्णय तुम लोगी उनका प्रतिफल सिद्ध करेगा कि वह सही था या गलत। इसी प्रकार तुम जीवन जीना सीखोगी।

"मेरे पिता मुझे आत्मनिर्णय का अधिकार नहीं देते थे जिसके कारण में उनके प्रति विद्रोह से भर उठता था अतः मैं यह अधिकार तुम्हें देना उचित समझता हूँ, परन्तु मेरा अनुरोध है कि पुनः इस पर विचार कर लो," तो उसने झट कह दिया था "मेरा तो अनुरोध यही है कि आप मुझे जाने की अनुमति दें।"

जब वह इतने आग्रह के बाद भाई के घर आई है तो यहाँ पर जो भी गुजरे, उसे चाहिये कि वह उसे सहर्ष स्वीकार करे। जब चारों बच्चे स्कूल से लौटे तो उसकी नींद टूट गयी थी। उसने रीटा की आवाज सुनी, "दीदी को उठा लूं खाने के लिये ?" और रूपा भाभी का उत्तर भी, "तू यूं उसकी चमची न बन, जब वो उठेगी तो अपने आप खा लेगी।"

माता-पुत्री का यह वार्तालाप सुनकर उसकी इच्छा नही हुई कि वह उठकर उनके सामने जाये। उसने एक करवट बदली और फिर कॉलेज से लौटते वक्त लिये अपने निर्णय के औचित्य पर विचार करने लगी।

मुदित भाई शाम पाँच बजे बाद आये। उन्होने चारो बच्चो को खूब जोर-जोर से बोलकर प्यार किया। फिर वह साथ वाले कमरे में भाभी से धीरे-धीरे कुछ बाते करने लगे। दीपिका चाहती थी कि उसके बारे मे वे क्या बात करते हैं, उसे वह सुन ले। ताकि उसी हिसाब से तय करे कि उसे कैसा व्यवहार करना चाहिये।

मुदित भाई ने हल्की सी आवाज दी, "दीपिका!" परन्तु उसने जवाब नही दिया। भाभी बोली, "कालेज से आयी तब ही से सो रही है।" दीपिका को माँ की याद आयी। वो कहती, "बिना कुछ खाये कैसे सो गयी बेटी?"

"एडीमीशन हो गया इसका?" भाई की आवाज थी।

"पता नही, कुछ बोली ही नही। बच्चे स्कूल से आकर सो भी लिये। फिर उठकर खेलने भी गये पर इसकी न जाने कैसी नीद है, ऐसे कैसे काम चलेगा?"

"काम तो हम यू चलायेंगे कि मैं इसे समझा दूँगा।"

भाभी उठकर अन्दर चली गयी और भाई दीपिका को उठाने आये। उन्होने उसकी एक बाँह पकडकर उसे बिठा दिया और कहा, "दीपिका ऊपर छत पर चलो। कुछ बातें करनी है।"

दीपिका स्वप्नाविष्ट-सी ऊपर छत पर चल दी। वहाँ पर भाई ने ऊपर का किवाड बद कर दिया और छत के एक कोने मे खडे हो गये। वे दीवार का सहारा पीठ से लेकर खडे थे। दीपिका ने भी जब एक बाँह से दीवार का सहारा लेना चाहा तो उन्होने कहा, "सीधी खडी होकर मेरी बात सुनो।"

दीपिका मानो सावधान की मुद्रा मे खडी हो गयी।

"तुम हमे अपना हितैषी मानती हो या नही?"

"जी मानती हूँ।"

"हम जो बात कहेंगे तुम्हारे भले के लिये होगी या बुरे के लिये ?"

"जी भले के लिये।"

"देखो ऐसा है कि हमारे ये जो चार बच्चे हैं, इनका अभी बचपन चल रहा है, सबसे बडी रीटा जो है वह बारह साल की है, जबकि पश्चिमी देशो मे किशोरावस्था तेरह वर्ष की उम्र से शुरू होती है। किशोरावस्था को टीन एज कहा जाता है, मालूम है ?"

"जी, मालूम है।"

"दूसरे वह सातवी कक्षा मे पढती है—उसकी पढाई अग्रेजी माध्यम द्वारा हो रही है जिसमे कि अधिकतर विषय मैं भी नही पढा सकता, न तुम्हारी भाभी रूपा पढा सकती है।" दीपिका को चुप देखकर मुदित भैया चिल्लाये, "जवाब दो!"

"क्या जवाब दूं ?"

"बोलो, अच्छा जी"

"अच्छा जी।"

"दूसरी ओर तुम हो—तुम तेरह वर्ष की हो तुम कॉलेज मे पढने लगी हो और तुम्हारे माता-पिता के हिसाब से तुम बडी हो गयी हो, तभी तो तुम्हे आत्मनिर्णय का अधिकार मिला है ना, जिसका प्रयोग कर तुम यहा आयी हो!"

"शायद।"

"शायद नही—पक्की बात कहो ताकि बात आगे बढे।"

"जी, आत्मनिर्णय के अधिकार की बात पिताजी ने कही थी।"

'अगर गिलास मे पानी है तो उसे भरा हुआ ही तो कहेगे न!" कहते हुए मुदित ने दीपिका का कान पकड लिया था।

"आप मेरा कान छोडिये पहिले!"

मुदित की पकड और कस गयी, "पहिले हाँ कहो।"

"हां।"

"कहो मैं मानती हूँ—हां" पकड कसी हुई थी।

"म मानती हूँ हा।"

"क्या मानती हूँ हां?"

"कि मैं बडी हो गयी हूँ।" तब मुदित ने उसका कान छोडा।

"तुम बडी तो हो गयी हो परन्तु तुम बहुत ही बिगडी हुई लडकी हो। यह मैं इसलिए कह सकता हूँ कि जैसे आज तुम दिन भर सोयी पडी रही और कल यात्रावधि मे भी मैंने तुम्हारे बहुत से काम ऐसे देखे जो आपत्तिजनक थे।"

"उनके बारे मे बताइये कृपया।"

"मैं असुखद बातो की चर्चा करना नही चाहता। तुम खुद ही विचार करोगी तो जान जाओगी। म मुख्य बात तुमसे यह कह रहा हूँ कि तुम अब मेरी सरक्षिता हो—उन चार बच्चो को तो उनकी माता सँभाल लेगी परन्तु तुम्हारे व्यवहार मे जो भी कमियाँ होगी, उन्हें म दूर करूँगा ताकि तुम एक आदर्श स्त्री और आदर्श व्यक्ति बन सको।"

दीपिका को कुछ खुशी सी भी हुई लेकिन यह खुशी भी अजीब सी ही थी। "कैसे?" उसने उत्सुकता मे पूछा।

"ऐसे!" एक झन्नाटेदार तमाचा पडा उसके गाल पर।

दीपिका चकरा गयी। "यह किसलिए भैया?" उसने आँख मिलाकर पूछा।

"चलो, इसलिए कि कल शाम तुमने भोजन की आधे घटे तक बेकदरी की थी—आधे घट तक—गर्म भोजन ठडा होता रहा—और तुमने उसे खाया ही नही।"

अब दीपिका की हिम्मत नही थी कि वह भाई से कोई बहस करती। उसने अपना गाल थाम लिया। इस पर मुदित भाई बोले, "आज पहिले दिन इतने पर ही छोड रहा हूँ। अब रोजाना मैं तुम्हारे दिन भर के

कार्य व व्यवहार का लेखाजोखा लूंगा और तुम्हे पीटपीट कर सही कर दूंगा ।"

तिस पर दीपिका ने पूछा, "आप मुझसे कैसे काम व व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं—कृपया मुझे बतायेंगे ?" उसने अपने आंसुओं को पीते हुए पूछा ।

"हां बताऊँगा, पहला—जबकि घर मे दो बडी औरतें हैं तो क्या यह उचित नही होगा कि वे दोनो एक एक वक्त का खाना बनायें ?"

दीपिका विचारमग्न हो गयी तो मुदित भाई चिल्लाये, "जवाब मे देर लगाना अपने आप मे एक अपराध है। बोलो, नही तो चांटा आ रहा है ।"

"जी हां ।"

"अरे मूर्ख, पूरा वाक्य बोल !"

"जी हां, मै एक वक्त का खाना पकाऊंगी ।"

"खाने के अलावा घर मे अन्य काम भी हैं—वे भी आने करने चाहियें तुम्हें कायदे से ।"

दीपिका ने प्रश्न करने वाली निगाहों से नाट [illegible] की व्याख्या की, "जैसे बरतन मांजना वगैरा ।"

"जी हां, मै कर लूंगी ।"

'इसके साथ ही तुम्हें पढ़ाई मे भी [illegible] रहना है । हर दिन कितना पढ़ा इसकी रिपोर्ट मुझ को—[illegible] और ज्यादा थक जायें ।"

"अच्छा, मुस्कुरा कर बोलो इस वाक्य को।"

तो दीपिका मुस्कुराकर बोली, "मैं बच्ची या बूढी बीमार नही हूँ।"

"चलो अब नीचे चले।" मुदित के प्रस्ताव पर दोनो नीचे उतर आये।

दीपिका ने रसोई मे जाकर देखा कि भाभी गुस्से मे स्टोव जला रही है, गैस खत्म हो चुकी है। दीपिका उनके पास जाकर बोली, "लाओ भाभी, म बनाती हूँ खाना।"

"खाना कुछ नही, बस खिचडी बना रही हूँ म।"

"दाल-चावल कहाँ है ?"

"अलमारी के डिब्बो मे हैं, अभी बीनती हूँ।"

"मैं बीन देती हूँ," कहकर दीपिका ने दाल व चावल बीने तब तक भाभी स्टोव पर दूध रखकर बाहर जा चुकी थी। दीपिका ने दाल-चावल धोकर एक बडी पतीली मे रखे, दूध उबलाने के बाद स्टोव पर चढा दिये और उन्हे बार-बार चलाने के बीच रसोई ठीक करती रही। बतन माजना, सजाना, तथा खिडकी व मेज आदि की सफाई का काम करती रही।

फिर उसे याद आया कि भाभी सुबह बच्चो को तैयार करेंगी। अत उसे नाश्ता बना लेना चाहिये—"सुबह क्या सब्जी बनेगी भाभी ?" वह पूछने कमरे मे गयी तो उन्होने जवाब दिया, "या तो मटके के पास रखी टोकरी मे देखो या बच्चो से पूछो।"

दीपिका ने देख लिया—आलू रखे हैं, फिर उसने बच्चो से कुछ नहीं पूछा।

यह देखकर कि सुबह खाना दो बार बनाना होता था, एक बार बच्चो का नाश्ता व एक बार सबके लिये खाना—दीपिका ने सुबह की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

उसने शुरू मे बच्चो के नाश्ते के शीघ्र बाद दोपहर का भोजन पकाना आरम्भ किया तो भाभी ने आपत्ति की, "सुबह आठ बजे का

पकाया भोजन जब कोई दोपहर मे खाता है तो खाना बासी-बासी सा लगने लगता है। दीपिका का कॉलेज ग्यारह बजे का है क्या यह कुछ देर मे नही पका सकती है?"

यह बात उन्होने भाई से कही थी। तो भाई ने गुस्से से उन्हे प्रत्युत्तर दिया "क्या हर बात में ही कहूँ उससे? तुम कुछ नही कह सकती?"

यू दीपिका से किसी ने नही कहा, परन्तु वह सुबह बच्चो का नाश्ता बनाने के बाद एक बार अध्ययन की एक बैठक लगा लेती, पुन दस बजे उठकर तीव्र गति से दोपहर का खाना बनाती और कॉलेज भाग जाती।

किसी भी रिश्तेदार के यहाँ जाकर दीर्घकाल तक रहने मे यह सामान्य बात है कि बालक के दुर्गुण अनेक गुणक मे विस्तत होकर सामने आते हैं, उसकी खूबियो को दरगुजर किया जाता है और बालक वैसा ही सहमा हुआ व व्यग्र रहता है जैसे कि एक ग्रामीण जिसे एक पचसितारा होटल के सुसज्जित कक्ष मे छोड दिया जाये, क्योंकि माता पिता मे बालक के प्रति जो ममत्व की भावना होती है वह रिश्तेदारो मे नही। रिश्तेदारो के साथ दीघ काल तक रहते हुये उनसे दयालुतापूर्ण व्यवहार की उम्मीद रखना स्वय को भुलावे मे रखना है क्योंकि यह मानव-स्वभाव के विपरीत है—मित्रता का दयालुतापूण व्यवहार बराबर वालो मे होता है--दूसरो पर निभर रहने वालो के साथ कैसे हो सकता है! परपोषित बालको को तो अपने पालको की ग्रन्थियो की कडवाहट मात्र झेलनी होती है।

मुदित भाई को जब भी दीपिका के लिये खाली वक्त मिलता उसमे दीपिका की पिटाई लगती। इसका कारण कभी प्रश्नो के सही उत्तर न सुनाना होता, कभी कम पढना तो कभी यह कि मेहतर के आने पर उसने ठीक से सफाई क्यू नही करवायी या कोई अन्य कारण। पिटाई के आगे-पीछे भैया यही कारण बताते कि म तुम्हे एक पूर्ण कुशल गृहिणी व प्रथम श्रेणी की विद्यार्थी देखना, बनाना चाहता हूँ। तुम्हारे हित मे ही तुम्हे मार रहा हूँ। "गौर करो कि मैं तुम्हे कितना प्यार करता हूँ—मैं तुममे इतनी रुचि लेता हूँ कि मारता हूँ," वह कहते। दीपिका को उनके कडे निर्देश थे कि वह पिटते वक्त रोने-चिल्लाने की आवाज न निकाले, अन्यथा उसकी और ज्यादा पिटाई लगायी जायेगी। शुरू मे

जब वह अपने को रोक नही पाती और उसकी दबी घुटी चीख निकल पडती तो भैया उसके मुँह पर कोई कपडा आदि रख देते थे और शोर न करने की ताकीद कर देते ।

पिटाई दीपिका के हाथ जोडकर माफी माँगने पर ही बद होती थी परन्तु यदि दीपिका बहस करे कि अमुक इल्जाम जो वह उस पर लगा रहे है सत्य नही है तो उसकी और ज्यादा पिटाई लगती कि वह भाई पर झूठे होने का आरोप लगाती है—इस तरह औसतन हफ्ते मे तीन बार पिटते हुए दीपिका ने अपनी स्नातक उपाधि के अध्ययन के तीन वर्ष पूरे किये जिनमे उसे किसी सखी-सहेली के यहा जाने का निषेध था और जब वह अनायास ही बच्चो के साथ खेलने लगती तो भाभी की भृकुटि तन जाती और भाई होते तो व्यग्यपूर्ण हँसी हँसने लगते। एक दिन सभी को सबोधित कर उन्होने पूछा, "सीग कटा कर बछडो मे शामिल होना, किसको आता है इसका अर्थ ?" दीपिका यह सुनकर चुपचाप अपने कमरे मे चली गई और वहाँ जाकर रोयी नही, वरन् गुमसुम बैठ गई थी।

दीपिका को एक वक्त मे दो ही रोटियाँ खाने की अनुमति मिली हुई थी। उसे चेतावनी दी गयी थी, "ज्यादा खाओगी तो मोटी हो जाओगी।" अगर वह तीसरी लेना चाहती तो रूपा भाभी, उनके सामने जो भी होता उसके साथ वार्तालाप करते हुए ऐसी बात कह देती कि महीनो तक दीपिका तीसरी रोटी की ओर ताक्ती भी नही। फलो व मिठाई, नमकीन आदि नाश्ते का हिस्सा बच्चो का ही होता था क्योकि उनके शरीर बढते हुए थे, उनकी जूठन, भाभी को निपटानी पडती थी और भैया मेहमानो की खातिर करते हुए इन वस्तुओ का रसास्वादन कर लेते थे।

यदि पिता ने दीपिका को ऐसी परिस्थितियो मे छोडा होता ता न जाने वह कितनी रोयी होती परन्तु स्वय निर्णय कर यह वातावरण चुनने के कारण वह बहुत कम रोती सिवाय तब के जबकि वह रात को सोती तो उसकी आँख की कोरो से बस एक आँसू टपक जाता। उसे अपने माता पिता का स्नेहिल व्यवहार याद आता जो यहाँ की उपेक्षा, उदासीनता मे बिल्कुल भिन्न था। दीपिका यह सोचकर कि यह दु ख भरे

दिन सीमित है और स्वय चुनाव द्वारा उसने लिये है स्वय को सात्वना दे लेती, स्थिरता प्राप्त कर लेती और सो जाती ।

वैसे चारो बच्चे उससे सहानुभूति रखते थे। वे उससे खाने की वस्तुओ का प्रस्ताव करते, उसके पास बैठने का प्रयास करते परन्तु दीपिका चोरी का धन समझ उनकी वस्तुएँ व सहानुभूति स्वीकार न करती, ताकि जब वह भाभी की कडक भरी आवाज सुने–"रीटा रीना! ओ मोहित सौरभ! चलो इधर!" तो ज्यादा अपमानित महसूस न करे।

तनाव की स्थिति मे दीपिका वह कार्य करने लगी जिसका सुझाव पिता द्वारा पूव मे दिये जाने पर उसने ध्यान नही दिया था—वह सूक्तियो का सकलन करने लगी। सबसे पहले उसने लिखा, "जो दूसरे की रोटी खाता है वह जलील समझा जाता है," फिर दिन के दौरान पढी या सुनी हुई सूक्तिया लिख लेती और फिर अपने खाली समय मे उन पर विचार करती।

मुदित भाई के बारे मे दीपिका सोचती कि जब उनके पिता विदेश से लौटने पर गाधीजी के अनुयायी बनकर सविनय अवज्ञा के राजनैतिक कायक्रमो मे बढ-बढ कर हिस्सा लेते, गिरफ्तार होकर लम्बी अवधियो तक जेल मे रहते थे तब मुदित भाई को अपने दादा जी एव नौकर की देखभाल मे रहना पडता था तब ही ना जाने उनमे कौनसी ग्रन्थिया पड गई थी—शायद उन्हे अपने हमउम्र बालको के साथ बिल्कुल भी मारपीट का मौका नही मिला होगा जबकि वह अपनी वार क्षमता का कायल होना चाहते थे—कि व दीपिका की पिटाई लगाकर स्वय को व्यक्त करते थे।

अपनी सहपाठी के घर जाने की अनुमति दीपिका को तब मिली जब उसकी माता सयोगिता मुदित भाई के नया मकान खरीदने पर गृहप्रवेश के उत्सव मे शामिल होने वहा आई। तभी उस ने समझा कि भरतपुर मे रहते हुए वह भैया के जिन तौर-तरीको से प्रभावित हुई वह यह थे कि उन्होने एक परिचित के विवाह मे एक अत्यन्त स्फूर्तिपूर्ण नृत्य किया था जो अतीव प्रशसित हुआ था—अपने उनके साथ चलने के आग्रह के उत्साह मे उसने इस बात पर ध्यान नही दिया कि जब

उन्होंने कहा था, 'तुम्हारी इच्छा है तो चलो,' तब उनका स्वर उत्साह-हीन था—वास्तव में चार बालकों के अभिभावक इस दम्पति को उसकी क्या आवश्यकता हो सकती थी ! यही सोच कर उसने उन पर श्रद्धा बनाये रखी।

× × ×

अपनी स्नातक परीक्षा देने के बाद छुट्टियों में जब दीपिका पिता के घर गयी तो उन्होंने सुझाव दिया कि वह आगे कोई व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करे। दीपिका आगे स्नातकोत्तर उपाधि के लिये पढ़ना चाहती थी। तब पिता ने यूं बात को खत्म किया, "व्यावसायिक प्रशिक्षण तुम्हें सेवा के लिये तैयार कर देगा—शिक्षक प्रशिक्षण लो, चाहे पत्रकारिता का कोर्स करो चाहे कुछ और। तभी अपने पैरों पर खड़ी हो सकोगी।" और जाने के लिये उठ गये।

इस बात पर दोनों सहमत थे कि अग्रिम अध्ययन हेतु दीपिका छात्राओं की संस्था वनस्थली चली जाये। दीपिका को उनकी यह बात अच्छी नहीं लगी कि "पैरों पर खड़ी हो सकोगी।" जिसके घर में कमाऊ पुरुष हो और वह उसे स्नेह करते हों, उस लड़की को कमाने की क्या आवश्यकता है, वह यूं सोचती थी।

रामनाथ जब दीपिका को वनस्थली ले कर गये तो वह यद्यपि इस बात को अधिक कहते तो नहीं थे परन्तु चाहते यही थे कि दीपिका व्यवसायिक कोर्स में प्रवेश ले। परन्तु दीपिका ने बालहठ पकड़ लिया और संगीत की स्नातकोत्तर कक्षा में ही प्रवेश लिया। रामनाथ दीपिका को छात्रावास जब जाने लगे तो बोले, "शायद तुम्हें यहीं सिखाने का काम मिले—इस सम्बन्ध में तुम्हें यह सूचना देना चाहता हूँ कि अन्य विषयों के शिक्षकों या व्याख्याताओं को जितना वेतन मिलता है, संगीत वालों को उसमें कुछ कम मिलता है।" इसके बाद दीपि के माथे पर

चुंबन अंकित करके वह बस मे बैठ गये, नीचे खडी दीपिका को अपना ध्यान रखने की हिदायतें देते रहे और जब बस चल दी तो दोनों दूर तक एक दूसरे के लिये हाथ हिलाते रहे।

उनके जाने के बाद दीपिका की इच्छा हुई कि वह कहीं एकान्त मे जाकर फूट-फूट कर रोये। पिता की याद आ रही थी उसे परन्तु वह तेज कदमो से छात्रावास पहुँची तो उसने देखा अन्य छात्राये कालेज जाने के लिये तैयार हो रही थी। दीपिका भी जल्दी से तैयार हो गयी।

कॉलेज पहुँचने पर उसने अपनी कक्षा खोजी। अभी उसके अलावा सितार विषय मे किसी अन्य छात्रा ने प्रवेश नही लिया था—प्राध्यापक महोदय से कुछ बातें करने के पश्चात् उसने उनसे कुछ बजाकर सुनाने का अनुरोध किया। जब वे बजा रहे थे तो उसके विचार आपस मे टकरा रहे थे। वह सोच रही थी, क्या ऐसा ही बजाना उसका उद्देश्य है ? यदि अवसर मिल जाये तो जैसा वह बजाती है उसी को रेडियो पर प्रस्तुत कर सकती है, रियाज द्वारा उसमे निखार ला सकती है, अवसर न मिले तो बेहतर बजाकर भी न मिले। अगर यही सिखाना अपना व्यवसाय बनाये तो अन्य सहकर्मियो की अपेक्षा कमतर वेतन पाना उसे कैसा लगेगा ? ठीक है यह वह सह लेगी पर किन्ही शिष्यो का गलत बजाना सुनकर उसे वैसी ही बेचैनी अनुभव करनी होगी, जैसी कुछ सहपाठियो के मामले मे होती थी—बेसुरा, बताला संगीत सुन कर दिल घबरायेगा, तब ?

जिन व्यक्तियो को हम बहुत प्यार करे उनकी खुशी के लिये अनायास ही प्रयत्न करने लगते है। अब दीपिका सोच रही थी कि एक बार शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का फॉर्म तो भरे। संयोगवश ऐसा हुआ था कि कल शाम को जब प्रवेश सूची मे दीपिका का नाम आया तब दोपहर बाद के चार बज चुके थे और बैंक मे फीस जमा नही हो सकती थी और आज दीपिका ने विचार किया था कि पहले नौ बजे कक्षा मे उपस्थित हो जाये फिर खाने की छुट्टी मे फीस जमा करा देगी।

जब सर का सितार बजाना रुका तो दीपिका निर्णय ले चुकी थी—शिक्षक प्रशिक्षण के लिये भी फॉर्म भरेगी और घटा लगने पर वह उस

महाविद्यालय से शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय पहुँची, फॉम प्राप्त किया, अकतालिका की सत्यापित प्रति सलग्न कर जमा कराई। एम ए की फीस जमा नही कराई और फिर छात्रावास मे अपना कक्ष व्यवस्थित करती रही। अगली सुबह दीपिका को बेहद सुकून मिला कि उसका नाम प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो की सूची मे आ गया था— उसने मुदित भाई को मन ही मन धन्यवाद दिया जिनके पढाई पर इतना जोर देने के कारण ही, वह मानती थी, वह इतने अ क प्राप्त कर पाई कि उसे दोनो स्थानो पर प्रवेश मिल सका। दूसरी ओर उसने उन छात्राओ और उनके अभिभावको के लिये दु ख महसूस किया जो कि हफ्ते, प द्रह दिन से वहाँ के अतिथि-गृह मे ठहर कर प्रवेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय के नाम अपनी ओर से फीस जमा करायी और पिता को यह समाचार देते हुए पत्र लिख दिया।

दीपिका शिक्षक-प्रशिक्षण कोर्स करते वक्त बहुत-सी ऐसी बातें सीख गयी जो कि सामान्य अध्ययन करते हुए वह नही सीख सकी थी। इस कोर्स के दौरान ही वह सीखी कि भारत मे शिक्षा व्यवस्था कसी है, कैसी होनी चाहिये एव इस क्षेत्र मे देश के शिक्षको के क्या कर्त्तव्य है। शिक्षा विभाग की व्यवस्था कैसे चलती है—इस कोर्स के बाद व्यक्ति का समाज के प्रति भी कर्त्तव्य होता है वह यह जानी। नवीन सत्र मे दीपिका ने आस्था के साथ 'सेवा हेतु तैयार हूँ," पिता से यू कहा तब, पिता ने उसे बजाय नौकरी मे लगने के आगे अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया और बनस्थली मे ही एम ए सस्कृत मे प्रवेश दिलाया—इस अध्ययन से दीपिका मे साहित्य के प्रति प्रेम व लगन पैदा हुई। वह अपनी सितार भी अपने साथ ही रखती थी और विभाग मे जब कोई उत्सव, भाषण इत्यादि होते तो पाँच मिनट का उसका कार्यक्रम भी कभी-कभी रख दिया जाता जिससे उसे सहपाठियो की व शिक्षकगण की सराहना मिलती।

इस बार दीपिका जब दीपावली की छुट्टियो मे पिता के घर गयी तो यू ही वार्ता करते हुए उन्होने उस से कहा, "अगर कभी म न रहूँ तो भी तुम अपनी जि दगी मे खुश रहना।" दीपिका उ हे रोकने लगी तो उ होने कहा, "तुम मेरी बात तो सुन लो।" फिर आगे बोले "आज-कल के पुरुष काफी हद तक बहुत स्वार्थी हो गये है—म कई अच्छे

प्रतिष्ठाप्राप्त पुरुषो को जानता हूँ जो पत्नी को रोटी या इज्जत मे से एक ही चीज दे सकते है अत मै चाहता था कि तुम अपने पैरो पर खडे होने की योग्यता प्राप्त कर लो। मुझे बहुत खुशी है कि तुमने प्रशिक्षण ले लिया है। व्यक्ति को जीवित रहने के लिये बहुत से धन की आवश्यकता नही होती—न ही नौकरी करना आवश्यक है परन्तु किसी दूसरे व्यक्ति के ऊपर आजीवन निभर रहने की मजबूरी दुखकारी है।

"म तुम से खुलकर पूछ रहा हूँ, अगर तुम अपने इस अध्ययन के कोर्स के प्रति गम्भीर न हो तो म तुम्हारे लिये वर की तलाश शुरू कर दूं।" इस पर दीपिका ने कहा। वह नही चाहेगी कि उसके अध्ययन मे वर की तलाश के द्वारा बाधा पहुँचायी जाये।

"अगर मै न रहूँ तो तुम नौकरी अवश्य कर लेना, और कोई योग्य व्यक्ति अपने आप आगे आयेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।"

दीपिका को छुट्टियो से वापस आये एक माह भी पूरा न हुआ था कि उसके पास माता का तार आया, "पिता बीमार है, शीघ्र आओ।" दीपिका चल पडी। परतु उसके दिल मे शका उठने लगी, "उन्हे तो कभी बुखार भी न आता था, कुछ हो तो नही गया ? इस बार जो वह बार-बार कह रहे थे, 'अगर मै न रहूँ,' 'कभी जब म न रहूँ' कही वह कोई पूर्वाभास तो नहो था ?" यू चितामग्न जब वह घर पहुँची तो उसने पाया कि उसकी आशका सच थी। वह ज्यो ही पहुँची कि शव के साथ लेटी हुई माता सयोगिता का क्रन्दन देखकर उसका भी कलेजा फटने लगा। वह जैसे ही साझ को पहुँची, पिता की मिट्टी उठा दी गयी। "कसे हुआ यह ?" के उत्तर मे माता ने बताया कि "वह रात को यूँ बोल कर सोये थे कि "मुझे भूख नही है" और सुबह पाँच बजे उठकर घूमने जाया करते थे। नही उठे, तो मने सोचा तबियत ठीक नही है आज, सोने दू।

"छ बजे प्रात उनके प्रात भ्रमण के साथी डॉ सत्यप्रकाश और अध्यापक श्री हरिनारायण—भ्रमण से लौटते हुये इधर आ निकले कि आज रामनाथ कसे नही आये। तब उन्हे हिलाया, देखा तो ठडे पड चुके थे। सारे मौहल्ले वाले आ गये। मुदित दो दिन पहले यहाँ अपने साले की सगाई मे आये हुये थे, वे ससुराल मे ही थे, उन्हे बुलवाया।

तुम्हे व डैन को तार किया—यह बात संयोगिता ने एक-एक कर विस्तार से आधी रात तक सुनाई थी—रूपा भाभी व उनकी माता, चाची ने बहुत मनुहार कर उन्हे भोजन खिलाया। तत्पश्चात् चौथे दिन रूपा भाभी तो अपने बच्चों को परीक्षा की खातिर उन्हे लेकर उदयपुर चली गई परन्तु मुदित भाई वही ठहर गये थे।

तीन दिन बाद दुकान का नौकर चोखे एक स्टेम्प पेपर पर लिखा उपहार पत्र लाया। रामनाथ ने अपनी दुकान का भवन अपने कामगार चोखे लाल को अपने बाद भेट स्वरूप देने का वचन दिया था—संयोगिता से भी उन्होने इसकी चर्चा कर रखी थी। दुकान मे संग्रहीत कपडो की कीमत के नाम पर उसने 17,000 रुपये दिये—जिनमे से 1,000 रुपये रामनाथ के क्रियाकर्म मे लग गये और 16,000 रुपये बैंक के मासिक ब्याज दायी खाते मे जमा करा दिये गये। डैन ने माता को 4,000 रुपये दिये कि ये आपके काम आयेंगे। संयोगिता ने यह धन भी बंक के सावधि खाते मे डाल दिया।

इतना बडा मकान था, अब संयोगिता ने उसका कुछ फर्नीचर डैन व मुदित से ले जाने का अनुरोध किया, कुछ अपने हिस्से मे रखवाकर दो कमरे का आवास किरायेदार के हेतु खाली कर दिया। किरायेदार रखने के बाद वह मुदित व डैन के अनुरोध पर एक-एक माह के लिये उनके घर उदयपुर व जयपुर रहने चली गई। वह डैन के परिवार के साथ उनकी नई जीप मे दीपिका से मिलने उसके वनस्थली स्थित छात्रा वास मे भी आयी।

× × ×

लडकियो की शादी तय करना भारतीय समाज मे एक मुश्किल काम है। वह इसलिये कि लडकी की इज्जत को बहुत ही नाजुक समझा जाता है। यदि लडकी किसी लडके से हस बोल ले या उसके साथ सब्जी लेने भी चली जाये तो उसको निष्पाप नही समझा जाता। वह लडकी चालू

के नाम से बदनाम हो जाती है। ऐसी स्थिति मे लडकी स्वय अपने लिये पति ढूढने मे कोई योगदान नही दे सकती। उसके माता-पिता उसके लिये पति ढूढने की जिम्मेदारी ले लेते है। इसी कारण बहुत से लोग लडके वालो के घर जाकर अपनी सामथ्यभर अधिकतम धनराशि शादी मे देने के वादे करने लगते है। और दहेज प्रथा को बढावा देते है।

एम ए उत्तरार्ध की परीक्षा दीपिका प्राइवेट ही देना चाहती थी ताकि माता भरतपुर मे अकेली न रहे। पिछले दिनो सयोगिता के परिचित श्री सजय व मीरा वर्मा ने अपनी पुत्री की शादी तय की। कार्ड देने आये दम्पति काफी प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। सयोगिता ने लडके के विवरण जानने चाहे तो उन्होने बताया कि वे लोग अकुश सिनेमा के ब्लाक वाली बिल्डिग मे ही रहते है। "क्या उसी सिनेमा मे नौकरी भी करते है ?" उसने पूछा।

"नही अब नही, पहले पिताजी उसी सिनेमा मे मैनेजर थे। लेकिन अब उन्होने सेवा से अवकाश ग्रहण कर लिया है लेकिन वह फ्लैट उन लोगो ने खरीद लिया है।"

"आपने कैसे बात पक्की की वहाँ ?"

"यह लडका जो कि बीकानेर मे होमियोपैथी कॉलेज मे व्याख्याता है कुछ दिन पूर्व जब बीकानेर से अपने माता-पिता के यहाँ आया तब मेरे एक मित्र उनके यहाँ गये हुए थे—जिनसे मैने कह रखा था कि अपनी श्यामा के लिये रिश्ते का ध्यान रखे। तो वहा यह बात चल रही थी कि लडके के पिता उससे कह रहे थे कि मधुकर तुम बीकानेर से कोई छोटा लडका नौकर या बाई लेकर आओ ताकि सग्रहणी के पुराने रोग से जजरित तुम्हारी माता को गृहकार्य मे कुछ सहारा मिले या यहाँ जयपुर मे ही ढूढकर जाओ।

"तो उ होने तपाक से कहा कि अजी आप नौकर रखने की झ्न्झट क्यू मोल लेते हैं ? मेरे एक मित्र की कन्या है, वह पढी-लिखी होने के साथ साथ गृह कार्य मे अतिकुशल तथा सुशील है। उसको आप मधुकर से ब्याह लाइये, वह घर के सारे काम चुटकियो मे कर देगी। मधुकर श्यामा नाम की जोडी भी जचती है।

"तो क्या श्यामा पति के साथ बीकानेर, न रहकर यही निवास करेगी ?" उसको गृहकार्य का कभी कोई शौक तो न था यह सोचते हुए दीपिका ने पूछा।

"अजी ये सब तो बाद की बाते हैं यह कभी कही—कभी कही रह लेगी—नौकर भी कभी भी रखा जा सकता है फिर माता-पिता इतने जल्लाद थोड ही होगे कि अपने पुत्र व पुत्रवधू का दिल दुखायेगे।"

यह वरणन सुनकर दीपिका चुप हो गयी सोचने लगी वह अपने लिये ऐसी शर्तो पर पति नही चाहती थी।

× × ×

मुदित भाई की बडी बेटी रीटा दिल्ली के छात्रावास मे रहकर मेडिकल डिग्री की पढाई कर रही थी। उनके शेष परिवार ने गर्मी की छुट्टी सयोगिता व दीपिका के साथ बिताई। मुदित भाई अक्सर शनिवार को बस से आ जाते व रविवार के बाद एक-दो दिन की छुट्टी बिताकर उदयपुर लौट जाते। मुदित भाई व दीपिका आपस मे शायद ही कभी बात करते थे। लेकिन एक शाम जब दीपिका अपनी सखी वन्दना के घर से लौटी तो मुदित भाई ने दरवाजा खोला और मुस्कुराते हुए बोले, "आओ दीपिका, मेरे पास कभी बैठती नही तुम।"

दीपिका ने उनका मनोरथ न समझते हुए उनकी ओर देखा। "आप के लिये पानी या चाय कुछ लाऊँ ?"

"नही मुझे तो नही चाहिये।"

"आज भाभी व बच्चे कहा गये हैं ?"

"आज तुम्हारी भाभी अपनी भतीजी की वर्षगाँठ के उत्सव मे गयी है साथ मे तीना बच्चे चले गये हैं।"

दीपिका को इस बात पर तो विश्वास नही हुआ कि मुदित भाई, भाभी की उपस्थिति मे उनसे डरे रहते हैं इस कारण से कई-कई दिनो उससे बात नही करते और आज उसके सुख-दुख बाटना चाहते है, लेकिन उनका मुखर रुख उसे कुछ अजीब अवश्य लगा।

"क्या पढ रही हो आजकल ?"

दीपिका उन्हे अपनी पाठ्य पुस्तको मे से जो पढ रही थी उसके बारे मे बताना नही चाहती थी। जब वह सहायता के लिये प्रस्ताव करते तो वह यही कहकर धन्यवाद दे देती कि कुछ मुश्किल आने पर पूछ लेगी अभी तो समझ मे आ रहा है क्योकि वह उनकी इस पक्की आदत को जानती थी कि यदि उसने एक बार भी उनसे अपनी पढाई के सबध मे विचार विमश किया तो उसके सफल होने पर तो वह यही कहेगे कि उनकी सहायता के कारण ही दीपिका की सफलता सभव हुई है और अगर वह असफल हुई तो उसके किसी भी उत्तर पर यही कहेगे कि उसका इतना स्तर तो उनकी सहायता से ही बढ सका। उनके निरन्तर अथक प्रयास से दीपिका को असफलता के इस स्तर तक लाया जा सका, स्वय दीपिका की तो उनका ज्ञान ग्रहण करने की इससे अधिक क्षमता ही नही थी। वे निश्चित रूप से ऐसा कहते दीपिका को इसमे रचमात्र भी सदेह नही था क्योकि उनकी यह आदत थी कि हर अच्छी बात का श्रेय वह स्वय को देते थे तथा हर बुरी बात का दूसरो को और दोनो मे से किसी भी प्रकार की घटना होने पर वे विविध लोगो के सामने इतनी बार उसको दुहराते थे कि दूसरा पक्ष शर्मिन्दा होने लगता था।

दीपिका ने उत्तर दिया कि वह अपना कोस पढ रही है। पिछले दिनो उसने एक नाटक पूरा किया है और अब दूसरा शुरू किया है—उसने जानबूझकर नाम नही बताये नाटको के।

"तुम पत्रिकायें क्यो नही पढती हो ?"

"जी, मैं पढ लेती हूँ।"

मुदित को थोडा आश्चय हुआ। वह तो अपनी पत्रिकाओ को नजरो से ओझल होने नही देते। जब पति पत्नी व बच्चो का परिवार पढ लेता है तो झट अलमारी मे ताला लगाकर रख देते हैं ताकि दीपिका को चाहिये तो मुह से मागे। एकाध बार दीपिका यू ही पडी होने पर उठाकर पढने

लगी थी तो अगले ही पल उनका कोई बच्चा उसे मागने आ जाता कि पापा मगा रहे हैं।

दीपिका तो बस समाचार पत्र वन्दना के घर जाकर पढ आती है। दीपिका अपनी माता मयोगिना पर आर्थिक भार डालना भी नही चाहती क्योंकि वह पिता की जमा पूंजी की ब्याज, गाय के दूध से आमदनी व मकान किराये पर ही निर्वाह कर रही है—दीपिका भी नही चाहती कि मूल मे सेदैनिक खच के लिये धन निकाला जाये। दूसरे, वन्दना के यहा जाने के कारण वह नियम से प्रतिदिन नहा लेती है धुले हुए साफ कपडे पहिन लेती है और कघी चोटी कर तयार हो जाती है अन्यथा घर मे पड-पड वह इन काया मे शायद नियमित न रहे।

वन्दना उसके प्रतिदिन आने से ऊब तो नही रही, इसका परीक्षण करने के लिये वह किसी किसी दिन उस के घर नही जाती तब उसका छोटा भाई मुनीश उसे बुलाने आ जाता है या वन्दना स्वय चली आती है तो उसे बहुत अच्छा लगता है। वैसे वह वन्दना के साथ उसको और अपनी खरीददारी भी कर लाती है तथा अपनी व उसकी सहेलियो के यहा हो आती है ये उन दोनो की ही सन्तुष्टि के कारण हैं। दीपिका जानती है कि वन्दना को अपनी पढाई बद करनी पडी, लेकिन विभिन्न क्षेत्रो मे उसके अनुभव सुनना दीपिका को खूब सुहाता है—वन्दना ने कई बार कहा है कि उसका स्तर दीपिका की सगत मे ऊपर उठ रहा है लेकिन दीपिका को स्वय का नीचा गिरता हुआ नही लगा वन्दना के साथ के कारण—यानि दोना की खूब पट रही थी उन दिनो।

"एक बहुत अच्छा लेख आया है, तुम्हारे लिये उठाकर रखा है, इसे पढो तुम।" उसके हाथ मे देकर मुदित भाई चले गये। दीपिका ने देखा उस लेख का शीर्षक था, "दहेज प्रथा की बुराइया," उसमे वर्णन किया गया था कि माता पिता लडकी की शादी मे दहेज देने के लिये अपनी चल-अचल मम्पत्ति बेच देते हैं या रहन रख देते हैं तथा फिर दयनीय जीवन बिताने पर मजबूर हो जाते हैं। इसलिये लडकियो को शपथ लेनी चाहिए कि वे चाहे कुवारा रह जायगी लेकिन दहेज नही लगी।

दीपिका पत्रिका लौटाने गयी।

"कैसा लगा ?" मुदित ने पूछा।

"आपको कैसा लगा ?" दीपिका ने पूछा और अपने कमरे में चली आई।

× × ×

कुछ पुस्तकें खरीदने और डैनियल व उमा से मिलने सयोगिता व दीपिका जयपुर गयी तो सयोगिता ने डैन से भी कहा कि वे दीपिका के लिये वर खोजें। उनका चेहरा देखकर दीपिका को लगा कि वे समझे ही नही कि अम्मा क्या कह रही हैं। फिर जब अम्मा ने उन्हे अच्छी तरह समझा दिया तो डैन भाई बोले, "तो क्या मै होटल मे ठहरने वाले ग्राहको से यह पूछता रहूँ कि एक सुन्दर युवा लडकी से शादी करनी है ?" तो सयोगिता और दीपिका दोनो की ही हसी छूट गयी। वे जानती थी कि यह बात उन्होने किसी दुर्भावना से नही वरन् मात्र जिज्ञासा से पूछी है।

माता सयोगिता के अनुरोध पर मुदित भाई ने दीपिका के लिये जो वर सुझाये उनके वर्णन सुनकर दीपिका को ऐसा बुरा लगता कि उसने माता से लडाई की कि वह उनसे ढूढने के लिये क्यो बोली। एक लडका सूरजमुखी सुझाया, दूसरा एक बेरोजगार युवक जिसकी नौकरी के लिये आवेदन करने की उम्र गुजर चुकी थी। दीपिका को कभी नही लगा कि वह उनके साथ खुश रह पायेगी।

दीपिका अपने पिता के साथ हुई वार्ताओ को याद करती थी और उसी आधार पर आत्मसम्मानपूर्ण जिन्दगी बिताने की क्षमता मे विश्वास रखती थी और उसके लिये भगवान से प्राथना करती थी।

दीपिका को जब रोजगार कार्यालय मे भरे गये फाम के आधार पर भीमनगर नामक गाव मे शिक्षिका के पद पर काय मिल गया तो वह बहुत घबराहट महसूस कर रही थी। वह गाव मे जाना ही न चाहती थी और अपनी चिन्ता के कारण उसने अपनी माता को यू बताये कि मैं अपनी पढाई ठीक से न कर सकूगी, गाव मे नल बिजली न होने से असुविधा होगी और वहा गन्दगी होगी जिसमे मैं बीमार पड जाऊगी।

परन्तु असल मे वह सोचती थी कि गाव का जीवन, जीवन होता ही नही और वह अनपढ, अज्ञानी देहातियो से घिर जायेगी ।

परन्तु माता सयोगिता जानती थी कि ग्राम्य जीवन भी उतना ही जीने योग्य हो सकता है जितना कि कस्बाई या शहरी । उसने एक एक कर के उसकी घबराहट के कारणो को दूर करने के लिये उनकी व्याख्या की और अन्त मे कहा, "अपन ऐसे चलते है जैसे किसी पिकनिक पर। अगर मन लगा तो ठीक है अन्यथा दस दिन बाद लौट आयेंगे। सवैतनिक पिकनिक की तरह का अनुभव हो जायेगा यह ।"

गाव मे उन्हें नल व बिजली की सुविधायें मिल गयी । एक बडे हवादार मकान मे एक कमरे का सुखद आवास मिल गया और मकान मालिक का परिवार व अन्य ग्रामवासी उसे सहज, सजग व प्रेम करने योग्य लगे । बिना जाने उन्हे तुच्छ मान लेने के लिये दीपिका ने अपने आपको शर्मिन्दा महसूस किया ।

× × ×

एक माह बाद जब वह अपनी छात्राओ को निबन्ध लिखवा रही थी, "मेरे जीवन का सबसे खुशी भरा दिन", तो उसे छात्राओ के सामने मेज पर बैठे अनुभव हुआ कि उसके अब तक के जीवन का सबसे खुशी भरा दिन वह था जब उसे अपना पहला वेतन मिला था क्योकि दूसरो पर निर्भर रहने से जीवन मे जो कडवाहट आ जाती है यह उसकी एक काट था ।

नौकरी मे स्थापित होने के बाद दीपिका सामाजिक रूप मे स्थापित होने के रोमाचकारी अनुभव की खुशी हासिल कर रही थी। साथी अध्यापिकायें उसे अपने घर निमन्त्रित करती थी । उनमे से अधिकतर के पति वही किसी सरकारी दफ्तर मे ही कार्यरत थे । गाव मे शिक्षित वर्ग का एक अलग समूह बन जाता है, और वे साथ-साथ काफी समय बिताते हैं जैसा कि शहरो मे सामान्यत देखने को नही मिलता ।

माता सयोगिता दीपिका को कही आने-जाने की अनुमति देने मे यू तो उदार थी परन्तु उन्होने उसे सख्त ताकीद की हुई थी कि वह कुवारे लडको से जरा बच कर ही रहे क्यूँकि यहा बात करते बदनामी हो जाना एक सामान्य बात है। दीपिका के पास वाला घर एक अन्य अध्यापिका श्रीमती सीता ओसवाल का था जिनके पति एक चिकित्सक थे। इन दम्पति के तीन प्यारे प्यारे बच्चे थे। यह परिवार दीपिका के प्रति अत्यन्त सौहार्दपूर्ण तथा सुसस्कृत व्यवहार रखता था अत दीपिका अक्सर उनके यहा जाया करती थी।

एक दिन, नवीन वर्ष की पूर्व सध्या पर जब दीपिका वही गयी हुई थी तो एक जीप आयी और फिर चपरासी दौडकर अन्दर आया, "ए सी एम साहब आये हैं।"

ए सी एम माधव छाबडा राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी थे। वे इस तहसील के बडे होने व काय जटिल होने की वजह से यहा सहायक जिलाधीश एव दण्डनायक के विशेष पद पर लगे हुए थे। दीपिका जानती थी कि उसे अपनी तरफ से कोई मेलजोल नही करना चाहिये। वह आगन मे आयी। जीप मुख्यद्वार के सामने खडी थी और दीपिका ने सोचा कि वह छोटे गेट से होकर अपने घर चली जाये। वह जा ही रही थी कि डॉक्टर ओसवाल ने उनका परिचय कराया, "बहिन जी, ये ए सी एम साहब हैं और ये "

'म जानता हूँ इन्हे।"

"अच्छा, तो मेरा नाम बताइये।"

"वो मैं किसी दिन कान मे बताऊगा।"

उनका यू कहना दीपिका को इसलिये बहुत बुरा लगा कि उसे कुछ जवाब नही सूझ पाया लेकिन उसे अम्मा की हिदायत याद थी अत वह जल्दी से अपने घर आ गयी।

तीसरे दिन उसने देखा कि साथी अध्यापिकायें उसे इगित कर कुछ खुसुर पुसुर कर कर रही हैं। उसके पूछने पर उन्होने बताया कि ए सी एम साहब का कोई पत्र तुम्हारे नाम आया है जो कि सुश्री

प्रधानाध्यापिका जी के पास है। दीपिका उनके पास गयी और उनसे वह पत्र मागा तो उन्होने कहा कि यह पत्र कुमारी दीप्ति गोयल के नाम है अत मुझ सबोधित किया गया है। उनका नाम कुमारी दीप्ति झालानी था। दीपिका ने पते पर गोयल व सहायक अध्यापिका लिखा होने की ओर इगित किया और कहा कि कृपया मुझे पढने के लिये दे दीजिये, मैं अभी ही वापस कर दूगी। इस पर उन्होने कहा, "तुम उम्र मे बहुत छोटी हो। यह पत्र पढकर तुम्हारे ऊपर बुरा प्रभाव पडेगा, अत नही दूगी।"

ये बाते उस ने इन्तजार करती हुई साथी अध्यापिकाओ को बतायी और उन्होने पता नही किनको कि दीपिका जिधर से निकलती लोग ताने, व्यग्य से या यू ही रोमाचित होते हुए कहते, "भई हमारा तो ए सी एम साहब से पत्र व्यवहार चल रहा है," छोटे गाव मे यू आनन्द लेना लोगो के मनोरजन का साधन होता है।

लेकिन प्रधानाध्यापिका महोदया की बात से दीपिका चौकन्नी हो गयी थी। ऐसा क्या लिखा होगा, सोचती रही। तीसरे दिन उसने डॉक्टर ओसवाल से अपनी व्यथा कही। फिर अगले दिन उन्होने उसे एक लिफाफा दिया जिसमे पिछले पत्र की एक नकल थी और साथ मे एक अन्य पत्र, जिसमे प्रस्ताव था कि अगर घटना की परिणिति से दीपिका को कोई तकलीफ पहुची हो तो वह जैसी क्षतिपूर्ति कर सकें उसके लिये तैयार हैं। हलचल मचा देने वाले पत्र मे लिखा था—

ऐ फरिश्ता चेहरा,

यह नववर्ष तुम्हे जीवनदायी निर्झर उपलब्ध कराये।

माधव

नीचे पुनश्च का नोट लगाकर लिखा गया था कि यह सदेश तयार करने मे मेरी सारी रात गयी। रात के बारह बजे से बैठा और सुबह के चार बजे तयार हुआ है और एक दस्ता कागज खच हुए।

दीपिका का अगला विचारबिन्दु यह बना कि मूलपत्र मे यह पुनश्च वाला नोट लिखा था या नही परन्तु और अधिक छेडछाड से बचने के लिये उसने किसी से कुछ नही कहा। दीपिका को अपने पिता

की बात याद आने लगी। "कोई सामने आयेगा।" वह सोचती—क्या वह यही हैं ? और फिर छोटे से उस गाव मे ए सी एम साहब से रोज ही मुलाकात हो जाती, अक्सर वह स्कूल से घर के रास्ते में आते या जाते हुए मिल जाते। इसके अलावा आते-जाते मे ही उसे लोगो के फिकरे भी सुनने को मिलते रहते। जिनका भावाथ होता कि उसके उनसे बहुत ही गहरे व रहस्यपूण सम्बन्ध हैं। दीपिका उनके प्रति एक सकोच से भर गयी थी। जब कभी वह डॉक्टर ओसवाल के यहा बैठे होते वह कभी न जाती। परन्तु होली से दो दिन पूव की बात है। दीपिका अपने घर मे बैठी कोई पत्रिका पढ रही थी कि डॉक्टर ओसवाल का चपरासी आया और बोला," "डॉक्टर साहब बुला रहे हैं।" "अभी आती हूँ," कह कर दीपिका ने उसे तो भेज दिया और जब वह अपना पाठ्य पूरा कर रवाना हुई तो ए सी एम साहब ने उसे सडक पर ही बाहो मे भर लिया और उसके चेहरे पर ढेर सारा गुलाल मल दिया। दीपिका डॉक्टर ओसवाल के घर गयी और उनसे गुलाल लिया। "मुझे भी उनके लगाना है," उनसे कहा। डॉ ओसवाल ने कहा, "मैं लगवाता हूँ।" उन्होने माधव छावडा को पकड लिया और दीपिका ने उन्हे गुलाल लगाने की बहुत कोशिश की पर नही लगा सकी। हार कर दीपिका ने जब यह प्रयास छोडा तो उसकी आँखें हल्की-सी सजल हो उठी थी।

"क्या बात है ?" माधव ने पूछा।

"   " दीपिका कुछ नही बोल सकी।

"मुझे गुलाल लगाना है ?" उन्होने पूछा।

दीपिका ने हा मे सिर हिला दिया। उन्होने अपना सिर उसके आगे कर दिया। "जितना चाहो लगाओ पर मुझ से कहना था न कि लगाऊँगी।" दीपिका के दोनो हाथ भरे हुए थे पर उसने बस एक अगुली से एक गाल पर गुलाल छू भर दिया और उनकी बात पर असमजस मे पडकर अपने घर आ गयी।

अगले दिन उसने डॉ ओसवाल से पूछा कि उन्होने कल चपरासी द्वारा उसे क्यूँ बुलवाया था तो उन्होंने कहा, "मैंने तो नही बुलवाया।"

फिर चपरासी से पूछने पर मालूम हुआ कि ए सी एम साहब ने उसे ऐसा कहने के लिये कहा था। इसके बाद दीपिका की माधव से शादी के सयोग बनने लगे।

माधव दीपिका से पढने के लिये कोई पुस्तक माग लेते और वापस न करने। गर्मी की छुट्टिया हो गयी थी। दीपिका इस सत्र मे पत्राचार द्वारा पत्रकारिता एव फ्रेंच भाषा का कोर्स कर चुकी थी और दोनो के प्रायोगिक कार्य–रिपोर्टिग, सम्पादन एव फ्रेंच बोलना सीखने के लिये दिल्ली चली गई जहा वह अपने पिता के एक मित्र के यहा ठहरी। दीपिका की आधी पुस्तकें श्री माधव के घर पहुची हुई थी। दीपिका ने उन्हे लिखा कि वे उसकी पुस्तकें या तो डॉ ओसवाल के यहा छोड दें या उसके मकान मालिक के यहा ताकि वह उन्हे प्राप्त कर ले। उसके प्रत्युत्तर मे माधव खुद वे पुस्तकें देने जीप द्वारा दिल्ली आगये। कुशल समाचार के बाद गपशप के बीच ठडा कोला पीते हुये बोले, "मैं यहा आज, इस शाम तुम्हारे साथ इतनी खुशी अनुभव कर रहा हू जितनी म ने कभी जीवनभर नही की है। क्या हम इसे स्थायी नही बना सकते ?" और दीपिका ने कहा, "मेरे पिता की मृत्यु हो चुकी है आप मेरे भाई से मिल लेना।" तो माधव ने उत्तर दिया, "ये मिलवाना भी तुम्हारा ही काम है।"

दीपिका के पास अब सोचने का अवसर था—वह मुदित भाई को माधव से मिलवाये या नही। वह सोचती रही पर कोई निणय न ले पायी। यहा तक कि छुट्टिया समाप्त हो गयी और दीपिका गाव पहुच गयी। उसने माता सयोगिता से खुलकर बाते की। उन्होने कहा, "कोई मानव का सम्पूर्ण होना तो मुश्किल है और इस लडके मे भी बहुत-सी बुराइया हो सकती है परन्तु यह तुम्हे चाहता है और अगर तुम भी इसके साथ बेहतर, कृतार्थ अनुभव करती हो तो वह बात निर्णायक होनी चाहिये।" यही बात निर्णायक हुई। दीपिका ने मुदित भाई को तार दिया—

"सुविधा से शीघ्रतम आइये।"

वह उनसे मिले फिर उनके गुण अवगुण पर चर्चा हुई और इस शर्त पर कि दीपिका स्वय की जिम्मेदारी पर रिश्ता कर रही है, उन्होने

स्वीकृति दे दी। उन्होने इस बात पर दीपिका का ध्यान आकर्षित किया कि माधव एक चेन स्मोकर हैं, परन्तु दीपिका तो उनकी बीडी सिगरेट पीने की आदत को फैशन मात्र समझती थी। स्वास्थ्य का सबध कभी इससे जोडती ही न थी।

× × ×

विवाह के बाद दीपिका जिस समय माधव के साथ ससुराल जाने के लिये रवाना हुई उसकी मासी तथा भाभी रूपा ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया, "अरे बाईसा हमे छोड चली!" दीपिका को याद था कि वे आये वक्त उसका मजाक बनाती रही, मुदित को उसे पीटने के लिये उकसाती रही तथा एक चपरासी के साथ उसके विवाह की योजना बना रही थी। बोली थी, "पढा लिखा है। किस्मत होगी तो ऊचे ओहदे पर बैठ जायेगा!" और अब जब दीपिका ने अपनी पसन्द का प्रतिष्ठित वर चुन लिया है तो यू रोने का अभिनय कर रही है मानो उनका दिल ही टूट जायेगा। दीपिका को तो आसू जैसी कोई चीज आई नही। उसने अपना सिर नीचे झुका लिया। माता सयोगिता ने भी सजल नेत्रो से उसे गले लगाया। उसकी एक सहेली कामिनी तो कल शाम ही आकर तथा एक भेंट देकर चली गयी थी, और यह नदिता जो आयी थी और दु खभरे भाव अपने चेहरे पर ला रही थी तो इसका कारण दीपिका को मालूम था कि उसे घर वालो द्वारा अ तर्जातीय विवाह करने की अनुमति नही मिल पाई थी। दीपिका हल्की-सी गर्वित थी कि उसने अपन लिये एक उच्चपदस्थ और तेजस्वी पति चुन लिया है लेकिन साथ ही उसके मन मे तनाव भी था कि सुबह की रस्मो के वक्त माधव कही गायब हो गया था—अत उसके साथ देवपूजा की जो रस्मे करनी थी उनके लिये सभी सभावित स्थानो पर खोजने के बाद भी माधव कही नही मिला तो माधव के चाचा श्री सावरेमोहन की सलाह पर ये रस्मे लोटे के साथ सपन्न करायी गयी। इनमे कुल देवता की पूजा के बाद विवाह की शपथो का साराश पुरोहितजी ने सीखो के रूप मे बोला। पहिले देवता का भोग नवविवाहित दम्पति को खाने को कहा गया—जो वास्तव मे उन्हे एक दूसरे को खिलाना था तो दीपिका ने बरफी का एक टुकडा उठाकर मुह

मे रख लिया और एक टुकडा मुरादाबादी कलई युक्त लोटे मे डाल दिया जिसके गले मे बधे कलावे मे माधव के हाथ पर बध कलावे के समान कौडिया पिरोई गई थी।

कमरे मे पुरोहित जी एव उनके सहायक के अतिरिक्त केवल माता सयोगिता थी और थे माधव के चाचाजी श्री सावरेमोहन जिन्होने लोटे को थाम रखा था। जब वर को सीख सुनाने का समय आया तब चाचाजी ने दीपिका के कधे पर जहा वर का हाथ होना चाहिये था, लोटे को रखकर थाम लिया तथा एक सीख पूरी होने पर जहा वर को स्वीकारोक्ति करनी होती थी, लोटे को अगूठे के नाखून से बजा देते थे। फिर उन्होने हाथ मे पाच पैसे का सिक्का ले लिया जिससे वे उसे बजाने लगे। एक सीख होती—(1) श्रेष्ठवर माधव, एक पत्नीव्रती रहना तथा इसे अपनी शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक गतिविधियो तथा सामाजिक क्रिया-कलापो मे बराबर की भागीदार रखना। (दीपिका सोचने लगी पहली बात तो मद दिल से स्वीकार करते नही तथा अन्य भागीदारिया हासिल करने के लिये उसे स्वय को ही जागरूक रहना होगा) लोटा बज उठा था। दूसरी बार जब कहा गया (2) अब यह कन्या दीपिका तुम्हे सौंपी जाती है। अब इसके भरण पोषण की जिम्मेदारी, मान-अपमान का विचार तथा सुरक्षा का दायित्व तुम्हारे है - इसके माता-पिता ने बीस वर्ष तक यह भार उठाया है अब वे इस भार से मुक्त हो गये हैं। (दीपिका के मन मे "कमेंट्री" चल रही थी भरण-पोषण तो स्वय ही करना है—मान-अपमान का ध्यान अपने परिवार मे ता माधव करने से रहा और सुरक्षा व्यवस्था समाज मे काफी अच्छी है—कोई खतरा तो सन्निकट नही) (3) श्रेष्ठवर माधव, दीपिका जो अब तुम्हारी पत्नी है, इस के प्रति स्नेह एव सदभाव रखते हुए व न्याय देते हुए देश एव समाज की रीति-नीति का पालन करते हुए समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु कुलदेवता से आशीर्वाद प्राप्त करो। पडितजी के आदेश पर उसने हाथ जोड कर ढोक दी। (वह सोच रही थी अभी तो शारीरिक आकर्षण ही मुख्य है तथा बाद मे वह अपने स्वभाव के अनुसार सामान्य व्यवहार करेगा। खूब प्यार से रहेगे वे शायद! जैसे अम्मा व पिताजी रहते थे। ऐसे नही जसे कि मुदित भैया व रूपा भाभी रहते है कि खूब जोर-जोर से बोलकर दोनो अपनी बात करें, एक भी चुप होना न चाहे फिर झगडा और रोना-धोना)।

अब पंडितजी ने दीपिका को सीख सुनाना शुरू किया तो एक क्षण के लिये दीपिका ने सोचा कि उसकी सहेली कमल की शादी में कुलदेवता के समक्ष दी जाने वाली सीखो के समय कितना सखी-सहेलियो, बहिनों, रिश्तेदारो का जमघट था। कमल शर्माई-सी खडी थी तथा उसका नवीन पति अशोक काफी सजीदगी से "जी हां," "जी हां," कर रहा था लेकिन वहा पर सालियो द्वारा दी जा रही सीखो ने वातावरण को हास्यापद बना दिया था—"हर महिने एक साडी दिलाना जीजी को", "और एक ट्रिप होटल का भी लगवा कर लाना", फिल्मे प्रति माह कितनी दिखाओगे ?" से शुरू हुई और "हनीमून पर कहा ले जाओगे ? कश्मीर ले कर जाना।" "नही गोवा-ऊटी" जैसी बेहूदा बातें होने लगी तो दूल्हे ने तिरछी नजर से जिधर से आवाज आयी उधर देखा था। तब दीपिका ने कमउम्र होते हुए भी बुजुर्गो वाला काम कर दिया था—"*यह उनका व्यक्तिगत मामला है, ऐसे प्रश्न न पूछें, जीजाजी को गुस्सा आ रहा है*"—मुस्कुराते हुए बोल दी थी वह। उसके दिमाग मे विचार आया, क्या जरूरी है कि दो असमान वस्तुओ मे एक बेहतर या कमतर हो ? क्या जमघट होने पर वातावरण ज्यादा अच्छा होता ? यूं जमघट सुहाने वातावरण का निर्माण भी कर देते है लेकिन बहुत बार लोगो को उसमे अपनी दबी घुटी भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिये भी अवसर व मच मिल जाता है। सीख की शान्तिपूर्ण रस्म पर यद्यपि एक ओर दीपिका माधव की कमी को बहुत तीव्रता से महसूस कर रही थी लेकिन उसने अपने आप को यही कहकर समझा लिया कि उन्हें हमेशा तो साथ ही रहना है, अभी वह कही चला गया है तो क्या ! उसने अपने आप को समझाया कि वह इस घटना को अपने आगामी जीवन का प्रतीक (इगितक) न समझे।

× × ×

उदयपुर मे दीपिका के भाई मुदित गोयल तथा माधव के पिता श्री सीतापतिदास छाबडा के निवास स्थानो मे केवल एक पूण सडक

की दूरी थी जिसकी लम्बाई होगी लगभग एक किलोमीटर। श्री सीतापतिदास का निवास स्थान ऊपर की मजिल मे स्थित था।

कार मे पीछे की सीट पर बाये कोने मे दीपिका बैठी जो कि दायी ओर के दरवाजे से प्रविष्ट हुई थी। उसे लूगडी के ऊपर एक गुलाबी चादर उढायी गयी थी जिसका गठबन्धन उस बडे अगोछा से था जो कि माधव को पडित जी ने तो लिपटवाया था लेकिन माधव ने अभी अपनी सुविधानुसार अपने कधे पर डाल रखा था। माधव पास आ बैठा। अब उसने खिडकी से बाहर देखा तो अपनी सखी ऋचा की आखो को आसूओ से भरे पाया, दीपिका जानती थी कि उसके आसू बार-बार पोछने पर भी क्यू नही रुक पा रहे है। असली कारण यह था कि उनकी सहपाठी कई लडकियो की शादियाँ हो चुकी थी। ऋचा भी इस वष एम ए कर चुकी थी और उसका यह वष खाली जा रहा था। वह नौकरी करने की भी बिल्कुल इच्छुक नही थी फिर भी सोचती थी कि इस पूण सत्र तक शादी-विवाह की बात कही नही बनी तो कोई नौकरी करनी पडेगी—बाबूगिरी या ऐसा ही कुछ। उसकी सबसे बडी बहिन ने अविवाहित रहने का निर्णय ले लिया था, बीच वाली की पच्चीस वर्ष की उम्र मे अब सगाई हुई थी। बाईस वर्षीय ऋचा ऊपर से तो चुप रहती थी यद्यपि उसके तौर तरीके चीख-चीख कर कहते थे कि मेरी शादीजल्दी से जल्दी कर दो।

अन्य लोग मा सयोगिता, मौसी व भाभी रूपा, मौसेरी बहिने उफ भतीजियां रीटा, रीना, जयपुर निवासिनी भतीजी जया तथा उनकी अनेक सखियां भी अनेकानेक भावो मे विह्वल होकर रो ही रही थी और दीपिका सोच रही थी कि कार रवाना होने का निर्णायक क्षण कौन सा होगा कि यकायक एक तीखी आवाज की चीख ने उसे चौका दिया, "नही है!" और साथ ही उसने देखा कि कूदती-फादती, हाँफती "नहीं है भैया!" जुमले को कमतर होते घनत्व के साथ दोहराती हुई, 20 वर्षीय ननद शान्तिदेवी मुदित भाई के घर से निकल कर अपने भैया की दायी ओर की खिडकी पर आकर खडी हो गई। सब लोगो का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो गया।

"कहीं भी नहीं है!" हाँफते हुये शान्ति बोली।

"सब जगह देख लिया ?" माधव ने धीरे से पूछा।

"जहाँ-जहाँ मै देख सकती थी देख लिया।"

"क्या नही है बेटी ?" सयोगिता ने पूछा।

"क्या खो गया ?" रुपवती ने पूछा।

शाति तो सब को यू देख रही थी जैसे कि उन्हे पहचानती न हो। माधव ने थोडे सकुचित होकर उत्तर दिया, "जी, कुछ चीजें थी एक रूमाल मे।"

"क्या चीजे थी ?" सयोगिता ने कुछ अपशकुन जैसा भाँपते हुए पूछा।

"जी कुछ रुपये थे "

"कितने होंगे ?"

"यही करीब चार-पाँच सौ।"

"अच्छा जी। इनकी क्षतिपूर्ति तो हम अवश्य ही कर देंगे।" सयोगिता ने विश्वास से बोला तो दीपिका रूपा भाभी का मुह देखने लगी। उस पर इनके लिये चिन्ता नही थी। दीपिका ने मन ही मन रूपा भाभी को धन्यवाद दिया कि भले ही वह आगे बढकर कभी दीपिका को कोई नयी वस्तु लेने को न कहती हो लेकिन आवश्यक तथा सम्मान हेतु। आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु खर्चा करते हमेशा के समान आज भी नही दुखियाई।

"मै कहाँ बैठूगी ?" शाती बोली।

"आप यहाँ आगे आ जाइये," कार का मालिक व चालक प्रशान्त जो कि माधव का बाल सखा था, बोला।

"नही, वहा तो यह बच्चा मेरे ऊपर पेशाब कर देगा।"

"तुम यहाँ आ जाओ।" माधव जो कि पीछे की सीट मे थोडा दायी ओर था, बीचोबीच हो गया तो शान्तिदेवी बोली, "मै तो पैदल ही घर चली जाऊँगी, है ही कितनी सी दूर ?"

माधव ने आहत होकर शान्ति को देखा। "आ जाओ प्लीज," यह सुनकर शान्ति बडे अभिमान के साथ अहसान करती हुई सी घुसी और एक जोरदार आवाज के साथ कार का गेट बन्द कर लिया।

"चलो।" ड्राइवर को आदेश भी दे दिया उसने और एक झटके के साथ कार चल पडी।

उसने देखा शान्ति तो खिडकी से बाहर मुह निकालकर बाहर ही देख रही है और माधव ने सीट के पीछे सिर टिका लिया था। वह आराम कर रहा था।

दीपिका के दिमाग मे माता सयोगिता के आशीष व भतीजे, भतीजियो, जिन्हे वह अपनी सुविधानुसार मौसरे भाई-बहन भी कह लेती थी, की चुहले गूँज रही थी।

पाच मिनट मे ही माधव का घर आ गया। नीचे दरवाजे पर ही काफी रिश्तेदार पुरुष खडे थे जिन्होने माधव को लपक लिया। दीपिका माधव के पीछे-पीछे ऊपर की मजिल पर चल दी जहा परिवार निवास करता था। सासजी ने विधि पूर्वक आरती उतार कर युगल का स्वागत किया जो दीपिका को बहुत अच्छा लगा।

अदर विभिन्न उम्रो की महिलाओ का जमघट लगा हुआ था। माधव हस-हस कर उनसे परिचय कराते रहे और बीच-बीच मे सासजी उन्हें डाटती भी रही लेकिन माधव उनकी डाट को भी हँसी मे ही उडाते रहे। सासजी मानो मात्र स्वय के सामने ही स्वय को व्यक्त कर रही हो। दीपिका को अपनी माता सयोगिता के डाटने तथा इस डाटने मे फर्क मालूम हुआ। माँ डाटती थी तो उनमे अधिकारपूर्णता तथा के स्वय सही होने का विश्वास होता था—वह गुस्सा आने पर ही एक कडक के के साथ शुरू करती, "क्यो रे सौरभ! तू अपनी बहिन पर हाथ उठाता है? तेरा काम बहिन की रक्षा करना है या स्वय उसे पीटते रहना? देख

वहिन के साथ प्यार से रहा कर। ताकत ही दिखानी है तो खेल के मैदान मे दिखा! अब नही मारना वहिन को," अपनी बात पूरी करते उनके स्वर मे माधुर्य आ जाता तथा सौरभ भी अपनी गलती महसूस कर कर चुका होता। वह रीना से माफी माग लेता और दोनो मे दोस्ती स्थापित हो जाती।

लेकिन यहाँ अपने यहाँ आगत तीन वहिनो के बारे मे माधव दीपिका को सुनाने लगे, "देखो ये तीन वहिनें हैं, शकुन्तला, सीमा तथा सुनीता ये तीना मुझे फासने के चक्कर मे थी, इसलिये शानी से मिलने-जुलने का वहाना बना कर हमारे घर के चक्कर लगाती रहती थी। अभी मैं तो इन तीनो की तुलना कर ही रहा था कि तुमने मुझे फसा लिया। वैसे इन लोगो से रिश्तेदारी अब भी हो सकती है क्योकि इनके दो भाई है—सुनील और सुकान्त। वे भी अपने बहिनो को लेने के वहाने यहाँ आते रहते है जबकि उनका असली उद्देश्य शानी से मुलाकात करना होता है।

दीपिका माधव की वाते सुनकर मन्द-मन्द मुस्कुरा ही रही थी जवकि नौजवान लडकियो का समूह ठहाके लगा रहा था। तव दीपिका यही सोच रही थी कि शायद सामान्य भाई-वहिन ऐसे ही होते होगें, यू ही आपस मे मिलकर मजाक करते होगे और शादी-विवाह के अवसर पर तो इस प्रकार के मजाक करना सामान्य वात है।

सासजी ने कुलदेवताओ की पूजा करायी और फिर गोद भरायी की रस्म करायी। इसमे माधव के चचेरे भाई रघु को दीपिका की गोद मे विठाया गया। माधव ने सगाई के बाद एक बार दीपिका को बताया था कि रघु उसे हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करता है। वह पक्का धूर्त व वेईमान है और फिर फुसफुसा कर बोला था, "असली बात यह है कि इसी ने मेरी जिन्दगी बरबाद की है।" "माधव क्या बात करते हो? तुम्हारी जिन्दगी बरवाद कैसे है?" दीपिका ने वात काटी। तभी माता सयोगिता सब के लिये शवत ले आयी थी। "इस बारे मे म तुम्हे वाद मे वताऊगा।" धीरे से कहकर माधव ने वात वद कर दी थी और बात टल गयी थी। अत अब जव दीपिका ने रघु को देखा तो स्वय ही अध्ययन कर निष्कप निकालने का निश्चय किया कि रघु किस तरह का व्यक्ति है। परन्तु दीपिका को रघु के व्यवहार के अध्ययन का अवसर न

मिला क्यूकि एक हफ्ते तक वह माधव के विभिन्न मित्रो व रिश्तेदारो के यहा उसके साथ सुबह व शाम निमत्रित होती। घर मे रहती तो स्वय को एक अच्छी वधू सिद्ध करने के लिये गृहकार्य को रुचिपूर्वक करती और रघु मुश्किल से ही कभी दिखाई दिया।

दीपिका ने ससुराल पहुचने के दिन तथा अगले दिन स्वागत समारोह तक बडे जोर-शोर से चर्चा सुनी कि सतोष कुमारी अपने आई ए एस पति के साथ आने वाली है। लगभग हर व्यक्ति उनके आगमन के बारे मे पूछ रहा था तथा न आने पर निराशा व्यक्त कर रहा था। दीपिका ने माधव, शानी, श्वसुरजी व सासजी को उसके आगमन की पूछताछ करते हुए सुना। माधव दीपिका को उसका सक्षिप्त परिचय दे चुके थे कि वह उनकी राखी बाध, दीदी की लडकी है। दीपिका ने सोचा सतोष कुमारी का बडा महत्व है इस घर मे—ठीक है।

एक हफ्ते बाद माधव दीपिका को खजुराहो ले गये। उदयपुर मे इस दौरान तक उन दोनो के सबध नही हो सके थे, जिसका कारण दीपिका यही समझती थी कि वहा रिश्तेदारो की रेलमपेल तथा निजी स्थान का अभाव था। खजुराहो मे उन्हे लगा कि वे गलत जगह आ गये है। जब वे मूर्तिया देखने जाते तो एक दूसरे से आखें चुराने लगते और होटल मे उनमे एक खेल होने लगता 'जो पहल करे वो नीचा।' और यह खेल एक प्रतियोगिता की हद तक बढ जाता कि दोनो अपने कामो मे व्यथ मे ही व्यस्त होने लगते। माधव अपने साथ दर्शन शास्त्र की कुछ पुस्तके ले गये थे। वे खाली होने पर उन्हे इतने मनोयोग से पढने लगते मानो अभी इन्हे पढकर, ज्ञान प्राप्त कर दुनिया ही बदल डालेगे। दीपिका आखें मूद लेती तो बत्ती बुझाकर दूसरे पलग पर सो जाते। दीपिका की शादी के लिये काढी जाने वाली दो चादरे अधूरी रह गयी थी। जब माधव भोजन के बाद रात दस बजे विस्तर पर लेट कर सिगरेट फूंकने लगते तो दीपिका अपनी चादर कढाई के लिये निकाल लेती और टाको के लिये धागे के तार गिनने लगती। वह सोचती ये बुलायें तो जाऊ।

और जब तक उसका एक डिजाइन पूरा होता माधव सो चुके होते। फिर दीपिका ने प्रयोगकर निष्कर्ष निकाला कि आराम कुर्सी पर भी रात की नीद ली जा सकती है।

लेकिन शौच, स्नान आदि के लिये इधर-उधर आते-जाते वक्त, नाश्ता खाते वक्त, घूमने जाते वक्त वे दोनो एक दूसरे को वैसी ही गहरी कामना से ताकते रहते जो सगाई के बाद शादी से पहिले उन्हे गुदगुदाने लगी थी। बस, वे अपनी प्रतियोगिता के नियमो का पूरा ध्यान रखते। माधव की निगाहो मे अपने प्रति आकर्षण ही वह भाव था जिसके बल पर दीपिका हँसती थी, मुस्कुराती थी, उससे सारी दुनिया की बाते करती और आश्वस्त थी कि वे आगामी जीवन प्यार से जियेगे।

दसवे दिन जब उनकी रेल वापस उदयपुर की ओर मुड गयी तो माधव सब सामान रखने-जमाने के बाद धीरे से बोले, "हम तो कुछ कर ही नही पाये।" दीपिका ने नजर झुका ली। 'तुम मुझे नाकारा समझती होगी!" दीपिका ने इन्कार मे सिर हिलाया इस भाव के साथ जिसमे माधव के प्रति सम्मान परन्तु उसकी कही हुई बात के प्रति असहमति झलकती थी। "फिर क्या सोचती हो तुम ?"

"आप, हमारे साथ वो जो टीचर हैं महाश्वेता जी, उन्हे जानते हो न! वह तथा उनके पति विवाह के बाद एक माह तक एक दूसरे से बाते भी नही कर सके थे, अभी तो कितने खुश है वे एक दूसरे से! अपन तो बातें भी करते है, साथ बैठ कर हसते भी हैं। म तो एक माह बाद सोचूगी कि क्या मुझे चिन्ता करनी चाहिये।"

"तुम कितनी अच्छी हो!"

"तुम भी तो कितने अच्छे हो!"

"तुम बहुत कोमल हो।"

'कोमल कैसे ? मै तो सब गृहकाय आदि कर लेती हूँ।"

दीपिका माधव की बुदबुदाहट को बोलते के साथ नही, वरन् एक क्षण बाद लेकिन बिल्कुल साफ पकड पायी, "तुम सतोष से भी अधिक कोमल हो।"

उदयपुर होकर, वहा दो दिन ठहरकर दोनो ससुरालो मे मिलकर यह नवयुगल अपने कायस्थल भीमनगर रविवार शाम को पहुँच गया। वहाँ सभी सहकर्मियो, परिचितो ने उनका खुले दिल से स्वागत किया

और साथ मे सभी मिठाई माँगते थे। आगन्तुको के पाच दलो को साथ लायी मिठाई खिलाने के बाद भी जब अन्य लोग माँग करते ही रहे तो बुधवार को सुबह दीपिका ने माधव से पूछा, "आपके पास कुल कितने रुपये है ?"

"चार हजार।"

"मुझे एक हजार चाहिये।"

"कल निकाल दू बैंक से ?"

"कल ही निकालना। आज एक निमत्रण पत्र लिखो जिसके नीचे सबके हस्ताक्षर करा लेंगे।"

"तुम्हारा लेख अच्छा है तुम लिखो।"

"पर मै चाहती हूँ तुम लिखो।"

हथियार डाल कर माधव ने स्वय लिखा।

हमारे एकत्व की खुशी मे हम आप से हमारे घर शनिवार शाम छ बजे प्रीतिभोज मे पधारकर हमे कृताथ करने का अनुरोध करते है।

माधव दीपिका

दोनो ने हस्ताक्षर कर दिये और नीचे अपने सभी मित्रो व परिचितो की सूची बना दी जिनके हस्ताक्षर कराने तहसील का चपरासी तत्काल चला गया।

दावत इतनी जोरदार हुई कि सहकर्मियो मे आगामी कई दिनो तक चर्चा का विषय बनी रही। दावत के दो तीन दिन बाद दीपिका और माधव के घर मे, माधव के कुछ दोस्त व उनकी पत्नियाँ उनसे मिलने आये। सेवक देवदास चाय बनाने लगा और दीपिका उनके लिये उस सग्रह मे से मिठाई व नमकीन निकाल लायी जो उन दोनो की शादी की दावत मे से शेष था। प्लेटें उसने बीच मे मेज पर रख दी। माधव मिठाई की प्लेट उठाते उसे सब मेहमानो के सामने करते हुए घुमा देते और वापस मेज पर रख देते। ऐसा ही वह नमकीन की प्लेट से करते।

दीपिका का बेहद मन था कि वह भी मेहमानो के साथ ये चीजे खाये। परन्तु माधव उसके सामने प्लेट करते ही नही और यूँ खुद ही उठाकर खा लेने का विचार दीपिका को शोभनीय नहीं लग रहा था, अत वह मन मारकर बैठी रही।

जब मेहमान चले गये तो दीपिका बैठक मे रखे दीवान पर लेट गयी। माधव ने उसे अदर चलने को कहा तो बोली, "म नही चलती।"

"क्यूँ ?"

"आप मुझे चाहते ही नही हो।"

"कैसे भई ?"

"आप मिठाई और नमकीन सब मेहमानो को खिला रहे थे, तब मुझे पूछते ही नही थे।"

"तुम्हे खाना था ?"

"हा," दीपिका ने जोर से सिर हिलाते हुए कहा, "आप मेरे सामने प्लेट करते ही नही थे कि मै खा सकती।"

"अच्छा मै अभी खिलाता हूँ तुम्हें।"

माधव ने दौडकर दीपिका को बाहो मे भर लिया और उसके मुह मे बर्फियाँ खिलाने लगे। जबरदस्ती करते हुये उन्होने उसे नीचे बिछी दरी पर लिटा दिया और उसके मुह मे बर्फियाँ ठूसने लगे। एक, दो, तीन, चार और मुट्ठीभर उनके हाथ मे थी।

"देवदास!" "ओ देवदास!!" वह रुक-रुक कर तेज आवाज मे चिल्ला रही थी।

"हाँ जी, मेम साहब ?" देवदास रसोई मे से दौडता हुआ आकर बैठक के दरवाजे पर खडा हो गया था परन्तु उन दोनो की स्थिति देखकर अन्दर आने की उसकी हिम्मत नही हो रही थी।

"जल्दी आओ, देवदास!" अपना मुह एक ओर कर चिल्लाई वह।

"नही देवदास नही आना !" माधव चिल्लाये ।

"जल्दी देवदास, जल्दी !" आखिरकार देवदास ने आने का निश्चय किया ।

"मुझे इनसे छुडाओ देवदास !" उसे देखकर दीपिका चिल्लायी । उसे देखकर माधव खुद ही उसके ऊपर से हट गये थे परन्तु दोनो जन इस घटना पर हसे, बारम्बार लगातार इतना हसे, हसते रहे कि दीपिका की पसलियो मे और माधव के पेट मे दद हो गया ।

उसी रात पहली बार इन दोनो की प्रतीक्षा भी पूरी हुई और वे एक दूसरे से इतने गहरे जुड गये कि दीपिका ने सोचा अब उनका बधन भावनात्मक स्तर पर स्थायी बन गया है ।

बाद मे दीपिका ने समझा कि माधव स्वय दो भोजनो के बीच मे कुछ भी खाना पसन्द नही करते अत ऐसा ही उन्होने उसके बारे मे भी मान लिया होगा ।



भाग–२

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानव विकास का अध्ययन करे तो हम पायगे कि बहुत से व्यक्ति अपने जीवनकाल के प्रथम चरण बचपन से ही अपने मन मे एक व्यक्ति को अपना आदश बना लेते है, और उसी के अनुसार अपने व्यक्तित्व को ढालने लगते है, जैसे कि कोई शिल्पी या चित्रकार अपने सामने मॉडल रखकर अपनी कृति को रचना करता है। इससे व्यक्ति को अपने विकास का एक सुनिश्चित आधार मिल जाता है। परन्तु यह अनुकरण की प्रवति तभी तक साथक होती है जब तक कि व्यक्ति उचित समय पर अपने प्रतिमेय के अनुकरण को अपने व्यक्तित्व विकास मे सहायक एक साधन मात्र समझे तथा प्रतिमेय मे मदित उच्चादर्शो को अपने अन्दर उच्च स्थान दे दे। अगर विकासमान बालक एक प्रतिमेय के अनुकरण को अपना साध्य मान ले तो वह अधानुकरण करने लगेगा तथा प्रतिमेय के गुणो के साथ उसके अवगुणो को भी ग्रहण कर लेगा, ऐसी स्थिति मे नई पीढी के सुनिश्चित विकास का क्रम "ईवोलशन" स्तम्भित हो जाता है—बल्कि उसमे "रिसेशन" आ जाता है जो कि ईवोलूशन का ही एक असुखद लेकिन अनिवाय हिस्सा है। एक अस्वस्थ, विकृत प्रतिमेय मिल जाने पर बालक मे बिगाड की सम्भावना अधिक प्रबल हो जाती है क्योकि विकृत प्रतिमेय के अन्धानुकरण मे एक बाध्यता होती है, क्योकि यह बहुमुखी नही होता। यद्यपि एक स्थिति ऐसी भी हो सकती है कि विकृत प्रतिमेय के विकार को मानसिक धरातल पर समझ कर तथा खुली आंखो से अपने कतव्य-अकर्तव्य के औचित्य को विवेक की कसौटी पर कसकर अनुकर्त्ता अपने को सभालकर सही दिशा मे अपने निजत्व का विकास कर सकता है, तथा स्वय को प्रतिमेय के समान अधे गलियारो मे भटकने से रोक भी सकता है परन्तु इस काय के लिये उच्च नैतिक आदर्शों के प्रति आस्था तथा ठोस

मनोबल की व कम से कम एक सहृदय आत्मीय जन की आवश्यकता होती है। जैसे कि विकृत व्यक्तित्व की माता से बालक को उसका पिता बचा सकता है बशर्ते उसमें इतनी योग्यता व अनुशासन हो कि वह उसे अच्छा वातावरण, अच्छे संस्कार व ऊंचे नैतिक मूल्य दे सके। इन आधारों को जब व्यक्ति अपना सहारा बना ले तो विकृत प्रतिमेय भी उसका स्थायी नुकसान नहीं कर पाता।

माधव के साथ कुछ ऐसा हुआ कि उसे एक विकृत प्रतिमेय मिला—इस प्रतिमेय का अपने आप का घर परिवार में स्थापित करने का सहज सामान्य तरीका यही लगता था कि अपनी पत्नी का मखौल बनाया जाये। उसकी परिवार के प्रति निष्ठा व गहरी सदभावना को कभी स्वीकार न किया जाये, आर्थिक मामलों में कभी उस पर भरोसा न किया जाये और यदि वह कभी अपनी बात के समर्थन में कोई प्रमाण या तक प्रस्तुत करने का प्रयास करने की जुरत करे तो उसे बदजुबान, बेगैरत, जबानदराज और अलेभ्य गालियों द्वारा प्रताड़ित किया जाये। तथा पूर्व में उसने अपनी जो गलतियां स्वीकार कर ली हों उनकी विस्तार से चर्चा की जायें, उनके नाट्य प्रस्तुत किये जायें तथा विभिन्न प्रकार से उसकी भर्त्सना की जाये। उसके चेहरे पर यदि गुस्सा या प्रतिरोध का अंश भी दिखायी दे तो उसकी पिटाई की जाये तथा बच्चों से भी लगवाई जाये। पितृरूपेण प्राप्त इस विकृत प्रतिमेय की अनायास उपलब्धि तथा दूसरी ओर अन्य कोई प्रतिमेय सामने न होने के कारण माधव की, इसी प्रतिमेय के अनुकरण की प्रवृत्ति बहुत आगे तक चली।

श्री सीतापतिदास ने जब अपनी एफ ए तक की पढ़ाई पूरी कर ली तो भी उनको नौकरी मिलने के कोई आसार न दिखे। पढ़ाई करते समय पिता धन भेजते ही थे—यद्यपि श्री सीतापतिदास को यह धन अध्ययन काल में भी उपयुक्त मात्रा में संतुष्टि नहीं देता था। अब बाबूजी को धन के लिये अनुरोध भेजे तो वहां से मझले भैया का विलम्बित जवाब मिला कि नौकरी नहीं मिलती तो घर आकर खेती बाड़ी संभालो। यहां कोई कारू का खजाना नहीं गड़ा है कि तुमको निकाल-निकाल कर भेजते रहेंगे और तुम गुलछर्रे उड़ाते रहोगे और अपने जागृत और जागरूक होने का स्वांग भरते रहोगे। इस पत्र को पढ़ते ही उन्होंने फाड़ दिया। और पत्र न मिलने का भाव अपने दिल में व चेहरे पर धारण

कर अपने गाव फुलेरा पहुचे। गाव जाकर खेती के काम मे अपने आप को खपाने मे उन्ह न तो कोई सतुष्टि महसूस होती थी न साथकता। एक तो शारीरिक श्रम के प्रति विशेप श्रद्धा कभी पनपी न थी क्योकि वचपन से ही बीमार व कमजोर रहे थे तथा ऐसी स्थिति मे ही महत्वपूरण दिखने की प्रवृति घर कर गयी थी। दूसरे, जव कभी गाव जाते और शारीरिक श्रम करने का प्रयास करते ता अपना पूरा दम लगा देने पर भी वे उतना कार्य न कर पाते जितना उनके वरावर के भाई वतियाते हुए सहज मे ही कर लेते थे। जबकि वे पढा लिखा होने के कारण श्रेष्ठतर महसूस करना चाहते थे तथा इन्छुक रहते थे कि दूसरे भी उनकी श्रेष्ठता को स्वीकार करे।

वचपन मे जो भाई उनके अस्वास्थ्य के कारण माता पिता के आदेश पर दौडते भागते उनकी सेवा सुश्रूपा कर देते थे, बडे होने पर वे खेतिहर मजदूरो के साथ मिलकर खेतो को सभालते थे—जमीन को विश्व की जीवनदायिनी माता के रूप मे स्वीकार करते थे और अपने पसीने को ही माता का अध्य मानते थे। वे इस शारीरिक रूप से अशक्त भाई को विशेप नवज्जो न देते थे जो उन्ह अपनी पाठय पुस्तको से रटी हुई सूचनाओ द्वारा प्रभावित करने का प्रयास करता था। वे तो समाचार पत्रो तथा विभिन्न देशी विदेशी सूचना निगमो द्वारा दत्त सूचनाओ के अधिक कायल थे। माता की मृत्यु के वाद श्री सीतापतिदास के पिता से सम्पर्क सूत्र कमजोर पड गये थे।

पत्नी की मृत्यु के बाद से पिता अपने सभी कार्यो के सम्बन्ध मे अपने चारो बेटो मे सवसे वडे रामनारायण से ही सलाह मशवरा करते थे—अपनी रौ मे वह सीतापति के उज्जवल भविष्य के लिये भी अपनी योजनाओ की चर्चा करने लगते लेकिन इस वात पर उनका ध्यान नही गया कि सीतापति के उन्नयन की योजनाओ की चर्चा पर रामनारायण को वह हार्दिक खुशी नही होती थी जो उसकी मा को हुआ करती थी। ये भाई तो मानो आपस मे प्रतिद्वन्दी थे और एक को विशेप सुविधाये प्रदान करने की चर्चा दूसरे को चिढाती व दु खी ही करती थी। रामनारायण अपनी खीज गाव मे उपस्थित दो छोटे भाईयो के सामने व्यक्त कर देते थे। मझला भाई नाथूसिह उनकी राय से इत्तिफाक रखता था दोनो भाई सीतापति के विरुद्ध वार्ता मे शामिल हो जाते और यू सीतापति

के विरुद्ध घर मे मानो एक सयुक्त मोर्चा बन गया था। सीतापति का छोटा भाई सावरे मोहन इन चर्चाओ से अलग ही रहता था उसके दिल की ऐसी धारणा ही नही थी कि वह इस चर्चा को सुनता या उसमे भाग लेता।

अपने गाव फुलेरा मे ठहरने के दौरान सीतापति को शहर मे लिया हुआ अपना कमरा याद आता था—साथ मे मकान मालिक की धमकी भी कि इस माह किराया न मिलने पर तुम्ह घर मे नही घुसने दिया जायेगा और तुम्हारा सामान उठाकर सडक पर फेक दिया जायेगा। उस कमरे के एकान्त मे उन्ह एक उबाऊ सुरक्षा व शान्ति मिलती थी—एक विचित्र लटका सा ठहराव जिसके वह आदी हो गये थे। अत बैठक मे मे जाकर वे झाक लेते और बाबूजी से धन देने की उम्मीद करते। लेकिन जब एक हफ्ता यूँ ही गुजर गया और उन्हे धन देने की बात किसी न भी न की तो एक सुबह वह बैठक मे जाकर तख्त पर बैठे हुये बाबूजी से सिर झुकाकर डरते-डरते बोले, "अगर मेरा घर की जमीन मे से कुछ हिस्सा बनता हो तो दे दीजिये। इसके बाद फिर मै कभी कुछ मागन नही आऊँगा।" बाबूजी कडककर बोले, "जो पिता के जीते जी ही हिस्सा माग रहा है ऐसे कलकी को देखने मे भी पाप लगता है—चल, दूर हो जा मरी नजरो से।"

उन्होने तो यह बात बाबूजी से एका त देखकर धीरे से कही थी इस उम्मीद पर कि बाबूजी उन्ह रोजमर्रा के खर्च मे से ही शहर मे निवास के लिये आवश्यक कुछ धन प्रदान कर दगे—लेकिन पासा उलटा ही पडा। उनके दो बडे पुत्र अभी-अभी उनसे शिकायत कर गये थे, 'यदि खेती का काम किये बिना ही घर मे एक जने को उतनी ही सुविधायें, इज्जत व प्यार मिलता है जितना कि काम करने वालो को, तो यह काम करने वालो के प्रति न्याय नही है।" बाबूजी बैठक मे अकेले इस सवाद के बारे मे ही सोचते हुए बैठे थे जब सीतापति ने उन्ह आकर उपर्युक्त बात कही।

पिता की कटूक्ति सुनकर श्री सीतापतिदास वहा से चल दिये। वह पैदल ही बस अड्डे तक आ गये—जा कि उनकी ढाणी से पाच-एक किलोमीटर दूर था। रास्ते भर सोचते रह, अभी कोई आदमी उनके पीछे

दौडता हुआ आयेगा—"पत्ती भैया ! घरे चालो ! बाबूजी बुलावत है।" सुबह से नहाये भी नही थे। सारा वदन चिप चिप कर रहा था। सोच रहे थे, "क्या गलती की है मने ! बचपन से ही बीमार रहा"—बारह वष का होते-होते प्राथमिक शिक्षा पूरी कर ली थी उसके बाद एक वर्ष खाली रहा क्योकि हाथ मे चोट लग गई थी। उस वष पीलिया ने भी उनका पीछा नही छोडा।

एक दिन जब पिता ने विस्तार से उनसे बाते की और उनसे पूछा कि उन्हे जिन्दगी मे आगे क्या करना है, "तुम अपनी इच्छा, अपने विचार बताओ।" तो उन्होने विचार किया और तभी उन्हे स्वय भी मालूम पडा कि सब कामो मे उन्हे पढना अच्छा लगता था—और दूसरो को सुनाना व समझाना भी ठीक सा लगता था। तभी बाबूजी ने निरणय ले लिया था कि ये बालक परिवार के पुश्तनी कार्य खेती से अलग हटकर कोई पढा लिखा बाबू साहब बनना चाहिये। पिता उनके आगे पढने की व्यवस्था करने के लिये उन्हे ले कर जयपुर शहर गये थे। विद्यालय मे प्रवेश तो आसानी से हो गया था लेकिन असली समस्या उनकी ठहरने की व्यवस्था की थी। सीतापति को विद्यालय मे छोडकर दिन भर खोज कर उन्होने उनके ठहरने के लिये एक छात्रावास पा लिया जिसमे विभिन्न विद्यालयो के विभिन्न कक्षाओ के विद्यार्थी रहते थे—फीस भी उचित थी तथा रहने की व्यवस्था ठीक-ठाक थी। सीतापति को यही पर एक, एक विद्यार्थी के रहने का कमरा मिल गया था। यही उनके एकान्त प्रिय होने की नीव पड गयी थी। यद्यपि वे किन्ही दो विद्यार्थियो मे आपस मे झगडा होने पर—स्वय को चाहने वाले, मानने वाले विद्यार्थी का अपने कमरे मे ठहरा लेते थे।

मैट्रिक पास करने के बाद उन्होने एक मकान मे एक कमरा ले लिया था—लेकिन अब वे नियमित रूप से ताजा भोजन न खाते—अपनी पढाई मे लगे रहते और लेटे बठे सपन देखा करते—अपने आप मे तक वितर्क करते, मेरे साथ ऐसा क्यू हुआ—कभी-कभी जब उनके सहपाठी व यार दोस्त उनके घर आ जाते तो उनके दिल मे उमग उठती और वे गाव से लाये गये घी, तथा अन्य खाद्य वस्तुओ के ढक्कन खोल देते—सभी मित्र पकवान पकाते खाते—आनन्द मनाते, बहसें करते लेकिन एक बात जो श्री सीतापति को हमेशा याद रहती वह यह थी कि उन्हे उनके

अनुकूल उपयुक्त सम्मान कभी कही नही मिला—जिसके कि वे वास्तव मे योग्य थे—न घर मे न बाहर।

किराये जितने पैसे उनके पास थे। वे बिना टिकट लिये ही बस मे बैठ गये और खिडकी के पास बैठकर आखे बन्द कर ली। भावनायें आहत होने पर भी वे ठडा गुस्सा ही कर सके। और उन्हे अपनी इस बात पर भी रोष हो रहा था कि क्यू उनके कान खड हैं श्रमिक भोला या गिट्टू की आवाज सुनने के लिये, "पत्ती भैया घरे चालो। बाबूजी बुलावत है।" मगर बस स्टार्ट हो गयी और सीतापति को उसके गियर मे जाने के शोर के साथ ही लगा जैसे आवाज आयी हो, "पत्ती भैया।" वे ध्यान लगा कर सुनने की कोशिश करने लगे कि सामने बैठी वृद्धा ने खासना शुरू किया और वह इतनी जोर-जोर से खास रही थी कि सारा ध्यान लगाने के बावजूद कि भोला की अगली "पत्ती भैया।" की आवृत्ति हुई या नही, न जान सके।

"क्या बात है?" उन्होने वद्धा को मानो डपटते हुए कहा—तो उसका बेटा मुकाबले मे आखे तरेरते हुए डट गया, "क्या है रे।"

"यह इतना क्यूं खास रही है? इलाज क्यू नही कराता इनका?"

"बीमारी है तो खास रही है—इलाज के वास्ते ही शहर ले जा रहे हैं। अपनी मा बराबर की औरतो से बात करने की तमीज नही सीखा तू।"

"जा-जा।" कहकर उन्होने नाक तो चढा दी और कधे भी झटक लिये। लेकिन दिल पर बोझ कुछ कम नही हुआ—वह पुकार-वास्तविक थी या इच्छाकल्पना, यह भी लबे समय तक उन्हें स्पष्ट नही हुआ।

अब जो समस्या उनके सामने थी, वह यह थी कि कहा जाऐंगे क्यूकि मकान मालिक घर मे प्रवेश करने नहो देता था—उसकी माग थी किराया दो नही तो तुमको घर मे घुसने नही देंगे। क्या खायेंगे और कहा रहेगे? पास मे पैसे नही थे, मस्तिष्क मे यही विचार करते करते मानो एक शून्य पैदा हो गया। शहर मे बस अड्डे पर उतर कर थोडी देर बैंच पर बैठ गये। चार आने अभी जेब [illegible] यही सोच कर चाय न पी कि ये भी बीत [illegible] क्या है [illegible] की निराशा

बढ जायेगी शायद। स्टाल पर उन्हे लोग खाते-पीते, हसते-बतियाते दिखाई दिखाई दे रहे थे। उन्हे सब पर गुस्सा सा कुछ आने लगा और उन्होने दूसरी ओर मुंह फेर लिया। एक छोटी सी बच्ची थी जो अपनी माँ से जिद कर रही थी कि पकौडिया मैं पकडूंगी अपने हाथ मे। जिद करके उसने दोना पकड लिया और एक पकौडी मुंह मे रखकर अपनी टागो को चाटते दो पिल्लो को देखने लगी कि एक बडी कुतिया ने, जो शायद उनकी माँ थी, दौडते हुए आकर उस दोने मे मुह लगा दिया और बच्ची ने चौंककर पकौडियो का दोना छोड दिया और दस-बारह चटनी से सनी पकौडिया बिखर गयी जिन्हे वह कुतिया जल्दी-जल्दी खाने लगी। बच्ची ने डरते हुए अपनी मा को देखा तो उसने आखे दिखाकर उसे डपट दिया। सीतापति को लगा, बडी मूख औरत है जो लडकी को बिगाड रही है। एक चाटे के लायक अपराध पर बच्ची को सिफ डाट रही है।

एक उनकी ही उम्र का लडका था जो अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ पेडे खा रहा था, उनकी नजरे मिलती तो लगता कि एक दूसरे से बध कर रह गयी है, सीतापति ने सोचा, क्या करता होगा यह लडका? इसके हाथ के लिफाफे मे जो पेडे है ये इसने अपनी कमाई से खरीदे हागे या अपने बाप की कमाई से – हो सकता है कि दहेज के पैसो मे से कुछ खचने के लिये निकाल लिये हो। वह इस दृश्य को भी देख न सके और उठकर मद्धिम कदमो से शहर की तरफ चल दिये। एक मोड आने पर मुड जाते या फिर सीधे ही चलते रहते, जहा उनके कदम उन्हे ले जाते उधर ही चल देते। जिधर आवागमन कम होता उधर मुड जाते फिर ऐसी सडक पर स्वय को पाते जहा खूब भीड होती। अनाज मडी के बाहर लगी एक बैंच पर बैठ गये और भीड को देखकर सोचने लगे, "कहाँ जा रहे हैं यह सब? क्या इन सबकी नौकरिया लगी हुई हैं? या इनके पिता ही इनकी व्यवस्था देख रहे हैं?" फिर उन्होने सोचा– क्यू ना शहर के बडे बाग मे जाकर आराम करे। वह बाग तो सारी आबादी का है, कोई भी जा सकता है वहाँ! रास्ते मे देखा, एक मैदान मे बजारो का डेरा लगा हुआ था, फुटपाथ पर बैठे कुछ बजारे भोजन कर रहे थे। बाटी, प्याज-लहसुन का छोक लगी दाल और साथ मे चूरमा भी था। उन्होने महसूस किया कि उनका खाने-पीने का स्तर तो

काफी अच्छा है। उन्हे याद आया उन्होंने काफी दिन से चूरमा नही खाया। तो केवल मकाना का ही अन्तर है क्या गरीब और अमीर इन्सानो मे? आज तो वह इन गाडिया लुहारा मे भी गरीब हैं, गांव मे सम्पन्न पिता हैं तो क्या, हुआ करें! उन्हें क्या लाभ मिल रहा है उनका, और वह अपने पिता के मरने की ही कामना करते रहे, यह भी तो उपयुक्त नही है – अरे वह तो नौकरी करेंगे और आराम से रहेगे। एक पत्नी होगी – बस अडडे पर जो वधू देखी थी, उसकी जैसी या फिर उससे भी सुन्दर। वे भी उसे पेडे ही खिलायेंगे, खासकर घर से बाहर स्थानो पर! अभी लेकिन नौकरी के लिये कितना इन्तजार करना होगा? उनके दिल मे आया कि शिक्षा विभाग या डाकतार कार्यालय जायें जहा उन्हाने अर्जिया दे रखी है लेकिन उन्हे तो भूख के कारण इतना कमजोरी आ रही है कि वे ठीक से बात भी नही कर पायेंगे और ऐसे मे उन्हे वहा वालो ने अयोग्य समझकर आगे भी नौकरी के अनुपयुक्त मान लिया तो? तब तो उनकी जिन्दगी खेतो पर भाइयो का मखौल सहन करते ही बीतेगी शायद—नही, वे तो अब वहा जाने वाले नहीं—माना कि दोस्तो के साथ भी वे बहुत बार घुटन महसूस करने लगते हैं—खासतौर से तब जबकि उनके हाथ मे पैसा नही होता—लेकिन गाव मे तो भतीजे भतीजी की होठो पर व आखो मे भी सवाल होता है कि काकू क्या लाया, क्यूँ आया।

बडे बाग के नुक्कड पर ही बने मदिर मे से ध्वनि विस्तारक पर जो आवाजें आ रही थी वे उन्हे आमन्त्रित करती सी लगी। उस तरफ चले तो बीचो बीच स्थित चौराहे से ही उन्हे दिख गया कि कम्यूनिटी हॉल मे स्त्री-पुरुषो की भीड लगी हुई है। वे सामने ही लगी एक बच पर बैठ गये और सुनने लगे। एक बालक का जन्म दिन था और इस अवसर पर उसके पिता मोतीराम ने साधुभोज का आयोजन किया था। ध्वनि विस्तारक पर आ आ कर लोग बालक को आशीर्वाद दे रहे थे और साथ ही धर्म के सम्बन्ध मे अपने आध्यात्मिक उद्गार भी व्यक्त कर रहे थे।

मच पर साधुओ का एक जमघट लगा हुआ था, सीतापति ने सोचा अगर उन्हें नौकरी न मिली तो वे तो साधु बन जायेंगे—इन्हे भी पता नही कहाँ ठहरना है—कहा, क्या खाना है—लेकिन इस बात की चिंता भी

नही है। इन्होने तो बस उठाया कमडल और चल दिये। लेकिन उन्हे तो अपने मकान मालिक तथा पिता दोनो से ही बीच-बीच मे जाकर यह सूचना प्राप्त करनी होगी कि उनकी नौकरी लगी या नही—क्याकि उन्होने आवेदन पत्र मे अस्थाई पते के खाने मे यहा शहर मे मकान मालिक के घर का पता भरा है और स्थाई पता के खाने मे गाव का पता। पता नही ये लोग कौन से पते पर नियुक्ति पत्र भेज दे, लेकिन वे तो सीधे स्वय विभाग मे जाकर स्वय ही इसे प्राप्त कर लेगे। यद्यपि एक खतरा इस प्रक्रिया मे यह हो सकता है कि यहा का स्टाफ उनसे कुछ चिढ जाये अत वे साप्ताहिक रूप से जाया करेंगे किसी को दिक् नही करेंगे, और हर बार अलग-अलग व्यक्ति से पूछेंगे। लेकिन बीच का वक्त कैसे गुजार—ये साधु जो मच पर बैठ है ये किसी वक्त तो भोजन खाते ही होंगे—चौबीस घटो मे न सही लेकिन कभी तो—उनके मन मे एक विचार आया कि वे भी कुछ दिन उन्ही के साथ उनकी जैसी ही जिन्दगी जिये। व्यक्ति को जिन्दगी मे कुछ अनुभव भी करने चाहिये और हर तरह के अनुभव तो व्यक्ति के वस मे नही—गाडिया लुहार की जिन्दगी थोडे ही बिता सकते हैं वे कुछ दिन के लिये! मच से नीचे आम जनता के लिये बिछी दरी पर बिल्कुल आगे मच के पास जाकर वे बैठ गये।

बाबाओ के भाषणो के दौरान वे पूर्ण ध्यानावस्था मे बैठे रह—उन्हे वास्तव मे ही शाति मिल रही थी और उन्हे अपने व्यक्तिगत दुख बहुत ही छोटे लगने लगे। बाबाओ के अलावा पूव डिस्ट्रिक्ट जज रह चुके श्री असरानी ने एक भाषण दिया जिसमे उन्होन जीवन की सक्षिप्तता तथा व्यक्ति के क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति हेतु उसे बिता देने का उल्लेख किया। अपने कथन के प्रमाण स्वरूप उन्होने अनेक दृष्टात दिये। उनके बाद रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर श्री गिरधर रना ने भी एक भाषण दिया। उन्होने कहा जीव जब भगवान के पास से आता है, पृथ्वी पर जन्म लेता है तो वह भगवान के समान ही निष्पाप व पवित्र होता है लेकिन शीघ्र ही वह पाप करने लग जाता है और एक पाप करके उसका प्रायश्चित करने लगता है। प्रायश्चित पूरा होने से पूर्व ही वह अन्य पाप करने लगता है, उसके पापो की आवृत्ति व गहनता बढती जाती है तथा प्रायश्चित करने मे उसका मन रमता नही अत उनका स्तर व अवधि हल्के व छोट होते जाते है तथा व्यक्ति एक कुचक्र मे फस जाता है और मृत्यु के वक्त उसे अपने जीवन की व्यर्थता का आभास होता है। उन्हाने प्रभु शरण मे

जाने के लिये सयम, उपवास, साधुसगत व भजन कीतन की आवश्यकता पर बल दिया।

फिर कीतन भजन होते रहे। एक मदिर का निर्माण होना था उसके लिये दान दिये गये—सीतापति ने भी दान पेटिका सामने आते पर हाथ से ढककर छेद मे एक इकन्नी डाल दी। आख बद करके बैठे रहे। ठडी हवा चल रही थी जिससे कि वे परमानद को अपने करीब ही महसूस कर रहे थे। जब बहुत से नागरिक उठकर भोजन करने लगे तथा बाबा के पास भीड कम हो गयी तो वे उठे और बाबा के आगे भूमि पर मत्था टेक कर बैठ गये। एक बाबा मच के पिछले भाग मे बठे अनव गृहस्थो, बालक के पिता तथा अन्य सबधी तथा मित्रो को विभिन्न प्रकार के परामश दे रहे थे—यहा पैमा लगा दो—कपडा व्यवसाय तुम्हारे उपयुक्त नही—तुम लोहे के व्यापार मे तरक्की करोगे—अभी लाटरी का टिकट नही खरीदना—एक वप तक साधु भोज की व्यवस्था करो तब ही शायद किसी के आशीर्वाद से तुम्हारी किस्मत चमक सकती है, परन्तु सीतापति ने देख लिया था कि मुख्य बाधा यह तेजस्वी साधु बाबा है जो मच के एक किनारे शान्त मुद्रा मे बैठे हे। सीतापति बाबू उनके सामने जाकर औंधे पड गये। बाबा के कहने पर भी नही उठे। तब बाबा के एक शिष्य ने उन्हे कन्धे पर हाथ रखकर उठाया तो वह दानो हाथ जोडकर घुटनो के बल बैठ गये और जब बाबा ने प्रश्न किया "क्या बात है बच्चा ?" तब उन्होने कहा "बाबा आपकी शरण आया हूँ।"

"कहा से आये हो ?"

"नही मालूम।"

"बात क्या है ?"

"आपकी शरण हूँ एक टूटा हुआ पत्थर का टुकडा हूँ मैं—आप शरण दें तो पारस बन कर दिखा दूँगा।"

"अपने घर परिवार के बारे मे बताओ।"

"मेरा घर है नही और परिवार तो सारी दुनिया है आप मुझे भी अपना बालक बना लें तो आप बाबा हो जायेंगे मेरे।"

उनकी धारणा मे जो पीडा—अनुभूति की गहराई थी वह तो बाबा ने अपने जो पिछले तीन शिष्य बनाये थे उनमे भी देखी थी लेकिन इस युवक मे जो अभिजात्य की तेजयुक्त गारिमा थी उससे तो बाबा भी उसे अपना शिष्य बनाने के लिये लालायित हो उठे। आखो ही आखो मे उन्होने तोल लिया उसे लेकिन प्रगट मे बोले—"मोह छोडना होगा।"

"मुझे किसी से मोह नही।"

"सत्य को धारण करना होगा।"

"आपके निर्देशन मे मैं पूरी कोशिश करूगा।"

"अपने भौतिक पिता को कोडो से पिटते देख सकते हो ?"

"अगर उन्होने इसके लायक कोई काय किया हो।"

"अन्यथा ?"

"अन्यथा एक किसी अन्य मानव के समान उन्ह बचाने जाऊगा।"

"अच्छा, अब बाद मे बात करेंगे।" कहकर उन्होने उसे अपने एक शिष्य को सभला दिया, "इसे भोजन कराओ।"

× × ×

यू श्री सीतापति बाबू बाबा दर्शन मुनि के साथ जुड गये। बाबा की विशेष सेवा के रूप मे वे उन्हे समाचार पत्र पढकर सुनाते, देश विदेश मे हो रही घटनाओ की जानकारी देते, विस्तार से उनकी व्याख्या करते, और बाबा के ध्यानमग्न होने के वक्त अन्य शिष्यो तथा नागरिको को दूर रखते। इस प्रकार वे बाबा के एक प्रिय शिष्य बन गये। वे बाबा दर्शन मुनि के साथ एक से दूसरे नगर, गाव, विभिन्न स्थानो पर घूमते रहे। उन्हे कभी-कभी याद आता था कि उन्होने नौकरी के लिये आवेदन पत्र भरा था जिसमे उन्होने बाबूगिरी तथा शिक्षण व्यवसाय, दोनो ही विकल्प भर दिये थे।

वे सोचने लगते कि अगर बाबूजी ने उन्हे घर से निकलते देख लिया होता तो ! अगर उनके कामगार भोला ने उन्हे उस दिन रोक लिया होता तो ! ऐसा होने पर नौकरी लगने तक वे अपना समय कहीं भी बिता लेते। और उन्हे श्री श्रीनिवास बाबू याद आते जो उनसे अपनी पुत्री के रिश्ते के लिये पिताजी के पास गाव मे कई चक्कर लगा चुके थे तथा एक बार शहर में उनसे स्वय से भी मिल चुके थे। सीतापति बाबू को याद आता कि अगर उन्होने उमगित होने पर भी "मन मन भावे, मूड हिलावे" कहावत को चरिताथ करते हुये मुह लटका कर यह उत्तर न दिया होता कि इन बातो के बारे मे तो पिताजी ही निर्णय लेंगे—और एक बार उनकी कन्या को यू ही देख लेने के उनके आग्रह को स्वीकार कर लिया होता तो शायद वे कमजीवन की ओर प्रवृत होने की ओर अधिक साहस व प्रेरणा के साथ डट गये होते। या फिर क्या पता ऐसा नही भी हुआ होता ! क्या पता क्या हुआ होता ! अब तो स्थिति यह थी कि बाबा दशन मुनि उन्ह कुछ अधिक चाहने लगे थे। इसके साथ ही, उनके पूव शिष्य जा उनके स्नेह के केन्द्र रहे होगे, वे उनको टेढी नजर से देखते थे। पिछली बार जब उनकी मण्डली लगभग एक सप्ताह एक मदिर के अवशेषो मे ठहरी थी तो कुछ साधु बाबाओ को अगरखा तथा ओढने की चादरो मे बस्ती से आटा, दाल, आलू, मसाले माग कर लाते देखा था तो उन्ह यह सोचकर दुख हुआ कि यह तो एक प्रकार की भिक्षावृत्ति हा गयी जिसके वह बहुत पहिले से खिलाफ थे तथा विरोध मे बोलते नही अघाते थे वे तो बाबा दशनमुनि से मिलने के पहिले दिन को ही एक आदश स्थिति के रूप मे स्वीकार करते थे कि कोई धनी सेठ हो और बाबाओ की दिव्य आध्यात्मिक दृष्टि के कारण उन्ह सादर निमत्रित करे और और उनके वचनो को, उनके विचारो तथा जीवन के अध्ययन के निष्कर्षो को गहन निष्ठा एव सम्मान के साथ सुने तथा श्रद्धा पूर्वक उन्हे जो धन दे वही ग्राह्य है। यू कुछ साधु हस्तरेखा विज्ञान, मस्तक रेखा विज्ञान मे भी पैठ रखते थे—और इस कौशल द्वारा धन कमाना यद्यपि श्री सीतापति बाबू की एक नियमित अध्यवसाय के रूप मे पसद नही था लेकिन यह भिक्षावृत्ति से तो कहीं बेहतर लगता था।

सामान्य दिनचर्या क बीच जब उनके दिल पर कोई ठेस पहुचती ता वे सोचते कि अगर वे नौकरी कर रहे हाते तो उनका कितना सम्मान

होता - शादी भी हो गयी होती और बच्चे भी देर सवेर हो जाते—क्या तब उनकी जिंदगी बेहतर न होती ? पता नही ! नौकरी मे भी तो कितने तनाव, डाट, बधन होते ! शायद दूर के ढोल सुहावने ही लगते हैं। फिर उन्हे लगता कही ऐसा न हो कि किसी दिन वे भी बाबा दशन मुनि के दिल से दूर हो जाये या दूसरे शिष्यो के उक्साने पर वे उन्हे, आटा आदि राशन वस्ती मे से माग कर लाने के लिये कहे। कभी वे सोचते उनका नौकरी का नियुक्ति पत्र आ चुका होगा और उनको पिताजी खोज रहे होगे। उन्ह हसी आती कि उनकी बुआ जिनकी पाच पुत्रिया थी, पिताजी से कह रही थी, "तुम्हे क्या चिन्ता है ! तुम्हारा दस हजार का चैक तो यह सीतापति है। बस ऐश करो। हमारा हाल यह है कि जितना रुपया दो साल मे मरखप के जोडते हैं वह सब उड जाता है—कर्जे से लद जाते है और अगली लडकी के लिये फिर चिन्ता ! लडका ढूढो, रुपया जोडो हमारी तो यू ही बीतेगी।"

यू ही दुविधा सुविधा की आवृत्तियो के बीच उनके दिन बीतते रहे रहे जबकि एक दिन उन्हे महसूस होने लगा कि यह साधु मण्डली तो बाबा दशन मुनि का एक धन्धा है अन्य किसी व्यवसाय की तरह ! वैसे तो इस मडली मे भी विभिन्न कार्यो के हुनरमद लोग है। उनक हमउम्र गोविन्द बाबा एक कपडे के टुकडे व एक कमडल पानी मे धूल धूसरित चबूतरा को एक सुथरा विश्राम स्थल बना देते थे। नन्दन बाबा कितने कुशल हाथो से झटपट बढिया रसोई बनाते है ! चार ईंटो का चूल्हा जला कर, धुली जमीन पर आटा माड लेगे और हाथो से ही रोटी को गोल आकार दे देगे। मटका, या सुराही के टुकडे के तवे पर सेक लेगे और बडे कमडल मे दाल साग बनते रहेगे। पहली बार जब उन्होने यू रोटो बनते देखी ता वे खा ही न सके थे। उस दिन तो उन्होने उपवास कर लिया था और किसी ने उनके उपवास करन पर कोई चिन्ता, आपत्ति या आश्चय व्यक्त नही किये थे। बाबा दशन मुनि ने भी नही पूछा था। तब उन्हे लगा कि यहा रूठे तो मनुहार करने वाला कोई नही। यहा का प्यार घर से अलग प्रकार का तो होना ही है।

यह मडली सदा चलायमान रहती थी। असल मे ये सभी मानो एक पैदल दौरा कर रहे होते थे जिसके बीच-बीच मे गाडी मे बैठ लेते थे। मुख्य नगर आता तो आश्रमो मे निवास कर लेते अन्यथा नगर बाहर

साबुन छीजता रहता जब तक कि इसका अन्त न आ जाता। जो साधु शुरू मे अपने कपडे धोते वे अधिक मात्रा मे अपनी धोती और चादर दोनो मे लगा लेते और अच्छी तरह से अपना कार्य सम्पन्न कर पाते जबकि बाद वाले अपना एक ही कपडा धो पाते थे। बाबू सीतापति दास तो अपने कपडे एक माह तक न धो पाये जबकि औसतन साप्ताहिक रूप से यह कार्य आयोजित किया जाता था। चूकि उनको सयोगवश नये वस्त्र दिये गये थे इसलिये वे मलिन दिखाई न देते थे।

भगवा धोती व चादरो के अलावा कुछ रामनाम लिखे हुए तथा राधाकृष्ण लिखे हुए अगोछे भी उनके पास थे जिन्हे वे अत्यन्त पवित्र समझते तथा कधे पर ही लटकाते थे—आवश्यकतानुसार सिर पर डाल लेते थे लेकिन उन्हे शरीर के निचले भाग पर डालना या छुआना भी निषिद्ध था। सभ्य समाज मे सादर निमन्त्रित होने पर बाबा दर्शन मुनि उन्हे कन्धे पर डाल लेते। कुछ भगवा धोती व चादरें अतिरिक्त रखी जाती थी जिनमे राशन, पैसे बाध कर कधे के पीछे लटका लिये जाते। एक भगवा चादर मे गीता, भागवत एव विभिन्न पुराण लिपट रहते। श्री सीतापति दास बाबू ने बाबा दर्शन मुनि से पेशकश की थी कि एक से दूसरे स्थान तक जाते हुए वे इसे थाम ले, तो बाबा ने सहर्ष उन्हे अनुमति दे दी थी वे बाबा के अकेले पढे-लिखे शिष्य थे।

कभी-कभी सीतापति दास पढने लगते और बाबा दर्शन मुनि आखे मूदकर बैठ जाते या फिर कभी लेट ही जाते। सीतापति के आग्रह पर कभी-कभी अखबार खरीद लिया जाता जिसको वे शब्दश पढते और बाबा दर्शन मुनि को सुनाते। हा, जब किसी के यहा मृत्यु हो जाती तो गरुड पुराण पढकर सुनाने का काम बाबा दर्शन मुनि ही करते। अगर बाबू सीतापति से विकल्प मागा जाये यानि उनकी पसद का कार्य करने के बारे मे पूछा जाये तो वे यही करना पसद करेगे। इसकी चर्चा मे भी काफी तार्किकता एव गहराई है तथा सम्मान एव धन प्राप्ति भी है—इस प्रकार वे बाबा दर्शन मुनि के एक सही उत्तराधिकारी हो सकते है अगर उन्हे थोडा प्रशिक्षण दिया जाये। वह डरते थे तो इसी बात से कि कही उन्हे कोई जान पहचान वाला मिल गया तो ! तो वे उससे रुख ही नही मिलायेगे। मकान मालिक मिल गया तो !! वे तो कही भी जाये जयपुर कभी नही जायेगें।

होने पर मदिरो मे या मदिरो के अवशेषो मे यह मडली ठहर जाती। नदी किनारे जाकर सभी निवृत हा लेते। शौच, दातन कुल्ला, स्नान, तिलक घिसना, लगाना, कपडे धोना सभी काय नदी के किनारे पर ही किये जाते थे। इन सब शारीरिक क्रियाकलापो के मध्य भी वातावरण पूर्णतया आध्यात्मिक ही बना रहता था। तिलक घिसने मे यह मडली काफी समय लगाती। घाट पर एक पत्थर पर तिलक के लिये चदन घिसते रहो और जनता की बातें सुनते रहो। बाबा दशन मुनि की दिन-चर्या मे गीता, भागवत एव विभिन्न पुराणो का पढा जाना या सुनना तथा धम चर्चा एक आवश्यक हिस्सा थी।

कभी-कभी यह साधु मडली अपने कपडे धोती। सभी साधुओ के पास एक-एक भगवा धोती तथा एक एक भगवा चादर होती। वे धोती को कमर मे बाध कर टागो तक के हिस्से को ढक लेते एव भगवा ही रग की चादरा को ओढे रहत। कपडो की कमी हो जाती तो एक साधु एक ही कपडे से अपना काम चलाता यानि आधा हिस्सा कमर पर बाधकर आधे से अपने शरीर का ऊपरी हिस्सा कधो से या फिर सिर से ढक लेता।

एक साधु नहा लेता फिर सूखी भगवा धोती धारण कर अपने पिछले धोती व चादर धो लेता एव सुखाने के लिये घाट की दीवार पर डाल देता या बाध देता। दूसरे तब तक योगासन की मुद्रा मे ध्यान लगा कर बैठे रहते। कुछ साधु जल मे गोते लगाते रहते। एक के साबुन लगा चुकने पर दूसरा साधु उस साबुन को लपक लेता और इस प्रकार एक के बाद एक साधु यू ही अपने कपडे धोते रहते जब तक कि इकन्नी मे खरीदे या अन्यथा प्राप्त किये गये साबुन का अन्त न आ जाता। श्री सीतापति दास इस काय मे सकोची थे—वह आगे बढ कर साबुन न ले पाते। वे तो बीच-बीच मे दो तीन बार साबुन की ओर आख उठाकर देख भर लेते। उनकी तो शुरू से ही ऐसी आदत नही रही कि लपक कर वे कोई चीज उठाकर खा लें या सग साथ मे मे झपट कर कोई वस्तु का उपभोग कर लें तथा दूसरो को उससे वचित कर दे। लगभग ऐसी ही स्थिति तब होती थी जब उनके भाई एक के बाद एक करके गुसलखान मे जा जा कर नहा आते। वे उस पक्ति के आगे, पीछे, बीच कही भी अपना होना सहन न करते। वे तो बडी तसल्ली के वक्त ही नहाने का सोचते जब गुसलखाने आसपास भी कोई न होता।

साबुन खीजता रहता जब तक कि इसका अन्त न आ जाता। जो साधु शुरू मे अपने कपडे धोते वे अधिक मात्रा मे अपनी धोती और चादर दोनो मे लगा लेते और अच्छी तरह से अपना कार्य सम्पन्न कर पाते जबकि बाद वाले अपना एक ही कपडा धो पाते थ। बाबू सीतापति दाम तो अपने कपडे एक माह तक न धो पाये जबकि औसतन साप्ताहिक रूप से यह काय आयोजित किया जाता था। चूकि उनको सयोगवश नये वस्त्र दिये गये थ इसलिये वे मलिन दिखाई न देते थे।

भगवा धोती व चादरो के अलावा कुछ रामनाम लिखे हुए तथा राधाकृष्ण लिखे हुए अगोछे भी उनके पास थे जिन्हे वे अत्यन्त पवित्र समझते तथा कधे पर ही लटकाते थे—आवश्यकतानुसार सिर पर डाल लेते थे लेकिन उन्हे शरीर के निचले भाग पर डालना या छुआना भी निषिद्ध था। सभ्य समाज मे सादर निमन्त्रित होने पर बाबा दशन मुनि उन्हे कधे पर डाल लेते। कुछ भगवा धोती व चादरें अतिरिक्त रखी जाती थी जिनमे राशन, पैसे बाध कर कधे के पीछे लटका लिये जाते। एक भगवा चादर मे गीता, भागवत एव विभिन्न पुराण लिपट रहते। श्री सीतापति दास बाबू ने बाबा दशन मुनि से पेशकश की थी कि एक से दूसरे स्थान तक जाते हुए वे इसे थाम लें, तो बाबा ने सहर्ष उन्हे अनुमति दे दी थी वे बाबा के अकेले पढे-लिखे शिष्य थे।

कभी-कभी सीतापति दास पढने लगते और बाबा दशन मुनि आखे मूदकर बैठ जाते या फिर कभी लेट ही जाते। सीतापति के आग्रह पर कभी-कभी अखबार खरीद लिया जाता जिसको वे शब्दश पढते और बाबा दशन मुनि को सुनाते। हा, जब किसी के यहा मृत्यु हो जाती तो गरुड पुराण पढकर सुनाने का काम बाबा दशन मुनि ही करते। अगर बाबू सीतापति से विकल्प मागा जाये यानि उनकी पसद का काय करने के बारे मे पूछा जाये तो वे यही करना पसद करेगे। इसकी चर्चा मे भी काफी तार्किकता एव गहराई है तथा सम्मान एव धन प्राप्ति भी है—इस प्रकार वे बाबा दर्शन मुनि के एक सही उत्तराधिकारी हो सकते है अगर उन्हे थोडा प्रशिक्षण दिया जाये। वह डरते थे तो इसी बात से कि कही उन्हे कोई जान पहचान वाला मिल गया तो ! तो वे उससे रुख ही नही मिलायेगे। मकान मालिक मिल गया तो !! वे तो कही भी जाये जयपुर कभी नही जायेगे।

उन्हे कभी-कभी लगता कि बाबा दर्शन मुनि उन्हे प्रशिक्षित कर भी रहे हैं। सीतापति जो भूख का इतना कच्चा हुआ करता था कि कड़की आने से पहिले ही अपने कमर पर गुड व भुने चने लाकर रख लेता था, कभी भोजन न पका पाये तब भी ऐसी ही फुटकर खाद्य वस्तुओं का उपभोग कर काम चलाता था, वह बाबा दर्शन मुनि को कई दिनो के उपवास के बाद भी अल्प मात्रा मे निर्लिप्त भाव से भोजन ग्रहण करते देखता मानो यह कोई द्वितीय श्रेणी का निम्नतर कार्य हो तो स्वयं भी अनजाने मे ऐसे अभ्यास करने लगता।

नाथद्वारा मे एक धनी गृहस्थ ने बाबा दर्शन मुनि को अपने घर भोजन पर आमन्त्रित किया। पहिले तो खुली चर्चा होती रही जिसमे बाबा दर्शन मुनि अब राजनीति को शामिल करने लगे थे। यह बात सीतापति दास ने अनोखी ही देखी थी तथा इसकी ओर इंगित किया तो बाबा दर्शन मुनि ने उनका आभार व्यक्त किया और कहा कि तुम मेरे पहिले शिष्य हो जिसने मुझे ताजा अखबार खरीदकर पढ़कर सुनाया है। इससे मेरे मन मे नये-नये कर्म की ओर प्रवृत होने के भाव जागृत होते हैं, मुझे बहुत कुछ विचार करने पर बाध्य कर देते है ये समाचार। पता नही यह अच्छा है या बुरा लेकिन पूर्व की अपेक्षा अन्तर तो मुझ मे आ ही गया है, यह मै प्रत्यक्ष देख रहा हूँ। हमारे स्थूल, सूक्ष्म, और दिव्य शरीर सभी का अगर कोई उपयोग होना है तो वह यही होना चाहिये कि उससे अन्य व्यक्तियो का, समाज का भला हो और मेरे अन्तर मे अब ऐसी अनुभूतिया होने लगी है कि मै देश की आजादी के लिये संघर्ष मे शामिल हो जाऊ यद्यपि मै अभी किसी पक्के निर्णय पर नहीं पहुँचा हूँ।

अंग्रेजी स्टाइल की मेज पर जब विभिन्न षटरस सुस्वादु व्यंजन परोसे जा रहे थे जिनमे से शुद्ध घृत व अन्न की सौंधी महक उठ रही थी तो एक ओर जहा सीतापति के मुह मे पानी आ रहा था वहीं दूसरी ओर बाबा दर्शन मुनि निर्लिप्त भाव से बैठे थे। सोफे पर बाबा दर्शन मुनि थे तथा गृहस्थ के समान कुर्सी पर बैठे सीतापति बाबू इन्तजार कर रहे थे कि कब व्यंजन लाने का काम पूरा हो और कब उनसे उधर जाने का आग्रह किया जाये—यद्यपि वह उधर न देखकर अपने दोनो साथियो की ओर ही देख रहे थे।

जब बाबा दशन मुनि की ओर मुखातिब होकर गृहणी ने आदर-पूर्वक निवेदन किया, "चलिये, भोजन करने पधारिये," तो सीतापति चकित हो गये जब उन्होने कहा, "नही, हम नही खायेगे," और सीतापति की ओर इशारा कर कहा, "बस ये ही खायेगे।"

"स्वामीजी थोडा सा ।"

बाबा दशन मुनि ने ऐसी कठोर दृष्टि से घूरा उन्हे कि मानो कह रहे हो, "तुम्हारा दुस्साहस कैसे हुआ बहस करने का !" गृहणी मानो आतंकित सी हो गयी। सीतापति को लगा यह शोभनीय तो नही कि किसी भद्र महिला को यू ताडित किया जाये।

दो क्षण मौन रहने के बाद बाबा बोले, जेसे स्पष्टीकरण माँग रहे हो, "थोडा सा क्या ?"

भीत महिला एक डरे हुये बच्चे के समान सिर झुका कर बोली, "थोडा सा खा लेते आप।"

वितृष्णा से साँस छोडते हुए बाबा दर्शनमुनि ने अपनी आँखे बन्द कर ली। और गृहिणी अपने दुस्साहस पर पश्चात्ताप के कारण सकोच एव अपराध बोध से पीडित हुई सिर झुकाये कुछ देर तक खडी रही फिर अन्दर चली गयी।

बाबू सीतापति भोजन पर तो बैठे क्यो कि वे दो दिन से भूखे थे, और कुछ देर से आतें कुलबुलाने लगी थी। लेकिन न तो खीर न दही-बडे न किसी अन्य व्यजन मे उन्हे वह स्वाद आया जो आया करता था। सब कुछ बेस्वाद सा लग रहा था। यद्यपि धीमे स्वर मे बोलते हुए गृहपति उन्हे परोसने के लिये प्रस्तुत थे तथा व्यजन उनकी ओर बढा-बढा कर उनकी मनुहार कर रहे थे लेकिन भोजन बाबू सीतापति के तो गले मे ही अटका जाता था, नीचे उतरता ही न था। उन्हे लगा कोई बात है जिसके कारण वे अब और न खा सकेंगे।

हाथ धोने के लिये उठ गये सीतापति। भोजन के बाद जब वह तथा गहस्वामी बाबा दर्शनमुनि के साथ बैठक मे बैठे तो उनमे कुछ बातें और भी हुई लेकिन उनमे वह रवानी न थी जो कि भोजन पूव की वार्ता मे

थी। अब उन्हे मदिर जाना था और बाबा दर्शन मुनि पैदल ही जाना चाहते थे। गृहपति की कार, जिससे वे लोग वहाँ से आये थे, का उपयोग करना न चाहते थे। काफी चलने के बाद जब मदिर सामने दिखने लगा था तब गृहपति ने कुछ डरते हुए से पूछा, "स्वामी जी, आपने खाना क्यो नही खाया था ?" तो उन्होने बडी ही आसानमुद्रा मे जवाब दिया कि ऊपर से आज्ञा नही आयी थी। उनके लहजे से प्रभावित होकर गृहपति ने पूछ ही लिया, "कैसे होती है आज्ञा ?"

"बेटे, दाँयी तरफ का नथुना खुल जाता है।"

गृहस्वामी उन्हे चकित हो कुछ देर निहारता रहा फिर बोला, "अच्छा, स्वामी जी आप फिर पधारियेगा। म कल फिर आऊँगा," कहते हुए स्वामी जी की ओर नजर उठाकर, फिर उनकी पालागन कर वह मुडा ही था कि बाबू सीतापति ने उनमे मदिर के बाहर ही चबूतरे पर बैठने का आग्रह किया और जब वह बैठ गये तो पूछा,

"बाबा, आपने खाना क्यो नही खाया था ?"

"अभी इसका उत्तर क्या तुमने नही सुना ?"

"मै विस्तार से जानना चाहता हूँ।"

"देखो बेटे, भोजन जो जीभ के स्वाद के लिये किया जाय वह तासीर मे गरिष्ठ और मात्रा मे ज्यादा हो जाता है। जीभ जिससे हम स्वाद लेते है वह भी हमारी एक इद्रि है और किसी भी एक या अनेक इद्रियो के गुलाम हो जाना मानव को पतनोन्मुख बना देता है। इन्द्रियाँ घाड है और मस्तिष्क सारथि। अगर हम इन्द्रियो के गुलाम हो कर स्वादिष्ट भाजन की लालसा रखेंगे तो उसी की व्यवस्था करने हेतु हमार प्रयत्न होने लगेंगे। आखे चाहे कि हम सुदर दृश्य देखने हैं ता हम तो सिनेमा और अग्रेजो के घरो की सजावट देखने चल देंगे फिर इनकी व्यवस्था तथा प्रयत्न मे ही हमारा समय व शक्ति लगेंगे लेकिन हमे मानव जीवन के औचित्य व सार्थकता पर विचार करना है तो इन लालसाओं का मोह तो छोडना ही होगा।"

"बाबा, हम सिनेमा व सजावट का मोह तो छोड देंगे, लेकिन भोजन तो एक आवश्यकता है।"

"हूँऽहूँ" सशब्द व सप्रेम मुस्कुराये बाबा। "बेटे भोजन मे शक्ति है, यह सच है, लेकिन, भोजन तो दिन मे एक बार खाने से काम चल जाता है। भोजन से अधिक शक्ति पानी मे है। पानी पीकर हम कई दिन गुजार सकते हैं। पानी से ज्यादा शक्ति हवा मे है। हवा के बिना हम कुछ मिनट भी नही रह सकते लेकिन इन सभी से ज्यादा शक्ति परमपिता परमात्मा परमेश्वर भगवान में है। हम अपने शरीर व मन को पूर्ण सयम से अनुशासित करके, उस पर श्रद्धा एव विश्वास रखने पर ही उसकी अनुभूति कर सकते है। जब आत्मा शुद्ध होकर परमात्मा की इच्छा से मिल जाती है तो चमत्कार होते है।"

बाबू सीतापति उनकी ओर मन्त्रमुग्ध होकर देख रहे थे। ऐसा नही कि भारत मे रहते हुए उन्होने ऐसी बाते सुनी न हो लेकिन उनको स्वय पर अनुभव करते हुए—अपने ऊपर झेलते हुए वे बाबा दशनमुनि को ही देख रहे थ।

"बाबा, अभी आप क्या अनुभव कर रहे है ?"

बाबा की आँखे बन्द थी, उन्होने खोली तो सीतापति को उनमे दृढ निश्चय दिखाई दिया। एक क्षण वे सीतापति को ध्यानपूवक देखते रहे जैसे तोल रहे हो कि इसमे सुनने की ताव है भी या नही। फिर बोले, "गाँधी नाम का जो व्यक्ति है उसकी शरण मे जाऊँगा मै।"

"क्यो ? कैसे ?" सीतापति फिर चकित थे।

"कैसे म नही जानता, लेकिन इसलिये कि वह, मुझे लगता है, परमात्मा द्वारा प्रेरित इन्सान है। वही हमारे समाज को इस हीनता की स्थिति से निकाल कर स्वाभिमान दिलायेगा।"

अब सीतापति के सोचने की बारी थी कि उन्हे अब आगे क्या करना है, बाबा दशनमुनि के पीछे गाधी जी की गोद मे जाना है या कोई और राह पकडनी है, इसके बाद एक लबा अतराल सीतापति का अनिर्णय की स्थिति मे बीता।

नाथद्वारा मे निवास का वह एक दिन उन्हे लबे समय तक याद रहा। जब बहुत दिनो तक बाबा दर्शनमुनि सीतापति को उदासीन से

लगते तब वह उस दिन को याद कर लेता और उसे जिस महत्त्वाकाक्षा की झलक ने कभी उत्तेजना पूर्ण खुशी दी थी कि वह शायद बाबा दशन मुनि की गद्दी प्राप्त कर लेगा, अब उसे विशेष रोमाचित न करती।

× × ×

सीतापति के मस्तिष्क मे अब तीव्र मथन होने लगे कि स्वय उन्हे अब क्या करना है। ठीक है, गाधीजी के अनुयायी वह भी बन सकते है लेकिन कोई रोजगार, कोई धन्धा तो उनके पास होना ही चाहिये। गाधीजी कोई धर्मादे खाता तो खोले नही बैठे कि मुफ्त मे उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओ की पूर्ति करते रहेगे। बाबा दशनमुनि की बात और हे, उनको चाहने वाले, सम्मान देने वाले धनी सेठ इतने है कि उनके लिये अपनी मामूली आवश्यकताओ की पूर्ति कोई मुश्किल काय नही।

सयोगवश अगले ही माह उनका जयपुर जाने का कायक्रम बना। उन्होने बाबा दशन मुनि को इससे विरत करने की कोशिश की तो उन्होने जवाब दिया, "तुमने कितना साधुत्व अर्जित किया हे उसकी पहचान अपने पूव-परिचितो के बीच मे ही होती है। जो लोगो से डर कर अपने को अ धकार मे छुपाता रहे वह कैसा साधु है।" निर्लिप्त भाव से बाबा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया उन्होने।

और उन्हे आश्चय हुआ कि बाबा दशन मुनि के प्रवचन जहा श्रीनाथ जी के मदिर के सामने के खुले मदान मे रखे गये थे वही पर उन्होने अपनी पूव मकानमालकिन को देखा। दिल से डर निकाल चुके थे—जयपुर आने से पहले ही सोच लिया था—उन लोगो से सामना होगा तो निर्विकार, निर्लिप्त भाव से कह देंगे कि उनके पास से तो मकान की चाबी खो गयी है। ताला तुडवा ले और उसम जो सामान, वतन, कपडे, स्टोव, राशन, पुस्तके है—उनमे से जो काम आ सके उसे रख लें तथा

जो व्यर्थ लगे उसे बेच दें तथा इस सामान तथा उससे प्राप्त मुद्रा को किराया समझ कर रख ले। उनकी गलतियो को माफ कर दे तथा उन्हे भूल जायें। लेकिन जैसे ही उन्होने उन्हे देखा वह उठ कर मच के पास आयी और बोली, "इधर आओ", श्री सीतापतिदास तो सोच रहे थे कि उनके मकानमालिक लोग उनके प्रति गुस्मे मे फनफना रहे होगे लेकिन इनकी मुद्रा तो सद्भावनाजन्य प्रसन्नता से युक्त थी। वास्तव मे और भी ज्यादा डर गये सीतापति।

वे एक आज्ञाकारी बालक के समान उनके सामने नतमस्तक होकर खड हो गये। आँख भर आना चाहती थी परन्तु उन्होने अपनी सारी नियन्त्रण शक्ति का प्रयोग कर उसे रोक ही लिया। मिनटो मे मकान मालिक अपने पुत्र के साथ आ गये। सीतापति के साथ चलने से आनाकानी करने पर उन्होने बाबा दर्शन मुनि से अनुमति प्राप्त कर ली और एक मुलाकात मात्र के लिये अपने घर ले गये। वहाँ मनुहारपूवक गृहस्वामिनी ने उन्हे खाना खिलाया और फिर उनके हाथ जोडकर कहा, "सीतापति, आज तक म तुम्हे पुत्र समान मानती आयी थी। यदि हमारा, पिछले स्नेह के बल पर, तुम्हारे ऊपर कोई हक बनता है तो उसका वास्ता देती हूँ इन्कार न करना—शाम तक यही ठहरो। मगर म तुम्हारे कहने पर तुम्हे वैरागी मान लूगी। तब म तुम्हारे चरणो मे सिर रखकर तुम से प्राथना करती हूँ कि तुम शाम तक यही रहो और यू कहती हुई वह उसके कदमो की ओर बढी तो सीतापति ने उनके नीचे झुकते हुए हाथो को थाम कर उन्हे झुकने से रोक लिया और निगाहो से ही उनकी विनती की स्वीकृति की सूचना दे दी।

मकान मालकिन ने सीतापति को उसके पुरान कक्ष मे छोडा, उसे अखबार दे दिया और लगा लगाया विस्तर। परन्तु विश्राम के लिये अपने कक्ष मे जाने से पहले उन्होने जब घर के मुख्यद्वार पर ताला ठोका तो सीतापति मुस्कुरा उठे।

उनका सिर चकरा रहा था। अखबार का मुख्य पृष्ठ भी वे पूरा न पढ पाये थे कि नीद ने उन्हे आ घेरा। वह बस यही सोच सके, कितनी गहरी नीद आ रही है आज !

उनकी आख खुली तो रात के आठ बज रहे थे। बिजली गुल थी। उनके कमरे मे अँधेरा था और सामने ही चौक मे घर के सभी व्यक्ति ब

उनके पिता एकत्रित थे जो फुसफसाते हुए लालटेन की रोशनी मे कुछ बहस कर रहे थे। सीतापति ने आँख खोलकर उनकी बाते सुनने की कोशिश की। उनके पिता कह रहे थे, "सबसे बडा काम तो बहनजी ने किया है जो इसे इधर ले आयी, हम आपके बहुत-बहुत आभारी हैं बहनजी।"

"आभारी होने की कोई बात नही है। आप कब से यहा के चक्कर लगा रहे थे और फिर यह दो वर्ष तक हमारे साथ रहा है तो हमे भी ता इससे स्नेह है। मैने तो अपना फर्ज निभाया है।"

फिर उसने उनकी आवाजो का फुसफसाहटो मे बदलते हुये सुना। "उसके सामने यूँ न कहना — ।"

"उससे यूँ कहेगे " ऐसे ही कुछ जुमले सुन पाये वह। तो वे लोग उनसे ही कुछ कहने की तैयारी कर रहे है! वे थोडा खखारते हुये उठे और उन्होने दरवाजा खोला तो उनके पिता ने आगे बढकर उनके सिर पर हाथ फेरा तब वह अचल ही बने रहे। पिता के लिये कोई कटुता तो नही थी परन्तु मोह भी नही था।

"हमने तुम्हे कहाँ-कहाँ ढूँढा, कितना परेशान हुए वह सब साथक हो जायेगा अगर तुम हमारी बात सुनो और समझो ।

"हम शर्मिन्दा हैं कि तुम्हारी नौकरी लगने से पहिले ही हमने हाथ खेच लिया, पर हमारा चित्त ठिकाने नही था और हमसे गलती हो गयी ।

"तुम जो चाहे हमे सजा दो हम उमे कुबूल कर लेगे मगर एक बार घर चलकर वहा की स्थिति देख लो।"

आगे उन्होने कहा, "बाबा दर्शन मुनि बहुत ही प्रणम्य नरोत्तम होगे जो तुम जैसे व्यक्ति के प्रणेता बन गये—तुम कहो तो उनसे अनुमति ले ली जाये—ये हमारा निवेदन है तुमसे।"

ये बाते पिता ने व्याख्या करते हुए कही थी और ऊपर से निश्चल खडे हुए सीतापति को छू भी रही थी परन्तु वह क्या कहे समझ नही पा रहे थे। पर जब अपने अंतिम वाक्य के साथ पिताजी ने हाथ जोड दिये तो वे स्वय को रोक नही पाये।

"आप मेरे हाथ मत जोडिये।"

"तो तुम कहो, गाँव चलना स्वीकार है ?"

"मैं बाबा दर्शन मुनि से बात करूगा पहिले।"

रात नौ बजे पिता पुत्र एव मकान मालिक बडे बाग के किनारे स्थित मन्दिर मे पहुँचे तो मालूम हुआ कि बाबा दशन मुनि सोने के लिये चले गये हैं। पिता-पुत्र ने भी वही खुली धरती को अपना बिस्तर बनाया जबकि मकान मालिक लौट गये।

जल्दी सुबह बाबा से बात हुई तो उन्होने बताया कि सीतापति को अभी साधुत्व मे सस्कारपूवक दीक्षित नही किया गया है।

"लेकिन लोग तो मुझे बाबा ही कहते थे।"

"देखो दीक्षा मे साधु को एक नया नाम दिया जाता है। ये सस्कार तो अभी गोबिन्द बाबा का भी नही हुआ।"

आगे बाबा दशन मुनि ने कहा कि घर हो आने मे कोई बुराई नही है। साधुत्व अर्जित करके एक बार वहा का फेरा लगाना आवश्यक भी होता है। ऐसा गौतम बुद्ध ने भी किया था और महावीर स्वामी ने भी। फिर इन्सान तो भगवान के हाथो की कठपुतली है—जसा वह चाहते है हम वैसा ही करते हैं। तुम हमे फिर कभी मिलो न मिलो, हमारी शुभ-कामना सदा तुम्हारे साथ है।

कल लौटने की बात कहकर सीतापति वहाँ से चलने लगे, इस पर बाबा ने कहा—"वायदे मत करो निभाना हमेशा कठिन होता है।" (उन्हे शायद आभास हो गया था कि सीतापति अब नहीं लौटेंगे)।

× × ×

गाव मे पहुँचने पर सीतापति ने देखा कि श्री श्रीनिवास बाबू उन्ही के यहाँ जमे हुए बैठे है और उन्हे आश्चर्य हुआ कि उनके तीनो भाई उनके प्रति व सीतापति के प्रति विशेष अनुकूल थे श्रीनिवास बाबू तथा सीतापति को बैठक मे छोडकर सब बाहर चले गये। श्रीनिवास बाबू बोले, "बेटा अगर घर छोडकर सयास लेना चाहिये तो हमे, जिन्होने अपना गृहस्थ आश्रम पूरा कर लिया।

"अन्दर, तुम्हारी भाभी के पास जो कन्या बैठी है वह तुम्हारी सकुशल वापसी के लिये नित्य उपवास कर रही है। उसके जीवन का तुम्हारे बिना क्या होगा यह सोचो।"

'क्या मतलब ?" सीतापति ने तिरछी निगाह से देखते हुए पूछा।

'मेरा तुमसे निवेदन है कि गृहस्थ आश्रम को निभाना भी एक फर्ज और एक धर्म है, इसके बिना मोक्ष भी नही मिलता। इसके अलावा इस बच्ची का तुम्हारे चले जाने पर क्या होगा यह सोचो।"

सीतापति अपने पिता से लडने के लिये बैठक से उठकर घर के पिछवाडे मे गये जहा पर वह बिखरे पत्थरो को नये तरीके से जमा रहे थे। "आपने मेरे पीछे यह क्या इल्लत लगादी है बाबूजी ?"

तो उन्होने एक गहरी निगाह से पुत्र को देखते हुये कहा, "बेटे, जब हम तुम्हे खोजते खोजते हलकान हुए जा रहे थे, श्रीनिवास बाबू तब भी अपनी पुत्री के सम्बन्ध के लिये यहा चक्कर लगा रहे थे। बहुत टालने पर भी जब इन्होने पीछा न छोडा तो आखिर मैने इन्हे एक दिन सच बता दिया कि तुम घर छोड गये हो। तो उन्होने यह नही पूछा कि क्या बात हुई वरन कहा, "लडकपन मे लडके कभी-कभी ऐसा कदम भी उठा लेते है परन्तु मेरा विश्वास है कि सीतापति गलत रास्ते पर नही जायेगा।" यह सुनकर मुझे वह तसल्ली मिली जो कि सब मिलने जुलने वालो की सात्वनायें सम्मिलित होकर भी नही दे पायी थी। इन्होने कहा, "हमारे पुरोहितजी ने कहा है कि त्रिवेणी का सयोग सीतापति के साथ ही है अत आप लोटे पर सगाई का तिलक ले लीजिये। फिर हम और आप मिलकर ढूढेगे और कुछ बेटी त्रिवेणी के ग्रहो का सयोग भी होगा और भगवान ने चाहा तो बेटा सीतापति अवश्य ही घर लौट आयेगा," इन्होने प्रार्थना की कि उसकी सब अलाय-बलाय मेरे ऊपर आ जाये परन्तु सीतापति बेटा सुरक्षित सकुशल घर आ जाये यही मेरी जिंदगी की कामना है।

"बेटे, उनके यू न्यौछावर होने की हद तक के आग्रह पर हमने पडोसियो को आमन्त्रित कर छोटे से समारोह मे लोटे पर सगाई का तिलक ले लिया था और उसी दिन यानि पिछले सोमवार से ही हम शगुन होने लगे थे कि तुम मिल जाओगे। मगलवार को हमारे पडोसी

गणेशचन्द्र ने बताया कि उन्होने तुम्हे नाथद्वारा मे साधु वेश मे देखा था। कल जब तुम्हारे मकान मालिक यहा मुझे बुलाने आये तो हमे अचम्भा नही हुआ क्योकि इनकी दिन रात प्रार्थना का यह असर तो म निश्चित ही मान रहा था।

"फिर भी अंतिम फैसला म तुम्हारे ऊपर ही छोडता हूँ जो तुम ठीक समझो निर्णय लो। वैसे जो भगवान चाहेगे वही होगा।"

सीतापति ने पिता से कुछ दिन विचार करने के लिये समय मागा जो उन्होने बिना किसी हीलहुज्जत के दे दिया। बाबू श्रीनिवास त्रिवेणी को वही विशाल कोठी मे समधी की देखरेख मे छोडकर शहर चले गये। वह वास्तव मे मुहूर्त निकलवाने और अपनी पूँजी एकत्रित करने गये थे।

सीतापति ने अपने कमरे मे प्रवेश किया तो कन्या को गोबर से फर्श लीपते देखा। वह निगाहे झुकाकर खडी हो गयी। सीतापति का ध्यान इस बात पर विशेष तौर पर गया कि वह बड सलीके से उठी थी। ठिठके—काम भी बडे सलीके से कर रही थी। उन्हे वह अपनी भाभियो से प्राकृतिक रूप से श्रेष्ठतर लगी जिनके कपडे भी फर्श लीपते समय गोबर मे सन जाते थे। एक दम जैसे किसी ने बिजली का बटन दबाकर उजाला कर दिया हो, उन्हे लगा कि बाबा दर्शन मुनि के साथ उनका वक्त पूरा हो गया है और इस बाअदब कन्या के साथ विवाह कर लेना ही उनका अगला कार्य है। इस उजाले मे वह यह भी देख पाये कि इस कन्या के साथ सगाई ने ही उनके भाइयो का उनके प्रति अनुकूल बना दिया है अन्यथा वे तो इस ताक मे रहने लगे थे कि कब सीतापति से कोई गलती हो और कब वे उसका बखान करें और उसे नीचा दिखाये। उन्होने उत्सुकतावश पूछा, "क्या तुमने कुछ पढाई की है ?"

"जी मैने मिडिल कक्षा का बोर्ड का इम्तहान दिया है। अभी परिणाम नही आया।" जवाब देते हुए उसने जो निगाहे उठायी। तो सीतापति ने उन मे अपने जीवन की पूर्णता की सभावना का आभास पा लिया। एक पल उनके अभिभावको का निर्णय सीतापति का निर्णय हो गया और अब वह इतजार करने लगे कि पिता कब इस बात का छेडते हैं।

सातवे दिन श्रीनिवास बाबू लौट आये। वे अपने साथ तीन हजार रुपये लाये थे जो उन्होने अपने समधी के हाथ पर रख दिये। तीन दिन

बाद का मुहूर्त था। श्रीनिवास बाबू बोले, "समधीजी, आप जोर देंगे तो मुझे कमरे पर जाकर कुछ व्यवस्था करनी होगी। जो म कर नही सकता। हमारा एक कमरे का मकान तो आपने देखा ही है। वह मकान मै सीतापति के नाम करने की दरख्वास्त जिलाधीश कार्यालय मे दे आया हूँ। दरख्वास्त की रसीद और नकल ये है। अगर आप यही पर विवाह की व्यवस्था करा दे तो अति उत्तम होगा।" अपने झोले मे से कागज निकाल कर उन्होने शादी की तिथिया बतायी। एक तिथि तीन दिन बाद की थी, एक दस दिन बाद की और तीसरी एक माह बाद की।

पिता ने सीतापति से पूछा कि उसे कौनसी तिथि उपयुक्त लगती है तो उन्होने जवाब दिया, "जो आपको उपयुक्त लगे," और वहा से चल दिये। पिता का दिल भर आया और उन्होने सोचा इस तीन हजार नगदी मे वे कुछ और मिलाकर वह सीतापति को भेट दे देगे—नवदम्पति अपने आप अपनी व्यवस्था देख लेंगे और प्रथम मुहूत पर तीसरे ही दिन विवाह सम्पन्न करा दिया। यह एक सादा विवाह था जिसमे दोनो पिताओ ने अपनी सामर्थ्य भर नगदी नवयुगल को दी। दावत के नाम पर घर मे बहुओ ने बढिया खाना बनाया और सबने साथ बैठकर खा लिया।

एक हफ्ते गाँव मे रहकर नवदम्पति शहर मे आ गये और खुद के एक कमरे के मकान मे निवास करने लगे। शादी के बाद दम्पति का एक हफ्ता गाव मे इतना अच्छा बीता था कि जीवन पर्यन्त त्रिवेणी को वह हफ्ता अपने जीवन का नखलिस्तान लगता रहा।

यदि यह कहानी किसी वतमान फिल्म की होती तो समाप्त हो जाती जिसमे कि देखने वाले मान लेते कि इसके बाद वे हमेशा खुशी से रहे परन्तु अधिकाश मामलो मे शादी जितनी समस्याओ का हल होता है उससे कही अधिक समस्याओ को जन्म दे देती है। इस दम्पति की समस्याओ के स्रोत ये थे कि —

(1) सीतापति को एक कमरे के मकान की स्थानीयता पसद नही थी।

(2) वह सोचते कि पिता पुत्री पूर्व मे इस कमरे मे कैसे रहते होगे, सोचते-सोचते उनके दिमाग की नसे इतनी तन जाती कि वह बेचैन हो जाते और अपने दात भीच लेते।

(3) रोजमर्रा के खर्च के लिये धन कैसे प्राप्त करे ? यदि बाजार मे ब्याज पर चढायें तो रकम डूबने का खतरा था—बंक मे रखे तो ब्याज पर खर्चा नही चल सकता—मूलधन मे से खर्च करे तो छीजत के अपराध के भागी बनते हैं।

(4) अगर त्रिवेणी खूब घर सजाती, अच्छा पकाती तो सीतापति सोचने लगते कि इसे किस बात की इतनी खुशी है और अगर उनके इस विचार को पढकर पीछे हट जाती तो सोचते कितनी नीरस उबाऊ औरत है।

(5) स्वय का काम न होने के कारण सीतापति इतने परेशान हो जाते कि अपना बहुत सा समय पब्लिक पार्कों मे लेटे-बैठे गुजार देते—जबकि त्रिवेणी भोजन पका कर उनके इन्तजार में भूखी बैठी रहती और भोजन बासी होता रहता।

(6) अनजाने मे सीतापति त्रिवेणी के साथ वही रूखा और काटने वाला व्यवहार करने लगते जो उनके भाई उनके प्रति करते रहे थे मानो यू वह उसका प्रतिदान दे रहे हो।

इसी बीच त्रिवेणी का मिडिल परीक्षा का परिणाम आ गया। वह तृतीय श्रेणी मे पास हुई थी। दुखित हुई, अक तालिका देखी तो बोली, "मेरे सस्कृत मे इतने कम अक नही हो सकते। केवल पैतालीस आये है सौ मे से। सस्कृत तो पिताजी मुझे खुद पढाते थे और सातवी कक्षा तक मेरे विशेष योग्यता वाले अक आया करते थे क्योकि इसमे तो गणित की तरह पूरे मे से पूरे अक मिलते है। अगर सस्कृत मे तीस बढ जाये तो मेरी श्रेणी भी द्वितीय हो जायेगी। मैं सोचती हूँ कि म अको की पुन गणना करवा लू।"

सीतापति त्रिवेणी को यूँ देख रहे थे जैसे वह कोई मूखता की बात कर रही हो जिससे उनका अपमान होता हो। बोले, "तीन हजार की मालिक हो जो चाहे करो।"

त्रिवेणी आहत हुई मगर उनकी बात सुनना चाहती थी। आग्रह करने पर वे बोले, "सातवी कक्षा तक तो अध्यापक यू ही अक लुटाते है।

परन्तु बोर्ड परीक्षा मे वस्तुनिष्ठ मूल्याकन हो जाता है और सभी विद्यार्थियो को झटके लगते ही हैं । तुम चाहो तो फेक लो पाँच रुपये ।" तिस पर त्रिवेणी न यही निर्णय लिया कि वह पाच रुपये नही फेंकेगी ताकि पति खुश रहे । उनकी खुशी से बढकर अक नही है और अ क बढ भी जाये तो क्या फर्क पडता है ।

लेकिन त्रिवेणी को तीव्र वेदना उस दिन हुई जब एक पखवाडे के बाद मे उन्होने सीतापति से कहा, "मुझे लगता है कि एक नन्हा मेहमान आने वाला है घर मे ।"

"क्या ?" आखे फाडकर चमक कर बोले सीतापति । इतनी तगी मे ?" जैसे सारा दोष त्रिवेणी का ही हो । त्रिवेणी ने आखे झुका ली तो बोले, "उसे मेहमान मत कहो वह तो पीठ पर सवार हो जायेगा और हमारे मरते दम तक सवार ही रहेगा ।"

त्रिवेणी के चेहरे की नसे तनती जा रही थी । उसने साहस कर कहा, "मेरी बेटी या बेटे के लिये आप यू नही बोल सकते !"

सीतापति ने कहाँ हार मानना सीखा था। बोले, "जैसे तृतीय श्रेणी तुमने प्राप्त की है वैसा ही तृतीय श्रेणी का बच्चा पैदा कर दोगी तुम !"

त्रिवेणी तो यह सुनकर बिस्तर पर गिर पडी और रोने लगी और सीतापति घर से बाहर निकल गये । पब्लिक पार्क की ओर कदम बढाते हुए वह सोच रहे थे कि उन्होने त्रिवेणी का दिल क्यू दुखा दिया । उनमे इतनी कटुता क्यू आ जाती है कि वह उसकी बात काटने को अपना लक्ष्य बना लेते है ? क्या वे उसको रुलाने की अपनी क्षमता को अपनी ताकत मान बैठते हैं ? इतने तनाव झेलने के बाद अब पेडे खरीदकर खिलायें भी तो, क्या त्रिवेणी या वह स्वय कोई खुशी अनुभव करेगे ? यह भी उन्होने सोचा और अपना पूव निश्चित विचार निरस्त कर दिया । फिर पेड के नीचे ठडी हवा मे 'वे विवाह के उपयुक्त थे या नही,' इस प्रश्न पर विचार करते हुए उनकी आँख लग गयी ।

उधर त्रिवेणी सोच रही थी कि काश ! उसने जोर देकर पाच रुपये फॅक कर अपने सस्कृत के अ को की पुन गणना करवा ली होती

लेकिन अब तो अवधि बीत गयी। अगर पिताजी का पता भी उसके पास होता तो वह इस बात पर विचार करती कि उनसे अपने दुख अपनी दुविधा कहे या नही। लेकिन पिता, उसके विवाह से पूव कभी तो कहा करते थे कि म हरिद्वार मे जाकर निवास करू गा, कभी कहते थे वाराणसी मे, कभी इलाहाबाद का नाम लेते थे और हिमालय पर जाने की महत्वाकाक्षा भी अनेक बार व्यक्त कर चुके थे, अब वह उन्हे कहा ढूढ सकती है? खैर, उनकी खुशी! मेरे जीवन मे शायद बालक के आने से कुछ सुधार हो जाये, यह सोचते-सोचते बद उमस भरे कमरे मे उसकी भी आँख लग गयी।

सीतापति के घर लौटने पर त्रिवेणी ने प्रस्ताव किया कि वे दोनो कुछ दिन के लिये गाव चलें तो सीतापति ने कहा, "म तुम्हे छोड आता हूँ पर म नही रहूँगा वहा।" तो त्रिवेणी ने सोचा यह एक पतिव्रता का कत्तव्य नही है कि वह पति को यू एकाकी छोड कर अपनी सुविधानुसार कही आये जाये। सीतापति भी त्रिवेणी के निणय से सतुष्ट थे क्योकि वह नही चाहते थे कि अन्य भाई उनके निजी जीवन को देखे या जाने।

परतु उन्हे प्रसव के लिये त्रिवेणी को गाव भेजना ही पडा क्योकि उनके पास किसी अन्य सहायिका की व्यवस्था नही थी। उनकी मन-स्थिति मे अभी बालक जन्म के प्रसग को लेकर इतना जोश भी नही था कि भागदौड कर त्रिवेणी की चिकित्सा व देखभाल की व्यवस्था कर पाते क्यूकि आर्थिक रूप मे खीचतान चल ही रही थी जिसका कारण यह था कि अभी तक उन्हे नौकरी नही मिली थी और वह इसे खोजने की कोशिशो मे लगे हुए थे। जहा कही भी खाली स्थान के बारे मे उन्हे मालूम पडता वह एकदम से दौड पडते कि उनका जुगाड बैठ जायेगा यद्यपि वह एक निश्चित स्तर मे नीचे इस क्षेत्र मे उतरने के लिये तैयार नही थे—वह एक महाजन के मुनीम व एक मन्दिर के कोषाध्यक्ष के पदो को अविचलित रह कर ठुकरा चुके थे।

सयोग कुछ ऐसा हुआ कि त्रिवेणी को गाव छोडकर जब वह वापस जयपुर आये तो उन्होने डाकपेटी मे अपना दौसा के डाकघर मे पोस्ट-मास्टर के पद का नियुक्तिपत्र प्राप्त किया। उनकी तीव्र इच्छा हुई कि

"काश ! त्रिवेणी यहाँ होती !" उसके साथ मे उनकी यह खुशी द्विगुणित हो गयी होती । उनकी इच्छा हुई कि त्रिवेणी उन्हे दफ्तर के लिये तैयार करके भेजती । फिर यह कि वह उसे यह समाचार सुनाने जायें और उसके चेहरे के भावो को बदलते हुए स्वय देखे । परन्तु नौकरी तो उनकी उपस्थिति माँगती थी अत वह अगले दिन से ही उस पर जाने के लिये नियुक्ति पत्र मे उल्लिखित शर्त, कि उन्हे साथ मे स्वास्थ्य प्रमाण पत्र लाना होगा, पूरी करने के लिये स्थानीय चिकित्सालय मे चले गये । स्वास्थ्य परीक्षा की प्रक्रिया से गुजरे जिसमे रक्त निकलवाने की हल्की सी शारीरिक पीडा भी शामिल थी । स्वास्थ्य प्रमाण पत्र प्राप्त किया और अगले दिन वक्त पर अपने कार्यालय पहुँच कर उन्होने जयपुर मुख्यालय को अपने कार्यभार सभालने की सूचना डाक द्वारा भेज दी । उन्हे यह स्थिति अच्छी लगी कि दफ्तर मे उनके नीचे पाँच डाकिये, एक स्टेम्प विक्रेता बाबू और साफ सफाई व ऊपरी काम के लिये एक चपरासी है । उनका काम उन सब के काम की निगरानी करना व उनमे तालमेल बिठाने का था । सभी ने बडे अदब से श्री सीतापति दास बाबू का स्वागत किया । एक साथ इकट्ठे होकर एक छोटी सी दावत की जिसमे उनके आने को एक बडे भाई व मार्गदर्शक के आने के समान बताया । पोस्ट आफिस के भवन से सलग्न ही उनके लिये तीन कमरे का चौक युक्त आवास था जिसकी सफाई के लिये उन्होने चपरासी को बोल दिया ।

शनिवार की शाम को वह अपने पैतृक गाँव फुलेरा पहुँचे । सबसे पहिले उन्होने नौकरी लगने का समाचार त्रिवेणी को ही दिया । उसका चेहरा उन के प्रति श्रद्धा और सम्मान चमकने लगा । खुशी के कारण उसकी आखे बन्द हो गयी और उनसे टपाटप आँसू गिरने लगे । दोनो जानते थे कि आसू खुशी के कारण थे तथा बीते दिनो मे सही पीडाओ की यादे भी इनमे सम्मिलित थी । वे दोनो एक साथ उल्लसित व अपने उल्लास से अभिभूत, चकित हो कर समय को गुजरता देखते रहे । फिर सीतापति ने स्वय ही त्रिवेणी से कहा, "मैने तुम्हे बहुत तकलीफे दी है, उन के लिये मुझे माफ कर दो । असल मे मै आर्थिक तगी के कारण तनावयुक्त रहा करता था । मुझे लगता है अब हमारे बुरे दिन बीत गये हैं ।" त्रिवेणी रोती रही और सीतापति देर तक उसे सात्वना देते रहे ।

सीतापति ने जब अपनी नौकरी लगने की सूचना घर मे अन्य सदस्यो को दी तो उनके तीनो भाइयो के तेवर उनके प्रति बदल गये। वे जो पूव मे सीतापति को एक बोझा समझने लगे थे, अब उसके पद व उसके रुतवे से अप्रभावित नही रहे। आखिर सीतापति को चलत फिरते पूरा हो जाने वाला काम और साथ ही एक पक्का आवास मिल गये हैं। "वाह ! क्या कहने है लाला के !" एक ने मत व्यक्त किया तो दूसरे न कहा, "बेटा, एक ही दिक्कत है कि जयपुर छूट गया।" तीसरा वाला, "जयपुर मे तो श्वसुर जी जागीर लिख गये हैं, वह कैसे छूट सकता है?" उनकी टिप्पणियो के पीछे छुपे व्यग्य व प्रशसा के बीच इतना तो निश्चित था कि सीतापति को एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप मे स्वीकार कर लिया गया था।

अप्रेल 1942 मे माधव के जन्म पर बाबूजी ने पूरे फुलेरा को न्यौतने के लिये अपनी थैली खोल दी। यद्यपि सीतापति के अन्य भाईयो को इस बात से रश्क हुआ कि उनके पुत्रो के जन्मोत्सवो पर इतना खर्चा नही किया गया था, परन्तु बाबूजी ने उनसे यह व्याख्या की कि सीतापति एक लबी यात्रा के बाद लौटा है अत उसके पुत्र जन्म को धूमधाम से मनाने पर किसी को आपत्ति नही होनी चाहिये फिर इस बार फसल भी अच्छी हुई है।

त्रिवेणी व माधव को जब सीतापति लिवाने आये तो साथ मे उनकी बडी भाभी व उनका पुत्र अनिल भी कुछ दिन उनकी देखभाल करने के लिये साथ मे आये। सीतापति अपने पोस्ट ऑफिस के चपरासी से भी गृहकार्य मे कुछ सहायता ले लेते थे और प्रतिदान मे उसे कभी भोजन व कभी नगदी व कभी कोई उपहार देते रहते थे। उन्होने अनिल को पास ही के स्कूल मे डलवा दिया जहा वह यूनिफार्म पहन कर पढने जाता था। माधव के आठ माह का होने पर अनिल की छुट्टिया होने पर ये लोग वापस गये तो सभी परिजन अनिल को प्रगति से प्रभावित हुए। वह छोटी-छोटी कवितायें सुनाता और "यू खाना चाहिये, यह सही है, ऐसे गलत है," जैसी बातें करता तो अन्य भाई जिनके पुत्र गाव मे खेत पर ही खेलते रहते थे, उनकी भी इच्छा हुई कि वे भी पढ लिख कर होशियार बने। उन्हे शिक्षित करने का उन्हे सबसे आसान व स्वाभाविक

तरीका यही लगा कि वे अपने बच्चो को सीतापति के पास भेज द, और एक-एक कर उन्होने यही करना शुरू कर दिया। प्रतिदान मे वे सीता पति के आभारी महसूस करते और उन्हे भेजते रहते—गेहूँ, चावल, गुड और नगदी।

वसे तो सीतापति ने पोस्ट ऑफिस के चपरासी को भोजन पकाने का काम सौंप दिया था—जो उसने इसलिये स्वीकार कर लिया कि उसके स्वय के खाने का जुगाड भी वही बैठ गया था—परन्तु फिर भी त्रिवेणी बच्चो की इस रेलमपेल से दु खी हो जाती। सीतापति दफ्तर के बाद सब बच्चो के साथ कभी खेलते, कभी उन्हे पढाने बैठ जाते और कभी उन्हे घुमाने ले जाते। माधव तो फिर भी उनका आंशिक सग पा लेता लेकिन वह, उनकी एक प्रेमपूण निगाह के लिये तरस कर रह जाती। सीतापति के दफ्तर मे होने पर तो वह सब बच्चो का ध्यान रखती, "तुम अपने कपडे धो लो, तुम अपना सामान जमा लो, माधव को बाजार घुमा लाओ" जैसी हिदायते उन्हे देती रहती और वे आज्ञा मानने मे कोताही भी न करते परन्तु सीतापति के आने के बाद ही चहकते। इन बच्चो की व्यवस्था करने के विषय पर पति-पत्नी मे आपस मे झगडा हो जाता और सीतापति तो तनाव मुक्त हो कर सो जाते परन्तु त्रिवेणी रोजमर्रा की घटनाओ पर कुढती रहती व चुपचाप टेसुए बहाती रहती। सीतापति तबादले पर जहा भी जाते, यह बाल-मडली उनके साथ जाती।

कभी-कभी त्रिवेणी अपनी जमापूजी के ब्याज मे से माधव के लिये कोई खिलौना लेकर आती और उससे कहती, "माधव, ये लो अपने खिलौने और अलग ऊपर दुछत्ती मे बैठकर खेल लो," तो वह रोने लगता और बिल्कुल न मानता। वह अपना खिलौना उन बडे बच्चो के सामने ही प्रस्तुत करता जिससे वह खेलते और उसकी तोड-फोड भी करते और नादान माधव तालियां बजाता रहता।

यदि कभी त्रिवेणी सीतापति से केवल स्वय व माधव के साथ कोई विशेष कायक्रम बनाने का प्रस्ताव करती तो वे उसे झिडक देते। कहते, "मुझे मालूम है कि तुम इन बच्चो को देखकर जलती हो लेकिन म इन्हें बहुत प्यार करता हूँ। यदि मुझे कभी इनके प्रति तुम्हारे दुर्व्यवहार की कोई शिकायत मिली तो याद रखना म ˆ करूंगा नहीं।"

ऐसी ही स्थिति मे एक दिन उन बच्चो के सामने ही त्रिवेणी ने सीतापति से पूछ लिया, "यदि तुम्हे हम मे व इन बच्चो मे से चुनाव करना पडे तो तुम किसे रखोगे ?"

"तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"इन बच्चो को ।"

"ठीक ख्याल है ।" उत्तर देकर सीतापति उन बच्चो को चाट-पकोडी खिलाने बाजार ले गये और फिर पार्क मे घुमा लाये । उस शाम घर पर त्रिवेणी की गोद मे माधव इतना मचला, इतना मचला कि वह उसे चुप नही करा पाई और वह रोते-रोते भूखा ही सो गया । त्रिवेणी का दिल रोता रहा । रात को जब सीतापति सोने आये और उन्होने अपने अधिकार की माग की तो त्रिवेणी ने तल्खी से कहा, "तुम्हारे लिये तो वे बच्चे ही मुख्य है, जाओ उन्ही के पास ।" तो सीतापति ने जवाब दिया, "मूर्खता मे भी तुम्हारा कोई सानी नही," और उन्होने अपना अधिकार लिया ही यद्यपि त्रिवेणी दिल के साथ-साथ आखो से भी रो रही थी ।

× × ×

बाल्यावस्था मे माधव अपनी स्कूल से सम्बन्धित बात-चीत अपने माता-पिता को सुनाना चाहता था । त्रिवेणी सुनने का प्रयास भी करती । माधव कहता, "आज चौथा घटा खाली था, इसलिये मै और राजेश पिछवाडे मे गुल्ली-डडा खेलने चले गये । लेकिन उधर से हमारे अध्यापक महोदय गुजरे और हम दोनो के एक-एक तमाचा लगा कर चिल्लाये—"चलो क्लास मे ।" तो मम्मी मुझे तो रोना आ गया लेकिन राजेश को तो जैसे कुछ हुआ ही नही । जब हम कक्षा की तरफ बढ रहे थे तब घीसा बौना, जो हमारे स्कूल मे चपरासी है, कोई नोटिस ले जा रहा था । तो राजेश ने भी अपने घुटने मोडे और जमीन पर पडा एक कागज

उठा लिया और घीसा बौने के पीछे पीछे उससे भी नीची ऊँचाई बना कर चलने लगा। उसे देख कर लडके हसने लगे—मम्मी, खेल घटी मे भी वह खूब हँस रहा था, और सुधीर की सालगिरह कल थी। वह कुछ बचे हुए समोसे लाया था वो राजेश ने भी खाये। आज म खाना ले जाना भूल गया था, इसलिये मुझे भूख भी बहुत लगी थी और लडका ने मुझे आवाज भी लगायी थी, लेकिन म तो उठा ही नही मम्मी, मै तो तमाचे के कारण परेशान था। कभी तो खाली पीरियड मे हमे खेलने देते है और आज ''

"त्रिवेणी!" काकू जी, (पिता श्री सीतापतिदास) की आवाज मे ऐसी तेजी थी कि त्रिवेणी अपनी बुनाई एकदम छोडकर खडी हो गयी।

"हा जी।"

"हाजी की नानी, इधर आ।"

त्रिवेणी के चेहरे पर ऐसा डर छा गया जैसे किसी ने उसको चोरी करते पकड लिया हो। माधव को लगा कि मम्मी उसे डर दूर करने की क्या राह बता सकेगी जो खुद ही काकू जी के सामने पत्ते की तरह थर-थर कापती है।

माधव सोचने लगा, "क्या राजेश का कथन ठीक है कि आगे से मास्टर साहब से इतनी दूर सरक जाओ कि उनका हाथ हमे छू ही न सके?"

लेकिन काकू जी भी सलाह कर लेनी चाहिय। परन्तु काकू जी से हर किसी वक्त तो बात कर सकते नही। उनसे बात करने के लिये ध्यान रखना चाहिये कि वह गुस्से मे न हो जैसे कि अभी इस वक्त है और अक्सर होते है। अभी वह सामने पहुँच जाये तो मम्मी को छोडकर शायद उस पर गुस्सा उतारने लग जायेगे।

अगर वह अखबार पढ रहे हो और वह कॉपी किताब के लिये भी पैसे माँग ले तो चीख कर कहगे, "आगे पीछे नही माँग सकता पैसे!" तू मुझे अखबार पढने मे दिक् करता है! पता नही कैसा कूढमगज

लडका है। अपना खुद का ख्याल तो रखता है, दूसरो का बिल्कुल भी नही।" और अगर समझाने के मूड मे हुये तो यही कहेगे कि किसी को कोई काम करते हुए उठाने मे पाप लगता है। तू मुझे इस तरह काम करते मे उठा रहा है तो देखना तुझे इसका क्या फल मिलेगा! और माधव यही सोचता रहता कि वह हिन्दी का गृहकार्य करना भूल गया यह काकूजी को उठाने का फल है या यह कि उसे उसके लिये बैंच पर खडा कर दिया गया।

जब उनके कोई मिलने वाले आये हुये हो तब भी माधव को उनसे दूर रहना होता था क्योकि काकूजी उनके सामने उसे कोई गाली दे देते है या उसका मजाक बना देते है तो वह उनके तथा दुनियाँ के सामने इतना शर्मिदा महसूस करता है कि दिनो तक यही सोचता रहता है कि यह परिचित उसे बिल्कुल ही बेकार लडका मानने लगा होगा।

और इन तीनो स्थितियो से अलग काकूजी को पा लेना माधव को टेढी खीर ही लगता है।

माधव चुपचाप काकूजी व मम्मी की बात सुनने लगा। "औरो की बीबियाँ इतनी सलीके वाली और खुशनुमा होती हैं! तुम ऐसी कैसे हो? श्री वैष्णव के यहाँ जाओ तो उनकी पत्नी ठडे पानी से स्वागत करेंगी। गरम-गरम नाश्ता बनायेंगी और चाय चढाकर साथ भी बैठेंगी, हाल-चाल पूछेंगी, और मुस्कुराते हुए आग्रहपूर्वक खिलायेंगी। तुम घर गयी भर केटली बेस्वाद चाय और एक गिलास—ढालो पियो और अपनी किस्मत को कोसो। तुम्हे यह फुरसत भी नही कि चीनी, दूध ही पास लाकर रख दो कि कोई इसे ठीक तो कर ले।"

"मै माधव की बात सुन रही थी।" अपनी चर्चा पर माधव खुद भी बैठक में चला गया, कही कोई बखेडा उसको लेकर न हो। काकूजी आरामकुर्सी पर बैठे थे और मम्मी सामने खडी नजरें झुकाये पैर के अगूठे से फर्श को कुरेद रही थी।

"क्या बात है ?" काकूजी उसकी ओर मुखातिब हुए।

माधव तो कुछ बोला नही। काकूजी माधव के ऊपर गुस्सा न होने लगें इस डर से मम्मी बोली, "आज मास्टर साहब ने चाटा मार दिया था इसके।"

"हरामखोरी की होगी इसने कोई ।" "क्यो रे, क्या किया था ?"

माधव कुछ कहना न चाहता था लेकिन बिना बोले गुजारा भी न था । "जी म खेल रहा था ।"

"झूठ बोलता है तू । खेलने पर काई मास्टर नही मारता । खैर, मैं पता करूगा ।"

"नही जी, म अपनी गलती मानता हूँ, मैं चौथे पीरियड मे खेल रहा था ।"

"तेरी तो आदत ही है गलत वक्त पर गलत काम । ऐसे तो बच्चू जिन्दगी भर तमाचे खाओगे । हमे भी तुम गलत वक्त पर परेशान करते हो । सुबह चार बजे दौडने जाते हो तो घर भर मे हल्ला मचा कर जाते हो । तुम अपना काम इतना ठीक रखो कि किसी को कुछ कहने का मौका ही न मिले ।"

माधव सोचता रहता था कि अपने शरीर की दुर्बलता कैसे दूर करे । सयोगवश पिछले दिनो काकूजी के दोस्त श्री वशिष्ठ घर पर मिलने आये थे क्योकि उनके पडौसी गौड साहब की लडकी हितकामा की शादी का प्रस्ताव उनके छोटे भाई के लिये आया था । अत वह उसके चाल-चलन के सबध मे पूछने के लिये आये थे कि लडकी कैसी है । काकूजी व मम्मी दोनो ने वही राय दी थी कि लडकी ठीक है परन्तु किसी के पेट मे क्या है, यह तो कोई उता नही सकता, इसलिये आप हमको तो इस पूछताछ की जिम्मेदारी से मुक्त ही रखो । वैसे, और कोई तरह की सेवा चाहिये हम तो पूरी तरह हाजिर है ।

श्री वशिष्ठ यह बात करने से पहले ही सीतापति व माधव के सामने प्रस्ताव कर चुके थे कि माधव को सुबह दौडने जाना शुरू कर देना चाहिये और उसका साथ देने के लिये वह अपने छोटे भाई को भेज देगे ।

उस वक्त श्री वशिष्ठ अपना सा मुह लेकर चले गये थे लेकिन अपना किया हुआ वायदा उन्होने याद रखा और वे अपने छोटे भाई व एक और पडोस के लडके को सुबह साढे चार बजे माधव को दौडने के लिये बुलाने

भेजने लगे। माधव सुबह चार बजे उठता है और रोशनी जलाकर शौच आदि कर्म कर हाथ-मुंह धोकर व जूते पहन कर तैयार हो जाता है। माधव के ये काम करते समय अगर काकूजी की नींद खुल जाती है तो वह बड़बड़ाने लगते है। माधव सोचने लगा कि क्या वह सुबह दौड़ने के लिये जाने का कार्यक्रम ही त्याग दे या क्या करे समझ नही पाया। उसे लगा घर मे कोई भी तो उसे सुनता समझता नही है। मम्मी सुन तो लेती है परन्तु दबी हुई होने के कारण सलाह नही दे सकती और काकूजी सलाह देने मे सक्षम हैं परन्तु अक्सर सुनने के मूड मे नही होते।

एक दिन वह पौने चार बजे जागा तब काकूजी मम्मी से अपने पैर की मालिश करवा रहे थे क्यूकि कल (पिछले दिन) सीढिया उतरते मे पैर मुड जाने से वह दद कर रहा था। माधव यह सोचकर नही उठा कि वे उसे एकान्त मे बाधा डालने के लिये डाटने न लगे। फिर उसकी आख लग गयी जो सवा चार बजे माता-पिता की सयुक्त आवाजो से खुली। वे कह रहे थे, "कुभकरण, ओ कुभकरण, आज उठना नही है क्या ?" दरवाजे पर खड कपिल व बलदेव वशिष्ठ उसे लगा, मन ही मन मुस्कुरा रहे है उस पर।

यद्यपि जब काकूजी अच्छे मूड मे होते हैं और उसे अपने पास बुला-कर बिठा लेते हैं और विभिन्न कालो के, विभिन्न क्षेत्रो के अपने अनुभव सुनाते हैं तो विभिन्न लोगो के प्रति उनके जिन दृष्टिकोणो को माधव देख व समझ लेता, उनसे निष्कर्ष निकालता कि 'दुनिया मेरे ठेंगे पे' का रुख रखने से ही उन्हे वह उच्चतापूर्ण सामजस्य प्राप्त होता है जिसके कारण काकूजी उसके दिलोदिमाग पर छाये हुए है। वह अपनी सुविधा की व्यवस्था करने के प्रति इतने सजग व सचेत है कि इनके लिये किसी से भी लड सकते है। इसका कारण वह उनके बीते हुए सघर्षों को समझता था कि उन्होने अपना घर छोड दिया था। माधव सोचता था क्या कभी ऐसा उसके साथ भी होगा कि उसे घर छोडना पड़े। पिता के इस निर्णय के अनुभव को वह उनकी दृढता एव उनकी उच्चता का अकाट्य प्रमाण मानता था।

× × ×

अपने घर के वातावरण मे स्वय को फसा हुआ जानकर माधव अवसर इसमे बाहर निकलने की सोचता। बाल्यावस्था से ही वह नियमित रूप से अखबार पढता था। एक दिन जब उसने केन्द्र सरकार के दिल्ली स्थित स्कूल का विज्ञापन देखा कि छठी से आठवी कक्षा के विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को दिल्ली मे ही रहकर अध्ययन का अवसर दिया जायेगा तो प्रतियोगिता मे भाग लेने के बारे मे माधव ने अपने पिता से पूछा। उन्होंने कहा, "ठहर सकोगे कहीं तुम इतने लडको के सामने ?"

तो माधव ने आराम से उत्तर दिया, "जब मुझे वहा का कोर्स मालूम होगा तो म उसे अच्छी तरह तैयार कर लूगा। आप मेरा फॉर्म व कोस मगा दाजिये—दिल्लो की शिक्षा बहुत अच्छी होती है।"

उसी दिन बारह वर्षीय छठी कक्षा के छात्र माधव ने स्वय फार्म मगाने के लिये पत्र लिखा था। पिता को सुधार के लिये दिखाया और फिर डाक मे डाल आया। परीक्षा व साक्षात्कार के बाद माधव को उक्त विद्यालय मे सीधा प्रवेश मिल गया।

तीन वप तक तो माधव का अध्ययन निर्बाध रूप से चलता रहा परन्तु जब वह नवो कक्षा के सत्र के मध्य मे था तब उसके बार-बार लिखने पर भी पिता के पास से छात्रावास शुल्क व अन्य खर्चो के लिये पैसे नही आ रहे थे, न उनका कोई पत्र ही आया। तो माधव ने एक हफ्ते की छुट्टी ली और पिता के घर उदयपुर चला आया। परन्तु वहा एक के बाद एक चक्कर ही होते गये।

× × ×

माधव पिता की मार से एकदम अचकचा गया पहिले तो उसे यकीन ही नही हुआ कि काकूजो उसे मारने के लिये उसकी ओर बढ रहे

हैं और फिर जब वे एक तमाचा लगा चुके और और मारने का उपक्रम करने लगे तो उसने पूछ लिया—"किस लिये मार रहे हैं आप मुझे ?"

"चुप रहना सीखो तुम ! दो गज लम्बी जवान हो गयी है तुम्हारी ।" सीतापतिदास ने डपटा ।

"मैंने कौन सी गलत बात कह दी है ?" माधव ने बमुश्किल अपने आसुओ को रोकते हुए पूछा ।

"तुमने अपनी माता का अपमान किया है, और उसका अपमान मेरा भी अपमान है ।" काकूजी एक खाली कुरसी पर बैठ गये थे और उन्होंने अपने सिर को अपने हाथो मे थाम लिया था ।

"ठीक है, हमे यह जानने का अधिकार नही है कि हमारी पढाई लिखाई छुडा कर हमे घर पर क्यो बिठा लिया है ! धन्यवाद है आपको । आप दोनो को ।"

"अरे नालायक, मने कहा नही था तुझे, कि कुछ ही दिनो मे छुट्टी मिलने पर मैं खुद तेरे साथ दिल्ली चलूगा और सारी फीसे जमा करा आऊगा ।" वे फिर हाफने लगे थे ।

माधव जानता था कि असली समस्या फीस की ही नही है उसने वहा अधिकारी वर्ग तथा छात्रो के बीच मे अपनी साख खो दी है—उसे कैसे और कब पुन प्राप्त किया जा सकेगा यह उसकी मूल समस्या थी । यदि तुरन्त वह तथा पिता होस्टल मे जाकर बकाया फीसें चुका देते तथा माफी माग लेते तो डाक की अव्यवस्था, पिता की सद्‌भावना तथा माधव की निर्दोषिता को स्थापित करने की ओर एक कदम होता, लेकिन यहा पहिले तो कहा गया तुम इतने दिन बाद मिले हो कुछ दिन ठहर कर जाना, फिर चार दिन बाद यात्रा के लिये शगुन विचार किये जा रहे थे कि शन उसकी जो प्रकृति है उसके अनुसार वह उनके पास टिका नही— पिताजी के एक दोस्त को अचानक हॉट अटैक हो गया और उन्होने तत्काल अपनी जमा पूजी उनके इलाज मे लगा दी । यद्यपि उनके रिश्तेदारों को खबर कर दी गयी थी और वे यथासमय आ भी गये थे लेकिन

काकूजी ने अपने पैसे यह कहकर वापस नही मागे कि बीमारी मे मागना उचित नही, उनके स्वास्थ्य लाभ के बाद देखेंगे। उसके बाद एक तारीख का इन्तजार किया कि वेतन मिलने पर चलेंगे लेकिन वह तीन तारीख को ही मिल पाया और आज पाच तारीख हो गयी है लेकिन अब काकूजी के ऑफिस मे उनके कोई बॉस बाहर से आये हुए है जिनके कारण वे छुट्टी नही ले सकते। आज शाम को वह खाने पर आयेंगे। उनके भोजन की तैयारी के लिये ही जब माता ने माधव से कहा, "जा, बाजार से यह लिस्ट का सामान ले आ, तो माधव ने उसे पढ़ा—

चीनी—चार किलो।

देसी घी—दो किलो।

बासमती—एक किलो।

मटर—आधा किलो—अनुपलब्ध हो तो डिब्बा बद।

पनीर—आधा किलो।

मावा—डेढ किलो

माधव सूची को आधी भी नही पढ पाया था कि उसने मम्मी की ओर वेदनापूर्ण दृष्टि से देखा।

"मम्मी इतना खर्च क्यो कर रही हो ?"

"बेटे, यह मेहमान एक विशिष्ट मेहमान है—आपके काकूजी की तरक्की इनके हाथ मे है और फिर जो बचेगा तुम बच्चे लोग खाना। तुम्हे भी तो अच्छा खाना मिले कभी।"

"मम्मी, मै यहा अच्छा खाना खाने नही आया हूँ मेरी बस फीस भरवा दो तुम।"

"ले तो अपनी फीस के पैसे गिनकर ले जा तू।"

"और किराया ?"

"किराया न देंगे क्या ? वो भी ले जा।" मम्मी ने गड्डी उठाकर बड़े नखरे से देखते हुए कहा।

"मम्मी तुम इतने रुपये और इतनी प्रजा के साथ यू महसूस करती होगी जैसे तुम कोई रानी हो। सारी प्रजा तुम्हारे इशारो पर नाचती रहे। है न!" माधव ने जैसे कोई रहस्य का पता लगते ही उसे उद्घाटित कर दिया था।

मम्मी को जैसे कोई करट लग गया हो। उन्होने माधव के हाथ से लिस्ट तथा रुपये छीने और अपने कमरे मे जाकर एक भडाक के साथ दरवाजा बन्द कर लिया। माधव ने दरवाजा खटकाया तो मम्मी ने जरा सा खोला और बोली, "यह मत सोचना कि मै सामान लाने के लिये तुम्हारी मिन्नतें करूगी। मै तो आप के काकूजी को बोल दूगी कि मेहमान को किसी अच्छे होटल मे खिला दो। यहा काम को कहने पर तो बच्चे अपने आप को नौकर समझने लगते है।"

माधव पहिले तो सोच रहा था कि मम्मी को अपनी देरी के कारण बिगडती जा रही स्थिति के बारे मे समझायेगा। उन्हे अपने साथ शामिल कर कहेगा कि वे काकूजी को आज रात की गाडी से ही उसे लेकर दिल्ली जाने के लिये मना लें लेकिन मम्मी के तेवर देखकर उसकी हिम्मत नही हुई। इतने मे ही उसके चाचाजी का लडका रघु आ गया तथा वह एकदम सामान लेने चला गया। उन्होने एक तिरछी नजर से माधव को देखा मानो कह रही हो, "देखा, तुम्हारे बिना कोई काम नही अटक जायेगा हमारा।"

माधव अपनी आँखे झुकाये बैठक मे आकर बैठ गया। मेज पर अखबार पडा था उसे लेकर वह सोफे पर लेट गया। उसके सामने पीछे का पन्ना था जिस पर एक शीर्षक था, "छात्र द्वारा आत्महत्या।" माधव उस शीर्षक को कुछ देर तक पढता रहा और इसका विस्तृत वर्णन पढने की कोशिश मे उसकी आँखे मुंद गयी। ऊँघ मे भी उसके दिल मे घुटन थी और थी बेचैनी।

मुश्किल से ही उसकी आँख लगी होगी कि नाथूराम ताऊजी की लडकी मीना की आवाज उस के कान मे पडी, "उठो माधव, मै बैठक की सफाई कर रही हूँ।" माधव ने सोफे की पीठ की ओर अपना मुँह मोड लिया ताकि उसे उठना न पडे लेकिन एक-एक चीज पर कपडा मारने से जो धूल उडती थी वह सहन करने के बाद जब उसने दीवारो को

झाडना और फिर आलो मे भी झाड़ मारना शुरू किया तो कमरे मे इतनी ऊपर तक धूल हो गयी कि लेटे हुए माधव के लिये सास लेना दूभर हो गया और वह उठकर बालकनी मे आ गया। बालकनी मे जो चीजें बेतरतीब पडी थी वह सायास उन्हे तरतीबवार रखने लगा। काकूजी के दो जोडी मोजे व एक जोडी जूते बिखरे पडे थे। माधव ने मोजे बाथरूम मे डाल दिये और जूते शैल्फ मे रखे। फिर दीवान पर पडी चादर को उसने ठीक से बिछाया, कुर्सियो की गद्दियाँ सीधी की और मेज पर पडी पुस्तकें व पत्रिकायें बद करके अल्मारी मे रख रहा था कि मीना धुली हुई चादर लेकर आ गयी।

बोली, "माधव जरा यह बिछवाना दीवान पर।" फिर उसने पिछली चादर उतारी, उससे गद्दे को फटकारा और दोनो ने मिलकर साफ चादर बिछा दी।

"चाचीजी से पूछती हूँ ये गद्दियो के गिलाफ भी बदलने है क्या," बोलती हुई वह अन्दर गयी और धुले हुए गिलाफ लेकर लौटी। दोनो ने मिलकर गद्दियाँ बदली। मीना मैले गिलाफ गन्दे कपडो की अलमारी मे रखने गयी और माधव मेजपोश बदल ही रहा था कि काकूजी के सीढिया चढने की आवाज आयी। माधव कयास लगा ही रहा था कि उनका मूड कैसा होगा, उनसे अपनी रवानगी की बात करना क्या उचित होगा कि उनकी आवाज सुनाई दी, "वाह, मीना बिटिया वाह! सारा घर साफ कर दिया!" वे उसकी पीठ ठोक रहे थे। माधव सोच रहा था, *क्या अपनी बात उनसे अभी कहे,* कि उसे मालूम हुआ वे मम्मी के कमरे मे चले गये और मम्मी उनको अपनी तकलीफें सुना रही है। वह अक्सर उन्हे अपनी दिन के दौरान बिगडी तबियत के बारे मे सुनाना चाहती थी मगर काकूजी कभी-कभी मूड होने पर ही ध्यान से बैठ कर सुनते थे। मीना धुले हुये मेजपोश वाली मेज पर फूलदान रखने आयी और उससे पूछा, "चाय पियोगे माधव ?"

माधव के गले मे ये शब्द अटक कर रह गये कि "काकूजी से ही पूछ लो तो बेहतर होगा," और उसने यही कहा, "जैसे तुम्हे सुविधा हो करो।" वह अभी हाल मे अलमारी मे रखी पत्रिका निकाल कर, खोलकर बैठ गया। उसे मालूम था कि मीना अभी चाय लेकर आयेगी और वह

सोच रहा था कि जहा भी काकूजी पियेंगे मम्मी के कमरे मे या वैठक में वह भी अपनी चाय वही ले जायेगा तथा अपनी परेशानी उन्हे वतायेगा। वह अपने आपको मानसिक रूप से अकेला ही दिल्ली जाने के लिये भी तैयार कर रहा था। वह सोच रहा था कि वहा जाकर वार्डन साहव तथा अन्य सभी के आगे दोनो हाथ जोडकर खडा हो जायेगा कि वहा उसकी तवियत खराव हो गयी थी—पीलिया या टाइफाइड रोग का नाम लेगा वह—अत आने मे देर हो गयी।

मीना की पदचाप सुनाई दी। वडी जल्दी आ गयी वह। लेकिन उसके हाथ मे चाय नहीं थी। उसने जूतो की शेल्फ मे मे काकूजी के जूते निकाले और उनमे मोजे न पाकर उन्हे शेल्फ के नीचे, मुड्डो के नीचे, दीवान के नीचे खोजने लगी। माधव जान तो गया था उसकी खोज की वस्तु को लेकिन कुछ वोला नही। "माधव, चाचाजी के मोजे देखे हैं कही?" सुनने पर ही वोला, "दो जोडी गन्दे मोजे मैंने वाथरूम मे डाले हैं।"

"ओह, कही भीग न गये हो!" मीना जूते लेकर चली गयी। माधव ने चिन्तातुर होकर गैलरी मे जाकर वाथरूम की ओर झाका। उसमे से शानी, माधव की सगी छोटी वहिन, छप छप कर वाहर निकल रही थी। वह अभी स्कूल से लौटी थी और काकूजी के कहने पर हाथ मुंह व पैर धोकर आयी थी। माधव जान गया कि अव मोजे गीले पाकर जूते पहिनने मे असमर्थ होकर काकूजी को गुस्सा आ जायेगा। उसकी वडी चिन्ता यही थी कि आज की उसकी रवानगी यहा से हो ही जाये।

शानी चूल्हे पर चढी चाय की निगरानी करने लगी और मीना ने जाच कर काकूजी को सूचना दी कि माधव ने मोजे वाथरूम मे डाल दिये थे सो वे भीग गये है। अव जूते कैसे पहिनेगे? माधव काकूजी को कहने गया कि वे उसके मोजे पहिन लें। वह सोच रहा था कि अगर वह आज छात्रावास चला गया तो वहा उसे तीन जोडी और मिल जायेंगे। वह मम्मी के कमरे मे पहुँचा तो उसने देखा कि काकूजी का पारा चढा हुआ है।

शानी छ कपो मे चाय छान लायी थी। उसे खिडकी मे रखती हुई वोली, "मीना दीदी, चल्हा खाली हो गया है।"

"शाबास, बेटी शाबास, बडी होशियार लडकी है। पाच साल की लडकी ट्रे भर कर उठा लायी है। लेकिन ये इतने सारे कप किसलिये ?" काकूजी बोले।

"चाय इतनी सारी थी। मै भी पी लू ?"

"नही, चाय बच्चो को नुकसान करती है। तुम दीदी से कह दो वह तुम्हे दूध गर्म करके देगी।"

"नही, मैं दूध नही पियूँगी।"

'पी ले बेटी", उसे दुलारते हुए काकूजी ने कहा।

"नही—मैं खेलने जाऊ ?"

"अच्छा जाओ।"

माधव इतनी देर से कमरे मे प्रवेशद्वार के पास ही खडा था। काकूजी उसकी ओर मुखातिब हुए, "क्यो नौकर, चाय पीने आ गये तुम ?" कुछ ठहरकर फिर बोले, "तुम्हारे कारण बिना मोजो के जूते हमने पहन लिये है—तुम हमारी तकलीफो को क्यो बढाते हो ?" माधव मुँह से बोल न सका। अपने हाथ मे पकडे हुए धुले हुए साफ मोजे उसने उनकी ओर बढा दिये। "अच्छा जबान पर तो जैसे ताला लगा है! हम तुम्हारे मोजे पहन ले तो फिर तो तुम हमे टगडी मार का गिरा दोगे। अभी क्या कहते हो तुम अपनी मम्मी से ? हम तो राजा-रानी है और तुम हमारी उत्पीडित प्रजा हो!"

"चाचीजी, कौन सी दाल चढा दू ?" मीना दरवाजे के बाहर से ही पूछ रही थी।

"कोई भी चढा दो—कौन सी चार छ रखी होगी।" काकूजी ही बोल पड, "और रघु के आते ही बहुत जल्दी-जल्दी सब चीजे तैयार कर लेना।" फिर माधव की ओर मुखातिब होकर बोले, "सारे बच्चे काम करते है, तुम्हारे बराबर की मीना ने रसोई सभाल रखी है और तुम्हारे बराबर के रघु ने ही बाजार का काम। तुम्हारी मम्मी की तबीयत ठीक रहती नही। म अपनी नौकरी मे व्यस्त रहता हूँ, नन्ही शानी भी कुछ

न कुछ सहयोग देती ही है, और तुम, या तो काम से कोई मतलब नही रखोगे और करोगे भी तो ऐसे काम जैसे मोजे भिगोना।" उन्होने माधव के हाथ से मोजे लेकर उसके मुँह पर मार दिये और कहा, "तुम तो बस चाय पियो, खाना खाओ, मौज करो और हमे कोसो।" माधव ने पूरी आखें खोल कर अपने पिता को देखा तो उन्हे लगा कि लडका उनका मुकाबला करने की कोशिश कर रहा है और माधव ने अपना दाया हाथ ऊँचा कर अपना सिर खुजाने की जो कोशिश की तो पिता ने जाने कैसे समझा कि वह उन पर वार करेगा।

बस वे उस पर टूट पडे और माधव जो कि अपनी व्यथा से पहिले ही पीडित था, पिता को उत्तेजित देख कर किसी अप्रिय स्थिति से बचने के लिये घर से बाहर निकल गया।

उसने देखा कि शानी रग-बिरगे कपडे पहने हुए लडकियो के साथ काई भागदौड का खेल खेल रही है। उसे पता भी नही होगा कि उस के भैया की पिटाई लग चुकी है।

"माधव, चाय पीकर जाना।" मीना की आवाज थी यह, जो उसे ऊपर खिडकी मे से देख रही थी।

"जाने दो, चाय पी कर क्या निहाल करेगा यह। जब मूड होगा तो खुद आकर पी लेगा।" पिता की आवाज वास्तविक थी या माधव ने इसकी कल्पना ही की थी—वह निश्चयपूर्वक नही कह सकता।

वह पैदल चलता गया, दूर बहुत दूर, उसके कदम उसे कहा ले जा रहे थे वह स्वय नही जानता था, फिर उसने पाया कि वह स्टेशन पर पहुँच गया है। उसके एक ओर एक पार्क की तरह बना हुआ लोहे की जाली से घिरा हुआ घास का मैदान था जिसमे कुछ कुली सुस्ता रहे थे। पास ही एक चाय की थडी थी। उसे चाय की तलब भी लगी हुई थी। उसे मीना का वाक्य याद आया, "चाय पीकर जाना।" उसने चाय वाले को एक बडा गिलास चाय के लिये बोल दिया और मीना के वाक्य पर अपना ध्यान केंद्रित किया। 'चाय पीकर कहाँ जाने को कह रही थी वह? कही नही, या कही भी, क्या वह अपने किसी दोस्त के यहाँ जायेगा? उसके सहपाठी दोस्त तो दिल्ली मे ही हैं और यहा परिचितो

मे उसके हमउम्र जो लडके हैं क्या वह उन्हे देखकर खुश होगा, या वे उसे देखकर होंगे ? इनमे से कुछ नही होगा। सामान्य रूप से वे यही पूछेंगे कि वह कितने दिन के लिये छुट्टी लेकर आया है तथा कब जायेगा, इससे उसे और भी तकलीफ होगी। कोई उसकी तकलीफ को कम तो नही कर देगा।'

"चाय सा'ब।"

माधव की विचार-शृंखला टूट गयी। वह एक साब जैसा दिखता है ? वह एक साहब ही तो बनना चाहता है लेकिन काकूजी तो उसके इस सपने मे शामिल हुए नही हैं कभी। वह तो उससे बाबूगिरी की ही अपेक्षा रखते हैं।

एक सिपाही आकर थडी वाले को एक चाय का आॅर्डर दे गया। थडी वाला बची हुई ठंडी चाय उसके लिये गरम करने लगा। "ठुल्या को चाय चहिये ! हुँह ! पैसे तो कभी देते नही थे और जो बचे वो इनपे खच दो !" माधव की ओर मुखातिब होकर वह बोला।

माधव को लगा उसके पिता उसके बारे मे किसी से कह रहे हैं। उसने अपनी चाय की कीमत एक चवन्नी निकाल कर थडी वाले को थमा दी। "उसके पैसे भी म दू क्या ?"

"नही सा'ब, आपका दिल सलामत रहे !" थडी वाला बोला।

माधव ने एक और चवन्नी उसकी ओर उछाल दी। फिर एक आने की छ सिगरटें खरीदी। एक जलाई और धुँआ उडाते हुए स्टेशन के अन्दर प्रविष्ट हो गया। 'जो भी गाडी मेरे सामने आ जायेगी उसी मे बैठ जाऊँगा। अब अपनी जिंदगी खुद बनानी है। टिक्ट चेकर से तो कुछ न कुछ झूठ बोलना ही होगा।'

आज से सत्रह साल पहले उसके पिता श्री सीतापति दास जब घर से भागे थे तब वह घबराये हुये तथा दिशाहीन थे लेकिन आज जब माधव ने घर छोडा तो वह तुलनात्मक रूप से सभला हुआ व आत्म-विश्वासपूर्ण था—'जो होगा सो देखा जायेगा,' इस विचार से परिपूर्ण था। यह कदम उसे सुविचारित, नियति का हिस्सा ही लग रहा था

जो उसे एक स्वतत्र अस्तित्व के रूप मे स्थापित कर देगा। धीमी चाल से वह प्लेटफार्म पर चहलकदमी करने लगा।

प्लेटफार्म न एक पर तो एक मालगाडी खडी थी और कोई भीड भी उसके पास नही थी। हाँ प्लेटफार्म न तीन पर काफी भीड लगी हुई थी। इस वक्त गाडी जयपुर जाती है, वहा ठीक रहेगा। जयपुर राजधानी है और अब इतना बढ गया है कि वहा ठहरने व जीविका की व्यवस्था हो ही जायेगी। माधव पुल पर चढ गया और उतरने की सीढियो की तरफ बढ ही रहा था कि जयपुर वाली गाडी आ गयी। जो लोग बैंचो आदि पर बैठे थे वे खडे हो गये। यद्यपि यह गाडी उदयपुर स्टेशन से ही लगती थी लेकिन बहुत से लोग पहले से ही इसमे आकर बैठ गये थे और खिडकियो दरवाजो मे से बोल रहे थे, "यहा जगह नहीं है—कोई और डिब्बा देखो।"

माधव ने चढने मे सघपरत एक परिवार के वृद्ध पुरुष, युवती तथा तीन बालको की सहायता की। उसने पहले वृद्ध पुरुष को ऊपर चढकर सबके लिये जगह ढूढने के लिये कहा। फिर युवती से कहा, "आप चढ जाओ मैं सामान पकडाता हूँ।" उसने उनके दो बक्स, एक बिस्तरबद तथा एक पीपा, एक सुराही, एक टोकरी सब एक-एक करके चढा दिये और फिर दोनो छोटे बच्चो को बगलो से पकडकर ऊपर चढा दिया फिर तीसरा बच्चा अपने आप चढ गया और उनके पीछे माधव। बोला, "आप अपना सामान देख लीजिये कुछ रह तो नही गया।" उत्तर मे युवती ने उसे धन्यवाद दिया। "नही सब काई आगा। मैं वारी जाऊँ वीरा।"

यह तीसरी श्रेणी का अनारक्षित डिब्बा था और इसमे भीड टूटी पड रही थी। युवती ने माधव की सहायता से बिस्तरबद खोल कर ऊपर की एक बथ पर लगा दिया जिस पर दो बडे बच्चो को चढा दिया। नीचे की सामने वाली सीट पर वृद्ध के लिये एक कम्बल बिछा दिया और छोटे बच्चे व स्वय के लिये दोनो सीटो के बीच के स्थान मे एक गदेली बिछा दी। फिर वह वृद्ध के पैताने बैठ गयी और माधव स बोली।

"थैं भी कही टिक जाओ वीरा।"

माधव ने दोनों सीटों के साथ लगी खिडकियो के बीच के स्थान के सहारे पीपा रख लिया और युवती से पूछा, "हमारे बैठने से टूट तो नही जायेगा यह पीपा ?"

"नै टूटे।" फिर साभार मुस्कुरा कर बोली, "थैं कोडे जाश्रोला बीरा ?"

"जी, मैं जयपुर जाऊँगा। आप ?"

"म्हे आगरा जावाला, म्हारे भाई रा ब्याव है। पिताजी म्हाने लेवा आया है, आप काई करता हो जयपुर मे ?"

"जी मेरे मामाजी बीमार है।"

माधव ज्यादा घुलना मिलना नही चाहता था। उसने पीछे सिरहाना लगाकर आखें बन्द कर ली। टिकट चेकर के आने का भी डर था। माधव ने सोच लिया था कि उसके आने पर जेब उडने का अभिनय करेगा। घर पर घटी घटनायें एक एक करके उसके सामने घूम रही थीं। फिर उसे याद आयी दिल्ली मे बढती हुई घुटन जिससे बचने, जिसका उपचार करने वह उदयपुर आया था लेकिन घरवाले उसकी सहायता करने के प्रति कितने उदासीन थे और फिर आज का सब का व्यवहार—तौबा! कोई भला आदमी जी नही सकता ऐसे माहौल मे जहाँ पर एक कुत्ते से ज्यादा इज्जत नही मिलती उसे। घर छोडने का कोई पश्चात्ताप माधव के दिल मे नही था। अब यह गाडी चल देनी चाहिये, कही ऐसा न हो कि घर से कोई आ जाये! ई ई ई ई ई ई सीटी लग गयी। माधव गिनती गिनने लगा कि सीटी के कितनी देर बाद गाडी चल देगी। बीस तक गिन कर एक क्षण रुका। फिर इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस और पच्चीस पर गाडी सरकने लगी। थोडी राहत महसूस की उसने। गाडी चलने पर युवती को जब निश्चय हो गया कि अब गाडी मे और कोई नही आयेगा तो उसने अपने बच्चा को नीचे उतारा तथा उन्हे तथा अपने वृद्ध पिता को खाना निकाल कर दिया। माधव को भी उसने आग्रहपूर्वक खिलाया। फिर वे सभी रात्रि विश्राम के लिये जम गये। माधव खिडकियो के बीच दीवार का सिरहाना लगा कर बैठा रहा यद्यपि वृद्ध ने उससे कई बार कहा कि वह उसकी सीट पर लेट कर

कमर सीधी कर ले। रात के बारह बजे के लगभग जब माधव लघुशका के लिये उठा तो युवती भी जाग गयी। उसने कहा, "वीरा एक दरी वाहर विछार नीचे सो जाग्रो, घणा ग्रादमो सोवे है।" तो माधव युवती से दरी लेकर गलियारे मे जाकर सो ही गया।

रलगाडी सुवह चार बजे फुलेरा पहुँची थी ग्रौर लोग गलियारे मे होकर निकल रहे थे। माधव को पहिले तो पुश्तैनी, फिर काकूजी के घर की याद हो ग्राई कि वहाँ की तरह यहाँ भी उसे सभी लोग कुचलने पर ग्रामादा हैं। वह उठ बैठा। दरी तह करके पीपा के ऊपर रख दी। युवती भी उठ बैठी थी, माधव ने चाय के दो कुल्हड खरीद लिये। युवती ने वृद्ध से चाय के लिये पूछा ग्रौर उसके इन्कार करने पर स्वय पीने लगी। फिर उसने ग्रपने ऊपर सोने वाले बच्चो को उठाया ग्रौर तीनो के हाथ मे दूध के कुल्हड थमा दिये। वडा बच्चा तो शानी के बरावर का था। माधव को लगा कि यह युवती बडी कर्मठ है। हमारे यहाँ तो शानी की माता कभी ग्रपने हाथ से दूध देती नही, या तो मीना को ग्रादेश दे देती हैं या फिर शानी स्वय को, इसी कारण वह बच्ची शायद ही कभी पीती है। युवती ने बच्चा को विस्कुट खाने को दे दिये थे जिनसे वे खेल भी रहे थे। ग्रव बच्चे ऊपर जाने को तैयार नही थे। युवती ने माधव से कहा, वह ऊपर चला जाये। माधव कुछ विचार कर चला ही गया। वहा लेट कर भी कभी ग्रांख खालकर नीचे बच्चो का खेल देखने लगता तो कभी ग्रांख वद कर दिल्ली छात्रावास मे लगातार धन न ग्राने के कारण ग्रपनी बदहवासी की स्थिति को याद करता तथा कभी उसके वाद घर पर गुजरे पिछले दस दिनो को। उसे रोष इस बात पर था कि उसे घर मे यह पूछने की भी ग्रनुमति नही थी कि उसे मनीग्राडर कब, किसने व कहाँ से किया था ग्रौर इस पर कि उसके पत्र उन्हे क्यूँ न मिले हागे, इस विषय पर खुलकर चर्चा भी नही की गयी।

लगभग नौ बजे गाडी जयपुर जक्शन पहुँची। यह शुभ सयोग ही था माधव के लिये कि डिब्बे मे टिकट चैकर नही ग्राया था। वह नीचे उतर कर युवती की सुराही भर लाया, उनके लिये खाने पीने का सामान ले ग्राया। फिर "ग्रच्छा जी," कह कर उसने युवती तथा वृद्ध के हाथ जोड दिये। माधव चाहता था कि थोडी देर से गेट तक जाये ताकि गेटमैन टिकट न मागे। ग्रत दूर बने एक स्टाल पर जाकर एक

कप चाय उसने धीरे-धीरे तसल्ली से पी ताकि आगे का कायक्रम भा बना ले। जब आगरा जाने वाली गाडी ने रवाना होने की सीटी दे दी तो उसने मुख्य द्वार की ओर देखा। गेटमैन दिखाई नही दे रहा था। वह मद्धिम चाल से गेट की तरफ बढा तो उसने पाया कि गेटमैन पीछे की तरफ उपस्थित था। वह अपने किसी साथी से बातें कर रहा था। उसने टिकट के लिये उसकी ओर हाथ बढा दिया। माधव ने पहले तो अपनी जेबे देखी। पस देखा फिर जैसे उसे याद आया, "टिकट तो मेरी बहन के साथ चला गया।"

"अच्छाऽ" पैनी आखो से देखते हुए उसने पूछा, "क्या नाम है तेरी बहन का ?"

"जी, बीरो।"

"कहाँ चली गयी वह ?"

"जी वह आगरा गयी है। साथ मे हमारे पिताजी और मेरे तीन भाजे भी हैं, वे डिब्बा नबर 6732 मे बैठे है," माधव रुआसा हो उठा था।"

"जाने भी दे यार," गेटमैन के साथी ने कहा, और उसने उसे जाने दिया। युवतो की जितनी सहायता माधव ने की, वह बदले मे उससे ज्यादा ही कर गयी थी, कम नही।

× × ×

जयपुर इतना बडा शहर है, लेकिन वह काम कहाँ ढूढे ? क्या किसी दुकान पर सामान बेचेगा ? नही, कुलीगिरी भी उसके बस मे नही होगी, और बोझा उठा उठाकर उसकी ऊचाई बढना और बद हो जायेगी। वह किसी स्कूल मे कोई काम करना पसन्द करेगा। अध्यापक तो उसे कोई प्राथमिक कक्षा का भी नही बनायेगा, उसके पास सब से

छोटा, हाईस्कूल का सर्टिफिकेट भी नही। चलो देखते है। एक रिक्शेवाला गुजर रहा था, "भैया जी कौन सी जगह चलना है ?" माधव ने इन्कार मे सर हिला दिया, वह चौराहे पर जाकर खडा हो गया। नगर तीनो ओर फला हुआ था, किधर की ओर जाये।

"साव किधर जाने का है ?"

"यहाँ का सबसे अच्छा स्कूल कौन सा है, बडा ?" माधव ने उसके बिल्कुल पास जाकर कहा।

"साव यहाँ बहुत स्कूल है हम तो सबके नाम नही जानता। उधर बहुत स्कूल बहुत बडा बडा है।" रिक्शेवाला एक हाथ से इशारे करता हुआ बोला।

"अच्छा उधर ही ले चलो, क्या लोगे ?"

"रुपया पूरा लगा सा'ब मगर आप को नाम याद नही क्या ?"

"नाम याद नही है वहाँ जाकर याद आ जायेगा," रिक्शे वाल ने उसे सजय स्कूल होते हुए सैंट जेवियर और सैंट पाल स्कूल दिखा दिये जो कि आस-पास ही थे। छोटे-छोटे और कई स्कूल भी थे। माधव सभी स्कूलो को देखकर उनके प्रभाव ग्रहण कर रहा था। सजय स्कूल मे लडके और लडकिया दोनो ही थ। सेंट जेवियर विशाल स्कूल था— जहाँ कुछ मैदानो मे ही लडके खेल रहे थे। सेंट पाल स्कूल मे थोडी सी जगह मे बहुत बच्च थे लडकियाँ और लडके। सजय स्कूल उसे बहुत ही अनुशासित, अच्छा सा व अपने लिये उपयुक्त लगा।

"अगर और स्कूल देखना है तो पैसा जास्ती होगा।"

"नही भाई, ये ले एक रुपया।" और माधव उतर गया। वह वापस लौट कर सजय स्कूल गया और वहा चिट भेजकर प्रिंसीपल साहिबा से मिला। अभिवादन के पश्चात वह बोला, "एक लडका है। वह कोई पारिवारिक परिस्थितिवश पिछले वप हाई स्कूल परीक्षा नही दे सका। अगर आप उसे कोई काम दे दें तो आपकी बडी कृपा होगी।"

"कहा है वो लडका ?"

"जी वो मैं हूँ।"

"अच्छा आप परसो मिलिये, कोई काम होगा तो म देखूगी। आपको कोई बाबू का काम तो सौप सकते नही हम।"

"जी, वह मै समझता हूँ।"

माधव स्कूल से बाहर आ गया। परसो ही इनसे मिलेगा। पदल चलते चलते ही वह अजमेरी गेट पहुच गया। वहा से वसें सागानेर जा रही थी। एक उसके बराबर का लडका चिल्ला रहा था, "यूनिर्वसिटी, टोंक फाटक, हवाई अड्डा, सागानेर!" और सवारियो को बुला रहा था। माधव को लगा कि दो दिन तो उसे यही काम कर लेना चाहिये। उसने उस लडके से पूछा, "यह काम तुम्हे किसने दिया है?"

"ये हमारी ही बस है, मेरा बाप ड्राइवर है इसका। हमारे बडे बाप की भी बस है।"

"मुझे भी तुम ये काम दिला दो।"

लडके ने माधव को ध्यान से देखा, माधव ने निगाहे झुका ली। लेकिन आवाज लगाने वाले लडके को लगा कि इसकी कोई मजबूरी है कि इसे काम चाहिये ही। वह उसे एक अन्य गाडी मे कुछ साथियो के साथ बैठे अपने पिता के पास ले गया। "ये लडका गाडी पे आवाज लगाना चाहता है।" लडके के पिता ने भी उसे ध्यान से देखा--माधव ने नजर फिर झुका ली। "पढे लिखे लगते हो तुम तो!

"जी आप मुझे काम तो दे देगे न!"

"क्या मागते हो?"

"जी, जो आप ठीक समझे दे देना।"

"ठीक है, करो काम।"

और यू माधव रशीद के साथ, आवाज लगाने, बस भरने, पैसे इकट्ठे करने का काम करता रहा। पहिले उसे ये काम बहुत घटिया सा

लगा करता था लेकिन जब वह उसे करने लगा तो उसे यह एक मेहनत का काम लगा—घटियापन की तो कोई बात ही नही इसमे। यह ता एक जरूरी काम है। जयपुर से सागानेर, वापस जयपुर और फिर सागानेर पहुचते उन्ह दो वज गये थे। रशीद और उसके पिता ने अपना टिफिन खोला। मीट रोटी थे। पिता पुत्र न माधव को भी निमन्त्रित किया तो वह बोला, "म मीट नही खाता।"

"अच्छा फिर ढावे पर चलते है।" वे तीना ढावे पर आ गये। ढावे वाले ने मीट भी गरम कर दिया। उन्होने घर की रोटी टिफिन मे ही छोड दी और गम-गम तन्दूरी रोटिया मीट से खाने लगे। माधव दाल, दही, और आलू के साग से खा रहा था। "स्वाद बुरा नही है इस खाने का," माधव ने सोचा।

खाना खा कर वे लोग फिर काम पर लग गये। उन्होने पाच यात्राये और की। रात नौ बजे वे अतिम यात्रा से लौटे तो उन्होने माधव को तीन रुपये दिये। माधव न अपने आप को समझाया कि दिन भर मे डेढ सौ रुपये से ज्यादा कमाई हुई है तो क्या? उसका पारश्रमिक तीन रुपय ठीक ही है। उधर वे बाप बेट दिन भर लगे रहे—बस उनकी पूजी भी है, एक बार बीस रुपय का पेट्रोल भरवाया था और टक्स आदि भी तो भरने होते है इन्हे। अनजान शहर मे उसे एक काम मिल गया और रशीद से जो थोडी दोस्ती हो गयी है, वह उसके लिये एक वडी नियामत है। और इन्होने दोपहर मे खाना भी तो खिलाया था उसे।

"तुम कहा रहते हो?" बाप ने पूछा।

"जी, मै बस मे ही सो जाऊँगा।" बाप ने सशक निगाह से उसकी ओर देखा तो माधव ने फिर नजर नीची कर ली। "लडका बडा अदव वाला है। कोई मुसीबत आन पडी है इस पर," उसने सोचा।

अन्तिम यात्रा के बाद वे बस को अपने मीरजी के बाग स्थित अपने घर के पास तक ले गये। एक खाली स्थान पर बस को रखकर और एक ही मिनट पैदल चल कर वे घर पहुँचे। अब्बा ने अपनी बेगम से कहा—"अजी, देखो जी, अपना आठवा बच्चा आया है।" वह अपनी बेगम को उत्साहपूर्ण स्वर मे माधव का परिचय दे रह थे जिनको रशीद अम्मी न कहकर खाला कहता था। 'तुम इन्ह अम्मी क्यो नही कहते?" माधव

ने रशीद से पूछा।

"हम चार रहमत वाजी, मैं, सलमा और इशाक को जन्म देकर हमारी अम्मी तो खुदा को प्यारी हो गयी थी फिर यह हमारी खाला आ गयी।"

"अरे साहवजादे अव मैं क्या तेरी अम्मी नही, कोई तकलीफ देती हू क्या तुझे ? तू पहले और सद्दीक, मुन्नी और शकीला पीछे—ये कहू हू मै तो।"

"खाला, मैं तो पेले से खाला कहे था तो अम्मी लफ्ज जुवान पे ही ना चढे और कोई वात थोडे ना है।"

इस बीच सलमा ने दाल गम होने चूल्हे पर चढा दी थी। अम्मी सबको जल्दी से खाना परोसना चाहती थी लेकिन माधव नहाना चाहता था। तव तक अब्बा अपने छोटे बच्चो से खेलते रहे। रशीद ने सबके विस्तर लगा दिये और माधव ने नहाने के साथ अपने सारे कपडे धोकर सुखा दिये। अब्बा के दिये हुये नयी वनियान व नयी लुगी पहन ली। माधव का अगला दिन भी वस पर आवाज लगाने मे व शाम को नहाने मे बीता।

तीसरे दिन सुवह नहाकर चाय पीकर जब माधव ने अब्बा को बताया कि वह एक काम से जा रहा है और बाद मे अजमेरी गेट पर मिलेगा तो उन्होने भारी दिल से उसे विदा किया। माधव ने पहले दिन के तीन और दूसरे दिन के पाच मिलाकर आठ रुपये उन्हे देने की कोशिश की तो उन्होने डाटकर और अधिकारपूर्वक सात और मिलाकर पन्द्रह उसे दे दिये और कहा, "आते रहना वेटा," सारा परिवार दरवाजे पर इकटठा हो गया था। माधव उनके प्रेम से अभिभूत था।

साफ सुथरे कपडो मे माधव फिर चिट भेज कर जब सजय स्कूल की प्रिंसीपल महोदया से मिला तो उन्होने कहा, "हमे एक वस कन्डक्टर की जरुरत तो है क्योकि अभी स्कूल की वाई ही बच्चो को लेने छोडने जाती है, दिनभर स्कूल मे काम करती है अत झाडू लगाने उसे शाम को आना पडता है। क्या तुम यह काम कर सकोगे ?" वह सोच रही थी कि लडका सम्भ्रान्त घर का दिखता है। लेकिन कोई मजबूरी होगी उसकी।

"जी हां मै कर सकूंगा, बहुत-बहुत धन्यवाद।" माधव सोच रहा था कि यहां उसे चीखना भी नही पडेगा और पैसे भी इकट्ठे नही करने पडेंगे। बहुत सुविधा का शान्तिपूर्ण काम होगा यह तो।

"कब से शुरू करोगे ?"

"कब से करूं ?"

"आज या कल से ?"

"जो आज से ही कर देता हूं।" माधव गया, नही, अरे
"जी वो ।"

"क्या ?"

"क्या यहां ठहरने की व्यवस्था भी हो सकेगी ?"

'तुम्हारा घर कहां है ?"

"जी हमारा घर दूर गाव मे है, कोई मजबूरी मे हमारी पढाई छूट गयी।"

लडके की आवाज मे निष्ठा का जो भाव था उससे प्रिंसीपल महोदया अप्रभावित नही रही। "वो जो चौकीदार है न, उससे बात कर लो तुम।" उन्हे खुशी हुई कि चौकीदार भी एक से दो भले रहेगे। प्रिंसीपल महोदया ने चपरासिन के साथ उसे चौकीदार के पास भेज दिया। चौकीदार बोला, "मैडम जी कहेगी तो हम क्या मना बोल सकते है ?" माधव बोला, "अच्छा मुझे जगह दिखा दो।" तो चौकीदार बाहरी गेट पर बाई को बिठा कर माधव को अपने साथ ले गया। उसका ठहरने का स्थान विद्यालय परिसर के ही अन्दर प्रिंसीपल महोदया के मुख्य मकान के साथ ही जुडा हुआ डेढ़ कमरे का "सरवेन्ट क्वाटर" था जिसके साथ ही लेटरीन बाथरूम भी जुडे हुए थे। कमरे मे चौकीदार की खाट व आधे कमरे मे पकाने का सामान रखा हुआ था। चौकीदार बोला, "रात मे इस खाट को बाहर मैदान मे डाल लेता हूं मैं, लेकिन सुबह जल्दी उठकर तैयार हो जाता हूं, फिर तो मेरी छुट्टी है। मैडम जी कोई

काम बताती हैं तो ही कुछ करता हूँ, ऊपरी काम की कुछ बख्शीश मिल जाती है नही तो म अपना कोई काम कर लेता हूँ दिन मे।"

"क्या काम ?"

"छोटा मोटा काम – वो फिर बताऊगा तुम्हे, जब तुम यहाँ रहोगे।"

यू चौकीदार से मिलकर अपने रहने की व्यवस्था की बात करके माधव ने प्रिंसीपल साहिबा को सूचित कर दिया। उसने उसी दिन मे कन्डक्टर का काम शुरू कर दिया। नन्हे-नन्हे बच्चो को सुबह ऊपर लेकर बिठा देना व दोपहर बाद बस से सुरक्षित उतार कर उनके इन्तजार करते हुए सरक्षको को सौपना अच्छा काम लगा। साथ ही, वह सोच रहा था कि अगले वर्ष वह हाईस्कूल की परीक्षा भी यही से फाम भरकर दे देगा। कोई दिक्कत होगी तो यही के शिक्षको से पूछ लेगा। उसने निर्णय किया कि हाईस्कूल की पढाई अभी से चालू कर देगा। पहली तनख्वाह पर एक जोडी अतिरिक्त कपडे व यहा के माध्यमिक पाठ्यक्रम की पुस्तके ही खरीदेगा। माधव ने जल्दी से एडवान्स न माँग कर प्रिंसीपल महोदया को और अधिक प्रभावित कर लिया। वह चौकीदार के साथ सुबह की चाय लेता था और रोटी शाम को एक ही वक्त ढाबे मे खाता था। यू ही उसने पाच माह बिता दिये तथा अगले सत्र मे माध्यमिक परीक्षा का फाम एक प्राइवेट उम्मीदवार के रूप मे भरकर अपने विद्यालय मे ही जमा कराने का निश्चय किया।

जिस दिन से नया सत्र शुरू हुआ, उसी दिन से वह नियमित रूप से पाच घण्टे पढने लगा। उसने चौकीदार से भी कहा कि वह भी परीक्षा दे ताकि साथ साथ अच्छी पढाई हो जाये। उसने प्रिंसीपल महोदया से अनुमति लेकर दसवी कक्षा मे सब विद्यार्थियो के पीछे बठकर कक्षाओ मे उपस्थित होना शुरू कर दिया। अपने पढे हुए विषयो का काम वह शिक्षको को दिखाता तथा स्वय के पढे हुए पाठ्य पर दसवी के छात्रो से मध्यावकश तथा खाली कालाशो मे बहसे करता। साथी छात्र व छात्राये उसे एक हस्ती मानने लगे थे जो कि मौलिक विचार रखता था।

दसवी कक्षा के फाम भरने के लिये आठवी कक्षा पास किये होने का प्रमाण पत्र प्राप्त करने माधव दिल्ली गया। वह पहिले तो मन मे बहुत

डर रहा था लेकिन वहाँ विद्यालय मे जाकर उसने प्रमाण पत्र के लिये आवेदन पत्र दिया तो पिछले कक्षाध्यापक ने होस्टल का बकाया एक सौ पाच रुपये काट कर कॉशन मनी के पिच्यानवे रुपये वापिस लौटाते हुए यही पूछा, "यहाँ से क्यो छोड गये तुम ?" और माधव ने सकुचाते हुए जवाब दे दिया, "जी, घर की परिस्थिति कुछ ऐसी ही बन गयी थी," और उन्होने आगे कुछ न पूछते हुए प्रमाण पत्र बनाकर दे दिया तो माधव चुपचाप उन्हे मन ही मन धन्यवाद देते हुए निकल आया। हा, होस्टल का पुराना बकाया निकाल कर पिच्यानवे रुपये प्राप्त करने पर उसे बहुत आश्चय हुआ और उसने सोचा कि वह ये रुपये पिता को भेज देगा। लेकिन कब ? अभी नही, जब वह हाईस्कूल पास कर लेगा तब। शायद तभी।

माधव ने पाँच रुपये उनमे और मिलाकर जयपुर की स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की एम आई रोड शाखा मे सौ रुपये से बचत खाता खोल लिया और फिर हर माह अपनी बचत बक मे डालने लगा। यद्यपि उसने जमा किये जाने वाले पैसे के विषय मे कोई योजना नही बनायी थी लेकिन तनख्वाह के सौ रुपयो को खच करने के लिये उसके पास ज्यादा मद नही थे। ठहरने का कोई खच नही था। वह बस थोडा साबुन कपडे धोने व नहाने का ले आता था, सिर मे डालने के तेल की एक शीशी दो माह चल जाती थी। अगर वह दोनो वक्त भी ढाबे पर खाना खाये तो साठ रुपये लगे लेकिन वह अक्सर एक ही वक्त शाम को खाता था। पचास पैसे की कोई सब्जी लेता दस पैसे की एक रोटी थी। वह जब चार रोटिया खाता तब दस पैसे की टिप छोड देता था, पाच खाता तो नही छाडता, दाल व सलाद तो रोटी के साथ मिलते ही थे।

माधव चौकीदार को अपनी चाय के पाँच रुपया महीना देता था। यद्यपि स्कूल मे जो स्टॉफ मध्यावकाश मे चाय पीते थे वे तीन रुपया प्रति व्यक्ति प्रति माह इकट्ठे करते थे और महीने के अन्त मे जितनी राशि बच जाती उससे एक बार मिठाई, नमकीन व फलो की दावत कर लेते थे। माधव उनके हिसाब से सोचता तो देखता कि ये लोग छुट्टियो के दिन चाय नही पीते हैं और वह स्वय कई बार चौकीदार के पास शाम को भी पी लेता था। तब वह स्वय कोई नाश्ता भी बाजार से खरीद लाता था।

चौकीदार ने कई बार माधव से कहा कि वह भी उसके साथ खाना पकाकर खाया करे लेकिन माधव को लगता कि इससे उसका स्तर गिर जायेगा, पढाई से ध्यान बट जायेगा और झमेला वढ जायेगा। अभी तो गर्मिया चल रही थी लेकिन दीवाली आने से पहिले माधव ने चौकीदार को कई बार छेडा कि वह एक रजाई खरीद ले और किराये पर माधव दे दे। जब कभी मौसम की खराबी या अध्ययन मे व्यस्तता जैसे कारणवश माधव ढाबे पर न जा पाता तो निश्चित रूप से चौकीदार उसका भी खाना पकाकर उसके सामने पेश करता।

चौकीदार एक पतालीस साल का अधड आदमी था। उसे माधव के आने मे यह आराम हो गया कि अब उसे गाव जाने और वहा पर माता-पिता, पत्नी-बच्चे, व छोटी सी खेती को सभाल आने के लिये एक-दो दिन की छुट्टी बिना झगडे टटे के मिलने लगी। कई बार वह शनिवार शाम चला जाता था और सोमवार की सुवह लौट आता।

गाँव के छोटे से खेत से उनका गुजारा चलता नही था तव वह पाच वर्ष पूव गाँव के एक लडके से, जो यहाँ कॉलेज मे व्याख्याता था, आकर मिला। उसके कहने पर ही चौकीदार को इस स्कूल मे काम मिला था। व्याख्याता के दोनो बच्चे इसी विद्यालय मे पढते थे और चौकीदार उन्हे दुआयें देता कि उन्होने उसकी मदद की। चौकीदार सोचता था कि उसकी जिन्दगी यह नौकरी पाकर मुकम्मिल हो गयी है, वह गाव जाता है तो कितने लोग उसे मिलने पूछने आते है—पहिले उसे जग्गा कहने वाले उसे जगत भाई, जगतरामजी कह कर मानते हैं—उसकी इज्जत वन गयी है गाव मे। आदमी को और क्या चाहिये भला?

विद्यालय मे पढने की अनुमति मिलने से माधव को यह लाभ हुआ कि पाठ्य पुस्तकें तथा उनके अतिरिक्त और जो पढनी चाहिये वे शिक्षको द्वारा मालूम हो जाती और वह पुस्तकालय से ले लेता। कई वार जब शिक्षक अनुपस्थित होते या कोई उत्सव आदि मनाये जाते तो वह पुस्तकालय मे बैठकर मनचाही पुस्तके पढता रहता।

उसने कही पढा था कि कमठ व्यक्ति के लिये जीवन कभी असह्य नही होता और वह ऐसा ही वनने का प्रयास करता था।

× × × ×

नियमित अध्ययन करने तथा साथ ही काम करते वक्त भी विषय वस्तु पर विचार करने एव बराबर के अध्यवसायी छात्रो से बहस करने, लिखकर याद करने, अनपढ काका जगतजी को विषय वस्तु समझाने, सजय स्कूल के बढिया शिक्षको द्वारा अपने काम की जाँच करवाने के कारण एव लगातार काय सुधार मे लगे रहने के फलस्वरूप माधव के पर्चे बहुत अच्छे हुये। उसके पर्चो के बाद फिर कुछ दिन छोटी कक्षाओ की पढाई व परीक्षायें हुई और जब वह पुन बस परिचालक का काय करने लगा तब उसने अपने मे यह परिवर्तन महसूस किया कि अब वह अधिक निष्ठा से काम करने लगा है क्योकि अब वह समझ गया था कि यह काम ही उसकी जीविका है, यही उसका अपने लक्ष्यो को पाने का माध्यम है। वह बच्चो को जब उनके घर छोडने जाता तो रास्ते मे उनसे कवितायें सुनता, उनकी भोली बातो पर जी खोल कर हँसता और कभी-कभी उन्हे छोटे छोटे चुटकुले सुनाता। बस मे बैठे बच्चो मे होड लगा जाती, "भइया, मेरे पास बैठो।" "भइया हमारे पास बैठो।" अब वह सरक्षको की अनुपस्थिति मे बच्चो को बस स नीचे उतारकर ड्राईवर द्वारा हार्न ही नही बजवाता रहता बल्कि खुद उन्हे गोद मे ले जाकर घर की घटी बजा देता और दरवाजा खुलने पर दौडकर वापस बस मे आ बैठता। स्कूल के मटको मे पानी भरने का काम, लॉन मे पानी देने का काम, जिनसे बचने के लिये वह पिछली गर्मी की छुट्टियो मे स्कूल से बाहर दूर किसी बगीचे मे जा बैठता था, अब खुशी-खुशी करता रहता। एक बार उसने झाडू भी लगाई। अब वह जान गया था कि कार्य अपने आप मे प्रसन्नता के दायक हो सकते हैं। वह कभी चौकीदार जी से कहता, "काका, आज आप आराम करो, आज मै आप के लिये खाना बनाता हूँ," और उनकी पसद पूछ कर, बाजार मे आवश्यक वस्तुए ले आता, पकाता और दोनो मिलकर खाते। वह प्रिसीपल के घर के काय भी कर देता।

छोटी कक्षाओ के परीक्षा परिणाम निकलने के बाद विद्यालय भवन मे विभिन्न विषयो के शिक्षण की कक्षायें शुरू हो गयी। अग्रेजी, गणित, विज्ञान, चित्रकला, गायन, वाद्यवादन, सिलाई-कला, पाक-कला की कक्षायें लेने कुछ नियमित व कुछ बाहरी शिक्षक आये। विद्यार्थी कुछ नियमित व कुछ नये थे। माधव ने भी वायलिन वादन की फीस दस रुपये भर दी। उसने पहले सात सुर निकालना सीखा और फिर सरगम।

उसने जिस दिन गाना सीखना शुरू किया, "आवारा हूँ या गर्दिश मे हूँ आसमान का तारा हूँ," और उसकी पहली लाइन पर ही था कि बाई उसे बुलाने आ गयी। "मैडम बुलावे है। दसवी का रिजल्ट आगा। सब लडका-लडकिया का रोल नम्बर लेर आवो।" तो वह अपने पास उतारे कागज को लेकर ही उनके कक्ष मे गया। बाबूजी अपने घर थे, बुलवाने पर कुछ देर मे ही आ पाते।

मैडम ने उसे राष्ट्रदूत का सप्लीमेंट-पत्र दिया। नियमित तथा प्राइवेट छात्रो के रोल नबर अलग-अलग स्थान पर थे। माधव का दिल हो रहा था कि अपना परिणाम पहले देख ले परन्तु मैडम के आदेशानुसार नियमित छात्रो का ही पहले देखा। पचास लडको मे से दस प्रथम, बीस द्वितीय तथा सत्रह तृतीय श्रेणी मे थे। दो सप्लीमेंट्री परीक्षा के योग्य घोषित किये गये थे। माधव ने पेन से अकित कर दिया। फिर मैडम ने खुद देखा। वह एक विद्यार्थी की चिंता कर रही थी जिसका रोल न कही नही था। "ओह गॉड, प्रिंटिंग गलत हो और हमारा बच्चा पास निकले।" वह बुदबुदा रही थी। माधव सिर झुका कर बैठा रहा मानो यह उसका ही दोष हो। माधव से उन्होने पूछा, "क्या कोई बच्चा फेल होने काबिल था?" तो माधव ने सिर झुकाये-झुकाये ही कहा, "जी मुझे नही पता।" माधव मैडम के दु ख को समझ रहा था कि एक भी छात्र फेल हो गया तो वह सस्था के शत-प्रतिशत परिणाम का दावा नही कर सकेंगी। "इसकी पुन गणना करवानी होगी," वह मानो अपने आप से कह रही थी।

जब मैडम ने उसे जाने की अनुमति दे दी तो उसने कहा, "म दो मिनट मे अखबार देता हूँ," और बाहर आकर अपना रोल न प्रथम श्रेणी के कॉलम मे देखा तो वह कितना खुश हुआ! मैडम को अखबार लौटाता हुआ बोला, "जी, म भी पास हो गया।"

"डिवीजन?"

"जी पहला है।"

"ये तो बहुत ही खुशी की बात है, मिठाई खिलाना।"

"अच्छा जी।" माधव मैडम से बात करते वक्त हमेशा नजरें नीची रखता था। वह नीची निगाह किये ही वायलिन की कक्षा मे न जाकर अपने कमरे मे चला गया। काका कही बाहर थे। माधव एक स्वप्न की सी अवस्था मे बिस्तर पर बैठ गया। अभी तक तो वह एक द्वितीय श्रेणी लाने वाला छात्र ही रहा था। अब उसने जो थोडा दबना, नबना सीख लिया है इस कारण से उसे प्रथम श्रेणी मिली है। लेकिन आज उसे मा की याद बहुत आ रही थी। वह होती तो उसकी बलायें लेती, मुहल्ले मे मिठाई बाटती। पिता भी खुश होते, उसे आर्शीवचन कहते हुए देर तक उससे बातें करते।

"लेकिन उधर रह कर मेरी प्रथम श्रेणी न आई होती। मगर कही ऐसा तो नही कि गलत प्रिन्ट के कारण प्रथम लिख गयी हो।" यू सोचते-सोचते माधव सो गया। सपने मे वह बादलो के ऊपर न जाने कहाँ उडा जा रहा था। उसका गला सूख रहा था। शरीर काँप रहा था और उसका अपने चढने-उतरने पर कोई नियत्रण नही था। जब शाम को काका ने उसे जगाया, माधव को बडी राहत मिली कि वह जमीन पर ही है। उसने उठकर कुल्ला किया और दो गिलास पानी पिया। फिर भरे मन से जब काका को अपने पास होने की खबर सुनायी और उन्होने जब मिठाई मागी तो बोला, "दो दिन बाद नम्बर आने पर खिलाऊँगा।" वह रशीद के घर रात आठ बजे पहुँचा कि बस यूही मिल आऊँगा मगर रशीद के घर पर न होने से, खाला के रोटी के इसरार को टाल कर पैदल भूखा घर लौटा और सारी रात करवटे बदलता रहा।

अकतालिका आने तक के दो दिन माधव जैसे एक दु स्वप्न मे जिया। कभी वह सोचता उसका रोल न प्रथम श्रेणी के कॉलम मे गलत छप गया होगा। उसे तो कुछ आता नही। कभी सोचता कि मैडम उसे अपने असफल होने वाले विद्यार्थी का जिम्मेदार मान रही होगी। इसी कारण दो दिन उनके सामने भी नही गया।

तीसरे दिन जब अकतालिकाओ का पैकेट डाक से आया तो उसकी इच्छा हुई दौडकर बाबूजी को बुला लाये लेकिन फिर सोचा अन्य विद्यार्थी भी तो लेने आयेगे, अपनी ही स्वाभाविक गति से होने दो काम। स्कूल मे नियमित छात्रो के अक रिकार्ड मे रखे जाते थे अत

बाबूजी नकल बनाने का काम आरोही क्रम से कर रहे थे। परन्तु बीच-बीच मे जो छात्र आ जाते उनकी अक तालिका की नक्ल पहिले, उपयुक्त स्थान पर करके, उसे रसीद लेकर दे देते थे। पचासवे छात्र का क्या हुआ यह जानने की हल्की सी उत्सुकता भी माधव को थी।

पचास छात्रो के अको की नकल, जबकि बीच-बीच मे रसीद लेकर तालिका देनी भी हो, के कार्य मे बाबूजी को करीब तीन घटे लगे, और इस बीच माधव अपने कमरे मे इतना बेचैन रहा जितना वह अपनी याद मे अपने जीवन मे कभी नही रहा था। जब घर छोडा था तब सोचा था, होगा सो देखा जायेगा। लेकिन अब जो विशेष योग्यता पात्र अपने आप का समझ रहा था, बल्कि दूसरो के सामने कह दिया था वे सभी प्रथम श्रेणी न होने पर उसका कितना मजाक बनायेंगे। कोई कहेगा, "ये मुह और मसूर की दाल," और कोई कहेगा, 'अपने मुह मिया मिट्ठू बनने का क्या अथ है ?" तब वह क्या करेगा ? अपने एक जोडी कपडे उठाकर किसी और शहर मे चला जायेगा, या अपनी रजाई भी उठाकर सिर पर बाध ले, आगे हर जगह काम आयेगी चाहे वह रेलगाडी हो या फुटपाथ ! कभी उसका दिल इतनी तेजी से धडकता मानो सामने से मेल ट्रेन आ रही है जो उसे कुचलकर निकल जायेगी। उसे लगा कि अगर वह काका की उम्र का होता तो इतना तनाव सहकर उसका हाट फेल हो गया होता। कभी उसे लगता कि मिठाई की जगह नमकीन ले जायेगा, थोडी नीम की निबोलिया डाल देगा बीच मे, वो जो पिछवाडे मे पडी है, और उदासीनता से मुस्कुराकर कह देगा, "खाओ बादशाओ !" ऐसा करते हुए वह कैसा महसूस करेगा ? शायद वैसा ही जैसा अब कर रहा है। शरीर का सारा खून जैसे निचुड गया हो, वह अपनी कलाई से कोहनी तक हाथो को देखने लगा, कहा गया खून ? यहाँ भी इक्ट्ठा नही हुआ।"

"चू चर चू ! चू चर चू !" कौन आ रहा है ? उसकी कक्षा का छात्र, नही। जिसकी कक्षा में वह बैठता था, वह प्रशान्त वर्मा आ रहा है। माधव आखें भी नही खोल पा रहा है, "माधव उठा, तुम्हारी अक तालिका बाबूजी कह रहे ह तुम्ह ही देगे, चलो दिखाओ तो।"

"उस पचासवें लडके का क्या हुआ ?"

"कौन सा पचासवा लडका ? क्या नीद मे हो तुम ? ये लो पानी पियो।"

पानी पीकर माधव ने आँखें खोली, "देखें तुम्हारी अक तालिका।" छ सौ पचास मे से चार सौ सौलह यानि चौसठ प्रतिशत।"

"चलो, अब तुम्हारी भी देखे।" प्रशान्त माधव को लगभग खीचता हुआ ऑफिस मे ले गया। "बाबूजी अब निकालिये माधव की।" बाबूजी ने रसीद लेकर उसे दी। माधव प्रशान्त से छुपाकर पहिले अकेले ही देखना चाहता था। तिरछी करके योग देख लिया उसने, "अरे मैं तो तुम से भी ज्यादा योग्य हूँ।"

"दिखाना!"

माधव ने छुपाने की कोशिश मे उसे दबा दिया। प्रशान्त ने बाबूजी से कहा, "इससे कहिये, दिखाये।"

"ये क्या हो रहा है माधव?" उन्होने अधिकारपूवक कहा तो माधव को लगा कि एक उच्चाधिकारी अपन मातहत बस कन्डक्टर को डाट रहा है। उसने अक तालिका उसे दे दी। प्रशान्त बोला, "अच्छा जी, चार सौ बीस है आप!" तो माधव ने वैसा ही अपमानित एव अस्वस्थ महसूस किया जैसा बेचैनी मे अभी कर रहा था।

प्रशान्त के प्रस्ताव व निमन्त्रण पर माधव उसके घर गया। सभी लोग प्रशान्त को विशेष रूप से दुलार रहे थे। छोटी बहिन रचना ने उसे अपने हाथ से रसगुल्ला खिलाया और प्रशान्त ने माधव को। माधव ने देखा कि इस पर वह रोती हुई वहा से चली नही गयी। लेकिन बोली, "म तो अब उनका जूठा नही खाऊगी मेरे लिये दूसरी मिठाई लाना।" प्रशान्त ने उसे हसकर गोद मे उठा लिया, "अच्छा, अभी चलकर तुम्हारी पसद की मिठाई खिलायेंगे तुम्हे।"

वे तीनो प्रशान्त द्वारा चलाये जा रहे स्कूटर पर होटल डी एम बी गये और रचना की पसद की मिठाइया ही सबने खायी। रचना ने प्रशान्त के हाथ से ही खायी। माधव को अपने घर की बहुत याद आ रही थी। उसने अपनी अक तालिका फोटोस्टेट करायी, साथ मे पिता को सक्षिप्त पत्र लिखा—

सम्माननीय काकूजी,

नमन,

मेरे पास आपके पिच्चानवे रुपये है उन्हे आप कब व कैसे लेना पसन्द करेगे यह जानने के लिये मैं आपके दफ्तर मे सोमवार तारीख 30 मई को फोन करूगा। कृपया जवाब सोच रखियेगा।

माधव

फिर तत्काल मुख्य पोस्ट ऑफिस जाकर डाक मे डाला और शराब की एक बोतल खरीदकर एक बाग मे बठकर पीने लगा। उसे नही मालूम कि वह खुशी मे पी रहा है या दुख मे। फिर घर जाकर उसने बोड को एक पत्र लिखा कि उसके अक 419 या 421 अक कर दिये जाये। और रात के बारह बजे ही काका से जिद करने लगा कि अभी ही डाकपेटी मे डालने जायेगा तो काका ने उसे समझाया कि मैडम के हस्ताक्षर करवाकर कल भेजेंगे तभी तो बोड वाले कायवाही करेंगे। तब वह इस बात को मान गया। अब वह पचासवे लडके का परिणाम जानना चाहता था। काका ने दिलासा दिया कि कल बाबूजी से पूछेंगे। माधव की वह रात बडी बैचेनी मे बीती।

जब सुबह दस बजे बाबूजी स्कूल आये तब तक माधव सो रहा था। काका बाबूजी से पूछकर आये, "उस छात्र का क्या परिणाम है। जिसका अखबार मे नाम नही था ?"

"वह प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण है।"

काका ने माधव को यह खबर सुनायी तो वह करवट बदल कर सो रहा, "इसका मतलब ग्यारह लडके प्रथम श्रेणी मे आये है"—यह जानकर दिन भर खुमारी मे पडा रहा। शाम को चार बजे उठकर मुह धोकर बाबूजी के पास दफ्तर मे पहुचा, "तो पचासवा छात्र प्रथम आया है ?"

"पचासवा से क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"जी, वो जो फेल हो रहा था "

"ए, फेल कोई एक भी नही है, सभलकर वोलो तुम," बाबूजी ने जो माधव के कघे पर हाथ मारने का उपक्रम किया तो उनका चेहरा खड़े हुए माधव के चेहरे के नीच श्रा गया श्रौर उन्हे शराब की गध श्राई। 'तुम पीते भी हो ? कब से ?" उनका चेहरा विकृत हो गया श्रौर वे कुरसी छोडकर उठ खड हुए।

"बाबूजी, प्लीज़ कल पहली बार पी है तभी से पडा हूँ मै, मुझे कृपया माफ कर दीजिये।"

"माफ करना न करना तो मैंडम के हाथ मे है, मै श्रभी उनसे बात कर लेता हूँ।"

"बाबूजी, श्राप काका से पूछ लो, कल पहली बार पी है मने। श्रगर श्राप ने मुझे माफ न किया तो मेरी जिन्दगी बरबाद हो जायेगी। श्राप नही जानते ये नौकरी कितनी बडी चीज़ है मेरे लिये।"

"श्रच्छा जगत को बुलाश्रो।"

काका ने श्राकर माधव की बात के सच होने की गवाही दी तो बाबूजी ने एक चेतावनी के साथ उसे छोड दिया, "हम कोई व्यक्ति तुम्हारे एवज मे खाज रखेंगे श्रौर श्रबकी बार तुमने जैसे ही कोई दुर्व्यवहार किया तो तुम्हारी छुट्टी कर दी जायेगी।"

माधव ने 30 मई को सुबह दस बजे टेलीफोन एक्सचेज जाकर श्रावश्यक रकम जमा करायी श्रौर उसका फोन बुक कर लिया गया। "पता नही कितनी देर लगेगी, शाम भी हो सकती है श्रौर रात भी," माधव को यह जवाब मिला। माधव सोच रहा था कि पाच बजे वह फोन निरस्त कर देगा श्रौर श्राख मूद कर सामने लगी बैंच के एकको ने मे बैठ गया। लेकिन जवाब के हिसाब से उसका नम्बर जल्दी ही मिल गया, ग्यारह बजे।

"हलो, मै माधव बोल रहा हूँ।"

"मै सीतापति बोल रहा हूँ। कैसा है तू ?"

"मै श्रच्छा हूँ, श्राप कैसे हैं ?"

"तू दसवी मे पास हो गया है ! बधाई है तुझे !"

"धन्यवाद।"

"अब घर आ जा, नही तो मै बोर्ड कार्यालय से तेरा पता लगाकर आ सकता हूँ।"

"आप पता लगाओ, मै नयी जगह खोजता हूँ।" माधव ने शुक्र मनाया कि उसे ढका हुआ बूथ मिला है जहा से उनकी बातें कोई सुन नही सकता।

"अच्छा शहर तो बता दे, कहा है।"

"फिर कभी बताऊगा।"

"अच्छा अपनी मम्मी से बात कर।"

मम्मी की आवाज रूआसी थी। "बेटा बहुत दुख पा लिये। अब आ जा।"

"किसने दुख पा लिये ? सुख दुख सब कर्मफल से मिलता है।"

"नमस्ते भैया," यह शानी थी।

"कैसी है तू ?"

"आप जल्दी मिलना।" और फोन कट गया। माधव का अच्छा लगा कि पत्र लिखित मुद्दा निर्णीत नही हुआ—जिससे फिर कभी फान करने की गुजाइश बनी रही है। सब कैसे दफ्तर मे इकट्ठे हो गये। एक इच्छा हुई—फोन का वक्त बढवा ले, फिर सोचा—फिर मीना व रघु की बारी आ जायेगी, अत यह विचार छोड दिया। और बार-बार अपनी वार्ता को याद करता हुआ माधव धीरे-धीरे घर की तरफ चलता रहा।

फोन द्वारा अपने परिवार से सपर्क करने के बाद माधव के दिल मे छाया हुआ तनाव कुछ कम हो गया। एक तो वह यह अनुभूति कर सकता था कि ऐसे लोग दुनिया मे है जो उमे बेपनाह चाहते है तथा

दूसरी वात वह यह सोचता था कि जब चाहे, उनसे सपक कर लेगा, वात करने के लिये मुद्दा उसके पास था ही ।

अगले दिन सुबह ही नहा धो कर वह मैडम प्रिंसीपल के कार्यालय कक्ष मे गया । उनका ससम्मान अभिवादन करने के वाद वह बोला, "जी, मैं आपसे कुछ विचार विमर्श करना चाहता हूँ ।"

'कहो ।"

"जी, ग्यारहवी कक्षा स्कूल मे हायर सैकेन्डरी तथा यूनिवर्सिटी मे पी यू सी नाम से चलती है । कृपया आप मुझे वतायेंगी कि जिन को आगे अध्ययन जारी रखना हो, उनके लिये कौन-सा कोर्स उपयुक्त रहता है ?"

"पाठ्यक्रम स्तर तो एक समान ही है, ज्यादा अन्तर पडता है तो वातावरण का । स्कूल मे आपको एक बच्चे की तरह रास्ता दिखाया जाता है तथा तुम्हारी पढाई पर कडी निगरानी रखी जाती है, कॉलेज मे तुम्हे एक जिम्मेदार अध्येता मानकर जो पुस्तकें ज्ञान वढायेंगी उनके नाम आदि वता दिये जाते है तथा पढने का दायित्व तुम्हारा स्वय का होता है ।"

"धन्यवाद मैडम, मै विचार करके निराय लूगा ।"

"हाँ ग्यारहवी कक्षा अपने स्कूल मे इस वप खुलने की काफी सभावना है । हमने अपने यहा व्यवस्था एव आवश्यकता होने का आवेदन पत्र भेजा है तथा एतदर्थ पिछले सत्र मे निरीक्षण की भी अच्छी रिपोर्ट्स है ।"

"मैडम यह भी बहुत खुशी की वात है कि पचासवा लडका भी पास निकला ।"

"हाँ, वह जिसका रोल न अखवार मे न था, पास निकला, यह तथ्य भी नयी कक्षा खुलने के निराय मे प्रभावी सिद्ध हो सकता है । तुम जाकर वाबूजी को इधर भेज दो ।"

"जी " माधव उठ खडा हुआ । वह पूछना चाहता था कि क्या पिछले सत्र की भाति इस सत्र मे भी उसे नि शुल्क अध्ययन का विशेपा-

धिकार वह कृपा पूर्वक दे देगी लेकिन मैडम तो अपने सामने रखे कागजो पर एक निगाह डाल कर समाचार पत्र पढने लग गयी थी अत माधव बाबूजी को बुलाने चला गया ।

"बाबूजी !"

"हूँ" उन्होने कागजो से अपना सर उठाये बिना कहा ।

माधव ने निगाह झुकाकर कहा, "आपको मैडम बुला रही हैं ।"

"चपरासी कहा गये ?" उन्होने उसे तीखी नजर से देखा ।

"लीलाबाई सफाई कर रही है और मनमोहन कुछ काम से बाहर गया है ।"

"बोलो, हम अभी आते है ।"

माधव चाहता था कि बाबूजी के सामने अपनी पिछली गलती को कुबूल कर उस के लिये क्षमा माग ले और उसे फिर से न करने का वादा कर ले । लेकिन बाबूजी ने उससे रुख नही मिलाया और माधव अपने को जब्त करता हुआ मैडम से बाबूजी का सन्देश कहने के लिये चला गया ।

वह उन्हे सदेश देकर धीमे कदमो से बगीचे की ओर जाने को हुआ, फिर उसे लगा कि एक ओर रखी बेच पर बैठ जाये ताकि उनका वार्तालाप भी सुन सके, मैडम कह रही थी, "आप यह ग्यारहवीं कक्षा खोलने के आवेदन पत्र की एक कॉपी तथा एक पुन स्मरण पत्र बोर्ड को भेज दीजिये, आवेदन पत्र की कुछ फोटोस्टेट नक्लें करवाकर रखना और पुन स्मरण पत्र चार-पाँच प्रतियो मे टाइप करके रखिये, आप हर सातवे दिन हर सामवार को भेजो, आप पत्र मे साफ लिख देना कि वे हमे शीघ्र सूचना भेजे ताकि हम स्टॉफ की नियुक्ति आदि का काम उपयुक्त समय पर कर सके ।"

'यस मैडम, सत्र के खुलने तक सूचना न आयी तो सारे विद्यार्थी स्कूल छोडने का प्रमाण पत्र लेने आ जायेगे । आप कहे तो मैं अजमेर जाकर काम करावर लाऊँ ।"

"अभी नही, एक स्मरण पत्र आज भेजो एक अगले सोमवार और फिर बुधवार को तुम चले जाना ताकि कह सको कि दो स्मरण पत्र हम भेज चुके है ।"

"यही ठीक रहेगा, दूसरी बात मैं पूछना चाहता था, कि बस कन्डक्टर ये ठीक है या किसी दूसरे की व्यवस्था करनी है ? एक हमारे मिलने वाले मित्र का लडका है उसके पिता की पिछले माह हृदय गति रुकने से मृत्यु हो गयी है, तीन बहिनो व एक माँ का खर्चा कैसे उठाये यह उसकी समस्या है । वो एस सी का इम्तिहान दिया है उसने इस वर्ष ।"

"उसक पिता क्या करते थे ?"

"वह विद्युत मण्डल मे चपरासी थे ।"

'आप उस लडके से कहना वह पिता के बीमे का पैसा प्राप्त करे, और योजना बना कर चले । इस काम के लिये यह लडका क्या नाम है उसका माधव ही उपयुक्त है ।"

"एक हमारे मिलने वाले हैं, चौकीदार का काम करते थे । वह भी रिटायर हो रहे है इस माह । उन्होने भी कहा है कि कोई काम बताना तो ,,

"ऐसा है, जब तक कोई समस्या नही होती जसे चल रहा है चलने दो और आप यह स्मरण पत्र भेजने का काम करो ।"

ये बातें सुन कर माधव हल्के दिल के साथ उठा और विद्यालय के बगीचे मे जाकर जगत काका के साथ परजीवी पौधे उखाडने मे सहायता करने लगा ।

× × × ×

नये सत्र मे माधव सोच रहा था कि वह स्कूल मे परिचालक का काम करते हुए ही स्वयपाठी छात्र के रूप मे फार्म भर देगा तथा विद्यालय मे नियमित छात्रो की कक्षा मे बैठने की पुन अनुमति ले लेगा । वह चाहता तो था कि नियमित छात्र के समान फीस भर कर अधिकारपूर्वक पढाई करे परन्तु फीस थी पचास रुपये माह और ऊपर

से महगी यूनिफार्म तथा उसके रख-रखाव, पुस्तको व अन्य सामान का खर्चा तो होना ही था—उसमे मुश्किल यह होगी कि वह प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे लडको, विद्यार्थियो की तुलना मे आ जायेगा।

लगभग साप्ताहिक रूप से कक्षा-टैस्ट होते हैं, उनमे जितने भी अक आते हैं उन पर माता-पिता के हस्ताक्षर करवाने होते है। वह किससे करवायेगा।

जब प्रगति-पत्रो का वितरण किया जाता है तब छात्रो से कहा जाता है कि यह उन्हे स्वय न दिया जाकर उनके माता पिता को ही दिया जायेगा। उनके साथ छात्र भी आ जाते है और उस दिन ऐसा मेला भरता है कि मानो वार्षिकोत्सव समारोह मनाया जा रहा हो। ऐसे मे एक तो वह माता-पिता को याद कर अत्यधिक दुखी होगा जिन्हे वह वास्तव मे हर समय याद करता रहता था, दूसरे अन्य छात्रो के महगे कपडे, विदेशी इत्र, घुटनो तक के जूते, वायुरोधी कोट, हैट, डिजाइन दार टाईयाँ, बरबस ध्यान आकर्षित करने वाले कफ लिंक, रूमाल आदि अपने पास न होने के कारण उनकी कमी महसूस करेगा। अभी वह इन वस्तुओ का दृष्टा है, नियमित छात्र बनने पर स्वय को वचित महसूस करेगा।

फिर यहा साथ मे छात्राये भी तो पढती है। वे तो तभी निगाह उठाती है या बात तक करने की पहली शर्त मानो यह लगा कर रखती है कि लडका बहुत ही दामी व व्यवस्थित पोशाक धारण किये हुये हो। अभी तो वे माधव के साथ बाते करती है तो इस कारण कि उन्हे उसके नोट्स लेने होते है। वह इस कारण से अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर लेता है और उसको लगा कि इसी प्रकार गौरवान्वित होते हुये एक सत्र और बिता सकता है।

यू तो माधव को इस बात का भी अहसास था कि स्वयपाठी छात्र के रूप मे उसे भले ही कक्षा मे बैठने की अनुमति मिल जाये लेकिन न तो कोई बिन्दु समझ मे न आने पर वह शिक्षक से पूछ पाता था न ही विद्यालय मे समय समय पर होने वाली प्रतियोगिताओ मे हिस्सा ले सकता था। इन दो कार्यो की क्षतिपूर्ति के लिये माधव ने यह हल सोचा कि पाठ्यवस्तु को वह पहले से पढकर जायेगा। कक्षा मे बहुत ध्यान

से सुनेगा और फिर भी समझ मे न आने पर होशियार सहपाठियो से पूछेगा। प्रतियोगिताओ मे भाग न लेने की सीमा को स्वीकार कर लेगा। हर वस्तु उपलब्ध होना सभव नही।

यह सोच कर उसने पिछले माह के बचे हुए चालीस रुपये तथा चालू माह के वेतन से पचास रुपये मिलाये तथा विद्यालय के लिये कोई उपयोगी वस्तु खरीदने के लिये निकला। पूरे बाजार मे वह पैदल घूमा, उसके मन मे दुकानो का सामान देख देख कर विभिन्न प्रकार के ख्याल आ रहे थे। एक बार उसकी इच्छा हुई कि प्रिंसीपल महोदया के लिये एक बढिया सफेद साडी ले ले जैसी कि वह पहनती हैं। फिर उसे लगा यह तो व्यक्तिगत भेंट हो जायेगी। क्या वह खूब सारी स्टेशनरी ले जाये—लेकिन उससे बाबूजी कोई विशेष प्रसन्न तो होगे नही, उल्टे उसके बारे मे प्रिंसीपल महोदय से वार्तालाप करने का वह एक विषय बन जायेगा, जिसे वह टालना चाहता था। आगे जाने पर उसे एक दीवाल घडी दिखी और एकदम उसने निणय कर लिया कि यही उसे विद्यालय मे भेंट कर देनी चाहिये। उसने दुकान मे प्रवेश कर नजर घुमा कर सब ओर देखा। लेकिन जिस पहली घडी पर उसकी निगाहें अटकी थी वह उसकी निगाह मे मानो समा गयी थी। घडी का पैन्डुलम मानो उसे पहिचान कर दोस्ती का हाथ बढा रहा था। उसने उसकी ही कीमत पूछी।

"पचहत्तर रुपये।"

"बांध दो।"

आगे चलकर उसने चार रुपये की आधा किलो मिठाई खरीदी और प्रिंसीपल महोदया के घर पर जाकर उन्हे ये भेंटे दी।

"महोदया, ये म गुरुदक्षिणा के रूप मे भेट करना चाहता हूँ, कृपया इन्कार मत करियेगा।"

"क्या चीज है?"

"इसमे एक घडी है आपके कक्ष के लिये तथा यह थोडी सी मिठाई है।"

उनकी भतीजी ने घडी खोलकर देखी। 'अच्छी है, लेकिन तुमने क्यू खर्चा किया ? तुम्हे इसके पैसे दिलवा देंगे।"

"आपको अच्छी लगी, यह मेरे लिये बडी बात है। आप अगर पैसे देने की बात कहेगी तो म बहुत दुखी व अपमानित महसूस करूँगा," माधव कातर हो उठा था।

प्रिंसीपल महोदया ने अपनी भतीजी की ओर देखा। "स्वीकार की जा सकती है," उसने इशारा किया। प्रिंसीपल महोदया ने मिठाई का डिब्बा खोलते हुए कहा, "अच्छा, मिठाई तो खाते जाओ।"

"पहिल आप लीजिये," माधव ने अनुगृहीत भाव से कहा।

जब तीनो जने खाने लगे तो प्रिंसीपल महोदया ने उससे पूछा, "नये सत्र मे काम तो करना है न ! छोडने का इरादा तो नही ?" तो माधव ने उन्हे आश्वस्त किया कि उसका यहा काम करने का पक्का इरादा है। सभी बहुत अच्छे व दयालु हैं तथा विद्यालय का वातावरण बहुत पवित्र व अच्छा है। फिर वह अपने कमरे मे जाकर विश्राम करने लगा।

उसने योजना बनायी कि प्रिंसीपल महोदया से अनुमति लेकर वह इस वप स्वयपाठी छात्र के रूप मे पढ ही ले। अगले वप फिर कोई रास्ता निकल आयेगा।

× × × ×

नवीन सत्र शुरू होने से पूव ही विद्यालय मे खूब गहमागहमी हो गई, हर कक्षा मे प्रवेश दिलाने के इच्छुक माता-पिता प्रवेश आवेदन पत्र लेन के लिये पक्ति बद्ध होकर खडे हो जाते। एक बाबूजी बालक का नाम, पिता का नाम, कक्षा तथा दिये जा रहे फार्म का नम्बर अपने पास रजिस्टर मे अकित करते जाते ताकि फार्म पर जो सील लगाई गयी थी

"अहस्तान्तरणीय" उसे आवश्यकता पडने पर सत्यापित किया जा सके। फिर दूसरे बाबूजी सरक्षक से पाच रुपये ले लेते और फाम पर उस दिन का दिनाक अकित करके उन्हे फाम दे देते।

इस सत्र मे इतने सारे विद्यार्थिया ने बस के लिये आवेदन पत्र दिये थे कि लगता था बस को दो यात्राये करनी होगी, उसके साथ ही माधव ने सोचा कि उसकी तनख्वाह मे वृद्धि होगी तो उसे लाभ होगा। माधव सोच रहा था कि पिछले वष जब वह बच्चो मे रूचि लेने लगा था तबसे वच्च उसे कितना चाहने लगे थे। कविताये, कहानिया सुनाते, उसका भी दिल कर आता, वह भी उन्हे कविता, चुटकुले सुनाने लगता सब मिल कर हसते। तब काम मनोरजन का एक माध्यम बन गया था। माधव सोचता, क्या इस बार भी ऐसे समा बधेंगे, या नये विद्यार्थी अलग स्वभाव के होगे और 'खुशी का वक्त छोटा होता है,' यह कहावत चरिताथ हो जायेगी। जो भी हो, पढाई लल्लूजी, डटकर करनी है वरना जिन्दगी भर यही कडक्टरी करते रह जाओगे जो कि बाद मे इतनी दिलचस्प नही लगेगी—अपने मुख्य लक्ष्य को भी तो याद रखो।

नये सत्र मे विभिन्न कक्षाओ मे छात्र आये लेकिन अधिकाश नये विद्यार्थी के जी कक्षा के थे। नन्हा अनुपम कितना सुन्दर था। अपनी बडी-बडी पलकें झपकता तो लगता कि एकाएक दिन तथा रात हो जाते हैं। छोटे से प्रखर को हवाई जहाजो के बारे मे कितनी जानकारी थी, पैसेन्जर प्लेन और माशल प्लेन मे क्या अन्तर होता है यह स्पष्ट व्याख्या माधव के लिये उसने ही की थी। तीसरी कक्षा की सतोष का भाई अमीचन्द भी एक ऐसा बालक था जिस पर निगाह जाकर एक घडी ठहर ही जाती थी। माधव को लगता कि ऐसे नाम तो पुरानी पीढी मे ही मिलते हैं, आजकल तो गौरव, सौरभ, आदि नये प्रकार के नामो का प्रचलन बढ गया है। उसे देखता तो माधव को सेठ अमीचन्द की याद आ जाती जिनकी किराना की दुकान पर वह कभी-कभी फुटकर सामान लेने जाया करता था। उसे याद आया कि उनके पुत्र का नाम, जहा तक उसे याद था, धनीचन्द था। माधव बालक अमीचन्द की धारणा मे सेठ अमीचन्द की तलाश करता जो उसे कभी-कभी मिल भी जाती। वह अपनी बहिन सतोष के पास ही बैठता और अपना बस्ता, माधव जब खिडकियो के ऊपर सामान रखने के स्थान पर रखने के लिये उससे

लता तो उस दिन नहीं चाहता। शुरू-शुरू में तो वह बस्ते को सीने से कस कर लगा लेता, माधव उसे समझाते हुए कि भार कम होने पर उसे सुविधा होगी, ले लेता तो वह मुह बिसूर कर रोने लगता। अन्य मे से कुछ बच्चे तो बस से नीचे ही बस्ता छोड आते और माधव उन्हें उठाकर लाता लेकिन अधिकतर बालक आते ही माधव को अपना बस्ता दे देते तभी अपने बैठने के लिये सीट ढूढते। अगर नसरी के बच्चे अपने हाथ, कधे या पीठ पर बस्ता लिये बैठ भी जाते तो माधव उनकी सीट पर जाकर उनसे लेकर ऊपर टाड पर रख देता, ताकि वे हल्के फुल्के रहे।

एक दिन नन्हे अनिमेष ने माधव से शिकायत की, "भैया, ये युद्धजीत हमे मार रहा है।" अनि बस के दरवाजे के पास और जीत सबसे पीछे की सीट पर बैठा हुआ था। "कहा मार रहा है? वो तो इतनी दूर बैठा है।" तब अनिमेष ने अपना चेहरा माधव की ओर उठाया, 'ये क्लास में भी मारता है," तो माधव को लगा कह कि अगर मार खाकर रोओगे तो दुनिया मारेगी और रुलायेगी। उसे मजबूत बनाने की मन्शा ही थी शायद जिसके साथ माधव ने कहा, "उसके मारने मे तुम मर गये क्या?" अनिमेष माधव के वाक्य को न समझते हुए कुछ और सहम गया।

अगली सुबह अनिमेष बस मे नही चढा और स्कूल मे, उसके पडौस मे रहने वाले लेकिन स्कूटर द्वारा घर से स्कूल आने वाले विभोर अग्रवाल ने सूचित किया कि कल एक कारएक्सीडेंट में वह मारा गया तो प्रिंसीपल महोदया ने माधव को ही चौकीदार की साइकिल पर जाकर इस समाचार की पुष्टि करने के लिये कहा। उन्होंने बालक के परिजनो को यू सदेश देने के लिये कहा, "आज अनिमेष स्कूल नही आया, उसकी तबियत तो ठीक है?" अगर ठीक हो तो कहे, "म इधर कुछ सामान खरीदने आया था, सोचा पूछता चलू।" अगर वह घायल होगा तो उससे मिलने स्कूल से किसी को जाना होगा।

माधव के हाथ पैर काप रहे थे, दिल धडक रहा था सिर चकरा रहा था, गला सूख रहा था लेकिन वह पैडल मारता रहा। जब वह अनिमेष के घर पहुचा वहा लोगों की भीड लगी हुई थी। सुबह तो नही थी यह भीड, माधव ने सोचा। "क्या हो गया?" उसने भीड मे से किसी से पूछा।

"बच्चा मर गया है कोई।"

"क्या नाम था ?"

"पता नही।"

किसी दूसरे से पूछा।

"बन्ना नाम था।"

माधव के होश उडते जा रहे थे फिर भी आगे बढा तथा सडक से घर तक की सीढिया चढ कर चौक मे देखा। सफेद कपडे मे लिपटी अनिमेष ही की लाश थी। उस पर कुछ मालायें व फूल पडे थे। व उसका चेहरा उघडा हुआ था। माधव को मानो दीवारें घूमती नजर आने लगी। वह भीड मे से रास्ता बनाता हुआ वापस अपनी साइकिल की तरफ आया तो लोगो की इतनी बाते उसके कानो मे पड चुकी थी कि वह सामान्य अवस्था मे होता तो सारी बात समझ गया होता लेकिन अभी तो उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो अचानक हजार, लाख मक्खियो ने भिन-भिनाना चालू कर दिया हो। उसकी ऐसी हालत क्यूकर होनी चाहिये, उसने कोई हत्या तो की नही है! उसने नुक्कड के दुकानदार से मागकर एक गिलास पानी पिया और साइकिल पर सवार होकर प्रिंसीपल महोदया को यह बोलने स्कूल पहुचा, "यह खबर सच्ची है।"

स्कूल मे प्रार्थना हो चुकी थी और समाचारो के बाद छात्र-छात्राओ से भजन सुनवाये जा रहे थे। भजन की व्यवस्था शारीरिक शिक्षक को सौंप तत्काल प्रिंसीपल कक्ष मे एक स्टाफ मीटिंग की गई जिसमे पाचवी कक्षा के छात्र विभोर अग्रवाल तथा माधव भी शामिल किये गये। सभी जने खडे थे। विचारणीय बिन्दु थे —(1) विद्यार्थियो मे सब की छुट्टी की जाये या केवल प्राइमरी सेक्शन की (2) स्टाफ किस वक्त अनिमेष के घर जाये।

विभोर से मालूम हुआ कि उसके माता पिता अस्पताल मे भर्ती हैं। निश्चय हुआ कि अभी एक शोक सभा कर सभी विद्यार्थियो की छुट्टी कर दी जाये। जिन्हे लेने वाले बाद मे आयेंगे उन्हे विद्यालय मैदान मे ही सीमित रखा जाये। अभी बाबूजी बालक के घर चले जाये तथा सध्या को आधा स्टाफ घर तथा आधा अस्पताल मे माता पिता के पास जायेगा।

सध्या को माधव भी प्रिंसीपल महोदया के साथ उनकी कार द्वारा अस्पताल पहुँचा। अनिमेष के पिता रो रोकर बता रहे थे, "कहता था, स्कूल मे मेरा मन नही लगता, नही जाऊँगा।"

मने कहा स्कूल आने का वादा करो तो म तुम्हे कार मे घुमा कर लाऊँगा।

रास्ते मे कहने लगा, पापा ड्राइवर है, मम्मी कडक्टर है और मै स्कूल जाने वाला बच्चा हूँ।

"कडक्टर भैया, आज वाकी बच्चे कहाँ हैं ? ड्राइवर साहब देखो ये मेरा बस्ता है," वह बाल पत्रिकाओ के एक थैले को उठाकर कहने लगा।

"अभी पापा पीछे नही देख सकते" मने कहा।

"अच्छा पापा, खिडकी के ऊपर एक शेल्फ लगवा दो, वहा बैग रखूगा।"

"मैने सोचा आज बडी बातें कर रहा है, रोज तो नही करता, मै पीछे तो नही मुडा लेकिन गाडी दायी ओर मोडनी थी। मने मोड दी।" मैने नही देखा कि उधर से तीव्र गति से एक ट्रक सीधा आ रहा था जिसने कि कार को अपनी चपेट मे ले लिया।

"मेरे तो पैर की ही हड्डी टूटी है लेकिन पीछे की खिडकी का काच तो उसकी छाती मे घुस गया।

"पाऽपा" वह बोला और सदा के लिये चुप हो गया।

"मेरी पत्नी तो उसे देखते ही बेहोश हो गयी थी। बाद मे एक जीप वाले ने हम तीनो को कार मे से निकाल कर यहा अस्पताल पहुँचाया।

"म तो इतना अभागा रहा कि अपने पुत्र के क्रियाकम भी नही कर सका। सब काम छोटे भाई ने किया है। मरी पत्नी इसी अस्पताल मे दूसरे कमरे मे बेहोश पडी है।"

प्रिंसीपल महोदया ने कहा, "जीवन-मरण मानव के हाथ मे नही है।" तथा यह कि इस दुःख के वक्त हम आपके साथ हैं।

माधव बोलना चाहता था कि अनिमेष उसे बहुत प्यारा लगा करता था लेकिन बोल नही सका । कण्डक्टर के रूप मे काय करने मे तो वह कुछ भी कहे उसे किसी गरिमा का बोध न होगा, उसने सोचा ।

अनिमेष के यहा से लौटकर प्रिसीपल महोदया ने अपनी कार एक शिव मन्दिर पर रुकवाई तथा वहा अपने महाप्रयाण पर प्रस्थान किये बालक की आत्मा की शाति के लिये धीमे स्वर मे प्राथना की । माधव ने भी यही प्राथना अपने दिल मे दोहरायी ।

अब माधव की इच्छा हुई कि वह रशीद से मिलने जाये । अभी सात बजे के लगभग जाने से कोई फायदा नही । वह प्रिसीपल महोदया के साथ स्कूल लौटा । चौकीदार काका को अनिमेष की मृत्यु का वणन सुनाया और फिर कहने लगा कि आज उसकी खाना खाने की इच्छा नही है, लेकिन चौकीदार काका ने उसे समझाया कि यू भूखे रहना उचित नही है और स्वय उसके लिये दाल, साग, रोटी बनाने का उपक्रम करने लगे । माधव आँखें बद कर खाट पर लेट गया और यही विचार उसके मस्तिष्क मे कौधते रहे कि क्या जीवन प्रभु द्वारा निर्धारित है या इसे लबा, छोटा किया जा सकता है । समानान्तर विचार यह भी चल रहा था कि उसने अपने पिता का घर छोडकर सही किया या गलत, उसे अपने मूल प्रश्न का हल तो नही मिला परन्तु दूसरे प्रश्न पर बार-बार विचार करने पर भी उसे अपना क्रियान्वित निणय सही लगा ।

उधर रसोई मे काका खासते हुए उठे और फिर कोई पीपा बजने की आवाज आयी । "क्या हुआ काका ?" माधव उठ बैठा ।

"बेटा, मिट्टी का तेल खत्म हो गया है, मै लेने जाता हूँ ।"

अ गडाई लेता हुआ माधव रसोई मे आ गया । "नही काका, म लेकर आता हूँ ।"

"तेरा भला हो । बडी खुशी से काम करे है ।" काका उसे अशीषते हुए बोले, मगर माधव का दिल जल रहा था । वह लघुशका के लिये गया तो मन मे भुनभुनाने लगा इसी कारण तो मै काका के साथ अपने दैनिक भोजन की व्यवस्था नही करता कि आटा, दाल, सब्जी, तेल लाने, स्टोव ठीक कराने जैसे अप्रिय काय करने पडते है उसने साइकिल

के कैरियर पर पीपी लगा ली। वह काका के कथन पर मानसिक रूप से टिप्पणी कर रहा था मेरा भला तो होना ही चाहिये लेकिन मेरी आकाक्षा के अनुसार मेरी इच्छापूर्ति ही मेरा भला है—वह है एक उच्चाधिकारी बनना, और तेल लाने से उस इच्छा की पूर्ति मे कोई सहायता मिलती हो, ऐसा नही है। उनका दूसरा वाक्य जो था, उस सदर्भ मे विचारणीय यह है कि मै अन्य काय भले ही खुशी से करता होऊँ तेल लाने मे मुझे कोई खुशी नही मिल रही है। बस इस लिहाज मे ला रहा हूँ कि आप मेरे लिये भोजन पकाने मे लगे हुए हो।

तेल लाने के लिये माधव उसी दुकान की ओर चला गया जिधर रशीद का घर था। तेल की दुकान बद थी, पास मे दर्जी की दुकान पर पूछा तो उसने बताया, 'तेल वाला अभी अभी गया है। तेल किराना वाला भी रखता है।"

किराना वाले के पास तेल था लेकिन वह पाच लीटर की पीपी भरना नही चाहता था। बोला, "एक बोतल ले जाओ।" माधव ने हिसाब लगाया कि यह जो कीमत लेना चाहता था वह तेल के मूल्य से डढ गुना से भी ज्यादा थी। माधव ने उससे इन्कार कर दिया। उसने अपने भुनभुनाने के औचित्य की पुष्टि इस व्याख्या से कर ली कि तेल लेने के नाम पर उसे जो गुस्सा आया वह उचित ही था। स्वय पकाने का उपक्रम करोगे तो बस यू ही चक्कर काटते रहोगे।

फिर वह रशीद के घर गया। रशीद था नही। वह सलमा को बोल आया कि हो सके तो रशीद उससे मिलने अभी आ जाये—नही, तो फिर कल शाम को।

फिर माधव मुख्य सडक से होकर निकला ताकि घर ले जाने के लिये रोटियाँ बधवा ले। उसने एक रुपये की दस रोटिया पैक करायी और उन्हे एक हाथ मे पकड कर एक हाथ से साइकिल सभाले हुए बढता रहा सडक पर बने गडढो पर हो कर साइकिल जब उछलती तो खाली पीपी बज उठती थी, माधव को इस शोर पर बहुत गुस्सा आ रहा था। जब वह घर पहुँचा तो उसने काका को तेल की कहानी सुना दी और रोटियो का पैकेट उन्हे दिया तो यद्यपि काका कुछ बोले तो नही लेकिन माधव को लगा कि जसे एक पल के लिये वह पुलकित हो गये थे।

दोनो ने बैठकर भोजन खाया और काका सोने के लिये विद्यालय प्रागण मे जा ही रहे थे कि रशीद आ गया। माधव ने उसे बताया कि वह आज सुबह स्कूल के बच्चे की लाश देखकर बहुत घबरा गया था। सध्या को वह उसके पिता से मिला था और इस घटना से वह स्तब्ध था।

रशीद ने उसे धीरज बधाया। दोनो ने अपने वातावरण की तुलना की, भेद बताये, माधव ने अपना आग्रह रशीद के सामने दुहराया कि वह पढाई करे लेकिन रशीद बोला, "मेरा तो पढने का दिल होता ही नही। और मेरे बिना अब्बाजान को दिक्कत हो जायेगी।" माधव ने दुख व्यक्त किया कि तेल न होने से वह उसे चाय नही पिला सकता। रशीद ने उसको सद्‌भावना के लिये धन्यवाद दिया। कहा, चाय की आवश्यकता नही और अपने घर चला गया। माधव को लगा जैसे उसे रशीद से मिल कर पूर्णता प्राप्त हुई। उसे लगा कि लोगो से मिलते जुलते रहना चाहिये।

× × × ×

अगले दिन माधव ने सत्र के लिये पुस्तके जुटायी। वह जानता था कि विद्यालय मे इस वर्ष उच्चतर माध्यमिक कक्षा का प्रथम सत्र नया खुल रहा है अत विद्यालय के छात्र सहायता कोष मे पुरानी पुस्तके तो होगी नही किन्तु बोर्ड द्वारा यह कक्षा कुछ वर्ष पूर्व खोली गई है अत बाजार मे मिल जायेंगी। वह पुरानी पुस्तको की दुकान पर पहुँचा और अच्छी हालत मे जो पुस्तके थी वह आधी कीमत पर ले आया, लेकिन आधे विषयो की ही पुस्तके मिल सकी, क्योकि कुछ पुस्तको के नये सस्करण बाजार मे उपलब्ध न होने के कारण सावधान छात्रो ने पुराने सस्करण प्राप्त कर लिये थे। जिन पुस्तको के नये अथवा पुराने सस्करण बाजार मे उपलब्ध नही थे, उनके बारे मे उसने प्रिंसीपल महोदय को भी बताया ताकि वह इस बारे मे पत्राचार कर ले, उसने

निश्चय किया कि जब तक कक्षाये लगना आरम्भ हो, उसे अपने पाठ्य क्रम की उपलब्ध पुस्तके एक बार पढ लेनी चाहिये। यूँ अधिकाधिक समय पढता हुआ वह शेष पुस्तको की प्रतीक्षा करने लगा।

माधव ने ध्यान दिया कि पिछले तीन दिनो से सतोष व अमीचन्द दोनो भाई बहिन विद्यालय नही आ रहे है। यदि एक बालक बीमार होता तो दूसरा आता। उसकी इच्छा हुई कि वह उन बच्चो की कुशलता पूछ आये। अत बच्चो को छोडकर आने के बाद विश्राम एव स्वाध्याय के पश्चात् दोपहर बाद वह घर मे निकल पडा।

माधव ने बाहर का गेट खोलकर जब अहाते मे प्रवेश किया तभी अन्दर से अचानक एक हौल सा उठा। यूँ तो माधव ने पूर्णरूप से विचार करके मुक्तरूप से निर्णय लिया था कि उसे सतोष व अमीचन्द खण्डेलवाल के यहा हो आना चाहिये क्योकि न सिर्फ उसे स्वय को सामाजिक सम्बन्धो की आवश्यकता है लेकिन उन बालको को भी अच्छा लगेगा जो तीन दिन से विद्यालय नही आ रहे। उसे एक परिवार मे बैठना अच्छा लगता ही था। वह बाहर बराण्डे मे पहुँचा और घटी की तरफ हाथ बढाया ही था कि उसे अन्दर से आवाजे सुनायी दी।

"साली घमण्ड किस बात का है तुझे! अपने आप के घर मे फटे कपडो मे, यहा वहा बेइज्जत होती घूमती थी! मने तुझसे शादी की, घर दिया और मुझे ही आख दिखाती है तू! शराब मत पियो, यहा मत जाओ, वहा मत बैठो, तू मुझे सिखाने वाली कौन होती है? आगे स बकवास की न, तो तेरी हड्डी पसली सब एक कर दूगा।"

"नही, आज मै आपको नही जाने दूगी।"

"परे हट, साली!"

पिछवाडे का किवाड खुला, मोटर साइकिल स्टार्ट होने की आवाज आई और एक मोटा काला सा आदमी, जिसने अपनी आंखो पर काला चश्मा लगा रखा था सामने का गेट खोलकर यह जा, वह जा! उसने माधव को देखा भी नही। माधव स्तम्भित सा खडा था और सोच रहा था कि अन्दर जाये या बाहर, जब कि सतोष की आवाज उसे सुनायी दी, "देखकर आती हूँ मम्मी!" और बाहर का दरवाजा खुल गया।

"अरे भैया !" सतोप उसे देखकर चहकी ।

उसने वाहर गेट के पास लगी डा० धनीचन्द डा० यशोदा खण्डेलवाल अ कित पत्र मजूषा को खोलकर देखा और बोली, "मम्मी, कोई चिट्ठी नही है !"

फिर वह माधव को हाथ पकड कर उसे एक सुसज्जित ड्राईंगरूम मे ले गयी । "बैठो भैया," कहकर वह अन्दर अपनी मम्मी को उसके आने की सूचना देने चली गयी । ड्राईंगरूम भव्य तरीके से सजा हुआ था । महगा फर्नीचर, उच्च कलात्मक तस्वीरें और दामी कालीन, रगीन टी वी एयर कडीशनर मालिक के ऐश्वय की गाथा सुना रहे थे । "ऐश्वय सुख ही मानव की खुशी के लिये ही पर्याप्त नही है ।" माधव ने सोचा और एक कुर्सी पर बैठ गया ।

वापस आकर सतोप बोली, "हमारे पापा कई दिनो तक घर नही आते, आते है, तो मम्मी कहती है 'जान नही दूगी ।" तब मम्मी को खूब मारते है और चले जाते है ।"

"तुम इतने दिनो मे स्कूल क्यो नही आयी ?"

'कैसे आती ? मम्मी को बुखार हो जाता है और वह उठ नही सकती । फिर मैं उनके पास बैठी रहती हूँ । उनका दिल बहला देती हूँ । वह भी तीन दिन से अस्पताल नही गयी ।"

"अमीचन्द क्यो नही आया !"

"मैं उससे कहती हूँ, म तयार कर दू, तू चला जा, पर वह तो कहता है, नही दीदी, तू चलेगी तभी म जाऊँगा ।"

तभी एक ट्रे मे चार गिलास पानी लेकर एक महिला ने प्रवेश किया । माधव इस महिला की सुन्दरता, और प्रभावशाली व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नही रह सका । वह उठकर खडा हो गया, फिर उसने उनका अभिवादन किया जिसे उन्होने आये दिल से ही ग्रहण किया ।

उन्होने माधव के आगे पानी की ट्रे बढाई तो माधव ट्रे की सुदरता व गिलासो की विशिष्टता से भी प्रभावित हुआ। हाथ मे गिलास पकड कर बोला, "जी, मैं यू ही पूछने आ गया था कि ये दोनो बच्च तीन दिन से स्कूल क्यो नही आये।"

"भैया हमारे घर मे कोई परेशानी चल रही है, लेकिन मैं इन्हें कल से भेज दूगी।"

"कल तो रविवार है!" सतोष बोली।

महिला ने दो सेकॅड के लिये पलके झपकायी। फिर बोली, "आप इनके साथ ही बस मे जाते हो?"

"जी हाँ।"

"कौन सी कक्षा मे पढते हो?"

"जी मैं ग्यारहवी कक्षा मे आया हूँ।"

"बडे होनहार लडके लगते हो। तुम रहते कहा हो?"

"जी मे स्कूल मे ही रहता हूँ।"

"हमने तो नही सुना कि वहा कोई होस्टल भी है, कब से हो वहा?"

"जी, वहा होस्टल तो नही है। म यू ही रहता हूँ।"

"यू ही, मतलब?"

"मे एक शत पर अपनी कहानी बताऊँगा आपको।"

"क्या मतलव?"

"आप भी मुझे अपनी परेशानी बतायेगी, शायद म आपकी कोई मदद कर सकू।"

सुन्दर महिला ने अपनी गर्दन नीची कर ली और उसकी आंखों से टपाटप आँसू गिरने लगे। बोली, "मेरी मदद भगवान ही नही कर रहे, इन्सान कैसे करेंगे ?"

"भगवान, इन्सान के माध्यम से ही मदद करते है, कृपया मुझे बताइये।" माधव को लगा कि जैसे वह एकाएक वयस्क हो गया है। सुन्दर महिला ने उसे भीगे नेत्रो से यू देखा कि वह अपना दुख किसी को सुनाने की आदी नही है और उसकी धारणा यद्यपि उन्हे विश्वास के काबिल लग रही थी लेकिन यह प्रथम परिचय मे ही पूर्ण रूप से खुलना उचित नही समझती।

माधव ने कहा, "महोदया, मै एक तिल-तिल कर टूटते हुए परिवार की सन्तान हूँ और जब वहा की परिस्थिति मेरी बरदाश्त से बाहर हो गयी तो भागकर इधर चला आया हूँ कि कुछ काबिल बनकर, अपने पैरो पर खडा हो जाऊँ तो शायद अपने उस परिवार के हित के लिये भी कुछ कर सकू। वहाँ रह कर तो मेरा टूटना भी निश्चित ही था।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"माधव।"

"माधव तुम मुझे अपने भाई जैसे लग रहे हो। वह बेचारा इजीनीयरिंग पढने के ख्वाब देखता था पर एक दुघटना से ग्रस्त हो गया।

"लेकिन मैडम, मने घर छोडने के द्वारा अपने आप को बचा लिया है।"

"माधव, मैडम कहने बजाय क्या तुम मुझे दीदी कह सकोगे ?"

"यह मेरी खुशकिस्मती होगी दीदी।"

"अच्छा, फिर अपनी दीदी से वादा करो कि कल उसे मिलने फिर आओगे।"

"अच्छा अभी मै चलता हूँ, कल फिर आऊँगा।"

"तुम ऐसे ही नही जा सकते, खाना खाकर जाना होगा।"

"मगर "

"अगर मगर कुछ नही, जल्दी ही परोसती हूँ मैं। वैसे मिश्रानी अभी आती ही होगी, अगर तुम्हे जल्दी है तो मै पका दू।

"नही मिश्रानी जी को आने दीजिये, मैं इन्तजार कर लूगा।"

"भैया आप साप और सीढी का खेल खेलोगे ?" सतोष ने आशा भरी नजर से उसे देखतेहुए पूछा।

"हा, खेलते है।" उसके जवाब पर सतोष प्रसन्न एव चकित हो गयी।

"नही भैया, कैरम खेलो।" अमीचन्द बोला।

"साप सीढी के बाद कैरम खेलेगे," माधव ने उसे गोद मे लेकर आश्वस्त किया। "अभी तुम भी हमारे साथ खेलो।"

वे तीनो साप सीढी खेलने लगे।

अगर छोटे बच्चे कोई सीढी चढते तो खुशी से चिल्लाते और तालियाँ बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते पर यदि उन्हे साप काटता तो ऊँ ऊँ कर रोने का अभिनय करते। माधव सोच रहा था। शायद सुखी बचपन ऐसा ही होता है जो स्वय उसने कभी नही भोगा।

कैरम खेलते वक्त भी बच्चे खूब चहक रहे थे। निशाना लगाने से पहिले कैसे कैसे बालक प्रिय मन्त्र आदि बोलते। नन्हा अमीचन्द जो बस मे अपने बैग को सीने से लगाये हुये बैठा रहता था यहा हाथ मे "स्ट्राइकर" को लेकर पूरे कैरम बोर्ड पर गालाई मे घुमाता, "छू ऊ ऊ ऊ काली कलकत्ते वाली तेरा वचन ना जाये खाली-निकाल देना," बोलता और फिर निशाना लगाता। अगर उसकी कोई गोटी निकल जाती तो शान बघारता, "देखा हमारा निशाना!" माधव ने अमीचन्द को इतना मुखर पहली बार ही देखा था। अच्छा लगा उसे।

जब गोटी न निकलती तो सतोष अपनी किस्मत को दोष देने लगती और उसे बदलने की प्रार्थना भगवान से करने लगती। उनका पहला खेल अभी पूरा नही हुआ था जबकि दीदी की आवाज आयी, "तीनो बच्चे खाने आ जाइये।"

वे खेल पूरा करके उठे और हाथ धोकर खाने की मेज पर पहुँचे, तीन ही थालियाँ लगा थी। "दीदी, आप का खाना ?"

"मैं पहले आप को खिला दू फिर खाऊँगी।" व्यजन कई थे, दाल, दो सब्जिया, रायता, खीर व गरम-गरम रोटियाँ, दीदी ने कुछ अचार भी केवल माधव से ही लेने के लिये पूछ। माधव ने जब से अपने बल पर जीना शुरू किया था तब से यह उसका पहला विशेष भोजन था। वह क्या खाये और कैसे, सोचने लगा। "सतोष, एक गिलास पानी लाकर दोगी ?" उसने कहा। सतोष ने उठकर अपनी बायी ओर रखी अलमारी खोली और एक बोतल ठडा पानी लेकर आयी और उसे मेज पर रखे एक गिलास मे डालने लगी। "फ्रिज बद नही किया तुमने !" दीदी ने उसे हल्के से डाँटते हुए स्वय बद कर दिया, तो माधव ने जाना कि यह ठडा करने वाली मशीन है जिसका नाम फ्रिज है। कमाल है, यह मशीन यहाँ भी होती है, माधव ने सोचा। उसने सुन रखा था कि विदेशो मे ऐसी आलमारियाँ होती है।

गलगलाता हुआ थोडा सा पानी पीकर उसने खाना खाना शुरू किया। दीदी आग्रहपूर्वक उसे खिलाती रही। और जब उसे लगा कि वह अब एक कौर भी नही खा सकेगा तब वह अपनी सीट से उठ गया। जब दीदी ने शिकायत की कि उसने खीर कम ली है तो माधव बरबस मुस्कुरा दिया।

"दीदी, अगर आप मुझे इस तरह खिलायेंगी तो मैं तो आपके यहाँ आ नही सकूगा।" माधव की इस बात पर दीदी थोडी हतप्रभ हो गयी और उन्होने कहा, "अच्छा भैया, अब तुम्हारा मन हो उतना खाना, जिद नही करूँगी, लेकिन आना तो सही।"

अगले दिन रविवार को दीदी को अस्पताल से दस बजे ही छुट्टी मिल जानी थी। उन्होनें माधव से वादा लिया कि वह पौने दस बज अस्पताल पहुँच जाये या सवा दस बजे तक घर पर। माधव निमत्रण स्वीकार कर जब स्कूल मे लौटा तब चौकीदार काका अपने सोने की तैयारी कर रहे थे। बोले, "बडी देर लगा दी आज, क्या बहुत ज्यादा खाया है ?" माधव मुस्कुरा दिया। फिर उसने स्कूल के बाहरी दरवाजे का ताला लगाया और अपने कमरे के बाहर खाट निकाल कर सो गया। दीदी और उनका घर-परिवार उसके दिमाग मे छाये हुए थे।

सुबह जल्दी ही उठकर उसने अपने सब कपडे धो डाले और सूखने डाल दिये। फिर उसने कमरे की सफाई की, वस्तुऐं तरतीबवार लगायी। फिर कसरत करने के बाद पढने बैठ गया। वह लगभग एक घटे पढ चुका था जब काका रविवार के कारण देर तक की नीद लेकर कमरे मे आये। "काका, चाय बनाऊँ आपके लिये ?" माधव ने उन्हे देखते ही पूछा।

"तुझे पढना है तो मैं बनाता हूँ," यूँ कहकर काका स्टोव मे पम्प मारने लगे। अभी लगभग आठ बजे थे। प्रेस करने वाला आठ बजे आता है। वह प्रेस को कपडे डाल आये ! किन्तु काका तो इस कारण से चाय बना रहे है कि वह पढे—ठीक है, थोडी देर उसे और पढना चाहिये। अत वह रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानी को जा व्याख्या उसने कक्षा मे लिखी थी, उसे पढने लगा। "चौदह साल की उम्र मे एक लडका न तो उपयोगी होता है न ही शोभनीय। न तो उसे एक शिशु के समान गुदगुदाया जा सकता है न उससे बडे व्यक्ति के समान व्यवहार किया जा सकता है, ऐसी उम्र मे लडका प्यार व पहचान के लिये तडपता है किन्तु उपेक्षित होता है, ऐसी स्थिति मे उसका स्वय का घर ही उसके लिये स्वग है।"

इस कहानी के अन्त मे किशोर नायक पथिक अपनी माता की छाया मे ही चैन पाता है। माधव के मन मे विद्रोह घुमड रहा था। माधव सोचने लगा कि वह तो सोलह का हो गया है और अपना रास्ता स्वय बनायेगा—इस कहानी के साथ उसे तादात्म्य स्थापित नही करना चाहिये, नही तो ऐसा न हो कि वह जो पहाड काट रहा है उससे हो कर अपने घर तक का ही रास्ता बनाये।

मैं इस उम्र मे ही उपयोगी बन कर दिखाऊँगा। उपयोगी बन जाऊँ और कपड लत्ते जरा करीने से पहनू ता शोभनीय लगूगा। मुझे गुदगुदाये जाने की आवश्यक्ता नही है और दीदी मुझे एक्दम बडा मान कर व्यवहार करती है—मैं अपने लिये प्यार व पहिचान जुटाऊँगा। वह इन्ही ख्यालो मे था कि काका चाय ले आये। माधव को शर्मिंदगी का अनुभव हुआ कि वह यूँ ही बैठा है और काका उसकी सेवा मे लगे हैं। उसने यू ही उनके परिवार के बारे मे बात करना शुरू किया और उनके

परिजनो से जो कि अब माधव के परिचित हो गये थे, मिलने की इच्छा प्रगट की तो काका बोले, "ठीक है किसी महीने पर तू चला जाना मेरे गाँव। एक तारीख को दोपहर मे जायेगा तो साझ तक पहुँच जायेगा। अगले दिन वापस आ जाना, इहा तेरा काम मै कर दूगा।" माधव ने काका की भाषा मे काफी सुधार किया था जिसके फलस्वरूप वे पहिले की अपेक्षा शुद्ध हिन्दी बोलने लगे थे। माधव को इस निमन्त्रण से भी एक प्रकार की खुशी मिली।

/

वह अपनी चाय ढककर पहिले जल्दी से दौडकर अपने एक जोडी कपडे प्रेस के लिये डाल आया जिन्हे पहिन कर दीदी के घर जाना था। फिर काका से सहमति लेकर एक-एक कप चाय और बनाने के साथ ही उसने अपनी पहली चाय भी गम करली। फिर उसे लगा पुन थोडी कसरत कर ले ताकि चुस्ती आ जाये, तो कसरत करने लगा, कुछ देर तक तो वह यू ही बौराया सा रहा—फिर उस अपनी माता का कथन याद आया, "यू बौरा के तो माधव चित्त हो जाओगे। शान्ति से सब काम होते है।" तव उसने चाय के बरतनो के साथ स्टोव भी माज डाला और जब देखा कि हाथो मे कलौच लग गई है तो उन्हे भी पत्थर से रगड कर साफ कर डाला, फिर धोबी जी के यहा से कपडे ले आया और नहा धोकर, तेल लगाकर, दीदी के यहाँ जाने के लिये रवाना हो गया।

दीदी के घर की ओर वह दायी होकर मुडा तो उसने देखा कि वह बायी ओर से आ रही थी। उसका दिल खिल उठा और उसने सिर झुका कर, अपने दोनो हाथ जोडकर उन्हे नमस्ते किया। दीदी भी उसे देखकर बहुत खुश हुई और उन्होने उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरा। इतने दिन बाद अपनी माता को खिलती मुस्कुराती देखकर बच्चे भी बहुत प्रसन्न थे।

जब माधव और बच्चे खाना खा चुके और दीदी का खाना रसोई मे बना हुआ रखा था, और बच्चे गेंद बल्ले से बाहर घास पर खेलने लगे थे और खाना पकाने वाली मिश्रानी रसोई में सामान जमा रही थी, बरतनो की सफा व धराई उठाई कर रही थी तब—दीदी ने माधव के आग्रह पर उसे अपनी समस्या सुना ही डाली। "माधव, पति व पत्नी

गाडी के दो पहिये होते हैं। एक पहिया निकल जाये तो गाडी चल नही सकती ऊपर से उसमे सवारियाँ हो, यानि बच्चे हो, तो वे दिशाहीन हो कर गिरने भटकने लगते हैं—यह बात मेरे पिता हमें समझाया करते थे।

"पहिले तो उन्होने हमारी माँ की कदर नही समझी उनका अपमान करते रहते, पीटते रहते हमे तो समझ ही नही आया कभी कि किस बात पर मारपीट करते थे। माँ भी पिटती रहती, उफ तक न करती और मार खाकर झट पिता की सेवा मे हाजिर हो जाती। परन्तु न जाने उसे हमारे पिता की कौनसी बददुआ लग गयी, पता नही कौन से शब्द शूल की भाति उसके दिल मे चुभ गये कि एक सुबह वह बिस्तर से उठी ही नही। मैं और मेरा छोटा भाई निरजन—हम दोनो ने माँ को हिलाया डुलाया लेकिन वह तो अपनी बद आँख मे पुतलियो को स्थिर कर लेटी रही। हमने पिता को बताया तो बोले, "काम से बचने के लिये मक्कारी कर रही होगी।" परन्तु जब दोपहर होने को आयी और पिता की एक करारी लात खाकर भी वह न उठी तो पिता को चिन्ता लगी—नब्ज देखी वह नही चल रही थी। जल्दी से डाक्टर बुलाया—उसने हाथ से बिना छुए ही पहिचान लिया, बोला, "बहुत देर कर दी आपने, पछी कब का पिंजरा छोड चुका है।"

"उस दिन पहली बार हमने अपने पिता को रोते देखा लेकिन उस दिन से उन्होने हम दोनो भाई बहिनो को दिल से लगाकर रखना शुरू किया। हमारे साथ खाते, छुट्टी मिलने पर साथ खेलते, घुमाने ले जाते और स्वय के बारे मे, माँ के बारे मे, दुनिया के बारे मे हमसे खूब बातें करते। कहते, "मैंने तुम्हारी मा को बहुत दुख दिये हैं—अब मैं तुम दोनो की सेवा करके अपने पापों का प्रायश्चित कर रहा हूँ।" वह मुझसे कहते थे, "बेटी, पुरुष का अत्याचार इतनी ज्यादा सीमा तक न सहना कि तुम खत्म हो जाओ।" अब माधव, मेरे पति किसी दूसरी स्त्री के यहा जाते है तो म उन्हे रोकने की कोशिश करती हूँ। मैं अपनी समस्या किसी से कह भी नही सकती, जो अन्य साथी डाक्टर हैं वे सब खुश और अपने हाल मे मस्त है।"

"दीदी आपका भैया कहाँ है?" माधव ने पूछा।

"माधव, वह माँ के मरने के वक्त पाँच साल का था, अभी के जितना। मा को याद करके बहुत रोता था। वह पूछता, माँ कहाँ गयी है तो पिता उसे बहलाने के लिये कह देते, "वह किसी रिश्तेदार के यहा रहने चली गयी है।"

"वह करीब बारह साल का हो गया था कि एक बार हम तीनो बम्बई घूमने गये। वहा माँ की ही कद काठी की एक महिला चौडे लाल बॉडर की सफेद साडी पहिन कर जा रही थी। तो माधव, निरजन को न जाने क्या हुआ कि माँ, माँ, कहते हुए उसके पीछे भागने लगा और तीव्रगति के यातायात की चपेट मे आ गया। जब तक पुलिसमैन ने यातायात रोका, तीन-चार कारे उसके ऊपर होकर जा चुकी थी। और किसी भी चालक को दोषी नही माना गया क्योकि वह सडक पार करने के स्थान पर नही था।"

"और वह महिला?" माधव ने पूछा।

"वह तो होगी कोई, उसने तो मुडकर भी नही देखा। आज भी जब मैं इन बच्चो को बाजार लेकर जाती हूँ तो कसकर हाथ थामे रहती हूँ कही छुडाकर बीच मे न चल दे।"

"फिर आपने क्या किया?"

"फिर हमने लाश को श्मशान मे ले जाकर जलाया – गया जी जाकर पिण्डदान आदि माँ तथा निरजन के नाम से किये लेकिन हमारे पिता तो उस घटना के बाद एकदम बिस्तर से लग गये – नौकरी उनकी छूट गयी। उनके खातो मे जमा पैसे का हम ब्याज ही खर्च करते थे – मैं मेडीकल की छात्रा थी – कही नवी, दसवी या ग्यारहवी कक्षा के विद्यार्थियो को विज्ञान विषय पढा देती तो घर मे थोडी आर्थिक तथा इस कारण से भावनात्मक राहत भी मिल जाती। मैं सुबह एक गृहणी व नर्स होती दोपहर मे छात्रा, शाम को ट्यूटर, व रात को फिर से गृहिणी व नस बन जाती।

"मेरे पति मुझसे दो वर्ष आगे थे। उम्र मे वे मुझसे पाँच वर्ष बडे थे। एक बार सभी सहपाठिनें अपने भविष्य की योजनाये एक दूसरे को बता रही थी। उनमे से कोई आगे शल्यचिकित्सा के स्नात-

कोत्तर पाठ्यक्रम मे प्रवेश लेता चाहती थी तो कोई औषधि विज्ञान क पाठ्यक्रम मे, कोई विदेश जाकर पढना चाहती थी तो कोई गाव मे जाकर प्रसूति-सेवा करने की इच्छा व्यक्त कर रही थी। जब उन्होने मुझ से पूछा तो मैंने कहा कि मैं तो अपने पिता का इलाज करना चाहती हूँ।

"मेरे कथन प्रत्युतर मे कई साथी छात्र छात्राये मेरे घर आने लगे और पिता की हालत देखकर दबी जुबान मे कहते थे कि टूटे हुए दिल वाले का कोई इलाज नही होता। और मैं अपने भविष्य के प्रति आशंकित हो उठती थी। उन्ही दिनो मेरे पति डा० घनीचन्द भी हमारे घर आये और इन्होने मेरी सम्मति माँगने से पहिले मेरे पिता के सामने मुझे अपनाने की इच्छा व्यक्त की और वह मान भी गये।

"इन का स्वरूप बहुत आकर्षक नही था अत में इन्कार करना चाहती थी परन्तु मेरे पिता पर इन्होने कोई जादू कर दिया था कि वह मुझ उठते-बैठते समझाते रहते, "लडकी को उस घर मे सुख नही मिलता जहाँ वह आगे बढकर जाना चाहती है। उसे सुख उसी घर मे मिलता है जहा उसे चाहने वाले हो।" कभी मुझे लगता कि उनकी आवाज किसी गहरे कुएँ से आ रही है, और गूँज रही है, मुझे लगता यह अन्तिम कथन है जो मेरे पिता कह रहे है।

चार छ सहपाठियो की उपस्थिति मे मेरी शादी तब हुई जब मैं अन्तिम वर्ष का इम्तहान दे चुकी थी और यह महाशय औषधि विज्ञान के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम मे प्रवेश ले चुके थे। एक नर्स को दो दिन के लिये मैं अपने असहाय पिता के पास छोडकर आयी थी। और तीसरे दिन जब मैं लौटकर गयी और उन्हे सुनाया कि मेरा परिणाम आ गया है और मैं प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुई हूँ तो उनकी आँखो मे आसू भर आये और उनके होठ व ठोडी काप रहे थे लेकिन वह बोले कुछ नही—उन्होने अपना हाथ बढाया तो मैंने अपना सिर झुकाकर उस पर रखवा लिया और एकदम उनका हाथ सरक गया।

"नर्स ने बताया उन्होने तीन दिन कुछ खाया नही था। कहते थे मेरी बेटी आ जायेगी तभी कुछ खाऊँगा। दूध चाय पिलाने के प्रस्ताव पर भी उत्तेजित होने लगते थे। केवल पानी लिया उन्होने।

"अब मैं सोचती हूँ कि सतोप व अमी के पिता घर छोडकर चल देंगे तो यह घर भी मेरे पिता के घर की तरह बिखर जायेगा।"

"अरे दीदी। ऐसा कुछ नहीं होगा। आप तो एक समर्थ मा हो, अपने पति को प्यार से, झगड से सही रास्ते पर ले ही आओगी। और वह भी तो आपको इतना चाहते हैं।" माधव ने सद्‌भावनापूरण शुभ वचन बोलने का प्रयास किया।

दीदी की आखो मे एक सूनापन तिर आया। उसने अपने पिछले जीवन के बारे मे इतना कुछ बता दिया। लेकिन वैवाहिक जीवन मे आयी रिक्तता-तिक्तता का वरान अपने इस भाईस्वरूप किशोर से क्यूकर करे, वह सोचने लगी। "अच्छा भैया, तुम कहते हो तो सब अच्छा ही होगा। अब एक तो अब राखी आ रही है उस दिन बधवाने आना, दूसरे जब भी तुम्हे वक्त मिले, दीदी से मिलने की इच्छा हो तो चले आया करो। मैं तुम्हे तुम्हारे जीजाजी से भी मिलवाऊँगी।"

"हाँ दीदी, मैं आऊँगा।"

बच्चो ने अपना खेल मे हुआ कोई झगडा सुलटवाने के लिये अपनी माँ से आग्रह किया तो उन्होने कहा, "माधव तुम इनका झगडा निवटा दो तो मैं खाना खा लू।"

माधव बच्चो का झगडा निपटा कर कुछ देर उनके साथ खेला और फिर अगले रविवार को आने का वादा करके वहा से वापस लौटा।

× × × ×

रविवार की सध्या व रात्रि को माधव दीदी के पिछले व वतमान जीवन के बारे मे सोचता रहा। साथ ही यह भी कि क्या सतोप अमी के साथ उसका व्यवहार क्या कुछ बदल जायेगा। माधव विचार कर रहा था कि ये बच्चे चाहे उसे कुछ अधिक आत्मीय लगें लेकिन अच्छा

व्यवहार उसे सभी बच्चों से करना चाहिये। रह रहकर उसे अमिनेष की याद भी बहुत आ रही थी।

रात्रि के आठ बजे उसे दीदी की बहुत याद सताने लगी। उसे लगा कि दीदी बडी मुसीबत मे ह और उसे पुकार रही हैं। लेकिन उसने सोचा, "तुम कल ही तो उनसे पहिली बार मिल हो और आज सुवह मे दोपहर बाद तक उनके साथ रहे, अब फिर उनके यहाँ पहुँच जाओगे तो बडे चिपकूराम लगोगे।" फिर उसे वह लोकोक्ति याद आई कि "मित्रता अगर शुरुआत मे बहुत गहरी हो तो धीरे धीरे कम हो जाती है लेकिन धीरे-धीरे शुरु हो तो स्थायी बनती है।" और उसने निश्चय किया कि यू चौबीस घटे के परिचय मे तीसरी बार वहाँ के लिये प्रस्थान न कर दे जबकि दो बार वहाँ खाना खा चुका है। वह यही सोचते-सोचते सो गया कि सुबह दीदी दोनो बच्चो को छोडने स्टण्ड तक आयेगी तो वह उनसे कैसे मिलेगा। वह तो सिर झुकाकर अभिवादन भर कर देगा और दोनों बच्चो को ऊपर ले लेगा। लेकिन उनके सामने नतमस्तक होने के बाद जब वह सिर ऊपर उठायेगा तो पहचान व प्रेम की कैसी कौध उनकी दृष्टि मे चमक उठेगी। यही वह अनुभूति होगी जिसके लिये उसका किशोर हृदय कब से तडप रहा था और जो आज सुवह दीदी के ससर्ग मे, वार्तालाप करते समय अनेक बार उसने अनुभव की थी। ऐसे प्रेम व सम्मान की खातिर तो व्यक्ति अपनी जान भी दे सकता है, दीदी की आत्मीयतापूर्ण स्नेहयुक्त निगाहो की तुलना वह अपनी माता की निगाहो से करने लगा तो उसने पाया कि उसकी माता अपन पति द्वारा अपने साथ किये जा रहे अन्याय की लडाई मे माधव से मानो सहयोग देने की कामना अथवा याचना मात्र करती रहती हैं—उनमे ममता का भाव कभी माधव की बीमारी आदि मे एकाध बार ही प्रगट हुआ है जबकि दीदी की निगाहो मे यह बात छुपी हुई है कि वह एक जिम्मेदार, भरोसेमन्द, किशोर है—दीदी की निगाह मे निश्छल प्रेम का सागर है। रात को काफी देर तक उसे यही सपना आता रहा कि वह वस लेकर सतोप व अमो के घर के बाहर खडा है—ड्राईवर साहब हॉर्न बजा रहे है और वह प्रतीक्षा कर रहा है कि दीदी बच्चों को लेकर बाहर निकल तो वह उनका अभिवादन करे।

लेकिन सुबह जब ड्राईवर ने उनके घर के आगे जाकर हॉन बजाया तो कोई बाहर नही आया। माधव भागकर देखने गया तो उसने पाया

कि दरवाजे पर ताला है अत चकित होकर कि दीदी बच्चों को लेकर सुबह-सुबह कहाँ चली गयी होगी, माधव वापस बस मे आ गया और अन्यमनस्क होकर शेष कतव्य पूरा किये।

स्कूल मे सब बच्चो को पहुँचाने के बाद वह स्वय भी ग्यारहवी कक्षा मे बैठकर नियमित अध्ययन करता था। आज भी उसने ऐसा ही किया। चौथे कालाश के अध्यापक आज छुट्टी पर थे और बाद भोजनावकाश मिलाकर एक घटे की छुट्टी माधव को मिली लेकिन उसने दीदी के यहाँ दोपहर का अपना काय पूरा करके ही जाने का निश्चय किया। अभी तक घर पर ताला लटका मिला तो परिश्रम व्यर्थ जाने का अहसास होगा। अत वह पूरा अवधि तक पढकर, बच्चो को उनके घर छोडकर स्वाध्ययन एव विश्राम के पश्चात् शाम को ही दीदी के घर गया। ताला खुला हुआ था और माधव ने जाकर घटी बजायी। अन्दर से बाई ने दरवाजा खोला तो माधव ने पूछा,

"सब लोग घर मे है ?" तो वह बाली,

"बाई जी तो जलगा, वै तो अम्पताल मे भर्ती छै,"

"क्या ? कौन से अस्पताल मे ?" माधव को चक्कर सा आन लगा।

"वै वडा अस्पताल मे छै।"

माधव की आँखे मुंद रही थी और वह जमीन पर ही बैठने लगा था कि बाई ने उसे वही एक मुड्डा लाकर बिठाया और फिर अन्दर जाकर एक गिलास पानी ले आयी। माधव ने मुश्किल से पानी पिया। और कापते स्वर मे बोला, "मैं वही जाता हूँ।" फिर आखे बन्द कर मानो शक्ति बटोर रहा हो कि कैसे दीदी से मुलाकात करेगा, बोला, "कुछ सामान लेकर जाना है ?"

"दो थमस, एक दूध का और एक चाय का ले जाना छै। म्हे अभी वो ही तयार करण वास्ते आई हूँ।"

यह बाई अभी दीदी के ही पास से आयी है यह सुनकर माधव उनके पूरे समाचार जानना चाहता था।

वाई ने अपनी ही मारवाडी बोली मे उसे सुनाया कि कल शाम उसने अपनी बेटी के यहाँ जाने के लिये छुट्टी ली थी। पीछे से साहव व वाई जी मे झगडा हुआ और वाई जी मिट्टी के तेल से जल गयी, साहव ने उन्हे अस्पताल मे भर्ती कराया व बाई व उसके गूगे वहरे पुत्र को अस्पताल छोडकर स्वय कही चले गये। वाई रात को मालकिन के पास ही ठहरी। वच्चे वाप के पास मे ठहरे। उसका पुत्र वाजार से दवाये आदि ला देता है।

"कहाँ जल गयी दीदी ?" प्रश्न के उत्तर मे वाई ने वताया कि चेहरा ठीक है। दोनो टागे, कमर वे पेट का कुछ हिस्सा व दोनो कधे जले हैं, अगर आप जा सको तो मैं थमस तयार कर देती हूँ। फिर सबके लिये खाना वना लूगी। माधव ने कहा वह जायेगा और और मुड्ड पर बैठकर आखे वन्द कर दीदी की पीडा का अनुभव करने लगा। दीदी के साथ क्या हुआ यह तो उनसे वात करने पर ही मालूम होगा। बाई थमस लाने के साथ साथ दोनो के लिये चाय भी वना लायी थी।

"वच्चे कहा है ?" अचानक उसे ख्याल आया तो उसन वाई से पूछा। "वै भी अस्पताल मे छै। डाक्टर बीने कमरा से वाहर भेजे तो वै वाहर चला जावै नही तो वहा ही बैठे छै, अभी म्हारा लडका भी विधर ही छै।"

माधव ने जब कहा कि उसकी चाय पीने की इच्छा नही, तो वोली, "मन मे चैन आयेला कुछ पीणसू। जदी कोई सेवा कर सको हो नही तो यू ही घवराता रहोला।" तो माधव ने चाय पी। गाढी चाय, माधव को बहुत अच्छी लगी और ऐसी स्थिति मे भी 'एक अरसा बीत गया ऐसी बढिया चाय पिये हुये' यह ख्याल आ ही गया।

चाय पीकर वह अस्पताल पहुँचा। पूछताछ की खिडकी पर डा यशोदा खण्डेलवाल का कमरा नवर पूछा। उन्हे कॉटेज वार्ड नवर चार मिल गया था। रास्ता पूछते पूछते वह उधर बढने लगा लेकिन दूर से जब उसे वार्ड न चार दिख गया तो घवराहट उस पर फिर तारी हो गयी। उसने दो नवर वालो से माँग कर एक गिलास पानी पिया और फिर चार का दरवाजा धीरे से खटखटाया। "कौन है ?" दीदी का मद्धिम स्वर था।

"मैं हूँ।" कहते हुए माधव ने अन्दर प्रवेश किया। दीदी के चेहरे के नीचे के सारे शरीर पर एक लोहे का फ्रेम एक चादर से ढका हुआ था मानो सिर बाहर छोडकर उन्हे किसी बडे बक्से में बन्द कर दिया गया हो।

"ये आपको क्या हो गया दीदी ?" माधव ने उनके बिस्तर के पास ही की बच पर बैठते हुए कहा। दीदी के चेहरे पर न जाने कितने भाव एक साथ आये। उनके होठ काँप रहे थे और निगाह मे लाचारी थी। 'मुझे 40% जलना बताया है अत मरने का कोई खतरा नही है लेकिन न जाने कितने दिन मे उठ न सकूगी कुछ कर न सकूँगी। फिर कैसे काम चलेगा ?"

"दीदी मैं आपकी देखभाल करूँगा।"

"तू ? नही, तू तो अपनी पढाई लिखाई कर भैया।"

"अगर आप मुझे भया मानती ही नही तो फिर यू ही कह कर इस रिश्ते का अपमान न करें। मैं चलता हू फिर।" माधव खडा हो गया। यद्यपि वह जानता था कि अपनत्व पाना जैसे उसके लिये वाछनीय था, उसी प्रकार दीदी के लिये भी रहा होगा।

वह सामने के बिस्तर पर बैठे हुए थकान व सदमे से कुम्हलाये हुए बच्चो के पास चला गया। "बच्चो, दूध पियोगे ?"

"नही" दोनो वच्चो ने एक साथ इन्कार मे सिर हिला दिया, और बोली सिर्फ सतोष।

"अच्छा दीदी, मैं चलता हूँ न आपको न आपके बच्चो को मेरी जरूरत है। नमस्ते!" कहकर माधव अपने आसुओ को छुपाने का प्रयास करते हुए कमरे से बाहर चला गया और धीरे-धीरे वाड के बाहर रखी बैच की ओर कदम बढाने लगा।

"भैया!" यह सतोष की आवाज थी।

"क्या ?" माधव ने बिना मुड लेकिन ठहर कर पूछा।

"मम्मी बुला रही हैं ।" सतोष ने उसके पास आकर उसका हाथ पकड़ लिया था । अमीचन्द भी उसके पीछे पीछे दौडता हुआ आया । वह न जाने कितनी बाते कहना चाहता था, उस बालक की बेचैन आखे उसे असीम श्रद्धा मे देख रही थी । माधव ने अमीचन्द को गोद मे लेकर उसे अपने दिल से लगाकर जोर से भीच लिया, बालक भी उसके कधे पर सिर रखकर मौन रुदन कर रहा था । एक बाह पर कंधे से लगे अमीचन्द को उठाये व एक हाथ से सतोष का हाथ पकडकर जब माधव अन्दर आया तो दीदी भी रा रही थी और माधव भी । दोनो बालक व बाई का गूगा बहरा पुत्र केशव, इस नेहबधन के दृढीकरण के साक्षी थे।

माधव ने दोनो बालको को काच के गिलासो मे डाल कर दूध दिया । फिर दूसरे थर्मस मे से एक कप चाय केशव को दी और एक कप दीदी को चम्मच से पिलाना चाहता था । लेकिन दीदी की जिद थी कि वह पहिले पिये । माधव की बात मानी गयी कि दोनो जने साथ साथ पियेंगे, माधव बाये हाथ मे दीदी का कप पकडकर दाहिने हाथ से एक चम्मच भरकर उन्हे पिलाता फिर दाहिने हाथ मे अपना कप पकड कर उसमे मे एक घूट भर लेता ।

फिर माधव ने दीदी को बताया कि घर पर बाई खाना बना रही है और पूछा कि क्या बच्चे केशव के साथ घर खाना खाने जायेंगे । किन्तु बच्चे वातावरण के सरस और नेहयुक्त हो जाने के परिवतन से इतने प्रसन्न थे कि जिद करने लगे, थोडी देर बाद जायेंगे । फिर दीदी व बच्चो से बाते व सलाह करते हुये माधव ने ये निर्णय लिये जो कि सबको मानने थे तथा उन्हे लागू करने की जिम्मेदारी भी ली—

1 दोनो बच्चे हर दिन स्कूल जाने चाहिये ताकि अनावश्यक तनाव झेलने पर बाध्य न हो ।

2 दीदी के शरीर की सफाई सतोष स्कूल से लौटने पर करे । इस पर दीदी ने कहा कि इस काय म तो नस उनकी अच्छी सहायिका है ।

3 बाई घर पर ही रहेगी तथा समय पर नाश्ता व खाना बनाती रहेगी ।

4 केशव अस्पताल मे ही ठहरेगा ताकि दवाये आदि ला दे।

5 माधव काय व पढाई से अवकाश ले लेगा ताकि सब काय सुचारू रूप से चल सके।

6 साहब से कोई उम्मीदें न रखी जाये, यदि वे धन दे या अच्छा व्यवहार करे तो उनकी इच्छा, अन्यथा उनको दूर से ही नमस्कार।

7 कल बैंक से माधव दीदी के खाते मे से चैक द्वारा कुछ धन निकाल लायेगा जिसे दीदी अपने सिरहाने रख लेगी व आवश्यकतानुसार दवाओ तथा घर खर्च के लिये देती रहेगी।

जब दोनो बालक केशव के साथ साइकिल पर बैठकर खाना खाने के लिये घर चले गये तो माधव ने दीदी से कहा कि वह अपने जलने का किस्सा उसे सही सही बतायें।

जब दीदी ने उसे बताना शुरू किया, उनकी आवाज जैसे किसी गहरे कुऐं मे से आ रही थी, "रविवार शाम को जब डाक्टर साहब घर आये तो साथ मे सुन्दरी नाम की उस महिला को भी लाये जिसके साथ रहते हैं। वह सजी धजी आकर बैठक मे बठ गयी और अखबार पढने लगी। मुझ से डॉक्टर साहब ने आकर कहा कि दो मेहमान आय है, उनकी खातिर करो। मै चाय चढाकर एक ट्रे मे चार गिलास पानी लेकर बैठक मे पहुँची कि दो मेहमान व दो हम हैं। पर देखा मेहमान तो एक ही थी। मैंने पूछा, "दूसरे मेहमान कहा है?" तो वह बोले, "एक मैं हूँ, दूसरी यह हैं, इह नमस्ते करो।" मैं अपमान को मारी ट्रे को धम्म मे मेज पर पटक कर सोने के कमरे म आ गयी और किवाड वद करने की कोशिश करने लगी पर वे एकदम पीछे आ गये और मैं कुडी वद न कर सकी। अन्दर आकर उन्होने मुझ कस कर पकड लिया और कहा कि यह सुन्दरी उनके बच्चे की माँ बनने वाली है। "मैं तुमसे खुले रूप से पूछ रहा हूँ, क्या तुम दानो साथ रह सकोगी? वह तो तयार है, मगर तुम ऐसे तेवर दिखा रही हो तो कोई भलामानुप यहाँ नही ठहर सकता।"

"मैंने उनके मेरे ऊपर अत्याचारो का वर्णन किया तो बोले, "अगर मैं ही अत्याचार का प्रणेता हूँ तो अपने जीवन का अत कर लूगा। अभी रसोई मे जाकर मिट्टी का तेल डालकर मर जाता हूँ।" ये कहकर सोते हुए बच्चो को उनके कमरे मे वद कर जब वह रसोई की ओर बढे तो मैं भी उनके पीछे-पीछे भागी। स्टोव पर पानी खौल रहा था। उसे उतार कर उन्होने एक ओर रखा और तेल डालने का ढक्कन खोल कर मेरे ऊपर स्टोव से सीधे उडेल दिया। मैं समझ ही न पायी कि क्या हो रहा है। जब तक मैं समझी कि वह चालाकी से मुझे रसोई तक ले आये हैं, तब तक कधा से लेकर टागो तक वदन जल रहा था क्यूकि उन्होने झटपट तीली जला कर मेरे आगे खडे होकर पीछे से साडी मे लगा दी थी।"

दीदी की हफनी यहा अपनी चरम अवस्था पर पहुँच गयी कि माधव को कहना पडा, "दीदी रहने दो फिर कभी सही।" उन्हे पानी पिलाया तो उनकी वैचेनी कम हुई और वह बोली, "गनीमत यह रही साडी सूती थी व तेल चेहरे पर नही डाला अन्यथा मैं पहचान मे भी न आती।"

दीदी हाफ रही थी और उनके मुंह से बोल न फूटते थे। वह दो मिनट बाद ही आगे बोल सकी, "फिर वह बाहर गये और तसल्ली से कम्वल अपने कधे पर डालकर लाये। मैं उस दुष्टा स्त्री के पास गई कि उससे चिपट कर उसे भी जला दूंगी। तभी वो अनजान बनते हुए आये, मुझे कधो से पकडकर पीछे खीच लिया और बोले, "अरे यशोदा, यह तुमने क्या कर डाला? देखो, तुम्हे बचाने मे मेरे हाथ भी जल गये।"

"मेरे मस्तिष्क मे एक बिजली की तरह यह बात कौंध गई कि यह इन दोनो की पडयन्त्रपूर्ण योजना थी। लेकिन मैं दद मे तडपने लगी तो उन्होने मुझे कम्वल मे लपेट कर कालीन पर रख दिया और मेरे मुह पर रजाई आदि बिस्तर डाल कर मेरी चीखो को रोक दिया।

"जब मुझ मे ताक्त न रही तो उन्होने मेरे चहरे पर से रजाई हटा कर कहा, "यदि पुलिस वालो के सामने मेरा नाम लिया तो तेरे एक तो मौत का इजेक्शन लगा कर ही जाऊँगा—जहां एक गुनाह लिखा जाये दूसरा और सही—मगर याद रखना तेरे पिल्ला को फिर सुन्दरी ही

पालेगी ! खैर, तुझसे तो बेहतर ही पाल लेगी ! तू अपनी डाक्टरी की डिग्री का अभिमान करती है मगर औरत का असली आकर्षण तो उसका रूप, सलीका और मीठी बोली होता है जो तेरे पास न होकर उसके पास है, मैं तो उस गरीब बूढे पर दया करके बुरा फँसा ।"

"यह सब बोलकर वह दोनो जने मुझे कार मे डालकर यहा अस्पताल मे लाये और स्वय पुलिस को फोन किया कि एक बर्न केस मे आकर गवाही ले ले । गवाही के समय दोनो, वे व सुन्दरी मेरे सामने बैठे थे और मैंने कह दिया कि चाय बनाते समय दुघटना हो गयी । पुलिस के जाने के बाद इधर तो इलाज, घाव पर मरहम लगाना शुरू हुआ और वे "बाई को भेजता हूँ," कहकर चले गये । डाक्टर से कह गये—"मुझसे इनकी तकलीफ देखी नही जाती अत जा रहा हूँ ।" और आज सुबह बच्चो को यहाँ छोड गये ।

"आपसे मिलने आये थे ?"

"नही, बाहर से ही छोड गये । चार पाँच बिस्किट के पकेट बच्चों के हाथ मे थे । ये लोग सुबह से उन्हे ही खा रहे थे ।

"मेरी हिम्मत नही हो रही थी कि बाई को घर जाने दू । मगर वह बडी धीरज वाली महिला है । बोली, "यू तो रो-रोकर सभी को जीबो दूभर हो जायेला, अब थै तो वौ आदमी को नाम न लीजो और चार दिण मे बीमारी ठीक हो जाये जब चैण से रहवो जी ।"

"उसकी निगाह भी बडी तेज है । आते ही पूछा, "दोनो जणा आपको पकड लिया हा काई ?" तो मैं चकित हो गयी कि इसे इतना स्पष्ट अन्दाज है ।"

यू ही बातें करते, भविष्य मे इस आदमी से कोई सहारा न मागने का प्रण करते दीदी सो गयी और जब केशव बच्चो को घर से वापस अस्पताल रात्रि विश्राम के लिये ले आया तो 'माधव ने स्कूल जाकर मैडम प्रिंसीपल से एक हफ्ते की छुट्टी मागी और कारण सच सच बता दिया कि दीदी के साथ दुघटना हो गई है ।

उसने ड्राइवर के नाम बस के ड्राइविंग व्हील के बीच मे एक संदेश भी लिखकर रख दिया कि सतोष व अमी को वह अस्पताल से उठा लें ।

फिर वह दीदी के घर गया तथा वहा वाई से बच्चों की पुस्तकें, स्कूल बैग मे तथा उनके स्कूल के कपडे, घर के कपडे, कघे, टूथब्रश तौलिये चादर आदि एक सूटकेस मे लेकर रात्रि विश्राम के लिये अस्पताल आ गया। वाई की विचारशीलता का वह भी कायल हो गया जब उसने उसे भरपेट भोजन कराया।

× × × ×

अगले कुछ दिन माधव के बहुत ही तनाव मे बीते।

डाक्टर आते, दीदी को ताकत के इजेक्शन देते फिर दर्द की अनुभूति कम करने के इजेक्शन देते लेकिन तीसरे दिन पहली बार नर्स ने डाक्टर के निर्देश पर जब माधव को रोगी कक्ष के बाहर भेजकर उनके शरीर के विभिन्न अगो की कसरत करानी शुरू की तो दीदी की चीख निकल पडी थी। वह दौडकर डॉक्टर के कक्ष मे गया और उसने उनसे पूछा, "दीदी दर्द से क्यू चिल्ला रही हैं?"

तो डॉक्टर ने बडी अच्छी तरह से उसे समझाया कि जब जले हुए अग पर नयी खाल आने लगती है, उस वक्त उस अ ग को हर तरह से हरकत मे लाने के लिये उस की पूर्णक्षमता मे घुमाना आवश्यक होता है ताकि नयी आने वाली खाल मे खिचाव तथा सिकुडन की क्षमता का विकास हो जाये। अन्यथा यह भविष्य मे चलने फिरने तथा अन्य कार्यों के काबिल नही रहेगी?"

इस बात को माधव समझ तो गया था परन्तु दीदी की दद विदारक चीखें उसके मन मस्तिष्क पर छायी रही।

उसने कक्ष मे जाने पर पूछा, "दीदी, व्यायाम करने पर कैसा अनुभव होता है?"

तो दीदी ने जवाब दिया 'माधव तुम को तकलीफ हुई तो मुझे दुख है परन्तु जब अ ग हिलाते समय खून रिसने लगता है तो बस चीख निकल गयी।

"अब कल इसी वक्त फिर व्यायाम होगा। बाद मे खाल आने की गति के अनुसार जल्दी जल्दी करवाये जायेगे।

"मुझे डर है कि मैं आगे ऑपरेशन करने के काबिल भी रहूँगी या नही।"

"दीदी आप जरूर काबिल रहोगी, आप कहे तो मैं आपके लिये साईबाबा की भभूति लेकर आऊँ या आप पुष्कर स्नान की मनौती बोल दो या जिसमे भी आपकी श्रद्धा हो वह बताइये।"

"मेरी श्रद्धा तो माता वैष्णव देवी मे है और मेरी कबसे वहा जाने की इच्छा है। हम लोग काश्मीर भी गये थे लेकिन खराब मौसम के कारण वहा नही जा सके। कहते है जब माता की अनुमति मिल जाये तभी उनके दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त होता है।"

"तो दीदी आप ये ही सकल्प कर लो कि आप अगर ऑपरेशन कर सकी तो आप वैष्णव देवी जाओगी।"

"क्या बात करते हो माधव! मैं कैसे जाऊँगी? मैं चल सकती हूँ तो तुम्हारे साथ। अन्यथा तुम क्या उचित समझते हो, मैं बच्चो को लेकर जा सकती हूँ या बाई और केशव को लेकर?"

माधव ने गर्दन नीची कर ली और विचारमग्न हो गया।

दीदी ने आगे जोडा, "अगर तुम, बच्चे और मैं छुट्टियो मे चलने का कार्यक्रम बना सकते हैं तो मैं सकल्प भी लूँ अन्यथा इस बात को भूल जाओ और कभी इस बारे मे बात न करना।"

दिनभर माधव के मन मे द्वन्द चलता रहा कि तकलीफ मे सेवा करना तो एक मानवीय व्यवहार मात्र है लेकिन वह अगर दो माह बाद उनके साथ यात्रा करने का कायक्रम भी बना ले तो क्या वह एक अवैतनिक नौकर बनकर नही रह जायेगा। अपना पूरा खर्चा वह दे नही सकता तो यू भावावेश मे ऐसे निर्णय ले लेना क्या उचित होगा?

दोपहर मे माधव कमरे के बाहर रखी बेंच पर बैठ गया और अखबार पढते-पढते यू ही ऊँघने लगा था तभी उसे सपना आया कि वह दीदी व बच्चो के साथ वैष्णव देवी की यात्रा पर गया है। वह

चढाई कर रहा है परन्तु उसका मनोबल एकदम गिरा हुआ है—उसकी गर्दन नीची है और वह परमुखापेक्षी बन गया है और सोच रहा है, उसे अन्य कोई सहारा मिले ताकि वह ऐशो-आराम से रह सके। बैचेनी और घबराहट में वह जागा तो पसीने मे लथपथ था और उसे इतनी तेज प्यास लगी थी कि जुबान बिल्कुल खुश्क हो रही थी। पानी पीने के लिये उठने लगा तो सिर ऐसे घूमने लगा कि उसे फिर से बैठना पडा।

थोडी देर बाद वह उठा और पानी पीने अदर गया। दीदी सो रही थी और उनका चेहरा भी शात नही था परन्तु किन तनावयुक्त विचारो का प्रदर्शित कर रहा था, माधव नही समझ पाया।

वह बाहर निकल आया। उसकी इच्छा हुई कि सडक पर जाकर स्कूल बस को आते हुए देखे जिसमे बच्चे आने वाले होंगे, परन्तु अभी तक केशव खाना लेकर अस्पताल नही आ पहुँचा था अत माधव दीदी को छोडकर दूर नही गया।

× × × ×

अगले तीन दिन तक माधव ने यद्यपि दीदी से वैष्णव देवी चलने के सकल्प के बारे मे कोई बात नही की और दीदी व्यायाम के वक्त चीखती भी नही थी परन्तु चौथे दिन जमीन पर पताने रखी तामचीनी की बाल्टी मे ढेर सारे खून से लिथडे रुई के फाहे देख कर माधव ने दीदी से पूछा, "दीदी ये आजकल पहिले से भी ज्यादा खून क्यू आने लगा है बदन से ?"

दीदी ने टालने की कोशिश की परन्तु माधव ने उनकी नजर को पकड लिया था। वह बात को पकडे रहा और उससे झूठ बोलना दीदी को आसान नही लगा।

"शायद इसलिये कि मै बहुत टैंशन मे हूँ—तनावयुक्त हूँ—आखिर उन्होंने सच बता दिया।

"किस कारण से ?" माधव ने पूछा ।

"वह तो तुम जानते ही होगे," बोलकर दीदी ने अपनी आखे बन्द कर ली । जाहिर था कि वह इस बारे मे और बाते करना नही चाहती थी ।

माधव को लगा कि उस पर दबाव पड रहा है कि उसे जाना चाहिये । वह तहे दिल से जाना नही चाहता था । घूमना फिरना तो अपने बलबूते पर ही मनोरजक होता है । इनके ऊपर बोझ बनकर इनके साथ जाकर, वह स्वय क्या खुशी हासिल करेगा या इन लोगो को क्या दे सकेगा ? कुछ नही, इस विषय मे खूब सोचकर उसने यही निष्कर्ष निकाला कि वह तो नही जायेगा और उसे याद आया कि जो बसे लोगो की तीर्थयात्रा कराती हैं उनकी सलाह दीदी को दे देगा—उनमे दीदी को यह सुविधा रहेगी कि बार बार बस रेल बदलने का झझट नही होगा ।

बच्चो के आने पर जब माधव अपनी सलाह दीदी को देने के लिये भूमिका बाधने का प्रयास कर रहा था तभी, दीदी के स्वर के ठडेपन से वह चौक गया, "मुझे दुख है माधव कि मने शायद तुमसे बहुत ज्यादा उम्मीदे बाध ली थी ।" दीदी के स्वर की तिक्तता उससे छुपी न रह सकी ।

उसने नजरे झुका ली और वह रोने को तैयार था । उसने धीरे धीरे, परन्तु ठहरी हुई आवाज मे बोलना शुरू किया, "मै यू सोच रहा था कि दीदी से इस बारे मे बात करूगा कि हम तीर्थयात्रा कपनी की पैकेज टूर वाली बस से चलेगे या ट्रेन से । किसमे सुविधा रहेगी, और आप तो मुझ से उम्मीदे ही छोड चुकी हैं । ठीक है दीदी, अभी चलने के लिये मै जिद नही करूँगा लेकिन आपको यह वादा करना होगा कि आपका यह भाई जिस दिन कमाकर इतना पैसा इकट्ठा कर लेगा कि दीदी को घुमाकर ला सके, तब आपको चलना होगा ।"

"अरे पगले, पैसे की चिन्ता तू क्यो करता है ? तू तो इतना कमायेगा कि अपने सब परिवार वालो को दुनिया घुमा लायेगा ।

"लेकिन अभी तो तू छोटा है, बडो के साथ ही चलना ठीक है तेरा । मन हो तो चल, नही तो न सही ।

'तू अपनी पढाई पर ध्यान दे अब तो ! मैं तो कहती हूँ सतोष अमी के साथ तू भी स्कूल चला जाया कर। सुबह की दवा दोपहर मे भी आ सकती है और दूसरे केशव भी ला सकता है।"

'दीदी जब मुझे लगेगा कि मै जा सकता हूँ तब मै स्कूल जाने लगूगा पर अब अपना वैष्णव देवी चलने का प्रोग्राम तो पक्का है न"।

"भैया, पक्का प्रोग्राम तो इन दो बातो पर निभर है कि मैं सफल ऑपरेशन करने मे समथ होऊँ दूसरे माता की अनुमति मिल जाये।"

इसके बाद सभी ने मिलकर खाना खाया जिसमे बच्चे चहकते रहे। स्कूल की, कक्षा व अन्य बच्चो की बाते सुनाते रहे, और दीदी के यद्यपि आज काफी मात्रा मे खून निकला था और अब तक हीलिग की गति कोई बहुत अच्छी नही कही जा सकती थी परन्तु आज उनका मूड बहुत अच्छा था। बच्चे भी किलक रहे थे, माधव दीदी को कार्यक्रम से अपने "वियड्रॉल" की सूचना देने के निणय पर जिस अपराध बोध का अनुभव कर रहा था, बात बदलकर स्वय को उससे भारमुक्त समझ रहा था। यद्यपि दीदी के खर्चे पर घूमने के कार्यक्रम के प्रति उसका अन्तमन अभी तक आश्वस्त नही हुआ था परन्तु सवाद के बीच में कहा गया वाक्याश, "तू तो इतना कमायेगा कि ।" उसे एक नये आयाम तक आत्मविश्वास दे रहा था, जो उसके चेहरे पर परिलक्षित होकर उसकी शोभा बढा रहा था, उसमे इतना विश्वास तो तभी उसके माता पिता ने भी व्यक्त नही किया था, माधव दीदी के प्रति इतना आभारी अनुभव कर रहा था, कि विनयवश उनके आगे झुकना चाहता था।

पद्रह दिन अस्पताल मे ठहरने के बाद यद्यपि प्रभारी डाक्टर दीदी को छुट्टी देने पर सहमत थे परन्तु माधव इस पक्ष मे इस कारण से नही था कि घर पर दीदी पूण विश्राम तथा निरन्तर व्यायाम न ले सकेंगी। दीदी इस विचार से ही आतकित हो जाती थी कि उन्हे अकेले उस इतने बडे घर मे रहना पडेगा, अपनी कल्पना मे उन्हे वह घर भाय भाय करता हुआ प्रतीत होता जहा हवा इतने तेज शोर के साथ बह-रही होती कि उसकी गूज, अनुगूज व प्रतिगूज उनके कानो से सुनने की शक्ति समाप्त कर चुकी होती।

दीदी से विमर्श कर माधव ने प्रभारी डाक्टर से आग्रह किया कि वह उन्हे कुछ दिन और अस्पताल मे ही रोके, वहा दीदी व्यायाम व विश्राम बारी बारी से करती रहती। माधव बच्चो व दीदी की सेवा मे लगा रहता। बच्चो को वक्त पर नहलाना-धुलाना, स्कूल भेजना, भोजन-दूध-फल देने के काय मे लगा रहता। जब इन कार्यो से मुक्त होता तब उसके एव दीदी के मध्य एक अतहीन सवाद चल रहा होता। मानवीय सेवा की भावना के अतिरिक्त यह सवाद ही वह आकपण था को माधव को इस श्रम मे आस्थापूवक सलग्न रखता था।

एक सप्ताह अतिरिक्त ठहराव के पश्चात् दीदी जब अपने घर के लिये रवाना हुई तो माधव सामान बाधने, टैक्सी लाने के काय मे व्यस्त रहने के बावजूद, अपने गृह मे प्रवेश करती हुई दीदी का कुछ दूरस्थ होकर अध्ययन करने मे समथ था। अब दीदी के चेहरे पर यद्यपि गहन पीडा सहन करने का भाव था जो कि दुघटना पूर्व की दीदी से मिलता हुआ था परन्तु एक निणय ले चुकने के कारण एक ठहराव, एक स्थिरता का जो आभास था वह पूव के बेचैनी भरे एव अपने प्रेम का प्रतिदान न पाने के कारण व्यथापूण भाव से भिन्न था। माधव को दोनो ही स्थितियो मे दीदी एक गरिमायुक्त महिला लगी। पहिले वह अपने आपको पतिभक्ति एव पतिसेवा मे इस कारण से बिगलित करती थी कि वह उन्हे अपन परिवार मे लौटा लायेंगी, लेकिन अब वह समझ गयी थी कि यदि उनके पति उनके प्रेम को नही समझने का निश्चय कर चुके है तो वह उन्हे बाध्य नही कर सकती। उन्होने बदली हुई परिस्थितियो मे स्वय को ढालने की तैयारी कर ली थी। माधव जिन्दगी के तूफान मे स्थिर खडे रहने का प्रयास करती हुई दीदी को श्रद्धासुमन अर्पित करता था और किसी भी प्रकार उनकी सेवा, उनकी सहायता करन को आतुर था।

दीदी के घर पर माधव एक सप्ताह ठहरने के दौरान दीदी विश्राम एव व्यायाम करती रही। माधव को उन्होने राजी कर लिया था कि वह स्कूल मे अपने कार्य के बाद उनके घर पर ही ठहरता था।

इसके बाद दीवाली पर जब मध्यावधि अवकाश हो गया तो वह दीदी तथा बच्चो के साथ माधव वैष्णव देवी गया। चढाई-उतार पूण यात्रा के दौरान माधव ने स्वय मे, परमुखापेक्षी प्रवृत्ति के विकास के भय को,

दीदी के अपनत्व पूर्ण व्यवहार के सम्मुख तिरोहित होते देखा। दीदी ने माधव के सामने स्पष्ट किया कि वह अगले वर्ष अपने बी एस सी में प्रथम वर्ष में ऊँचे अंक लाये ताकि उसका दाखिला स्थानीय मेडीकल कॉलेज में हो जाये। वे उसे इस उद्देश्य हेतु प्रेरित करती। वापस लौटने पर छुट्टियों के दौरान उन्होंने माधव को अपने पास रोक लिया तथा वे उसके अध्ययन की यदाकदा देखभाल करती। इसके अलावा वे आग्रह करती कि माधव उनके साथ ही निवास करे। माधव ने आभारी होकर उनके प्रस्ताव के लिये धन्यवाद दिया और जोर दिया कि इस सत्रान्त तक तो वह स्कूल में ही निवास करेगा परन्तु दीदी ने उससे वादा ले लिया कि अगले सत्र, जब वह कॉलेज में प्रवेश लेगा, उन्हीं के साथ निवास करेगा।

दोनों अपने वादे के मुताबिक चले भी। माधव ने अपनी मेडीकल डिग्री की परीक्षा दीदी के घर रहते हुए ही पास की। दोपहर को कॉलेज जाता, तथा शाम को वह दीदी के घर में ही चलने वाले क्लीनिक में कम्पाउन्डर का काम कर देता। आगत रोगियों को पट्टी बांधता, दीदी की लिखी दवायें अलमारी में से निकाल कर दे देता यूं वह अपने आपको अपनी संरक्षिका के लिये उपयोगी बना लेता व शेष समय अपने कमरे में अपना अध्ययन करता रहता।

घर की व्यवस्था पहिले की तरह ही चलती रही कि बाई जी खाना बना देती। दीदी अस्पताल जाती आती व संतोष और अमीचन्द संजय स्कूल बस द्वारा ही आते जाते रहे। जिस वर्ष माधव ने एम बी बी एस की डिग्री प्राप्त की उसी वर्ष संतोष ने संजय स्कूल से दसवीं कक्षा पास की। और जिस वर्ष संतोष ने बारहवीं कक्षा पास कर मेडीकल में दाखिला लिया, माधव ने राजस्थान प्रशासनिक अधिकारी की परीक्षा पास कर ली – माधव ने यह परीक्षा अपनी रुचि से इसलिये दी कि उसे प्रशासनिक अधिकारी का जीवन अधिक रोमांचक लगता था – चिकित्सकीय अनुभव तो उसे लगता था कि उसने अपने विद्यार्थी काल में पर्याप्त ले लिया है। पर प्रशासनिक अधिकारी बनने के बाद भी, माधव की दोस्ती सहज रूप से डाक्टरों से अधिक हो जाती थी।

× × × ×

शानी माधव से दस वर्ष छोटी थी। अब माधव चौबीस वर्ष का था तो वह चौदह की हो गयी होगी। माधव के अधिकारी के पद पर चयन तथा पदभार सभालने के बीच मे लगभग एक माह का काल रिक्त था। माधव कुछ ऐसे शानी से मिलने की योजना बनाना चाहता था कि उस परिवार के तानाशाह पिता, अपने को कुचलने को ही पतिभक्ति मान लेने वाली माता एव जिन्हे वह परजीवी मानता था उन चचेरे भाई बहिनो से वह मुलाकात करने पर बाध्य न हो।

वह एक दिन देर शाम को, उदयपुर पहुँचाने वाली बस मे जयपुर से सवार हुआ। बस स्टेण्ड से वह गौड साहब के यहा पहुँचा जो कि उनके पडोसी थे। गौड साहब का मकान उत्तराधिकार मे उनकी इकलौती पुत्री हितकामा को मिल गया था, जिससे पिता के परिचित उन वशिष्ठ साहब के छोटे भाई ने विवाह किया था जिन्हे काकूजी ने, इस बारे मे कोई सलाह देने मे इन्कार कर दिया था।

वहा जाकर माधव ने घर के दोनो दम्पत्ति को अपनी इच्छा बतायी कि वह अपने घरवालो को सूचना दिये बिना चुपके से अपनी बहिन शानी से मिलना चाहता है ताकि उससे खुलकर बात कर सके। हितकामा उसी वक्त, सुबह उनके घर गयी और शानी से बोली, "मेरा पुत्र तुमसे गणित के कुछ सवाल समझना चाहता है। परन्तु वह इतना सकोचशील है कि यहा आता ही नही इसलिये मैं तुम्हे लेने आयी हूँ। कृपया थोडी देर के लिये चलो।"

शानी यू ही उठकर हितकामा के साथ चल दी। दो मिनट के रास्ते मे ही हितकामा ने शानी को बता दिया कि असल मे उसके भया माधव आये है। वह सारे परिवार से नही वरन सिर्फ तुमसे मिलना चाहते है। तथा यह कि वह राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी चुन लिये गये है और शीघ्र ही नियुक्त होने वाले है। शानी तो उनसे मिलने के लिये दौड पडी। माधव ने शानी को देखते ही कहा, "इतनी बडी हो गयी! मैं गया तब इतनी सी बच्ची थी," शानी की पूर्व की ऊँचाई बताने के लिये माधव ने अपने पेट पर हाथ लगाया।

"मैं और बच्ची? कभी नही। मेरा बचपन तो कभी आया ही नही—उसका थोडा सा अंश होगा भी तो आपके जाने के साथ ही चला गया।"

माधव ने शानी से अपने माता पिता के घर मे होने वाले अनुभवो को विस्तार से बताने के लिये कहा तो शानी बोली, "क्या बताऊँ भैया ? मैं तो शुरू मे ही अभागी हूँ। जब मैं पैदा हुई तभी मम्मी का स्वास्थ्य बहुत बिगड गया था अत मुझे मा के दूध की बजाय पानी पर और थाडे बाजार के दूध पर पाला गया।

"मम्मी व काबूजी इतना लडते हैं इतनी बहसें करते हैं कि कोई उन्हे सुनकर उनमे कोई तार्किकता ढूढने का प्रयास करे तो उसका दिमाग खाली हो जाये।

"पहिने जब रघु भैया यहा थे तो थोडा अच्छा बर्ताव करते थे। कुछ सुनते थे, कुछ सुनाते थे व प्रेरणा देते थे पर अब तो वह दिल्ली मे आई ए एस अफसर लगे हुए है।

"आपको पता है उन्हे मैरिट के आधार पर कही विदेश मे किसी भारतीय दूतावास का प्रभारी बनाया जा रहा है ? उनसे उनके मन-पसन्द तीन देशो के नाम पूछे गये हैं। परसो के उनके पत्र मे यह सूचना थी। लिखा हैं, "शानी, तुम्हे कौन कौन से देश देखने की इच्छा है, तीन की सूची शीघ्र भेजो।"

"और तुमने भेज दी ?" माधव शानी से उपयुक्त समाचार सुन-कर हतप्रभ सा हो गया था वह सोच रहा था, 'रघु ने कोई तिकडम भिडाई होगी विदेश जाने की व्यवस्था के लिये।'

"हा।" शानी ने देखा भैया के मुख पर खुशी नही उदासी झलक रही थी। यह दो हमउम्र रिश्तेदारो की सामान्य प्रतिस्पर्धा है शायद, उसने यही निष्कर्ष निकाला।

माधव ने शानी से माता पिता के बारे मे पूछा तो उसने स्वीकार किया कि उन्होने उसका जीना दूभर किया हुआ है। पिता अपने भतीजे भतीजियो टिल्लू, महेश, कान्ता और प्रेम को निर्विवाद रूप से हमेशा अपनी पत्नी व बेटो से ज्यादा ऊँचा स्थान देते है और इस कारण उसके दिल मे एक असतोष की ज्वाला धधकती रहती है और वह अपने चरम दुख के क्षणो मे माधव को ठोस सहारा देने मे समर्थ एक स्तम्भ के रूप मे याद करती है।

माधव बडे सकोच के साथ शानी के आग्रह पर ही काकूजी के घर जाने को तैयार हुआ था जबकि वह स्वय यही सोचता रहा था कि उन लोगो से मिलने का वक्त अभी नही आया।

भाई बहिन दोनो चुपके चुपके सीढिया चढे। तथा प्रवेशद्वार तक न जाकर सीढी की छत के नीचे ही खडे थे कि उन्हें अपने मातापिता की आवाज सुनाई दी। माधव ने शानी को चुप रहने का इशारा किया और उनके सवाद पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

मम्मी चीख रही थी, "जो बचपन मे अपनी किलकारियो से मुझे निहालकर देता था, जो मेरी जिन्दगी की रोशनी था, मेरा वह सहारा आपके तानाशाही रवैये के कारण खो गया   अरे, मेरा जीवन सूना हो गया   " वह रो रही थी।

"अभी जितने सूनेपन की कमी है वह भी पूरी हो जायेगी, तुम देख लेना।" काकूजी मम्मी पर तीर छोडे बिना कब रहते थे !

"क्या बकते हो तुम !"

"मै बक नही रहा हूँ कह रहा हूँ और वह यह कि अगर तुम अब भी अपनी बेटी को बेटी न समझ कर उससे बेगैरत बनी रहोगी तो यह लडकी भी किसी दिन भाग जायेगी !" काकूजी के स्वर की चेतावनी का लहजा बताता था कि यह जो बात कह रहे है उसमे विश्वास भी रखते है।

"अजी, आप रहने भी दो ! यो मेरी लडकी मे तो कोई खराबी नही है। असली बात ये है कि आप की भतीजी कान्ता इस घर का ले डूबी है।" मम्मी के स्वर की तेजी अब कम हो गयी थी। वह जैसे आत्मविचार के रूप मे बोल रही थी। "कितना कमाया आपने, जिन्दगी भर कमाया। बढिया ओहदे पर ही रहे हमेशा। पर हमे तो कभी मन का सा खाने पहिनने दिया नही आपने ! रुलाते कलपाते ही हमारे खर्चे उठाये और फिर भी अगर कोई कोई पूछे कि बैंक मे, पोस्ट ऑफिस मे जमा पूजी कितनी है तो सौ रुपये से ज्यादा ना है ! वाह रे भतीजप्रेमी ! वाह !"

माधव का ध्यान गया कि अब मम्मी पहिले से ज्यादा मुखर हो गयी थी।

'क्या होगा इन से इस वक्त मिलकर ?' माधव सोच रहे थे और मम्मी विलाप कर रही थी। "अरे, मेरा हीरा खो गया! मैं कगाल हो गयी।"

ऐसे अवसर पर प्रगट होने का परिणाम माधव को लगा, कोई बहुत अच्छा नही होगा। वह सीढी से उतरकर सडक पर आये और जयपुर वाली बस पकडने के लिये, बस स्टेण्ड जाने के लिये रिक्शा ले लिया।

माधव को नयी नियुक्ति नागौर जिले मे 'पजीयक भूमि एव भवन कर' के पद पर मिली। उनके बैठने का स्थान एक बडा, हवादार कक्ष था। वह फाइल देखते, मामले का अध्ययन करते और अक्सर एक सामान्य निगाह डाल कर ही मामला सही है या गलत, इस बात का पता लगा लेते। सही होता तो फाइल पर हस्ताक्षर कर रीडर को लौटा देते और अगर कोई उलझन होती तो सबधित व्यक्तियो के साथ जाकर मौका मुआयना करते तथा आवश्यकतानुसार पक्षकारो से मिल कर, उनसे बात कर, क्या करना चाहिये यह निष्कर्ष निकालते। वैसे माधव की निगाह तेज थी। एक ही नजर मे कौन चालाकी करने की कोशिश कर रहा है तथा कौन किस तरह से पीडित है, इस बात का पता लगा लेते।

जब उन्हे पहली बार एक माह का वेतन मिला तब अगले रविवार को वह जयपुर दीदी के घर गये और वेतन उनके हाथ पर रख दिया।

"अरे मुझे क्यूँ दे रहे हो ?" दीदी ने सम्मानित व गर्वित महसूस करते हुए पूछा। बोली, "इस पर तो तुम्हारे माता पिता का हक बनता है।

माधव को शानी द्वारा किया गया उनका वर्णन तथा सयोगवश सुनी गयी उनकी आपसी वार्ता याद हो आई। वह यद्यपि अपनी उनके प्रति राय से दीदी को अवगत कर चुका था, फिर भी ये यूं कह रही हैं, वह थोडा आहत हुआ। दृढ निश्चय के साथ बोला, "मैं उन्हे कुछ नही देने जा रहा हूँ।"

"क्या तुम हमसे यह उम्मीद रखते हो कि तुम्हारे इस काम मे हम खुश होगे ?"

"मेरे माता पिता से सम्बन्ध पूर्ण रूप से मेरा ही मामला है। आप को उस से क्या खुशी और क्या दुख ?"

"ठीक है फिर, ये तुम अपने पास रखो।" दीदी ने पूरा वेतन छ सौ रुपये लौटाते हुए कहा।

"दीदी, मैने अभी तक आपका इतना खर्चा कराया है आज म भी तो आपको कुछ दे सकता हूँ।"

"अगर मने कुछ तुम्हारे ऊपर खच किया होगा तो क्या धन दकर उऋण होने की सोच रहे हो ? नेह का कोई बधन तो फिर नही रह जायेगा ना इसके बाद।" वह बोली, फिर उसे रुआमा देख कर जोड दिया, "अच्छा, ऐसा करो तुम हमे पाच सितारा होटल मे एक दावत देना। बस यू खुशी का उत्सव मना लेगे सब।"

× × × ×

माधव, एक ओर तो सोचता था कि वह शीघ्र शादी कर ले और नये रोमाच के साथ जीवन मे व्यवस्थित हो जाये। दूसरी ओर सोचता था कि सतोष ने अभी मेडीकल मे प्रवेश लिया ही है। शायद दीदी सतोष का विवाह उसमे करने के बारे मे सोचती है। या शायद नही भी। वह उनसे स्पष्ट बात तो कर नही पाया कि उसके इरादे कही गलत न समझ लिये जाये। उसने चाहा कि अपनी निगाह के पैनेपन का उपयोग करे और उनके दिल मे क्या है जान ले। इस बात पर अपना ध्यान केंद्रित करने का अवसर भी मिला जब वह छ माह काम करने के बाद जयपुर के ओ टी एस मे अपने किये काय के औचित्य व कमियो का विश्लेपण करने तथा अग्रिम प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये समाहूत कर लिया गया।

लेकिन दिल व भावना के क्षेत्र मे, उसका व्यवसाय मे काम आने वाला निगाह का पैनापन काम न आता था। वह पूर्व के समान दीदी के घर मे ही निवास करता था। उनकी टोह लेने के लिये उसने एक दिन दीदी से कहा, "ओ टी एस के पीछे ही प्रशिक्षार्थियो के लिये एक छात्रावास बनाया गया है। वहा भोजन भी ठीक ठीक है। मै वही ठहर जाऊं क्या ?"

"माधव !" दीदी अपमानित सी बोली, "ठीक है जाओ पर यह तो तुम्हे मालूम है न कि यह कमरा इस घर मे तुम्हारे लिये हमेशा खाली है, और हमारे दिल मे तुम्हारे लिये जो जगह है वह भी सदा के लिये है। उसे कोई दूसरा नही छीन सकता।" वह वही रहा। कई बार रात को सतोष उससे शरीर रचना विज्ञान या और विषय की पुस्तकें लेकर आ जाती और उसके समझाने पर टिप्पणी करती, "आप लैक्चरर भी अच्छे बन सकते थे।" माधव मुग्ध चकित भाव से निहारता रह जाता।

× × × ×

"वो सतोष के लिये किस तरह का लडका देखना है ?" यह प्रश्न दीदी से माधव तब पूछ सके जब वह अपनी पढाई के अंतिम साल मे आ गयी। यद्यपि उनकी इच्छा यह पूछने की पिछले पाच सालो से थी, जब उनकी नौकरी लगी थी। इस प्रश्न को न पूछ पाने के तनाव से तो वह एक के बाद सिगरेट तथा बीडी पीते जाते थे।

"कोई कुलीन डॉक्टर या उच्च पदस्थ अधिकारी।" दीदी ने सामान्य रूप से कहा।

"किस जाति मे ?" माधव का दिल धडक रहा था।

"मै तो वैश्य जाति मे ही पसद करूंगी क्यूंकि हम लोग वैश्य हैं। अपनी जाति के लडके पर जातिवालो का बधन होता है कि वह लडकी

के साथ कोई दुर्व्यवहार सामान्यत नही कर सकता। जैसा कि मेरे पति ने किया।"

माधव कहना चाहता था कि सबसे बडा तो नेह का बधन होता है जिसमे कि माधव आपाद मस्तक इस परिवार के साथ बधा हुआ है। पर बोल यही पाया, "क्या आपकी निगाह मे हैं कोई ?"

"हाँ, मेरी निगाह मे कुछ है और वहा बात नही बनी तो अखबार मे विज्ञापन निकाला जा सकता है।"

माधव ने सोचा भी कि आगे बढकर वह प्रस्ताव कर दे लेकिन उसे लगा कि अगर उन्हें कबूल न हुआ तो यहा पर व्यवहार का खुलापन व महजता जाती रहेगी। वैसे भी, सतोष के लिये कोई कुलीन लडका होना चाहिये, ऐसा नही जो बस कण्डक्टर रह चुका हो। फिर उसने एक बीडी का बडल खरीदकर एक बीडी सुलगा ली यह सोचकर कि यह कम नुक्सान करती है और पार्क मे बैठकर पहली बार बीडी से बीडी जलाते हुए एक साथ बारह बीडिया पी।

× × × ×

अब जब सतोष के विवाह का समय निकट आ रहा था तो माधव यह सोच कर विवाह न करता था कि कही ऐन वक्त पर कोई दुघटना हो जाये तो वह स्वय सतोष को स्वीकार कर स्थिति को सभाल लेगा। दीदी लडका ढूढती रही और सतोष की अतिम परीक्षा से पहिले उसकी सगाई भी एक अन्तर्जातीय कुलीन वर से कर दी।

यह लडका डा कमलेश भारद्वाज एक वप से नौकरी मे लग गया था और अपने काय से असतुष्ट नही था परन्तु क्यूकि सतोष उसमे माधव की प्रशसा करती रहती कि उनका व्यक्तित्व, उनकी प्रतिभा इतनी चहुमुखी है कि एक डाक्टर होते हुए भी उन्होने राज प्रशासनिक अधिकारी के पद के लिये परीक्षा दी और प्रथम प्रयास मे ही मेरिट मे आ गये तो

उसने भी भारतीय प्रशासनिक अधिकारी के पद हेतु परीक्षा दी और उसमे नियुक्त हुआ।

सतोष के विवाह के बाद माधव चाहते थे कि शानी की शादी धूमधाम से करें परन्तु वह तो शादी के नाम से ही दूर भागती थी। "पुलिस मे रिपोट कर दूगी यदि किसी को जबरदस्ती पकड लाये तो!" वह गुर्रा पडती वार्तालाप करने बैठती तो कहती, "मैने अपने घर ही नही, अन्य घरो मे भी देख लिया है कि स्त्री को पुरुष की हर बात माननी होती है। म ऐसी घुटन बर्दाश्त नही कर सकती।" माधव तर्क प्रस्तुत करते तो कहती, "अच्छा, पहिले आप कर लो ताकि मुझे विचार करने का समय एव अवसर मिल जायें।"

और माधव ने ग्राम भीमनगर मे दीपिका को काटा डाल कर फसा ही लिया था।

\+ — + +

चाहे माधव ने तिरस्कृत होने के उपरात बडे योजनाबद्ध ढग से ही स्वय को विवाह की अनुमति दी थी परन्तु यह भी सच है कि वह दीपिका के प्रति प्यार मे आकठ डूब गये थे। दीपिका से सगाई के पश्चात् उन्होने उससे कहा, "यदि तुम कहो तो म ये बीडी सिगरट पीना छोड दूं।"

तो दीपिका को याद आयी वह तक्लीफदेह प्रक्रिया जिस के बारे मे उसने पढा था कि उससे सभी धूम्रपान छोडने के प्रयासरत व्यक्तियो को गुजरना होता है।

दीपिका की सखी नीतिवाला ने भी उसे अपना ऐसा ही अनुभव सुनाया था। उसके होने वाले पति सावजनिक निर्माण विभाग मे सहायक अभियन्ता थे तथा उन्होने स्वय क्रियाशील होकर कभी रिश्वत नही ली

थी, यद्यपि बड़े कार्यों मे होने वाले "कमीशन मे कुछ निश्चय प्रति शन हिस्सा" कई बार प्राप्त कर चुके थे। जब उसके मगेतर धर्मेश तिवारी ने नीतिबाला को ली गयी राशियो का मोट तौर पर हिसाब दिया और उससे पूछा कि यदि उसे कोई आपत्ति हो तो वह बता दे, वह हिस्सा लेना हमेशा के लिये बन्द कर दगे, तो, जिन्हे कभी रिश्वत लेने का अवसर नही मिलता ऐसे, परिस्थितिवश ईमानदार वर्ग के एक सदस्य यानि अध्यापक की पुत्री नीतिबाला ने पूछा, "और बाकी लोग हिस्सा लेते रहेगे ?"

इस प्रश्न का उत्तर धर्मेश तिवारी ने यू विस्तार से दिया, "वे आगे क्या करेंगे यह ता पता नही लेकिन अभी तो 'राष्ट्रीय स्तर का शिष्टाचार' यही बना हुआ है कि भवन, बाध, सडक निर्माण जसे कार्यो मे सम्बद्ध लोग एक निश्चित कमीशन का प्रतिशत ले ही रहे हैं।"

तब नीतिबाला को लगा था कि जैसे किसी अन्य प्रतियोगिता में, वैसे ही इस कमीशनग्रहण के क्षेत्र मे उसे किसी से पीछे नही रहना चाहिये। और वह अपने मगेतर की आखो मे आखे डालकर बोली थी, "यदि आप के अन्य सहकर्मी ले रहे होंगे और अपन न लेंगे तो क्या हम उनमे अधिक गरीब नही हो जायेंगे ?"

"वही तो मै तुमसे पूछ रहा हूँ," धर्मेश नीतिबाला पर न्योछावर होते हुए बोले।

"तो आप ऐसा करो कि अपना हिस्सा लेते रहो, परन्तु इस क्षेत्र मे क्रियाशील हो कर पकडे जान का खतरा कभी मत उठाना।"

नीतिबाला ने अपनी जो राय उसको दी थी उसके पीछे उसमे धर्मेश के प्रति निष्ठा, प्रेम, वफादारी सद्भावना या सम्मान की कमी नही थी। कमी थी तो व्यक्तिगत आदर्शवादिता की जिससे प्रतिबद्ध रहने की खातिर कोई व्यक्ति दूसरा के समक्ष मूर्ख समझे जाना या गरीबी सहना जैसा जोखिम उठाने के लिये तैयार हो जाते हैं। नतीजा यह निकला कि नीतिबाला की राय मे से किन्तु, परन्तु जैसे शब्दो से शुरू होने वाले वाक्याश निकाल कर रेखाकित दो शब्द ही धर्मेश न लपक लिये और बाद मे खुलकर खतरे भी उठाने लगे। यद्यपि विवाह के बाद नीतिबाला को अपनी गलती समझ मे आ गयी थी तथा वह धर्मेश की तनख्वाह

माधव उसे दुनिया का विशिष्टतम पुरुष लगता। वह उसके साथ पूर्णत सुरक्षित अनुभव करती थी।

माधव के साथ विवाह के पश्चात् के दीपिका की अपूर्व सामाजिक उन्नति हुई। माधव एक ईमानदार व कार्यकुशल अधिकारी थे अत उनके सभी सहकर्मी तथा उच्चाधिकारी उनका विशेष सम्मान करते थे। ये माधव के उपयुक्त दो गुण ही थे जिनके कारण वह अपने विभिन्न सहकर्मियो की खामियो की उनके मुँह पर ही चर्चा कर देते, और उन्हे लताड भी देते दीपिका ने अपनी खुली आखो से चारो ओर नजर घुमा कर देखा था कि कोई बुरा न मानता वरन् सभी उनकी बात के कायल होते, और उनसे अपनी बेहतरी के लिये सुझाव मागते। माधव से पहिले कोई भी दीपिका को अपने साथ साधिकार जिलाधीश महोदय के घर नही ले गया था। वहा वह ससम्मान "मेरी पत्नी, दीपिका," कह कर उसका परिचय कराते तथा सभी साथ बैठकर खाते पीते, विभिन्न विषयो पर चर्चा करते और दीपिका की बात को भी उसकी उपयुक्तता के हिसाब से तवज्जो दी जाती यद्यपि दीपिका "व्यक्ति" को उसे स्वय लगता कि वह जितनी काबिल है उससे ज्यादा प्रशसा व तवज्जो मिल रही है। यू जब वह जिलाधीश पत्नी से या न्यायाधीश महोदय की पत्नी से जब गृहसज्जा या बालको के पालन पोषण पर वार्तालाप कर रही होती और उसे पास ही बैठे माधव व दूसरे पुरुषो के जोर की आवाज मे ठहाके सुनायी पडते तो वह वचित महसूस करती। यद्यपि वापसी पर वे वो बाते जा उन्होने वहा कही सुनी हा, परन्तु दूसरे साथी ने नही, उनकी चर्चा खुलकर कर लेते थे और दीपिका जब कहती कि महत्वपूर्ण लोगा के बीच भी तुम्हारा तो अति विशिष्ट स्थान है ता कहते, "तुम्हारे आने से पहिले तो मेरा यू किसी से मिलने-मिलाने, बुलाने का मानस ही न बनता था।"

माधव मे कुछ कुशलताये ऐसी थी जो कि दीपिका ने अपने पिता, मुदित भाई या डैन भाई मे नही देखी थी। जैसे कि किसी व्यक्ति का धन देना हो तो नकद न देकर चैक द्वारा देना। इससे एक तो स्वय नकदी उठाकर घूमने का खतरा व झल्लत भी नही उठाने पडते, दूसरे अपने आप रसीद मिल जाती है।

जब माधव दीपिका को लेकर कही भी घूमने जाते तो सर्किट हाउस या रेस्ट हाउस मे सेवारत सेवको के नाम पूछ लेते। इससे दीपिका को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनकी सेवा विशेष तत्परता से की जाती। दूसरी ओर व्यक्तियो के नामो मे उनके स्वभावो व विश्वसनीयता को मापना भी माधव ने उसे सिखाया। उदाहरण के लिये, सामान्यत एक "दुखिया" नाम का व्यक्ति एक "पुलकित" नाम के व्यक्ति की अपेक्षा कम खुश रहने की आदत वाला होगा।

विवाह के बाद के चार वर्षों के अन्दर उनके दो बच्चे हुए जिनके बारे मे माधव का यू कहना तो दीपिका को अजीब लगता था कि "तुम्हे मेरी आभारी होना चाहिये कि मैने तुम्हे ये दो बच्चे दिये है" और इस बारे मे वह आगे बहस भी करे तो कैसा लगेगा, वह यू सोचती परन्तु बच्चो ने उसके जीवन को भर दिया था इस बात का वह हमेशा स्वीकार करती तथा उन्हे पालने मे भी उसे बहुत आनन्द आया। पुत्री समृद्धि व पुत्र सौहाद की भोली प्यारी बातो से वह अनायास ही आनंदित होती रहती।

इनके अलावा माधव के दफ्तर की गाडिया जब कभी सयोगवश दीपिका के उपयोग मे आ जाती जैसे कि यदि वह अपने किसी उच्चाधिकारी के यहा काम से या किसी मौके का मुआयना करने जा रहे हो और रास्ते मे दीपिका को स्कूल पर छोड दिया या दीपिका उनके साथ ऑफिस की जीप मे टूर पर निकल जाती तो देखने वालो की आंखो मे वह रश्क को वह पढ लेती। वह इस बात का अहकार करने से तो दूर रहती परन्तु उसे अच्छा लगता। यद्यपि वे दोनो व्यक्तिगत कार्य के लिये दफ्तर की वाहन सुविधा को न्यूनतम ही लेते थे। दीपिका तो माधव के साथ अपनी स्वय की मोटर साइकिल पर भी बैठ कर जाती तो किसी रूप मे कम गर्वित न होती।

यद्यपि माधव चार वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद दीपिका से विकर्षित होने लगे थे और यह बात भी उन्होंने उससे छुपायी नही वरन् धीरे-धीरे उभर कर सामने आयी परन्तु इस अल्पकालिक प्रेम यात्रा ने दीपिका को वह स्थिरता प्रदान की जिसमे वह अपने जीवन मे आगे आने वाले तूफानो को झेल सकी।

विवाह के चार वर्ष पश्चात माधव ने कह दिया कि वह दीपिका से विरक्त हो रहे हैं और न भी होते तो भी संतोष के विधवा हो जाने अथवा शानी के विवाह की उम्र गुजर जाने के पश्चात् भी अविवाहित रहने की स्थिति में वह कभी अपने को विवाहित के रूप में नहीं सह सकते क्योंकि उन्हें अपराध बोध सालने लगता है क्योंकि वह महसूस करते थे कि इन दोनों की प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष जिम्मेदारी उन्हीं की है, तब दीपिका ने भी माधव की उन बातों पर ध्यान केन्द्रित किया जिनको वह सहन कर रही थी परन्तु जिन्हें सहने में उसे तकलीफ होती थी।

माधव जो सिगरेट पीते थे वह कभी तो आदतवश तथा कभी शराब की बदबू मिटाने के लिये पीते थे। यद्यपि वह कोई रोजाना पीने वाले धाकड़ पियक्कड़ नहीं थे परन्तु अक्सर तनावयुक्त होने पर पीने लगते थे। काकूजी और मम्मी की चिन्ता करते हुए वह वैसे ही तनावयुक्त हो जाते जैसे शानी या संतोष की चिन्ता करते हुए हो जाते थे। उनके प्रमोशन में जब अत्यधिक देरी होने लगी तो रोजाना पीने लगे थे। जब दीपिका कहती, "इसके लिये संघर्ष करो" तो कहते, "कर रहा हूँ लेकिन शराब बीच के समय को सहने योग्य बना देती है।" और अब अक्सर धुत ही रहने लगे थे।

शराब के लिये टोकने पर कहते, "कौन सी रोज पीता हूँ। फिर मेरी जिन्दगी में जब कोई खुशी नहीं बची है तो मैं करूं भी तो क्या? तुम जाओ सो जाओ मेरी अच्छी संतोष।" ऐसे में दीपिका सोचती क्या करे? वह चली जाती।

कभी दीपिका सिगरेट व शराब कम करने के लिये आग्रह करती तो चिल्लाते, तुम कह चुकी हो "मैं सहन कर लूंगी," अब करो सहन! या मान लो कि तुम एक झूठी औरत हो। बोलो! हूँ!" ऐसे आँखें निकालकर बोलते कि दीपिका सोचने लगती, 'इनकी आखें ज्यादा चमक रही हैं या सुलगती हुई सिगरेट?'

फिर जब बिस्तर में सोते तो भी हाथ से सिगरेट नहीं छोड़ते और ऊंघते-ऊंघते कभी रजाई, कभी गद्दा, कभी कंबल जलाते रहते। लड़ने पर कहते, "और बनवा लो।" इसलिये वह बच्चों को अलग बिस्तर पर सुरक्षित सुला देती। लेकिन कई बार वह स्वयं जल गयी।

दीपिका यदि सहज रूप से प्रसन्नचित्त हो तो उसे नीचा दिखाने का कोई न कोई मुद्दा तलाश करने लगते थे दीपिका समझती थी कि यह उनके सस्कार हैं कि दुनिया के लिये महाउदार होने पर भी वह पत्नी के प्रति ओछापन ही रखते थे। दीपिका को अपना महा अपमान महसूस होता जबकि वह कभी नीद मे उसे सतोष कह कर उसे थामने लगते। और अब बात बात पर उस की पिटाई लगाने लगे थे, जैसे कि एक बार दीपिका के तीन रुपये कही रख कर भूल जाने पर इतना पीटा, इतना पीटा की दीपिका लबे समय के लिये भूमि पर गिर गयी। और जब बोल सकने मे समर्थ होने पर दीपिका ने उनसे कहा, आप ऐसा क्यू करते हो तो बोले, "तेरी गलत आदते छुडवाने के लिये। और देखना तेरे बच्चे भी कल तेरे साथ यही करेगे"—तब भी दीपिका उनके सामने निरुतर हो जाती कि क्या कहे। क्यूकि वह तो बच्चो के स्नेही सतान के रूप मे विकसित होने की उम्मीद व विश्वास रखती थी पर इस बात पर क्यूकर तक करे, वह समझ नही पाती।

माधव बच्चो के प्रति भी निर्लिप्त जैसा व्यवहार करने लगे थे। समृद्धि और सौहार्द उनके दफ्तर से घर आने पर उनकी गोद मे चढने की कोशिश करते तो उन्हे झिडक देते—"हटो नालायको! मुझे जाना है।" और दीपिका कहती बच्चो को दुलार कर जाओ तो कहते, "मधुसूदन क कपडे खरीदने बाजार जाना है, सतोष इन्तजार कर रही होगी, देर हो जायेगी।" और चल देते।

× ×

जब माधव ने भागदौड कर सतोप का तबादला जयपुर अस्पताल मे करवाया था तब दीपिका ने इसे एक मानवीय काय से अधिक कुछ नही माना था। उसकी मम्मी, दीदी के माधव पर इतने अहसान थे। कम से कम इतना तो उन्हे करना ही चाहिये था।

इसके बाद जब माधव ने उसे अपने यहाँ ठहराकर उसके लिये मकान की खोज शुरु की तो दीपिका बोली, "क्या इसे दीदी के साथ ही नही रहना चाहिये ?"

माधव उसके प्रति उदासीन तो हो ही चुके थे, मुह घुमाकर बोले, 'दूसरो को क्या करना चाहिये और क्या नही, इसका निर्णय करने का अधिकार तुम्हे किसने दिया है ?" माधव का चेहरे को विचकाना और रोष से नाक फुलाना दीपिका ने देख लिया था व स्वर मे अपमानपूर्ण तिक्तता को अनुभव कर लिया था, फिर भी उसने उनके इस व्यवहार से यही निष्कर्ष निकाला कि माधव सन्ताप के दुख से अत्यधिक व्यथित हैं तथा उसके व्यक्तिगत निर्णयो को क्रियान्वित करने को अपना सौभाग्य समझते है जिन पर बहस करना कोई साधारण बात नही मानते । जैसे भगवान के अस्तित्व के बारे मे या धर्म या राजनीति पर बहस करने से पहिले हमे यदि अगले व्यक्ति की नब्ज की पहिचान हो तो सुविधा रहती है उसी प्रकार यह मामला भी माधव के लिये विशिष्ट है और दीपिका ने सोचा कि वह माधव की नब्ज नही पकड पायी थी।

शाम को जब माधव ड्रेसिंग टेबिल के सामने खडे होकर अपने बाल बना रहे थे तो दीपिका उनके सामने मेज पर बैठ गयी और मनुहार करते हुये बोली, "मैने सताप के मकान के बारे मे कहा तो आप नाराज क्यो हो गये थे ?" तो माधव ने परे खिसकते हुये जबाब दिया, 'क्यूकि तुम बात ही नासमझी की करती हो।" दीपिका के चेहरे पर कुछ न समझने के भाव देखकर उसने आगे व्याख्या की, "दीदी हाई ब्लड प्रेशर की रोगी है और अपना वक्त बिस्तर पर ही बिताती है । ऐसे मे यह सतोप कैसे अपने बच्चे को वहा रहकर सामान्य रूप से पाल सकेगी ? हूँ ?" माधव की बात की तार्किकता तो दीपिका को समझ मे नही आयी मगर वह उसकी कोमल वाणी सुनकर शात अवश्य हो गयी ।

माधव अपने बच्चो दो वर्षीय समृद्धि और एक वर्षीय सौहार्द की ओर आजकल देखते भी नही अगर वे स्वय उनके पास चले जायें तो उनसे कहते है, "अपनी अम्मा के पास जाओ," और सतोप के डेढ वर्षीय पुत्र मधुसूदन को खूब घूम-घूमकर चक्करघिन्नी खिलाते, खूब

उछालते और अपने कधे व सिर पर खडा कर कहते, "डट जाओ ! पैर जमाओ बेटा !" ताकि वह तस्वीर के पीछे बनाये गये चिडिया के घोसले में रखे अडे देख ले—जो वह छोटा होने के कारण देख भी न पाता—तो दीपिका को बडा गुस्सा आता। उसने एक बार, मधु को खिलाते हुए माधव के पास समृद्धि और सौहाद का छोडा और माधव से कहा कि इनको भी खिलाओ और स्वय सबके लिये चाय बनाने चली गयी तो वापस लौट कर उसने जो दृश्य देखा उससे बहुत दुख हुआ। उन्होंने समृद्धि को घोडा बना रखा था—मधुसूदन को उस पर सवारी करा रहे थे और नन्हे सौहाद को सिखा रहे थे कि वह मधुसूदन को घोडे पर थामे रखे।

मेज पर चाय रखकर दीपिका ने समृद्धि और सौहाद से कहा, "चलो बच्चो, दूध पीने चलो रसोई मे," तो माधव इस बात पर भुन-भुनाने लगे कि तुमने मधु को दूध पीने के लिये पूछा ही नही। दीपिका ने जवाब दिया उसे पता नहीं था कि वह इस वक्त अपनी माँ का पियेगा या शीशी से और बात को खत्म करना चाहा तो भी सन्तुष्ट नही हुए और कहते रहे, "तुम्ह पूछना तो चाहिये था, सतोष से।"

जब रात को कपडे बदलने के लिये माधव कमरे मे आये तो दीपिका, जो पहिले ही साहस बटोर चुकी थी, खडी हो गयी और उनके पास जाकर बोली, "मुझे यह अच्छा नही लगा कि आपने समृद्धि का घोडा बना रखा था और सौहाद से आप घोडवाले का काम करवा रहे थे।" तो उन्होने सख्ती से उत्तर दिया, "अपने बच्चे इतने ही प्यारे है तो वापस अपने पेट मे घुसा लो उन्ह"—और कपडे लेकर बिना पलटे कमरे से बाहर निकल गये। बाथरूम से ही बडबडाने लगे। "जीना हराम कर दिया है इस औरत ने ! कसे भी चैन नही लेने देती !"

"क्या हो गया ?" माधव का बडबडाना सुनकर मधुसूदन को कधे से लगाये घूमती हुई सतोष ने माधव से पूछा, तो उन्होने व्याख्या कर दी, "ऐसी औरत है कि पीछे लग जायेगी, बच्चो को खिलाओ, खिलाओ, और हम खिलाते भी हैं तो बाल की खाल निकालती रहेगी। यू क्यो किया, ऐसे क्यू खिलाया !"

सतोप ने निगाह नीची कर ली, और धीमे किन्तु स्थिर स्वर मे बोली, "बदकिस्मती तो मेरी आयी है जो पति नही रहे। मैं आपका घर छोडकर बहुत जल्दी ही चली जाऊँगी अब।"

कडक्कर बोले माधव, "तू यहा से कभी नही भगायी जा सकती। तू अपनी खुशी से दूसरा मकान देख रही है, देख ले, पर अगर तू सोचती है कि कोई औरत तुझे निकाल देगी, तो उससे पहिले वो हमारे दिल से निकल जायेगी।" और दीपिका पास ही के कमरे मे आंसू गिराने मे इतनी व्यस्त हो गयी कि धीमी आवाज मे वे क्या बाते कर रहे है यह जानने की उसमे न ताकत रही न रुचि।

फिर जब सतोप वहा से चली गयी, उसके कुछ दिन बाद एक सुबह माधव ने दीपिका से कहा, "कल मम्मी और शानी आ रही है।" तो दीपिका ने प्रत्युत्तर मे पूछा, "मुझे पहिले क्यू नही बताया?" इसका जवाब देने मे, दीपिका सोचती थी कि वह कुछ नरमी से बोलेगे परन्तु वह तो तल्खी से बोले, "कोई यहा ठहरने थोड ही आ रही है व !"

इस बात और उसके कहने के तरीके से दीपिका मे उत्साह तो नही बचा था फिर भी एक तरह से कर्त्तव्याविष्ट होकर उसने पूछ लिया, "कहा देखा है सतोप का मकान ?" तो माधव ने उत्तर दिया, "मुझे डाक का पता याद नही है, अखबार मे विज्ञापन था, वह मकान देखा था।" अब उसकी यह पूछने की हिम्मत नही थी कि कौन सा विज्ञापन व कब का !

दीपिका ने पिछले दिनो के अखबार निकाल लिये। एक कमरा, दो कमरे के पाच विज्ञापन अलग-अलग कॉलोनी मे थे। दीपिका ने वह अखबार 'किराये के लिये' वाला पना सामने कर अलमारी मे रख दिये। आते जाते ये लोग नाम तो लेगे उस कॉलानी का तब वह जान जायेगी परन्तु माधव ने तो कभी भी किसी कालोनी का नाम नही लिया परन्तु एक शाम माधव दफ्तर से लौटे तो मम्मी साथ थी। माधव उन्हे अन्दर लाये और उन्हे सीधे रसोईघर के साथ लगे भडार घर मे ले गये। वे वहा से तीनो केटली व उनके साथ के एक एक कप एक ट्रे मे रखकर बैठक मे ले आये। जब दीपिका ने माधव को कहते सुना। "य वाला ता

ले मत जाना, बेकार है इसे साफ करने मे दिक्कत होती है।" तो वह समझ गयी कि वह उन्हे अति सफेद चीनी मिट्टी का बना व सुनहरी किनारे वाले सेट के बारे मे बता रहे है जिन्हे वह ब्रश से साफ करती थी।

जब वह कमरे मे आयी तो माधव इस बात की व्याख्या कर रहे थे कि कौनसा सेट उन्होने कहा से खरीदा और उसकी क्या विशेषता है।

मम्मी बोली "इन कपो का आकार पसद है मुझे तो ! लगता है जैसे एक पूरे साबुत गिलास मे हैडिल लगा दिया हो।"

"हाँ, आप यह ले जायें," दीपिका को माधव का यू चुपके-चुपके बोलना और देना कुछ ठीक नही लगा। यदि उससे कहा होता तो वह कोई मना थोडे ही करती !

इस सैट के बारे मे माधव ने बस इतना ही कहा कि यह हमने एक फुटपाथ से खरीदा था। उसने वह व्याख्या नही की जो कि वे दोनो कितनी ही बार आपस मे कर चुके थे। वे मम्मी को यह बताना बिल्कुल ही भूल गये कि जब वे दोनो भीड भरे बाजार से गुजर रहे थे तो अचानक दीपिका की निगाह फुटपाथ पर रखे इस सैट पर चली गयी थी। उसने मोटर साइकिल रुकवायी और फिर वह दोनो पैदल उस के पास पहुँचे थे। जब उन्होने बीस रुपये कीमत के एवज मे दस रुपये कहा तो विक्रता बोला—"चलो बाबूजी, आप तो हमारे जैसे ही हो इसलिये आपको बारह रुपये मे दे दूगा वरना एक स्कूटर वाले बाबूजी तो पन्द्रह लगा रहे थे उन्हे भी नही बेचा हमने।"

दीपिका के चरण स्पश करने पर मम्मी ने यू सिर हिला दिया जसे कि वह उनकी कोई रोजाना मिलने वाली सतही परिचिता है।

"शानी नही आयी ?"

"अपनी भाभी का सामान जँचवा रही है वह।"

"क्या ?"

"अरे, वो बच्ची सतोष है न, वो विधवा हो गयी है। उसी को कुछ साथ, कुछ सहारा देने तो हम आये है न ! सो शानी वही है।"

दीपिका जान गयी कि अगर अभी वह सासजी से कहे, "आपने क्या कहा था ?" तो वह एकदम से कहेगी, "मुँह से निकल गया था।" लेकिन उसे मालूम चल गया कि अन्दर ही अन्दर क्या खिचडी पक रही है तथा यह कि ये माता एव पुत्री झगडा होने पर सतोष को ही सहारा देगी। उसको नही।

"ये सतोष ने मकान कहा लिया है ?" उसने कुर्सी पर टिकते हुए पूछा।

"अरे मकान किराये पर लेने कहा दिया उसकी माँ ने। जब से वह अहमदाबाद से आई थी सुना है यही टिकी थी। उसके ससुराल वाले यू तो बडे ईमानदार निकले कि उसके दहेज का एक-म-एक सामान लौटा दिया। सामान स्टेशन के गोदाम मे ही धरा बताते थी। यहा भी कितने दिन टिक सकें थी। अलग मकान देख दिया था माधव ने। अपने घर का पता जब वो अपनी मा को बताने गयी तो मा ने पूछा, "यहा इतना बडा मकान है, यहा क्यू नही रहती ?"

तो वो तो टप-टप आसू टपकाती रोने लगी। बहुत कहा तो बोली, "यहा अपना अधिकार महसूस नही होता अब।" तो उसकी माँ जो बडी भयकर बीमार थी उठी और मकान के कागजात लेकर रजिस्ट्रार के दफ्तर जा पहुँची, "मेरी एप्लिकेशन आज ही की तारीख मे लगवा दो कि मुझे अपना ये मकान बेटी को भेट देना है और शाम तक एप्लिकेशन जमा करवाकर अपने घर तो बाद मे गयी है, पहिले बेटी के ही नये कमरे पे पहुँची जहाँ पर कि ट्रक मे से सामान उतरवाया जा रहा था। उसने बेटी को चिट्ठी की नकल दी, सामान फिर से ट्रक मे लदवाया और फिर बेटी को लेकर ही घर मे घुसी कि अब वह अधिकार से वहा रहे।

"अमीचन्द को क्या मिलेगा ?" दीपिका न पूछा तो बोली, "अभी तो वह लद्दाख सीमा पर गया हुआ है, आगे जो उसकी किस्मत मे होगा सामने आयेगा।"

× × × ×

रेडियो पर गाना आ रहा था।

"हम दोनो किसी को नजर नही आये चल दरिया मे डूब जाये।"

"यह क्या गाना है ?" दीपिका ने माधव से पूछा।

"यह मैं तुम्हे कल बताऊँगा।" माधव ने प्रत्युत्तर दिया।

माधव की बहुत सी समझ न आने वाली बातो मे से यह भी उसे एक लगी, जिनके बारे मे वह अपने सामने यू व्याख्या कर लेती थी कि दो व्यक्ति जो अलग-अलग वातावरण में रहे हो उनमे कुछ बाते ऐसी हो सकती है जो एक दूसरे को समझ मे न आती हो तो कभी वह यह सोचती कि माधव जो इतनी शराब पीते है इस कारण उनका ध्यान व मूड कई बार उखड जाता है सो वह बात को बाद के लिये टाल देते है।

माधव जब संक्षिप्त प्रमपूर्ण बर्ताव के बाद लम्बे समय तक उससे उखड़े रहते तो वह अपना मन लगाने के लिये कुछ अतिरिक्त काम करने लगती जैसे कि अलमारी का सामान निकाल कर जमा लेना, या कोई अतिरिक्त व्यजन बना लेना या यू ही माधव से लिपट जाना, वह माधव की डायरी भी चुपके-चुपके पढा करती थी। अगले दिन दीपिका ने माधव की डायरी मे पढा, " पिक्चर देखी दीपिका से इस विषय पर बात करनी है।"

रात को खाना खाने के बाद जब माधव सोन के लिये बिस्तर पर चला गया और दीपिका ओढन के लिये चादरे ला रही थी तो माधव बाला, "दीपि, कल अपन फिल्म चलेंगे।"

'क्यू ?"

"तुम उस गाने के बारे मे पूछ रही थी न, यह उसमे है।"

"लेकिन मैंने तो यू ही पूछ लिया था।"

"लेकिन मैंने तो यूँ ही नही माना। आज मैने वह फिल्म देखी है आधी छुट्टी ले कर तीन से छ वाल शो मे और तुम्हारे प्रश्न के उत्तर मे मैं तुम्हे कम से कम यह दिखाना चाहता ही हूँ।"

माधव की इस तरह की बातें सुनकर दीपिका को लगता कि माधव के उसे चाहने की ही यह एक अभिव्यक्ति है कि वह उसकी बात को इतनी गभीरता से लेते हैं कि उस पर मानो एक सर्वेक्षण करने लगते हैं जबकि वह तत्काल उत्तर न पाकर सोचने लगती है कि वह उसे टाल रहे है और निराश होने लगती है।

अगले दिन माधव साढे पाच बजे, दीपिका की स्कूल से छुट्टी के वक्त उसे ऑफिस की कार मे लेने आ गये। घर पर जब दीपिका बच्चो को दुलारने लगी तो जल्दी से चाय लगवा दी और दीपिका को एक तरफ ले जा कर बोले, "बाई को मैंने रात मे यही ठहरने के लिये बोल दिया है बच्चो के पास, तुम जल्दी से निकलो।"

"मुझे बच्चो को भी लेकर चलना है।"

"मेरा आदेश है कि बच्चो को नही ले चलना, मुझे तुम से कुछ बात भी करनी है।"

"बात कर भी लो!"

"तुम जल्दी निकलो बस!" दीपिका बाहर के कमरे मे आयी तो माधव बच्चों मे कह रहे थे, "मैं आपकी अम्मा को स्कूल ले जा रहा हूँ, आप बाई जी के पास सो जाना।" दीपिका बच्चो से स्वय ऐसे झूठ कभी नही बोलती थी परन्तु जानती थी कि माधव से इन्कार करे तो अभी कहेगे—"अरे भई, यू मैं उनका रोना रोक रहा हूँ," और अगर गुस्सा अभिव्यक्त करते हुए बोले तो एक अर्थहीन बहस शुरू कर देंगे जिसमे वह कायल होने की बजाय कुतर्कों से बचने के लिये चुप हो जायेगी।

माधव और दीपिका सिनेमा देख कर बाहर निकले तो माधव उसे एक रेस्टोरेंट मे ले गये। वहा उन्होने हल्के भोजन का आर्डर ।
और फिर अपनी बात शुरू की—

"मर जाये तो कसा रहे?"

"लेकिन मेरी तो अभी मरने
जवाब दिया।

"क्या तुम ीवन

अगर कही वे इन्कार कर देते तो म आजीवन उन्ह मुह दिखाने के काविल न रहता, एकमात्र चरम सीमा तक सम्मानित एव सम्माननीय सबध को यू तोड देने के बारे मे म सपने मे भी नही सोच सकता था। और अब जब ऐसी स्थिति आ गयी है कि म उसके कुछ काम आ सकता हूँ तो सपने मे भी उससे दूर नही रह सकता।"

"माधव, म भी तो सपने तक मे आपसे दूर नही रह सकती!"

"यह तुम गलत सोचती हो। मानव की क्षमताये असीम हैं—तुमने उनका प्रयोग ही कहा किया है? बस नौकरी, घर, बच्चे और मुझ से किच-किच। इसके अलावा तुम करती ही क्या हो? तुम्हारी जिन्दगी मे यही चरम उद्देश्य तो नही हो सकता कि अपनी जिन्दगी मे खुशिया बटोरने के लिये एक आदमी का जीना दूभर कर दो!"

"माधव यू न कहो! मेरी अम्मा मुझे हमेशा यही सिखाती थी कि बेटी सीता, सावित्री बन कर रहना। आपके बिना मेरी जिन्दगी मे क्या रह जायेगा?"

"तुम्हारी अम्मा कोई सीता सावित्री खुद थी क्या? उनके पति भरी जवानी मे मर गये और तब से मुझे शक है "

"बकवास बद करो माधव! काल्पनिक इल्जाम लगाते तुम्हे शम नही आती?" दीपिका चीख कर बोली। माधव पर चीख का कुछ असर हुआ। उसने निगाहे झुका ली एक मिनट मौन रहने के बाद माना अपराध स्वीकारते हुए बोले, "आयॅम सौरी दीपिका, मेरा इरादा तुम्ह चोट पहुचाने का नही था, मुझे माफ कर दो।"

दीपिका आहत हो चुकी थी, बोली, "आयॅम सौरी कह कर हर गुनाह माफ हो जाता है?" फिर अपने आपको सयत करके बोली, "ठीक है तुम मरा दिल तोडने पर उतारू हो तो यू ही सही। म आपसे, जिन्दगी की बहुत सी खुशियो से, वचित होकर भी जी लूँगी क्योकि तुम ऐसा चाहते हो!"

माधव के स्वर मे थोडी कडक आ गयी थी जब वह बोले, "मेरी खुशी देखती हो तो मुझ तलाक, आपसी स्वीकृति से दे दो जिसमे लिखेंगे

हम दोनो की आपस मे पटती नही । मै तुम्हारी शादी किसी प्रशासनिक अधिकारी या डॉक्टर या जिस क्षेत्र मे तुम चाहो वैसे व्यक्ति से करा दूँगा । सच मानो, इससे मेरे दिल मे तुम्हारी इज्जत बहुत बढ जायेगी ।"

"मुझे इस तरीके से इज्जत नही बढवानी ! फिर भी, तुम मुझे नही चाहते इस लिये तुम्हे छोड दूँगी । मै अकेली ही बच्चो के साथ रह लूँगी ।"

"नही, मैं निश्चित रूप से मुझसे बेहतर कुछ व्यक्ति तुम्हारे सामने प्रस्तुत करूगा जिनमे से तुम एक को पति चुन लेना ।"

"तुम अपने स्वाथ पूरे करो । मेरे हितैपी बनने का नाटक न करो ।"

"दीपिका, मै नाटक नही करता । सच, मैं तुम्हे एक देवी के रूप मे याद करूगा ।"

"सतोप को क्यो नही एक देवी के रूप मे याद कर लेते ?"

माधव यह सुनकर उठकर कार मे जा बैठा और हर तरफ से बद करके उसे रवाना कर दिया । दीपिका ने सोचा क्या वह दौड लगाये कार के पीछे ? उसने नही लगायी । वह एक रिक्शा लेकर घर पहुँची । वही से उसको किराये के पैसे दिये । माधव घर नही पहुँचे थे ।

दीपिका ने बाई को सामने ही स्थित उसके घर भेज दिया और कोशिश करती रही दुखी न हो । फिर भी माधव की चिन्ता मे जागती रही । वह दोनो बच्चो के साथ सो रही थी परन्तु उसके मस्तिष्क मे "माधव क्यो नही आये ? कहा होगे ?" जैसे प्रश्न ही निरन्तर गुजायमान प्रतिगुजायमान होते रहे । वह करवट बदलती रही, सडक पर से कोई भी कार गुजरती तो उसे लगता यह माधव होगे । कभी लगता, क्या अभी ही सतोप के घर रहने चले गये ? वह बेचैनी से करवटे बदलती रही । एक ओर पुत्री समृद्धि और पुत्र सौहाद सोये हुए थे उनके बीच मे दीपिका का दिल माधव के लिये तडप रहा था ।

फिर माधव आये । दीपिका ने उठकर किवाड खोल दिये । हवा के साथ ही शराब का एक भभका आया । "तुमने शराब पी रखी है ?" ये प्रश्न दीपिका के होठो तक आकर रुक गया । माधव ड्राइग रूम मे सोफे पर

अगर कही वे इन्कार कर देते तो म आजीवन उन्हे मुँह दिखाने के काबिल न रहता, एकमात्र चरम सीमा तक सम्मानित एव सम्माननीय सवध को यू तोड देने के वारे मे म सपने मे भी नही सोच सकता था। और अब जब ऐसी स्थिति आ गयी है कि म उनके कुछ काम आ सकता हूँ तो सपने मे भी उससे दूर नही रह सकता।"

"माधव, मै भी तो सपने तक मे आपसे दूर नही रह सकती!"

"यह तुम गलत सोचती हो। मानव की क्षमताये असीम है—तुमने उनका प्रयोग ही कहा किया है? वस नौकरी, घर, वच्चे और मुझ से किच-किच। इसके अलावा तुम करती ही क्या हो? तुम्हारी जिन्दगी मे यही चरम उद्देश्य तो नही हो सकता कि अपनी जिन्दगी मे खुशिया बटोरने के लिये एक आदमी का जीना दूभर कर दो!"

"माधव यू न कहो! मेरी अम्मा मुझे हमेशा यही सिखाती थी कि बेटी सीता, सावित्री बन कर रहना। आपके बिना मेरी जिन्दगी मे क्या रह जायेगा?"

"तुम्हारी अम्मा कोई सीता सावित्री खुद थी क्या? उनके पति भरी जवानी मे मर गये और तब से मुझ शक है "

"बकवास बद करो माधव! काल्पनिक इल्जाम लगाते तुम्हे शर्म नही आती?" दीपिका चीख कर बोली। माधव पर चीख का कुछ असर हुआ। उसने निगाह झुका ली एक मिनट मौन रहने के बाद माना अपराध स्वीकारते हुए बोले, "आयॅम सौरी दीपिका, मेरा इरादा तुम्हे चोट पहुँचाने का नही था, मुझे माफ कर दो।"

दीपिका आहत हो चुकी थी, बोली, "आयॅम सौरी कह कर हर गुनाह माफ हो जाता है?" फिर अपने आपको सयत करके बोली, "ठीक है तुम मरा दिल तोडने पर उतारू हो तो यू ही सही। मै आपसे, जिन्दगी की बहुत सी खुशियो से, वचित होकर भी जी लूँगी क्योकि तुम ऐसा चाहते हो!"

माधव के स्वर मे थोडी कडक आ गयी थी जब वह बोले, "मेरी खुशी देखती हो तो मुझ तलाक, आपसी स्वीकृति से दे दो जिसमे लिखेंगे

हम दोनो की आपस मे पटती नही । मै तुम्हारी शादी किसी प्रशासनिक अधिकारी या डॉक्टर या जिस क्षेत्र मे तुम चाहो वैसे व्यक्ति से करा दूँगा । सच मानो, इससे मेरे दिल मे तुम्हारी इज्जत बहुत बढ जायेगी ।"

"मुझे इस तरीके से इज्जत नही बढवानी ! फिर भी, तुम मुझे नही चाहते इस लिये तुम्हे छोड दूँगी । मै अकेली ही बच्चो के साथ रह लूँगी ।"

"नही, मैं निश्चित रूप से मुझसे बेहतर कुछ व्यक्ति तुम्हारे सामने प्रस्तुत करूगा जिनमे से तुम एक को पति चुन लेना ।"

"तुम अपने स्वार्थ पूरे करो । मेरे हितैषी बनने का नाटक न करो ।"

"दीपिका, मै नाटक नहीं करता । सच, मैं तुम्हे एक देवी के रूप मे याद करूगा ।"

"सतोष को क्यो नही एक देवी के रूप मे याद कर लेते ?"

माधव यह सुनकर उठकर कार मे जा बैठा और हर तरफ से बद करके उसे रवाना कर दिया । दीपिका ने सोचा क्या वह दौड लगाये कार के पीछे ? उसने नही लगायी । वह एक रिक्शा लेकर घर पहुँची । वही से उसको किराये के पैसे दिये । माधव घर नही पहुँचे थे ।

दीपिका ने बाई को सामने ही स्थित उसके घर भेज दिया और कोशिश करती रही दुखी न हो । फिर भी माधव की चिन्ता मे जागती रही । वह दोनो बच्चो के साथ सो रही थी परन्तु उसके मस्तिष्क मे "माधव क्यो नही आये ? कहा होगे ?" जसे प्रश्न ही निरन्तर गुंजायमान प्रतिगुजायमान होते रहे । वह करवट बदलती रही, सडक पर से कोई भी कार गुजरती तो उसे लगता यह माधव होगे । कभी लगता, क्या अभी ही सतोष के घर रहने चले गये ? वह बेचैनी से करवटें बदलती रही । एक ओर पुत्री समृद्धि और पुत्र सौहार्द सोये हुए थे उनके बीच मे दीपिका का दिल माधव के लिये तडप रहा था ।

फिर माधव आये । दीपिका ने उठकर किवाड खोल दिये । हवा के साथ ही शराब का एक भभका आया । "तुमने शराब पी रखी है ?" ये प्रश्न दीपिका के होठो तक आकर रुक गया । माधव ड्राइग रूम मे सोफे पर

बैठ गये और अपने जूते उतारने लगे। दीपिका ने बाहर का दरवाजा बन्द किया और सोने के लिये बच्चो के कमरे मे जाने लगी।

"दीपिका कुछ देर मेरे पास बैठो प्लीज।"

"क्यू ?"

"कुछ बात करनी है।"

"बात कर तो चुके तुम शाम को।"

कहकर दीपिका बच्चो के कमरे मे सोने चली गयी। बीच की कुण्डी टूटी हुई थी अत दीपिका लगा भी नही सकती थी। आधे घट बाद माधव नाइट सूट मे आये और जमीन मे खड हुए जितने दीपिका तक पहुँच सकते थे--पेट तक--वहा अपना सिर रख दिया उन्होने और बोले, "प्लीज चलो उधर।"

दीपिका ने बच्चा को दीवार की तरफ किया, फश की तरफ तकिये लगाये और ड्राइग रूम मे लगे ड्योढे पलग पर आ गयी।

माधव ने उसे इतनी उत्सुकता इतने प्यार से लिया कि दीपिका को लगा कि शाम वाली बात एक दु स्वप्न थी और माधव उसके प्रति प्रतिबद्ध है। दीपिका ने कहा, 'मैं आपसे कुछ बात करना चाहती हूँ।' परन्तु माधव ने कहा, "प्लीज बाते बाद मे करेगे पहिले जरा तुम्हे देख ल। मैं तो शायद तुम्हारी हदो तक पहुँचा ही नही अभी तक।" माधव की इन बातो को दीपिका ने नशे मे बहक कर कही हुई फालतू बात नही माना वरन् ऐसी अभिव्यक्तिया उसके आगे आने वाले मुश्किल समय मे उम्मीद की किरण बनी रही। और दीपिका भी शाम की घटना को दर्द भरे दृश्य की तरह भूलना चाहती थी। उसे यही उचित लगा कि यू ही आनन्द के झूले मे झूलती रहे।

फिर माधव ने उसे तलाक के कागज दिये--ये मैंने लिखा है--ठीक समझो तो इन पर हस्ताक्षर कर देना। उसने उन्ह तकिये के नीचे रख दिया और दानो सुबह छ बजे तक बेहाशी मे सोये रहे, जब कि डेढ वर्षीय सौहाद डगमगाते कदमो से बडे बिस्तर से उतर कर आ गया आर दीपिका को थप्पिया देता हुआ बोला, "अम्मा, बूबू।"

दीपिका उसे पहिले सूसू कराकर लायी और फिर वही लेटकर स्तनपान कराने लगी। कमरे मे हल्का उजाला हो गया था। दीपिका ने तकिये के नीचे से माधव के दिये हुए कागजात निकाले और उन्हे पढने लगी।

उसमे न्यायाधीश महोदय से विनती की गयी थी कि हम दोनो की आपस मे कभी पटी नही अत हम आपसी सहमति से तलाक लेना चाहते हैं। पति व पुत्र के बीच लेटी दीपिका को एक ऐसा विचार आया कि उसके होठो पर एक मुस्कान तिर गयी और उसने सोचा आज इस विचार को क्रियान्वित कर देखेगी। थोडी देर के लिये वे तीनो पुन सो गये।

× × × ×

माधव जब दफ्तर चले गये तो दीपिका ने स्नान किया, बढिया कपडे पहिने और सतोष के घर गयी। सतोष मकान अपने नाम हो जाने पर भी उस मकान मे दो कमरे के एक हिस्से मे रह रही थी। वहा आराम मे बिठाये जाने के बाद ही दीपिका ने सतोष से कहा, "मैं आपसे कुछ बातें करने आयी हूँ। कृपया क्या आप मुझे वस्तुस्थिति जानने मे मदद करेगी?"

'कहिये!" सतोष ने तनिक अहकार के साथ कहा।

"माधव से तुम्हारी शादी की बात चल रही है?" दीपिका ने पूछा।

सतोष एकदम कुर्सी छोड कर उठ खडी हुई हुई उसके चेहरे पर हवाइया उड रही थी, "माधव जी कह रहे थे कि कि।"

दीपिका ने उससे आरामपूर्ण स्थिति मे बैठकर बात करने का अनुरोध किया। फिर पूछा, "क्या कह रहे थे माधव?"

"वह यही कह रहे थे कि आप दोनो ने तलाक लेने का निर्णय कर रखा है अत वह मुझसे शादी कर अनुगृहीत हो जायेगे। मैंने उनसे कहा

था कि मेरे कारण अपना घर न उजाडो तो वे बोले कि उनका तलाक तो हो ही रहा है। मेरी इच्छा हो तो मैं उनसे हाँ कह दू, न हो तो ना कह दू। मुझ पर कोई बाध्यता या दबाव नही है। वे कह रहे थे उनकी किस्मत अच्छी होगी तो मैं हां कहूँगी वरना एकाकीपन ही उनकी नियति है।"

"यह बात कब कही माधव ने ?"

"यह उन्होने पिछले हफ्ते कही थी।"

"और क्या कहा था ?"

"वे मेरी मम्मी से भी मिले थे।"

'उनसे क्या बात हुई थी ?"

"दीदी, माधव तो हमारे घर बहुत पहिले से रहे है। मेरी शादी से पहिले भी मम्मी ने मुझसे प्रस्ताव किया था कि मैं उनसे शादी कर लू। पर उस वक्त तो मुझे लगा था कि उस शादी मे रोमाच जैसी कोई चीज ही नही होगी अत मैंने इकार कर दिया। तब तो मम्मी ने भी यह कह कर मेरे निर्णय को स्वीकार कर लिया कि दुनिया मे कोई हितैषी हो तो यह आवश्यक नही कि वह रिश्तेदार ही बना लिया जाये, परन्तु जब से मेरे प्यारे पति गये ह तब से ही ये दोनो मेरे पीछे पडे हैं।"

"तुम मेरा घर उजाड कर सुख पा जाओगी ?"

"दीदी सुख दुख तो मन की स्थितिया है, मै पता नही क्या पाऊँगी? लेकिन जब आप माधवजी की देखभाल ठीक से करती हो नही और वह अगर आप से तलाक ले ही रहे है तो आपको इससे क्या फक पडता है कि आगे अपने जीवन मे वे क्या करते हैं। अच्छा अब मुझे बाजार जाना है—नमस्ते।"

"सतोप, मैं अपने पति के साथ बहुत खुश थी और देखभाल हम एक दूसरे की खूब रखते थे मगर वह सिफ तुम्हे पाने के लिये मुझे तलाक देना चाहते है—तुम भी कान खोलकर सुन लो—तुम्हारी इस स्वाथपूर्ण चाल को कामयाब कराने मे मैं कोई मदद नही दूगी। तलाक भी मैं

स्वेच्छा से नही दूगी। न्यायाधीश महोदय को भी तुम्हारे बारे मे बताऊगी अतत तुम्हारा दर्जा एक रखैल का ही रहेगा—यह तुम देख लेना।

"तुम्हे पुनर्विवाह करना था तो कोई विधुर या कोई और देखा होता। यह क्या कि किसी का जमा जमाया घर उजाडने की योजना बना रही हो।"

सतोष के मुह पर भय की छाया देखकर दीपिका ने आगे जोडा, "अपने स्वाथ के लिये अधे होकर दूसरा का जीवन बरबाद करने की कोशिश करती हो तुम! लानत है तुम पर!

"जो पुरुप आज दूसरी शादी की खातिर अपनी पत्नी को छोड सकता है वह तीसरी की खातिर कल दूसरी को भी छोड देगा। जाओ, बाजार जाकर अपनी सगाई के लड्डू ले आओ और जी खोलकर बाटना उन्हे, नमस्ते।"

दीपिका को दुख था कि वह जितना शात एव सयत व्यवहार करना चाहती थी उतना नही कर पायी परन्तु उत्तेजना उस पर हावी हो गयी थी। उसने बाहर निकलकर घडी देखी। साढे ग्यारह बज गये थे। उसका स्कूल साढे बारह का था। अभी काफी वक्त था अत वह बस का इतजार करने के लिये बस स्टॉप पर चली गयी यद्यपि वह ऑटोरिक्शा मे जाने के लिये तैयार होकर आई थी।

× × × ×

दिन व दिन माधव का व्यवहार दीपिका की समझ से बाहर होता जा रहा था और जब यह उस की सहनशक्ति की सीमा से परे हो गया तो एक दिन उसने बच्चो को बाई के साथ अपनी सहकर्मी सखी रागिनी गुप्ता के घर भेज दिया और स्वय माधव से उसके बिगड हुए व्यवहार के बारे मे वार्ता शुरू की तो माधव ने कहा, "तुम्हे मालूम होगा कि पुरुप एक दो वप मे अपनी पत्नी से ऊब जाते है और शेप जीवन

ऊबते हुए या बच्चो को देखकर बिताते है क्योकि उनके पास कोई विकल्प नही होता ।

"मेरे पास विकल्प है, यह तुम जानती हो । पहिले मै शानी की शादी के बारे मे चिंतित रहा करता था पर अब उसने अपनी मरणासन्न सखी रचना वर्मा की खुशी की खातिर उसके पति व पुत्र को अपना लिया है तो, अब जो मेरी शेष चिन्ता है, वह तुमसे दूर जाकर ही दूर हो सकती है जानती हो न तुम ! अब तो मै इस घर मे बस यू दिन काट रहा हूँ कि यहा से मेरा दाना पानी कब उठेगा, देखना है ।

"आपको हमारी कुछ चिन्ता नही है ?"

"तुम्हारी चिंता की क्या बात है, अच्छा कमाती हो, मस्त रहो ! खुश रहो !"

"पर हम जो तुम्हे इतना चाहते है उसका प्रतिदान ?"

"मैं तो कहता हूँ अब चाहना वाहना बद करो—नही भी करो तो मुझे अपने आपको चाहने के लिये तुम बाध्य तो नही कर सकती !" कहकर माधव खड हो गये ।

"अच्छा, बच्चो को लेने चले ?"

"तुम ठहरो, वहा बाई भी है, तो फिर मोटर साइकिल पर वापसी मे कितनी जगह बचेगी ?" कह कर माधव चल दिये ।

अगले ही हफ्ते माधव के बादीकुई ग्राम मे पदस्थापन के आदेश हो गये । शुरू मे तो माधव दीपिका के पास घर आते रहे और वह बच्चा को लेकर चली जाती थी लेकिन बाद मे उन्होने दीपिका के घर आना बन्द कर दिया । सरकारी आवास मिल जाने पर उन्होने काकूजी एव मम्मी को वही रहने के लिये निमत्रित कर लिया था । और बिहारी की उचित परिवरिश हो सके इस लिये शानी का तबादला भी वही बादीकुई मे एक दफ्तर मे बाबू के पद पर करवाने के प्रयास मे लगे थे और घर के वातावरण मे काकूजी व मम्मी की नोकझोक घर के शोर की मुख्य विषयवस्तु थी । जब दीपिका आती माधव उसका अपमान करने का कोई अवसर नही चूकते । यूँ घर का वातावरण वसा ही बन गया था

जैसा काकूजी का अपने भतीजो के साथ रखने पर उदयपुर मे हुआ करता था।

बस माधव अपने, बच्चो के नाम पत्रो मे लिखा करते थे कि वे स्कूल मे छुट्टी होने पर उनके पदस्थापन स्थान वादीकुई मे कुछ दिन ठहरने के लिये आये। एक बार होली के अवसर पर उन्होने लिखा कि वे अपने चपरासी हरीश एव उसकी पत्नी रजनी को भेजेगे जो कि दोनो बच्चो को सभालकर उनके घर पहुँचा देगे। दीपिका ने इस कायक्रम के लिये अपनी स्वीकृति भेज दी थी।

यद्यपि उन बच्चो के पास पहिले भी कपडो की कमी नही थी फिर भी अच्छे कपडो के प्रति प्यार के कारण उसे कपडे सिलवाने का यह उचित अवसर लगा।

उसने पुत्र के लिये एक सफेद तथा गुलाबी धारियो वाला कपडा खरीद कर नाइट सूट की सिलाई की। पुत्री के लिये उसने एक गुलाबी पतले नायलॉन की फ्राक बनवाई जिसका अस्तर छोटे-छोट सफद व गुलाबी चैंक के कपडे का था।

पहिले के चुनिन्दा कपडे धोकर तथा इन नये कपडो मे बटन काज करके दीपिका ने उन सभी पर इस्तरी कर दी तथा एक सूटकेस मे आधे आधे स्थान पर उसने उनके करीब सात-आठ जोडी कपडे रख दिये। इफरात से कच्छिया, जुराबें तथा रूमाल आदि वस्तुएँ सूटकेस की जेबो मे रख दी। सूटकेस के साथ ही उसने एक टोकरी भी तैयार कर दी जिसमे उसने बच्चो के खिलौने—गुडिया व उसके कपडे, चाबी वाला टैक तथा हवाई जहाज, थाड बिस्किट, घर मे बनी मठरिया, बिना मिच की नमकीन तथा पानी की खाली बोतलें रख दी थी कि जाते वक्त भर कर दे देगी, साथ ही बच्चो के लिये कुछ नैपकिन रख दिये थे। उसने जूते व सैंडिल अभी बाहर ही छोड दिये थे कि बच्चे चप्पल या इनमें से जो कुछ भो पहिनना पसद करेंगे उनके अतिरिक्त बची हुई वस्तु वह डिब्बे मे रखकर एक थैले मे रख देगी। यह सब तैयारी कर के वह दूसरी पारी में अपने कायस्थल पर चली गयी। उसने बच्चो से कह दिया था कि अगर हरीश तथा उसकी पत्नी उह लेन आयें तो उनसे कहना कि मेरी वापसी का इन्तजार करें, मैं शाम को पाच बजे तक आ जाऊँगी।

लेकिन जब वह उसी वक्त घर पहुँची तो दरवाजे पर ताला लटक रहा था। सडक का मोड मुड कर मकान मालकिन से चाबी लेने पहुँची तो उन्होने बताया कि एक गरीब सा दिखने वाला आदमी दोनो बच्चो को ले गया है। बच्चे कह रहे थे यह हरीश चाचा हैं। यह घर एक कोने का प्लॉट था तथा एक ओर दीपिका का हिस्सा तथा दूसरी ओर मकान मालिक का हिस्सा खुलता था। जब दीपिका कमरे मे पहुँची तो उसने देखा सारे कमरे मे पुराने अखबार बिखरे हुए हैं, बच्चो की टोकरी तथा सूटकेस भी नही ले जाये गये हैं। उसने सूटकेस खोल कर देखा—उसमे से ऊपर-ऊपर से कुछ कपड निकाल लिये गये थे। शायद एक-एक या दो-दो जोडी कपड उठा लिये गये हैं पुराने अखबार मे लपेट लिये गये है पास ही पडी सुतली से बाधा गया है। दीपिका का कलेजा मुँह को आने लगा। उसकी तो यह भी हिम्मत नही हुई कि बच्चो के कौन-कौन से कपडे ले जाये गये है का हिसाब लगाने के लिये, जो बच गये हैं उन्हे देखे। बच्चो की चप्पले भी स्कूल के जूतो के साथ एक ओर रखी थी, फैन्सी जूते तथा सैन्डिल पहिन गये है लेकिन घर मे क्या पहिनेगे? सूटकेस की जेब मे हाथ डाला उनके 'टूथब्रश' भी रखे है। ऐसी हालत देख कर दीपिका का तो सिर चकराने लगा तथा वह अपना सिर दोनो हाथो मे थाम कर बैठ गयी।

उसे बैठे पाच सैकेंड भी नही हुए होगे कि उसे एक यह निश्चित विचार आया कि बच्चो के प्रति ऐसी लापरवाही का प्रतिरोध तो करना ही चाहिये। आखिर यह कोई माधव का निर्णय तो है नही कि बच्चे या तो जूते मोजे पहिन कर घूमेगे या नग पाव तथा इतने दिनो तक वे दो ही कपडो को बदल बदल कर पहिनते रहेगे। उन्हे तो धो प्रेस कर सवारना भी मुश्किल होगा। एक चपरासी के विवेक पर बालको को छोडकर उनके पाच दिन बिगाडने का कोई औचित्य नही है—यद्यपि उसे निमन्त्रित तो नही किया गया है लेकिन माधव तो उसका अपना है—बच्चे उन दोनो के है तो घर तो उसका अपना ही हुआ न। ऐसे मे यू मान किये बैठी रहे, बच्चे असुविधा मे रहे, उनकी सुविधा का सामान यहा रखा रहे—और वह अकेली त्यौहार के पाच दिन गुजारे यह तो उसकी बेवकूफी होगी। उससे अकेली अपने लिये एक वक्त का खाना तो पकाया जाता नही है—उसे याद आया जब वह तथा माधव दोनो ही रहते थे और माधव का टूर लगता था तो वह

उसके पीछे से कभी अपने लिये खाना नही बनाती थी। स्कूल मे चाय के साथ समोसा खा लेती, गैस चमका देती और पल पल सोचती रहती कि माधव कब आयेगे। जब वह आ जाते तभी वह खाना बनाती। दूसरी ओर रिश्तेदारो के यहा ऐसे मे जाना भी मूखता ही होगी, यह अपने सम्मान को कम कराने का प्रयास होगा। यदि उसके यहा ही कोई अनिमन्त्रित व्यक्ति सिर पर बना ही रहे तो वह स्वय कितनी देर उसका स्वागत करने का तैयार होगी। फिर ऐसी स्थिति तो परिवार की टूटन का प्रमाण दिखाने की होगी। उसने भी बादीकुई जाने का निश्चय कर लिया और सामान सहेजना शुरू किया।

सबसे पहिले उसने बिखरे हुए अखबारो को करीने से तह करके रददी की अलमारी मे रखना शुरू किया। बिस्तर पर बिखर अखबारा के नीचे उसे अपनी बिटिया की छोटी सी चिटठी भी मिल गयी। "अम्मा, हम जा रहे हैं—समृद्धि" उसके नीचे सौहाद ने भी अग्रजी के कैपीटल लैटस (बडे अक्षरो) मे अपने नाम की वर्तनी लिखी थी, अभी उसने यही सीखे थे। दीपिका ने उन कागजो को चूम लिया और सीने से लगा लिया जसे ये उसके बच्चे हो। उसकी आखो और होठो पर अनायास ही एक तृप्ति जनित मुस्कान आ गयी सारे शरीर मे एक अत्यन्त ही सकारात्मक भाव, गरिमा की अनुभूति हुई। कितना ख्याल रखा है बच्चो ने अम्मा का ! उन्होने अपने प्रति उसके प्यार का प्रतिदान दिया है। एक पल मे वह समझ गयी कि बच्चे स्नेह के बदले मे स्नेह देते ही हैं। और स्त्रीत्व के ये बधन स्त्रियो को हार्दिक सन्तुष्टि व पूर्णता देते हैं—उसे बच्चो के लिये की गयी सारी तयारी साथक लगने लगी।

वह यू मुस्कुरा रही थी कि दरवाजे पर दस्तक हुई। कौन होगा ? एक उबाऊ उत्सकुता के साथ वह दरवाजे की तरफ बढी तो उसे जाली मे से ही दिख गया कि यह उसकी पूव की सहपाठिनी मीता सेन थी, सयोगवश इसका ससुराल यही पडास मे था।

अपने बचपन से ही इसे बच्चो से बहुत प्यार रहा था परन्तु निस्सतान मीता की देवरानिया अपने बच्चो को उसके पास जाने की अनुमति नही देती थी। महीने, दो महीने मे जब उसे खाली वक्त मिलता, वह दीपिका से मिलने व बच्चो को खिलाने आ बैठती थी। दोनो ने सह-

पाठी रहते हुए मुश्किल से ही कभी बात की होगी परन्तु अब वे मिलकर, देश, धर्म, राजनीति, फिल्म, शिशुपालन, भोजन द्वारा चिकित्सा, पौष्टिक आहार, पति-पत्नी संबंध और हजारों विषयों पर वार्तालाप कर लेती थी। यद्यपि संतान लब्धि के बिन्दु पर वह एक पक्की आशापूर्ण निराशावादी थी क्योंकि अनाथालय से बालक गोद लेने के बारे में घंटों विचार विमर्श करती परन्तु उपसंहार रूप में यही कहती कि "अगर मेरे पास आने पर उसे कुछ हो गया तो?" इस 'तो' का उत्तर कौन दे सकता था?

हम सभी मानव अपने आप में असामान्य, अधूरे हैं। एक दूसरे की असामान्यता अधूरापन देख कर हम स्वयं को सामान्य, पूर्ण व बेहतर अनुभव कर लेते हैं।

दीपिका को अच्छा लगा कि वह मीता से बातें करते हुए अपने जाने की तैयारी भी कर लेगी। रोजमर्रा की बातें करते हुए उसने दूध की थैली खोलकर गैस पर चढ़ा दी फिर माधव की पसंद की अपनी दो साड़ियां तथा दो गाउन व अन्य आवश्यक सामान सूटकेस में बच्चों के कपड़ों के ऊपर ही रख लिये।

दीपिका ने मीता को बताया कि माधव के दफ्तर का चपरासी बच्चों को माधव के यहाँ बादीकुई ले गया है लेकिन उनके लिये आवश्यक सामान साथ नहीं ले गया है। इस कारण से तथा अन्य कोई कार्यभार न होने की वजह से अवकाश में वह बादीकुई जा रही है। उसने मीता को बताया कि वहाँ उसके तथा माधव के अतिरिक्त उनके परिजन भी होंगे। उसने पूछा माधव का तथा अन्य सभी का दिल जीतने के लिये वह क्या करे—इस संबंध में वह उसे कुछ मार्गदर्शन दे।

मीता ने कहा, "देख दीपिका, सब से बड़ा धर्म सेवा है। नम्रतापूर्ण व्यवहार एवं सेवा से मानव तो क्या, देवता भी वश में हो जाते हैं। अतः तू तो सब की सेवा करना।"

'कैसे करूं मैं सेवा?"

"देख तू वहां पर खूब मन लगा कर काम करना। हर प्रकार के काम के लिये तैयार रहना। जीजाजी के कपड़े धोना, प्रेस करना और ऑफिस के लिये निकाल दिया करना।"

"वे वह कपडे पहिनेगे ही नही जो मैं निकाल कर रखूगी।"

"ठीक है, तू उनके लिये तौलिया कच्छी, बनियान तो रखना। तू उनके कपडे धाकर प्रस करती रहना। गम पानी से नहाते हो तो वक्त पर बाथरूम में रखना। गम खाना पकाकर देना, हमेशा उनके खाना खाने के बाद ही खाना खाना तथा वह जसा कहे वैसा करना।"

"वहा शानी व सतोप भी उनके साथ हो सकती है। उन्हे देखकर तो मैं अपमानित महसूस करती हू स्वय को, और मेरी कुछ सेवा करने की इच्छा ही नही होती।"

"तू उन पर ध्यान ही मत देना, तू तो अपना कत्तव्य निभाती जाना। जो भी कार्य हो सके वो करती रहना।"

"ठीक है मीता, तेरी सलाह मुझ बहुत ही अच्छी लगी है।"

मदी गैस पर रखा हुआ दूध उबल गया था। दीपिका ने काफी व चीनी मिलाकर केटली में डाल लिया और सुबह बनाई मठरी इत्यादि ठडे नाश्ते के साथ दोनो ने मिलकर कॉफी पी। साथ ही उसने बतन भी धो दिये और फिर कधे पर थैला लटका कर एक हाथ में टोकरी, एक मे सूटकेस लेकर वह घर से निकल पडी कि रास्ते मे से ही बस स्टण्ड के लिये रिक्शा ले लेगी। मीता ने अनेकानेक शुभ कामनाओ के साथ उसे विदा किया। दीपिका ने आभार महसूस किया। लेकिन सोचती रही कहे या नही कि यही आकर लगता है कि रिश्तेदारो से अधिक मित्र महत्वपूण होते हैं क्योकि एक के साथ तो बधन होते हैं तथा एक दूसरे से बहुत सी उम्मीदे तथा उनके पूरा होने पर काई विशेप खुशी नही होती तथा पूरी न होने पर दुख होता है जबकि मित्रता केवल सद्भावना पर ही आधारित होती है तथा बदले मे सद्भावना ही मागती है अत इसमे खुशी प्रदान करने की अधिक क्षमता है लेकिन उसने यह बात कही नही कि कही इससे रिश्तेदारो का अपमान न होता हो।

जब दीपिका बादीकुई पहुँची तो माधव ने ही द्वार खोला, "कैसे आ गयी ?" सपाट चेहरे से पूछा उसने।

"बच्चो का सामान वही रह गया था और म अकेली क्या करती वहा पाच दिन !" दीपिका ने माधव की आखो मे झाका तब तक उसके

चेहरे पर अनायास ही मुस्कान खिल चुकी थी लेकिन माधव ने तो आखें मिलाई नही और एक ओर हट गया। दीपिका ने घटी बजाते वक्त जमीन पर रखा सूटकेस उठाया और उसे पौली मे ही छोड दिया। टोकरी भी वही छोड दी। बैठक मे आकर उसने श्वसुरजी के पैर छुए। उन्होने होठो ही होठो मे क्या बोला, दीपिका समझ नही पायी। अन्दर रसोई मे जा कर दीपिका ने अपनी मासजी के पैर छू लिये तो उन्होने मुक्त हृदय से उसके सौभाग्य की कामना के शब्द बोलते हुए उसे दिल से लगा लिया और दीपिका ध य हो गयी। फिर वह गैस्ट रूम मे गयी। वहा पर सासजी तथा श्वसुरजी के दो पलग लगे हुए थे। यह दीपिका न श्वसुरजी की प्रिय ओढने की चादर से पहिचाना जो एक बिस्तर पर रखी थी। दूसरे बिम्तर पर सासजी की कुछ साडिया तह की हुई तथा कुछ बिना तह को हुई रखी थी। दोनो खाटो के मध्य आडा एक सोफा रखा था। जिस पर शाति देवी बैठी हुई थी। उनके हाथो मे एक टेप रिकाडर था जिस पर वह कोई गाना सुन रही थी। समृद्धि शातिदेवी के पैरो के निकट बैठी हुई थी लेकिन दीपिका को लगा कि वह वहा स्वेच्छा से नही बैठी है उसे किसी तरह बैठाया गया है क्याकि नन्ही पाच वर्षीय समृद्धि का जो चेहरा सदा उत्फुल्लता से दमकता रहता था, उस पर पहली बार ही दीपिका ने ऐसा तनाव देखा था। उधर जमीन पर चार वर्षीय सौहाद लेटा था व शानी का ढाई वर्षीय पुत्र बिहारी उसके पेट पर कूद रहा था। यद्यपि दोनो ही बच्च हस रह थे लेकिन ऐसे रूप मे अपने पुत्र को देखना दीपिका को बिल्कुल भी न रुचा। "अम्मा!" कहकर दोनो बच्चे दीपिका से लिपट गये। दीपिका भी घुटनो के बल बैठ गयी। उसने दोनो बच्चो का माथा चूमा।

"कितनी देर हुई आपको आये?"

"बहुत देर हो गयी।"

"कितने बजे आये थे?"

"हमने वक्त नही देखा। शाम को आये थे।"

शानी टेपरिकॉडर पर सगीत सुनने के साथ ही हाथ मे एक पत्रिका लिये उस पर भी निगाह फेर रही थी। जब दीपिका वहां पहुँची और

उसने एक 'हाय' उसकी ओर उछाल दिया तो शानी ने टेपरिकॉडर और तेज कर दिया।

फिर दीपिका अपनी सासजी के पास रसोई मे चली गई वहा पर वह रोटिया बना रही थी और बेलने मे देर लगती अत बीच-बीच मे गैस मन्दी कर देती। दीपिका पास खडी होकर सेकने लगी तो काम जल्दी-जल्दी होने लगा। सासजी को उसका इस प्रकार सहायता करवाने से सुविधा हुई और उन्होने इस बात को कहा भी तो दीपिका को अच्छा लगा। और उसने सोचा कि वह एक ऐसी परिजन है जो कि पति के विमुख होने पर भी उसे स्नेहाशीष देती है।

रोटिया सेक कर उसने बच्चो से पूछा कि उनके कपड कहा रखे है। बच्चो ने उसे वह अलमारी बता दी जा कि मुख्य शयनकक्ष मे थी। वही पर दीपिका ने अपने साथ लाया हुआ सामान भी रख दिया। बस स्टेण्ड से घर आते वक्त रास्ते मे खरीदे हुए फल सासजी को सम्हलाये।

माधव घर के बाहर कही चले गये थे। दीपिका काकूजी, मम्मी व शानी के साथ अतिथि कक्ष मे बैठी बाते करती रही। जब रात गहराने लगी तब सासजी ने दीपिका से कहा कि वह भी खाना खा ले क्योकि वह तथा श्वसुरजी खा रहे है। दीपिका ने कहा कि वह तो 'इनके' खाने के बाद ही खायेगी। बच्चो को खाना जल्दी ही खिला दिया गया था। वे दीवार से लगे बिस्तर पर सो रह थे। दीपिका ने थोडी दूर लगे खाली बिस्तर को देखा। अगर वहा सोयेगी तो माधव को लगेगा कि वह उसका इन्तजार ही कर रही है और वह इसे उसकी कमजोरी मानेगा और उसे यातना देने के लिये एक मुद्दा बना लेगा। अत वह बालको के साथ दीवार की तरफ सो गयी। ड्राइग रूम मे श्री सीतापति बाबू, माधव व शानी ताश खेल रहे थे। जिनमे से माधव तो बीडी के साथ शराब की घूंटे भी भरते जा रहे थे, काकूजी सिगरेट से धूम्रपान कर रहे थे तथा शातिदेवी बीडी से। क्योकि माधव के साथ-साथ उनका भी मानना था कि बीडी कम नुकसान करती है अत जब अवकाश मे बैठे तब बीडी के बडल लेकर ही बैठते थे। इसी प्रकार रात के ग्यारह, बारह, एक, दो बज गये दोनो जवान व्यक्तियो ने ढाई बजे खाना खाया जो कि शातिदेवी ने गैस जलाकर पुन गर्म किया तथा परोसा। दीपिका ने

तो बारह बजे बाद ही सोच लिया था कि वह अब नही आयेगी, उसने स्वयं को निमंत्रित न किये जाने का बुरा भी नही माना।

होली पूर्व के तीन दिन यूं बीते कि माधव शराब के पेग के साथ आगे सालते लगभग दस बजे। फिर काली काफी पीकर शौचालय जाते। फिर अखबार पढते। उसके बाद धीमी गति मे दाढी बनाते जिस के साथ मे काकूजी से भी बाते करते जाते। फिर स्नान करते और बिना नाश्ता या खाना खाये बारह बजे ऑफिस चले जाते जबकि ड्राइवर पौने दस बजे से ही बाहर गाडी मे इन्तजार कर रहा होता तथा बीच मे अगर ऑफिस से आदमी भी आ जाता कि साहब, भीड बहुत बढ रही है या यह सूचना देने कि राज्य सचिवालय से कमिश्नर साहब निरीक्षण दौरे पर आये है तो माधव उसका मजाक सा बनाते हुए कहते, "ठीक है—ठीक है।" लेकिन अपनी तैयार होने की गति न बढाते—बारह तो बजा ही लेते।

ऑफिस से लौटने पर वह पुन काली कॉफी पीकर एक बार फिर अखबारो के महत्वपूर्ण अशो के विस्तार को पढते हुए महत्वपूर्ण कटिंग निकालने के लिये शयनकक्ष के एकान्त मे ठहरते। इसके बाद ही अखबार रद्दी मे डाले जाते। शाम को फिर वह आगुन्तको से मिलते या शानी के पुत्र बिहारी से खेलते रहते तथा आराम कुर्सी पर बैठकर शराब के छोटे-छोटे घूट लेने लगते तथा काकूजी को सुनाने लगते कि उनका फला परिचित कितना गधा तथा ढिमका अधिकारी कितना नालायक है। काकूजी पूरी तन्मयता से सुनते तथा बीच-बीच मे पुन की घृणा के कुड मे जलती ईर्ष्याग्नि मे आहुति का घी—मखौलपूर्ण जुमले डालते रहते।

जब माधव की आख खुलने का वक्त होता तो दीपिका चौकन्नी हो जाती। जैसे ही वह पानी मे शराब मिला कर गले मे डालकर गटागट पीना शुरू करते वैसे ही वह काफी का पानी उबालने के लिये बिजली की केटली का बटन दबा देती जिसमे उसने साफ पानी आधा घटे पहिल ही भर दिया होता। क्योकि स्टोव पर गर्म किये गये पानी मे से माधव को मिट्टी के तेल की बास आती थी और गैस पर गर्म किये पानी मे से भगौनी की। फिर माधव तेजी से बाथरूम मे जाते और पांच मिनट मे वापस लौटते तब तक पानी उबल चुका होता था। पहिले दिन जब वह काफी ले गई तो उसने उसमे एक चम्मच काफी तथा आधी चम्मच

चीनी डाल दी थी क्योकि यही वह मात्रा थी जो साथ रहते वक्त माधव लिया करते थे। अपने परिजनो से घिरे हुये बैठे थे। एक ओर काकूजी थे दूसरी ओर शान्ति देवी। माधव ने एक घूट भरा और कडककर बोले—"यह कॉफी है ?" उन्होने कप तो नही छोडा लेकिन कॉफी को दीपिका के चेहरे की ओर फेका। दीपिका अपने पीछे बायी ओर बने दरवाजे मे से पीछे की ओर बरामदे मे निकल गई। कॉफी दीवार से फर्श तक बहने लगी। वह फिर से रसोई मे गयी तथा बिजली की केटली मे पानी डाला तथा बटन दबाया। इतने मे कप तथा प्लेट उठाये शाति देवी ने रसोई मे प्रवेश किया—'हटो, म बनाती हूँ।"

"नही, मैं बनाऊँगी।"

"तुम्हे आती नही है बनानी।"

"में सीख लूगी।"

"नही आयेगी तुम्हे।"

"यह सोचना तुम्हारी भूल है।"

"अच्छा, मेरी गलती निकालती है, बेशऊर बेहूदी औरत।"

"अगर सामन वाला गाली न ले तो पता है वह किसे लगती हैं ?"

दीपिका ने व्यग्यपूण दृष्टि से शातिदेवी को देख कर मुस्कुराते हुए एक झटके से सास छोड दी।

"मैं अपने भैया की पसद जानती हूँ।"

"तो ?"

"मैं बनाऊँगी।"

"नही, यह तो मेरा विशेषाधिकार है कि अपने पति को चाय कॉफी बनाकर पिलाऊँ। मैं ही बनाऊँगी।"

केटली मे चाय का पानी खौल गया था ।

दीपिका ने एक ट्रे मे "शुगर पॉट," कॉफी का डिब्बा तथा कप व गम पानी रखे और मेज पर ले जा कर रख लिये । माधव से पूछकर चौथाई चम्मच चीनी दो चम्मच कॉफी डालकर पानी भरकर मिलाकर कप दे दिया । माधव ने होठों से लगाया तो दीपिका को लगा कि अब भी उसके चेहरे पर मनपसन्द स्वाद की सतुष्टि नही बल्कि तल्खी ही तल्खी है । माधव जब तैयार होने चले गये तब दीपिका ने एक फटे साफ गीले कपडे से मेज, फश पर पड धब्बो को रगड रगड कर साफ किया फिर दीवार पर पडे कॉफी के धब्बे छुडाने की भी काफी काशिश की । कपडा धो-धो कर कई बार रगडा । धब्बा हल्का तो पड गया लेकिन गया नही ।

माधव के दफ्तर जाने तक दीपिका कुछ चाकन्नी रहती । बिस्तर उठाती, घर ठीक करती । सब्जी काटती, दाल बीन लेती, कुरसी पर बठकर अखबार भी पढ लती लकिन कान लगे रहते माधव की ओर । अब वह क्या कर रहे है, उन्हे क्या चाहिये पर ध्यान केन्द्रित रहता । जबकि वह य दर्शित करते जैसे उसे जानते ही नही । एक बार जब दीपिका उनका तौलिया आदि रखने के लिये बाथरूम के अन्दर गयी और वहा रखा शेप सामान भी व्यवस्थित करने लगी और माधव बाथरूम खाली समझ कर अदर घुस आये थे तो झट से बाहर निकल आये जसे दीपिका उनके लिये कोई अपरिचिता हो ।

जब माधव दफ्तर चले जाते तो दीपिका अपनी सास जी के पास जाकर बैठती । यह एक स्नेहशील वृद्ध महिला थी जिन्होने अपनी सारी जिन्दगी अपमानित होते हुए तथा स्नेह का प्रतिदान प्राप्त किये बिना बिताई थी । दीपिका उनकी गोद मे अपना सिर रख देती तथा कहती "मम्मी आप मुझे बहुत अच्छी लगती है ।" वह भी स्नेहपूर्ण शब्द कहती । दीपिका पूछती, "मम्मी, आपके लिये चाय बना लाऊँ ?"

"नही बिटिया, अभी नही । आपके काकूजी जब पियेंगे तभी मैं भी पी लूगी ।" वह यही भाव हमेशा व्यक्त करती ।

"ठीक है मम्मी, आप कहेगी तभी बना दूगी ।" फिर वह दीन दुनियां, राजनीति, अपने घर परिवार का इतिहास सभी विपयो पर खूब कर बातें करती रहती और कभी कभी हँसती भी ।

एक घट बाद जब काकूजी चाय की फरमाइश करते तो दीपिका सब से पूछ लेती तथा सभी के लिये बनाती। स्वय के लिये भी बनाती। शातिदेवी टेपरिकार्डर पर गजले सुनती अधसोयी अधजागी लेटी रहती और अगर बीच मे उनका पुत्र आकर उन्हे कुछ परेशान करता, कुछ कहना चाहता तो उसे धौल धप्प पड जाती। दीपिका मम्मी के साथ मिलकर ही खाना बनाती वह चावल बीन देती आटा माड देती लेकिन छौकने बघारने व पकाने के लिये मम्मी का ही मुँह देखती। मम्मी भी बडी खुशी से रसोई मे आती, वे गर्व का अनुभव करती कि उन्हे एक विनम्र सहायिका मिल गयी है। साथ ही वे दीपिका को अपने नये पुराने अनुभव भी सुनाती जाती जो दीपिका बडी रुचि के साथ सुन रही होती। तभी श्वसुर जी की तेज आवाज आती, "क्यो! बऊ को बोर कर के क्यो उसका जीना दूभर कर रही हो?"

"काकूजी आप तो कमाल करते है! इतनी रोचक बाते सुना रही थी मम्मी तो!"

"ज्यादा बोलना अच्छा नही होता। उससे कहो धीरे बोले।"

पता नही उनकी आवाज मे तानाशाही का रवया दीपिका को अधिक क्षुब्ध करता था या उनकी आवाज का विशाल घनत्व या उनकी कही हुई बात लेकिन दीपिका को चलती बात का काटा जाना न सिफ मम्मी का लेकिन अपना भी अपमान लगता। लेकिन मम्मी का चेहरा तो ऐसा रुआसा हो जाता कि उसे लगता कि वे अभी रो दगी। मम्मी को अपने सम्मान की रक्षा के लिये थोडा लडना चाहिये दीपिका सोचती लेकिन उन्हे न जाने क्या बात आत्मरक्षाथ प्रतिरोध से रोक लेती थी।

होली के दिन सुवह माधव जल्दी ही उठ गये थे। उनके मित्र डा राठौर, सहायक जिलाधीश भरत मीणा आदि उनसे होली खेलने जब आये तो वह रसोई के साथ लगे स्टोर मे घुस गये थे तथा साथ ही शाति देवी से उन्होने बाहर ताला लगवा लिया था। आगन्तुको से कहा गया कि वह होली खेलना नही चाहते अत कही चले गये हैं। आधा घटा उन्हे ढूढ कर जब ये आगन्तुक चले गये तो माधव को स्टोर से बाहर निकाला गया। माधव पसीनो से लथपथ हो चुका था—शयनकक्ष मे फुलस्पीड पर पखा खोलकर खडा हो गया। हसता हुआ माधव कितना प्यारा

लगा दीपिका को। उसे लगा उसके दिल की कली कली खिल गयी। इतने दिनो का तनाव अपमान सब भूल गयी वह। मम्मी से कहा, 'ये बिल्कुल होली नही खेलेंगे मम्मी ?"

"जा तू थोडा रग लगा दे।" उन्होने कहा।

दीपिका ने गुलाल भरी प्लेट उठाई और दोनों हाथ भर कर माधव के सामने जाकर सलज्ज मुस्कान से कहा, "लगा दूँ ?" माधव ने जसे कोई खूनी पजे देख लिये हो यूँ बचते हुए बोले, "नही !" पर दीपिका ने एक लाल टीका लगा ही दिया।

दरवाजे के सामने से होकर विहारी को गोद मे लिये शानी उधर से गुजरी तो माधव जैसे आतकित होकर हाथ मे छोटा शीशा ले कर उसे मिटाने लगे तो दीपिका ने इस बार माधव का पूरा चेहरा गुलाल रजित कर दिया। उन्होने तौलिये का उपयोग किया तो कुछ रूआसी सी होकर बोली, "तुम उस दिन का रोमाच भूल गये ? कितनी गुलाल लगायी थी तुमने मेरे ?" यह एक अजीब सी स्थिति थी जिसमे स्त्री पुरुष को गुलाल लगाने के लिये थामने की कोशिश कर रही थी और वह स्वय को बचाते हुए दब स्वर मे कह रहा था, "अभी चिल्लाऊगा।"

तभी बाहर से घटी बजी। दीपिका ने खिडकी खोल कर देखा, दो डाकिये थे। जो पूव मे काकूजी के साथ काम कर चुके थे। उनके चेहरो पर गुलाल लगा हुआ था और कपडे साफ थे। दीपिका ने माधव की ओर देखा। आखिर अतिम निणय तो वही लेगे कि उनको अदर लेना है या नही। माधव ने काकूजी को आवाज लगा दी थी।

"वाह ! बडे अच्छे मौके पर आये हो !" कह कर काकूजी ने उन दोनो का स्वागत किया। काकूजी ने दोनो को चेहरो पर गुलाल लगायी व उनसे लगवायी, "नही तो रिटायरमेंट के बाद कौन कमचारी आते हैं ! आज तो आपको खाना खाकर ही जाना होगा। आपकी भाभी ने बिल्कुल तैयार कर रखा है," काकूजी जोर-जोर से बोल रहे थे। और काकूजी व मम्मी मेहमानो की खातिर मे लग गये।

शानी इन डाकियो की, छुट्टी के दिन भी लायी हुई डाक लेकर अदर शयन कक्ष मे प्रविष्ट हुई। उसने माधव के नाम आये लिफाफे को खोलकर एक काड बाहर निकाला।

"कितना सुन्दर कार्ड है !" दीपिका के मुह से निकला। बाहरी पन्ने पर होली के छिटके हुए रगो का प्रिन्ट था।

"ये लो भैया, आपकी सतोष को आपकी याद आ रही है," कुर्सी पर बैठे अपने सम्पूर्ण चेहरे पर गहरा तनाव झेलने के चिह्न दिखाते हुए माधव से शानी ने कहा।

माधव ने काड देखकर कहा, "दीदी ने भेजा है यह तो !"

"हाँ, सबसे प्यारे भाई को सबसे प्यारी बहिन ने भेजा है, क्योकि वहा तो आपको बहिन का प्यार भी मिल जायेगा और पत्नी का भी !"

"शानी !" चीखते हुए माधव खडे हो गये।

"म आपकी सब चालबाजी जान गयी हूँ भैया। मेरे पति तो घर से बाहर जाकर ही रगरेलिया मनाते है पर आप तो पूरे गोपियो से घिरे कृष्ण कन्हैया हो रहे हो !"

"यहा दीपिका है, और आपके बच्चे है। वहा दीदी है, और सतोष है, शानी को तो आपने यू ही झूठे वादे करके उल्लू बनाया कि अब मेरे जीवन का लक्ष्य बिहारी की देखरेख और शानी के प्रति जिन्दगी के अन्याय की क्षतिपूर्ति है।"

माधव ने शानी की बाह पकड कर उसे खडी से नीचे बिठा दिया और अपनी आवाज को सायास दबाते हुए कहा, "शानी ! तुम मुझ पर ऐसे इल्जाम नही लगा सकती। म तो अपने कानो को हाथ लगा रहा था कि इन लोगो को बुलाकर मेरी बडी गलती हो गयी है लेकिन कल तो इन्हे चले ही जाना है। इन बच्चो को भी मने खासकर बिहारी क साथ खेलने के लिये बुलाया था। म क्या करू अगर इनके पीछे-पीछे "

"मुझसे पूछते हो क्या करू ? अरे दुनिया मे आग लगा दो आग !"

दीपिका जो अभी तक चुपचाप खडी सब बातें सुन रही थी, बोली, "दुनिया मे तुम भी तो शामिल हो—तुम तक नही पहुँचगी आग ?"

शानी ने आखें निकालकर मुंह बिचका दिया और माधव से बोली, "ऐसे ही सवाल जवाबो के लिये आपन मुझसे वे वादे किये थे ?"

माधव उत्तेजना से मानो काँप रहे थे। बोले, "मैंने जो कहा था वह मुझे अच्छी तरह याद है। मैंने कहा था कि "जीवन वक्त है। जीवन सघप है जैसी परिभापाओ को न मानते हुए म तो यह मानता हूँ कि जीवन एक प्रयोग है।

"इसमे पहिले मैंने एक लडकी से शादी करनी चाही न कर सका। दूसरी लडकी से कर ली और न जाने क्यू गलती से बच्चे हो गये।

"मने महसूस किया कि बहिन का स्थान पत्नी से ऊँचा है और तुम्हारे सुखी जीवन के लिये, कई लडके देखे परन्तु तुम मानी नही।

"मैंने दुखी सतोप व असहाय मधुसूदन को सहारा देने की योजना बनायी जिसमे इस गधी ने पलीता लगा दिया।

"तुमने अपनी सहेली रचना वर्मा के प्रति प्यार व सम्मान के खातिर उसके कसर ग्रस्त होने पर उसकी जिम्मेदारी सभालने का वादा किया कि "हाँ, मैं उस आदमी से शादी करूगी बच्चे की खातिर," जिसके बारे मे मालूम था कि वह एक अति चालाक आदमी है। तुमने रचना के बेटे को पालन की खातिर अपने जीवन की सबसे बडी कुर्बानी दी मैं इस बात का अपने पूरे दिल, दिमाग की निष्ठाओ के साथ सराहना करता हूँ और इसीलिये मैंने निश्चय किया और तुमसे वादा किया कि बिहारी की उचित परवरिश के लिये मुझसे जो कुछ बन पडेगा, करूगा और इसी सन्दभ मे वादा किया था कि म व्यक्तिगत सुखो के लिये दीपिका और सन्तोप के पीछे बिल्कुल नही भागूगा।"

ये सभी बाते दीपिका चकित होकर सुन रही थी वह उनके बात करने के तरीके से मानो हतप्रभ होती जा रही थी लेकिन ये बाते इतनी जल्दी-जल्दी व अधिकृत लहजे मे बोली जा रही थी कि बाधा डालने के बारे मे सोच ही नही सकी। वह उनकी विचार प्रक्रिया तथा लिये गये निणयो के बारे मे भी जानना चाहती थी। शानी से माधव कह रहे थे, "मैंने तुमसे बारम्बार शादी करने को कहा और तुम इन्कार करती रही। तुम सोचती थी कि विवाह करने मे कोई सुख नही है और तुम सही ही सोचती थी। लेकिन जब तुम्हारी सखी रचना वर्मा कैंसर रोग से ग्रस्त होकर बिस्तर से लग गयी और जान गयी कि उसका अन्त समय निकट है तो उसने अपने दो वर्षीय पुत्र बिहारी की प्रेमपूण देखभाल के लिये हाथ

जोड कर निवेदन किया था, "तू जानती ही है शानी कि इसके पिता कितने रसिक आदमी है– वैसे भी पुरुष, सामान्य पुरुष भी एक बालक की देखभाल ठीक तरह से नही कर पाते। यदि मेरा पुत्र प्यार की कमी के कारण भटक कर गलत रास्ते पर चला गया तो मेरी आत्मा को कभी चैन नही मिलेगा। तू तो अच्छी तरह जानती है कि प्यार बच्चे के लिये खुराक की तरह जरूरी है और इसके बिना बालक गलत रास्ते पर चले जाते है। यदि मुझे बिहारी के बारे मे आश्वासन नही मिलेगा तो मै चैन से मर भी नही सकती।

"मै अपने रोग से पीडित हूँ और उसकी तकलीफ सहन करना ही मुझे बहुत भारी पड रहा है लेकिन यदि तू बिहारी की जिम्मेदारी ले ले तो म हँसते हँसते सब तकलीफ सहन कर लूगी।" रचना की ये बाते सुनकर और उसका दद भरा चहरा देखकर म भी उसकी बात से सहमत हो गया था। और जब तुमने मुझसे पूछा कि क्या तुम्हे उसके पति से शादी कर लेनी चाहिये तो मैंने भी तुम्हे यही राय दी थी कि अवश्य कर लेनी चाहिये। यद्यपि मेंने तुम्हारा परिचय उस परिवार से कराया तब मै रचना के बडे भाई प्रशात से तुम्हारे विवाह की सोच रहा था। मैं तो जिन्दगी की साथकता यही मानता हूँ कि किसी का दद बाट लिया जाये।

"तुमने देखा ही होगा कि दीदी उस वक्त कितनी परेशान थी जबकि उनके पति ने उन्हे जला कर छोड दिया था। तब मैंने उन्हे सहारा दिया और म इस काम को करके कभी नही पछताया।"

दीपिका चाहती थी वह बोले कि दूसरो को सहारा देना अच्छा है लेकिन अपनो को निस्सहाय न छोड देना तो उससे भी ज्यादा महत्वपूण है। लेकिन बात चीत की गति इतनी तेजी से चल रही थी कि वह न बोल सकी।

"तुम दीपिका के बारे मे सोचती हो कि मै वहाँ चला जाऊँगा। क्या मूर्खतापूण विचार आते है तुम्ह भी! जिस शारीरिक आकषण के कारण शादी की थी वह तो रहा नही, दूसरे जो औरत इतनी पिटती रही अपने भाई से, उसके साथ तो मैं कोई गौरव की अनुभूति ही नही करता। जब तुम कहती हो कि मैं उसके पल्लू मे छिपने चला जाऊँगा

तो मुझे बडी हँसी आती है। मुझे तो यही दुख है कि वह मेरे घर के सामान—पलग बतन आदि पर अपना कब्जा किये बैठी है। तुम कहो तो यह सामान किसी दिन वहा से उठवा ही लाऊँ।

"मुझे तरस आता है तो सतोप पर जो कि लाड प्यार से पाली गई थी कि प्रेम से भरपूर एक जीवन जायेगी। दीदी उसकी शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक यहा तक कि सामाजिक आवश्यकताओ की पूर्ति भी तत्काल करती थी। कहती थी यदि यह तत्कालिकता मैं दिखाऊँगी तो आगे के जीवन मे भी इसे मिलती रहेगी—वह सतोप ! वह एक जोगन जैसा जीवन जीने पर बाध्य है और एक वक्त आया जब मैंने उसे सहारा देने की योजना बनाई। पर इस दीपिका ने सब गुड गोबर कर दी और वह भी इस तरह कि सतोप मुझसे मिलना ही नही चाहती। दीदी मुझ बुलाती है और म जाता हूँ तो वह बात तक नही करती इसीलिये मेरी वहा जाने की इच्छा भी नहीं होती। दीदी का काड आया है और तुम मुझ पर सतोप के नाम से व्यग्य कर रही हो, यह बात तुम्हे ठीक लगती है ता कर लो भई ! लेकिन वास्तव मे अगर मुझे किसी की चिन्ता है तो मेरी प्यारी बहन शानी वो तेरी है या फिर बिहारी की है।

"यदि वक्त अनुकूल रहा होता तो तुम और हम साथ-साथ ही हँसते खेलते बड होते, मुझे वह वक्त याद आता है जब तुम छोटी सी थी तो अनिल और मीना तुम्हे उकसाते थे कि "माधव को मारो।" तुमने एक दो बार ऐसा किया भी लेकिन वह अनजाने मे था। फिर तो तुम उनके आदेश के एवज मे उन्हे ही मार दती और कहती, "ये तो मेरा अच्छा भाई है।" माता-पिता के लडते रहने के कारण तनावयुक्त बने वातावरण मे तुम्हारी उपस्थिति ने ही मुझे बाधे रखा था।"

"मधुसूदन की सालगिरह क्या आपके गये बिना नही मन पाती ?"

"वो ता मेरे जयपुर दौरे के दौरान मुझ अचानक याद आ गया कि उसकी सालगिरह है अत मैं मिलने चला गया। मेरे मन मे कोई खोट नही वरना "

"वरना क्या ?"

"वरना वहा की मिठाई यहा तुम्हे लाकर खिलाने पर क्या तुमने मुझे बाध्य किया था ? मैंने अपनी निष्ठा तुम्हे देने का वायदा किया है मेरा हिलना डुलना तो नही रोक लोगी तुम ?"

"पिछले माह दीपिका के यहा भी तो हिलने डुलने गये थे आप। मेरे पास सारी खबर रहती है।"

"मै मैं केवल सामाजिक सम्बन्ध के कारण गया था, जैसे ये डाकिये यहा आये है।"

"यूँ ही जाते जाते वही ठहरने लगोगे और फिर निष्ठाये बदलते क्या देर लगेगी आपको!"

"इतनी बात स्पष्ट करने के बाद भी तुम्हारा व्यग्य करना शोभा नही देता," माधव बोले, "देखो, आज मैं इस औरत की उपस्थिति मे तेरे से पुन अपना वादा दुहराता हूँ कि अपना समय, धन व शक्तिया बालक विहारी के कल्याण के लिये ही लगाऊँगा क्योकि वह वास्तव मे एक अनाथ बालक है और इसके उचित विकास के लिये इसे हमारे पूरे सहारे की आवश्यकता है। इस पावन उद्देश्य के लिय मैं हर व्यक्तिगत खुशी को तिलाजलि दे दूगा।"

दीपिका के दिल पर भाई बहिन की वार्तालाप हथोडे की सी चोटे किये दे रहा था, 'काश! माधव ने विवाह बाद की वे सीखे सुनी होती!'

शादी के वक्त रात को तो वे सस्कृत मे होने के कारण समझ न पाये होगे और सुबह के समय वह एक फिल्म देखने चले गये थे।

उसका गला सूख रहा था। उसने बडी मुश्किल से थूक निगला और बोलने का प्रयास किया तो उसे अपनी आवाज जो सुनायी दी, वह उसकी स्वय की न हो कर किसी और की सी लगी। "देखो ऐसा है माधव!"

"कैसा क्या है, किसी और को दिखाना। माधव तुम्हारे शिकजे से निकल चुका है।" यह कह कर माधव तो उठकर खडे हुए और बाहर चले गये। तब दीपिका ने शानी से कहा, "तो उनका जीवन दुखमय बनाने की पूरी तैयारी कर ली है तुमने ?"

"दुसमय कब था और किसने बनाया यह तो तुम ही बेहतर जानती होगी। विहारी ने तो उन्हे जीवन मे तपस्या करने का एक उद्देश्य दिया है।" दीपिका उन दोनो की बातो को चुपचाप इसलिये सुन रही थी कि उसे मालूम हो जाये कि वे किस तरह सोचते है व उनकी योजनायें क्या है। वह कितनी गलत बात कह रहे थे, तक व बहस द्वारा वह इसे सिद्ध कर सकती थी कि व्यक्ति का प्रथम कतव्य अपने बच्चो के प्रति होता है। विहारी भी ठीक है, उसे अपने हिस्से का प्यार मिल जायेगा। लेकिन हम तीनो को हमारे हक से वचित करने की स्वतत्रता तो आपको कोई नही देता न समाज, न कानून।

परन्तु माधव तो घर के बाहर चले गये थे, शायद हाली खेलने। और शानी ने वहाँ से उठकर अतिथिकक्ष म जाकर टेपरिकाडर पर दुख भरे गीत लगाकर आवाज का घनत्व बढा दिया था। दीपिका उठी। उसने रसोईघर मे जाकर थोडा पानी पिया और माधव को कसे समझायेगी, क्या कहेगी और कैसे, विचारो के ताने बाने वह लेट कर बुनने लगी। उसके मन मे विचार आया, वह काकूजी से सहायता मागे इन दोनो को स्वस्थ व सही जीवन की राह पर चलने के लिये प्रेरित करने के लिये। परन्तु उसने जो उनकी ओर देखा और उनकी नजरे झुकी व टूटी हुई पायी तो उसे लगा कि ये दोनो माधव व शानी की योजनाये जानते है तथा उन्हे इन पर कोई आपत्ति नही है। ठीक है, वह स्वय ही अपनी बात माधव का समझाकर मनवायेगी, लेकिन क्यूकर, इस बारे मे उसे तसल्ली से विचार करना होगा। और यही विचार करने के लिये वह शयनकक्ष बद कर लेट गयी। उसका सिर घूम रहा था।

तेज टेपरिकाडर के अतिरिक्त पूजा गृह से काकूजी की दबे स्वर मे गाने की आवाज आ रही थी,

"कह तुम्हे सबहिं ज्ञान गुण सागर

"

दीपिका को लगा इनके गाने का तरीका ऐसा है कि यदि किसी को मालूम न हो कि यह हनुमान चालीसा है तो लगे कि वह किसी के लिये गाली व बददुआये बडबडा रहे ह। फिर उनकी घटी टनटना उठी और

आवाज आयी, "क्या देरदार है खाने मे ?" तो दीपिका कूदकर नही उठी वरन् वह सास जी की उठकर फुलके सेकने की आवाजे सुनती रही। यद्यपि टेपरिकार्डर एक सिनेमा हाल की जितनी तेज आवाज मे बज रहा था।

दोपहर का भोजन केवल श्वसुर जी, मम्मी तथा बच्चो ने खाया। वह लघुशका के लिये शौचालय मे गयी तो बाथरूम मे से शातिदेवी की आवाज आयी, "पानी अच्छी तरह से डाल देना भई।" पानी का मग लेने के लिये दीपिका बाथरूम मे गयी तो शातिदेवी को उसने देखा—बाथरूम मे लेटी हुई हैं, चकित होकर सोचा, 'तो तेज आवाज मे गाने, यही से सुन रही हैं!' बोली, "चलो उठो आप भी खाना खा लो।"

"मुझे भूख नही है," शानी बोली,

"ये कहा गये हैं ?"

"कौन ?"

"माधव।" शायद दीपिका मुस्कुरा पडी थी।

"होली खेलने गये है।" शातिदेवी ने भी मुस्कान के साथ कहा।

"आप यहा क्यो लेटी हो ?"

"बाकी सब जगह गर्मी है।"

जब दीपिका बरतन उठाने पहुँची तो मम्मी बोली, "अब तू खा ले दीपिका, मैं सेंक दू तेरे लिये फुलके।"

"मम्मी प्लीज, मै उनके खाने के बाद ही खाऊँगी, शानी ने भी तो कुछ नही खाया है।"

"अब वह तो मनमानी करेगी उसे कौन समझाये! जिसके जो जी मे आये करो।" दीपिका शयन कक्ष मे जाकर दोनो बिस्तर मिलाकर तथा दोनो बालको को आजू बाजू मे लेकर लेट गयी। बच्चे हौले-हौले बातें करते रहे—गाते रहे—इसी माहौल मे वह न जाने कब सो गयी। उसकी नीद खुली माधव के कमरे मे आने से। वह अपने कपड़ निकाल

रहा था। ऊपर से नीचे तक काले—जामुनी लाल रग से पुता था व उसने बहुत पी रखी थी—अपना सफेद कुर्त्ता, पाजामा वह सीधे हाथ की दो अगुलियो से पकडकर ले गया, दीपिका हिली भी नही। माधव ने उसे देखकर भी नही देखा, दीपिका सोचती रही क्या वह इस बात का बुरा माने कि उमसे गुलाल का एक टीका तक नही लगवाया और बाहर से पूरे पक्के रगा से पुत कर आये है। मम्मी ने कहा, "जल्दी नहा ले माधव, खाना तैयार है।"

"खाने को मारो गोली, पहिले मेर रग उतारने है।"

मम्मी माधव को मिट्टी का तेल, तारपीन का तेल और न जाने क्या कुछ देती रही।

बाथरूम मे शानी सो रही थी अत माधव ने चौक मे लगे नल पर ये चीजे ले जा कर रख ली और वही नहा लिये और शानी के साथ खाना खाकर काकूजी के बिस्तर पर बिहारी की बगल मे सो गये। मम्मी मिठाई की लेटे लिये सबके आगे पीछे घूमती रही।

शाम को सोकर उठने पर दीपिका कुछ हल्कापन महसूस कर रही थी। आराम की नीद से उसे थोडी ताजगी मिल गयी थी। और वह सोच रही थी कि माधव को अपने साथ गुजरे अच्छे वक्त की याद दिला कर उसे अपनी ओर मिला लेगी। लेकिन सेवा का तो सर्वोपरि स्थान है।

वह बाथरूम मे गयी तो उसने देखा कपडा के ढेर लगे है। श्वसुरजी, सासजी, शाति देवी, तीनो बच्चो के कपडे तथा उसके स्वय के कपडे—सभी के दो-दो तीन-तीन जोडी थे। बच्चो के कपडे यू तो वह रोज उन्हे नहलाने के बाद धो देती थी लेकिन आज जब वे होली खेलकर नहाये तब वह सोई हुई थी। उसने माधव के होली के कपडे तो एक ओर रख दिये और सभी के रोजमर्रा के कपडो के चार हिस्से कर लिये—सफद कपडे छोटे, सफेद कपडे बडे, रगीन कपडे छोटे, रगीन कपडे बडे तथा मोजे व रुमालो का पाचवा ढेर बना लिया। फिर उसने इसी क्रम से इन पाचो ढेरो मे जो साबुन लगाया तो उसे आश्चय हुआ कि काफी जल्दी लग गया। वह खुश भी हो रही थी कि किसी भी बहाने सही उसे उपवास करना तो आया नही तो वह सामान्य रूप से जब खाना खा

लेती थी तो स्वय को कोसती ही रहती थी कि मोटी हो रही है—कपडे धोने मे जो पेट पर दवाव पड रहा था उसे वह अपने शरीर के उचित रखाव मे सहायक मान प्रसन्न हा रही थी। शानी उधर वेसिन पर विहारी का मुंह धोने आयी तो वह भी शायद खुश हुई कि उसके व विहारी के कपड धुल रहे थे लेकिन आकर बोली, "टकी का पानी खत्म न हो जाये। नही तो काकूजी बहुत बिगडेगे। शौचालय के लिये भी दिक्कत हो जायेगी।"

दीपिका टकी मे पानी देखने के लिये ऊपर गयी व शानी को उसने मन ही मन धन्यवाद दिया। अगर सारे कपड़े रगड कर खगाल लिये जाते तो शौचालय के लिये पानी नही वचता और वही एक तकलीफ नही होती। दूसरी होती कि काकूजी न जाने कितना चिल्लाते और दीपिका को बुरा लगता। वह नीचे आकर शानी को धन्यवाद देना चाहती थी कि उसने वक्त पर चेता दिया। लेकिन वह धन्यवाद सुनने को उपलब्ध न थी।

अब क्या करे? दीपिका सीढी मे बैठ गयी और उसने सौहाद से कहा कि वह पापा को बुला कर लाये। माधव के आने पर दीपिका ने उसे पूरी स्थिति से अवगत कराया तथा अन्त मे कहा कि यदि कोई ऐतराज योग्य बात न हो तो वह ये कपडे उसके मित्र व पडौसी डॉ राठौर के यहा धो लाये। क्योकि आजकल पानी कम दबाव से आता था और माधव घर मे अधिक व्यक्ति हो जाने के कारण वहा स्नान करने जाते थे—डॉ राठौर के बच्चे अपने ननिहाल गये हुए थे तथा घर पर अभी पति पत्नी दो ही व्यक्ति थे।

माधव ने दीपिका को अनुमति दे दी। समृद्धि बोली, "मैं भी चलूगी," तथा सौहाद बोला "मैं भी!"

एक चपरासी साबुन लगे कपडो की दो बाल्टिया डॉ राठौर के घर रख आया। पीछे-पीछे दीपिका बच्चो के साथ पहुँच गयी। वहा पर उस का हार्दिक स्वागत हुआ जा उपेक्षा झेल रही दीपिका को अप्रत्याशित लगा। डॉ राठौर तो होली खेलने के बाद थककर सो रहे थे। श्रीमती राठौर ने एक मीठी मुस्कान के साथ दोस्ताना ढग से बाते की, "चलो हम आपके किसी काम तो आये।" सबसे पहले तो दीपिका न एक ब्रश

रात के करीब नौ बजे का वक्त था। दीपिका दोनो बच्चो के हाथ थामे हुए घर की ओर चल दी। चाद अभी निकला नही था और बादल कुछ ऐसे छाये हुए थे कि तारे भी दिखाई न देते थे, सब ओर घोर अधकार था। दीपिका के लिये यह जगली वनस्पतियो से घिरा पगडडी का रास्ता अनजान था। दीपिका सोचने लगी ऐसे मे अगर कोई जहरीला साप आ जाये और उनमे से किसी को काट ले तो? यह सोच कर वह सिहर गयी। तभी एक व्यक्ति एक टार्च लेकर पीछे बायी ओर से पगडडी पर आता हुआ दिखा। दीपिका को जैसे वह कोई देवदूत लगा। दीपिका ने विनीतभाव से कहा। "भैया, आप जरा हमारे आगे या पीछे चले चलिये ताकि हम भी रास्ता देख सकें।"

उस आदमी ने कहा, "बहिन आप यह टॉर्च ले लीजिये, मेरा तो यह रोज का रास्ता है।"

"आप भी भैया रोशनी देखकर ही चलिये। कोई साप आदि निकल आया तो?"

"हा, साप इस इलाके मे काफी निकलते हैं, इसी लिये मैं टॉर्च लाया था। आप इसे थाम लीजिये—आपके साथ बच्चे है मैं आपके आगे चलता हूँ।"

वह आदमी दीपिका को एक तरह से जबरदस्ती टार्च थमा कर आगे-आगे चलने लगा "भैया आपका नाम क्या है?"

"मेरा नाम प्रकाश है।"

"प्रकाश भैया, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद है कि आपने हमे अँधेरे मे रोशनी दी है जबकि आप हमे जानते तक नही थे।"

"आप बाहर से आयी हैं?"

"हाँ भैया।"

"कहाँ ठहरी है?"

"भैया यह जो अकेला क्वाटर बना हुआ है हम इसमे आये है।"

"मेहमान हैं आप?"

"हाँ भया, मेहमान ही समझ लो।"

मामने सडक आ गयी थी जिस पर रोड लाइट लगी थी। यद्यपि बीच-बीच के लट्टू जल रहे थे पर वोल्टज कम होने के कारण रोशनी काफी मद्धिम थी। दीपिका ने प्रकाश को टॉर्च लौटानी चाही तो वह पकडने का तैयार न हो। "दीदी, फिर आपके काम आ जायेगी, आप रख लीजिये।"

"नही भैया, आगे जब जरूरत पडेगी, देखी जायेगी।" बडी मुश्किल से प्रकाश ने अपनी टॉर्च वापस अपने हाथ मे पकडी।

अब पगडडी के सडक से मिलने के जिस जोड पर दीपिका खडी थी वहा से दायी ओर कुछ चढाई पर चढने के बाद माधव के घर का मुख्य द्वार आता था। और मकान पर जाने के लिये यदि दाहिनी ओर न चढा जाये तो सडक पार शिव मन्दिर आगे की ओर था।

बचपन से अपने चारो ओर मन्दिर ही मन्दिर देखे थे लेकिन वह यह न समझ पाती थी कि लोग वहा क्यो जाते हैं। उसके दिल मे तो निश्छल शाति समायी रहती थी। उसकी धोबिन जिसने हाल ही मदिर जाना शुरू किया था, जाते वक्त बडी गर्वित दिखायी देती थी और बार बार इस नियम का बखान करती रहती थी तो एक दिन दीपिका ने उससे पूछा था, 'क्यो जाती हो आप रोजाना मन्दिर?" तो उसने उत्तर दिया था "बहुत शाति मिलती है वहा।" तब दीपिका को इस बात के पीछे यह बात छुपी हुई दिखाई दी थी कि वह एक अनुसूचित जनजाति की सदस्या होने के कारण इस बात मे गर्व महसूस कर लेती होगी कि उस स्थान पर जाती है जहा कि सवर्ण लोग जाते है तथा उसे ही शाति मान बैठी है।

लेकिन धोबिन विमला का मूल उत्तर वह भूली नही थी। उसने बच्चो से कहा, "अपन मदिर जाकर आते हैं।" दीपिका ने मदिर की ओर जाने के लिये सडक पार की ही थी कि उसके कधे पर एक वार हुआ। उछल कर पीछे मुड गयी वह। सामने माधव खड़े थे। "कहा जा रही थी?"

"हम मदिर जा रहे है।"

"क्या करेगी वहा ?"

"वहा पर कहते हैं मन को शाति मिलती है।"

"शाति नही क्या तेरे मन मे ?"

"यू तो शाति ही है लेकिन आश्चर्य है कि मैं जिनकी सेवा मे ही लगी रहती हूँ उन्हे मेरी तरफ एक नजर देखना भी गवारा नही होता।"

"सब जानता हूँ तेरे नाटक! चल अन्दर!" कडककर बोले माधव और छडी हिलाकर यू धमकाने लगे कि अभी मारूगा।

"नाटक क्या है ?" दीपिका ने साश्चय पूछा।

"तू कलैक्टर के यहा जा रही है और उससे मेरी शिकायत करेगी।"

'नही, अभी तो मैं कलैक्टर साहब के यहा नही जा रही लेकिन पहिले आपको समझाऊँगी और न माने तो जाऊँगी एक दिन और उनसे कहूँगी आप हमारे साथ कितना दुर्व्यवहार करते हो। हमारा ध्यान करते रखते नही—न आर्थिक सहयोग देते और दूसरी औरतो के चक्कर मे रहते हो! आपके पास शानी बिहारी तथा सतोष मधुसूदन के दो जोडे है जो आपको अपनी पत्नी व बच्चो से ज्यादा प्यारे है।"

"तू अन्दर चल!" जिस बेदर्दी से माधव उसकी बाह पकड कर घसीट रहे थे उससे दीपिका को लगा कि यह तो अन्दर जाकर उसकी अच्छी पिटाई लगायेगे।

"प्लीज मुझे मदिर जाकर आने दो!" चीख-चीख कर कह रही थी दीपिका। सडक पर आने जाने वाले लोग ठहरते जा रहे थे और क्या बात है ? क्या हुआ ? पूछते थे। कुछ लोग तो माधव से पूछ रहे थे और वह जवाब देते थे, "कोई बात नही आप जाइये।" एक साइकिल सवार टकी के दूध वाले ने दीपिका से पूछा, "क्या बात है बहिन ?" तो दीपिका उससे बडे स्नेह से अधिकारपूवक बोली,

"भैया आप अब तक घर क्यो नही पहुँचे ?"

"मै दूध बेचने गया था।"

"इतनी रात को ?"

"मैं पाच बजे निकला था।"

"कितना रास्ता है गाव से शहर का ?"

"एक घटे का।"

"तो भैया आप को सात बजे तक वापस पहुँच जाना था हद से हद आठ, पर भैया आपने तो कितने बजा लिये ! क्या बज गया ?"

जो ठहरी हुई भीड इस वार्तालाप को सुन रही थी उसमे से लाग अपनी घडी देखने लगे—"साढे नौ ! पौने दस !" "आवाजे आने लगी।"

"भैया अब आप साढे दस ग्यारह तक अपने घर पहुँचोगे। आपकी बीवी की क्या हालत हो रही होगी। कितनी चिन्ता कर रही होगी वह ! आपको मालूम है कि जब आदमी घर नही पहुँचता तो औरत को कितनी चिन्ता होती है ?" यह कहते हुए दीपिका का गला भर आया। "आप जल्दी जाइये भैया !"

माधव ने दीपिका की बाह कस कर पकडी और उसे घर ले आये। बीच रास्ते मे दीपिका ने एक बार फिर कहा, "मुझे मदिर ही आने दो प्लीज," तो माधव ने पीछे देखा। भीड लगभग जा चुकी थी। किसी की निगाह उधर नही थी। उन्होने दीपिका की कमर मे कूल्हो के ऊपर रीढ की हड्डी पर एक जोरदार घूसा लगा दिया जिससे दीपिका बिल्कुल ही अशक्त हो गयी और माधव ने उसे कधो से अपना हाथ आर-पार निकाल कर पकड रखा था जबकि दीपिका का दिमाग चकरा रहा था कि उस ने जो बाते दोपहर मे सोते वक्त सोची थी कि माधव से अकेले मे कहेगी, वे कैसे कहे।

माधव घसीट कर उसे शयन कक्ष मे ले गये और फिर वह एक लोहे का कुस्सा उठा लाये जो कि—उन्होने रसोई तथा बाथरूम मे तग मोरी के स्थान पर जालीदार बडी मोरिया निकलवाने की स्वीकृति पी डब्लू डी से प्राप्त की थी, उस सिलसिले मे—मजदूर छोड गये थे क्योकि अभी मेहमानो के आने के कारण यह काय स्थगित कर दिया गया था।

शयनकक्ष मे वह खिडकी के पास जाकर खडी हो गयी थी। माधव ने दोनो खिडकिया बद कर दी और कहा, "बीच मे आ जाओ वरना मारू गा।"

दीपिका कमरे के बीचो बीच आकर खडी हो गयी। माधव कुर्सी पर बैठ गये और बोले, "ये कलक्टर से मिलने की बात तुम से किसने कही थी?"

"एक वो उर्मिला सक्सैना है ना, जिनके यहा अपन एक बार गये थे! जिन्होने आपकी खूब खातिर की थी और आपका भी खूब मन लगा था उनके यहा। वह अपनी किसी जानकार के बारे मे बता रही थी कि उसका पति अपने बीबी बच्चो को न साथ रखता था न उन्हे पैसे भेजता था क्योकि वह दूसरी औरत के साथ रहता था। तब उस स्त्री ने अपने पति के बॉस से बात की और उसकी बारह सौ की तनख्वाह मे से छ सौ वह अधिकारी उसकी पत्नी व बच्चो को भेजने लगा। इससे उनका खर्च तो चला ही उसकी दूसरी औरत भी आर्थिक तगी के कारण छूट गयी।"

"तुमने इतने कपडे क्यो धोये?"

"मेरी सहेली मीता सेन, जब मैं यहा आ रही थी तो हमारे यहा आई थी उसने कहा था कि "सबकी खूब सेवा करना।" माधव धीरज से सुन रहे थे तो आगे दीपिका खुद ही बोलती गयी। और कलेक्टर साहब के यहा जाने का विचार तो मैंने इसलिये किया है कि चाहे सन्तोष और मधुसूदन हो चाहे शानी और बिहारी आपके लिये ये दोना ही मा पुत्र के जोडे हमारी अपेक्षा अधिक महत्वपूण हैं। तथ्य यह है कि काकूजी यदि अपने भतीजे व भतीजियो के दीवाने थे तो आप एक माता व पुत्र के दो जाडो के दीवाने हो और इन्ही के बीच मे जीवन भर झूलते रहोगे—और हम साथ रहे या अलग तनाव झेलना ही तो हमारी नियति बन कर रह जायेगा न!

"अगर आप सोचते हो कि म मम्मी की तरह रोते बिसूरते जिन्दगी बिता दूगी, तो यह आपकी भूल है। मुझे मालूम है कि अधिकारो की माग करना व्यक्ति का कत्तव्य है। अत मे तुमसे पूछती हूँ हमारा ध्यान क्यू नही रखते तुम?

"आपका शानी बिहारी व सतोष मधुसूदन की ओर हमारी ओर से ज्यादा फर्ज है ? आप इन दोनो मे से एक न एक मामले को लेकर इतने उलझे रहते हो कि हम बिल्कुल उपेक्षित हो गये हैं। आपने हमारा ध्यान रखना बिल्कुल बद कर दिया है—हम बहुत तक्लीफ मे है। आप हमारे साथ रहना शुरू करिये नही तो मै चीख चीखकर आपके व्यवहार के बारे मे सबको बताऊँगी।"

"हमे फर्ज सिखाती है तू ! साली, तू सडक के किनारे पे उस आदमी से क्या साठ-गाठ कर रही थी ? तेरे भी ता सम्बन्ध है उससे वो कौन है तेरा ? तू तो जिस तिस से लग जाती है ?"

"माधव ! तुम मेरे ऊपर ऐसे इल्जाम लगाते हो ! उस आदमी ने अँधेरे मे हमे रोशनी दी—अगर कुछ है तो वह मेरे भाई समान है वह आदमी ! वह कह रहा था आप टॉर्च रख लो, आगे काम आयेगी और म कह रही थी कि अब आप ले लो ! मैंने तो कभी सपने मे भी किसी अन्य पुरुष के बारे मे नही सोचा।"

"सब मालूम है—रघु जब आया था "

"माधव " चीख पडी दीपिका "मैंने कहा था कि आपका भी इनकी तरह से स्नेहिल होना चाहिये—और आपने उनसे कह दिया कि दीपिका तुझे चाहने लगी है ! तभी से उन्होने पत्रो का आदान प्रदान बद कर दिया—लेकिन यह लिखकर कि बद कर रहा हूँ—उनकी ईमानदारी भी सराहनीय है।"

"बक्वास बद कर औरत !" एक सरिया माधव ने दीपिका की गदन के पीछे मार दिया और फिर तो उसे ताबडतोड मारता ही रहा —"हम तो ऐबी है और वह चली आई है सती सावित्री। अरे शराब पीते हैं तो क्या अपने पैसे की पीते है तेरे से मागे तो नही ! तेरे से भाई बहिन का प्यार देखा जाता नही—सतोष के प्रति हमारी सहानुभूति से तुझे आग लग जाती है। सौतेले भाई मुदित ने डडे ही डडे दिये हैं तो डडे खाने की आदत पड गयी है तेरी—तू क्लेक्टर से बात करेगी ! उससे पहिले तेरी टागे तोड दूगा।" दीपिका ने वाडरोब मे रखी रजाई निकाल ली और उसे ओढ कर लेटकर अपने आपको बचाने का प्रयास करने लगी।

"माधव मुझे मत मारो !" जोर-जोर से चीखी दीपिका तो माधव ने उसका मुह बन्द करने के लिये उसके मुह पर हाथ रखा तो दीपिका बोली, "आइ लव यू ! तुम मेरे ऊपर जो झुके हो तो लगता है कि जैसे तुम मेरे साथ प्यार की जबरदस्ती करना चाहते हो !"

"मैं तो, कहे तो रघु को बुलवा दू, या गुडे बुलवा दू तेरे ऊपर जबरदस्ती करने के लिये !"

"बकवास बद करो माधव ! कुकर्मों के इल्जाम मेरे ऊपर थोपते हो, अब तो म तुम्हारे कुकर्मो के बारे मे किसी से पर्दा नही रखा करू गी। अभी तक कोई मेरे से पूछता है, वो कहाँ है तो मैं कह देती हूँ—नौकरी के कारण बाहर रहते है हर शनि रवि को आ जाते है और शनि रवि को कहती हूँ इस बार काम पड गया वही। बहुत जिम्मेदारी की पोस्ट है उनकी। जबकि मुझे मालूम होता है कि तुम वही सतोष के यहा हो ! लेकिन अब तुम भी देख लेना।"

दीपिका के सिर पर एक डडा मार कर माधव बाहर चले गये "अभी देख लूगा।" बाहर जाकर उन्होने काकूजी मे कुछ सलाह की और अत मे तय किया कि वे डाक्टर राठौर तथा डा शर्मा को बुलाकर लायें—चपरासी को पहिले ही घर भेज दिया गया था—डाक्टरो को अपनी डाक्टर्स मेडीकल किट साथ मे लेकर आनी थी।

काकूजी डा राठौर के घर पहुँचे और वही से उन्होने डा शर्मा को भी फोन कर दिया कि वह डा राठौर के घर पर एकदम पहुँचें। दोनो को सहायक जिलाधीश माधव छाबडा के यहा तुरन्त पहुँचना है, उनको माधव ने अपने घर से फोन करने से इसलिये इन्कार कर दिया कि कही नेपथ्य मे कोई आवाज सुनकर वह माधव की प्रस्तुति के अतिरिक्त कोई पूव धारणा न बना ल। फिर उन तीनो ने रात क बारह बजे माधव के घर पहुँच कर घटी बजायी।

दीपिका सिर पर डडा खाने के बाद बेहोश हो गयी थी। उसे जब होश आया तो कमजोरी के कारण सिर चकरा रहा था। होठो स सीने तक मानो आग सी लगी थी क्योकि तीन दिन के उपवास के बाद उसने नमकीन आदि खा लिये थे। "पानी पानी" मरियल सी आवाज निकाली उसने। माधव बोले,"पानी ला रहे है आपके लिये।" जब माधव

खुद पानी लेने गये तब तक दीपिका ने उनके प्रति कृतज्ञ महसूस करना शुरू कर दिया। खुद गये है मेरे लिये पानी लेने वरना ऐसे कितने पति होगे हिन्दुस्तान मे जो लेटी हुई पत्नी के लिये दौडकर पानी ले आयें।

जब माधव हाथ मे पानी लेकर आये तो बोले, "मैंन कुछ गुण्डो को बुलाया है तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती करने के लिये। समझ लो इस बात को। फिर आराम से पानी पियो।"

"माधव यह तुम क्या कह रहे हो! मेरी गलती क्या है? मैंने तुम्ह चाहा है दिलजान से! तुम मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते हो?"

"तुम हमारी व्यथ मे बदनामी कर सकती हो हम कुछ भी नही?" कुछ विद्वेष से मुस्कराते हुए माधव ने कहा। जमीन पर बिछे बिस्तर पर वह दीपिका के सिरहाने बैठ गया था।

"माधव, आई लव यू। तुम मेरे साथ गुण्डे बुलवाने जैसा कोई काम नही करोगे।"

"पहले पानी पी लो फिर बात करेगे।"

"पहले तुम वादा करो।"

"तुम कहना मानती हो तो पहिले पानी पी लो फिर बात करेगे।"

माधव की सहायता से दीपिका ने आधा गिलास ठडा ठडा पानी पी लिया और बोली, "अब करो बाते।"

"पहिल तुम थोडा सो लो।"

"तुम भी लेट जाओ।"

"मैं यही बैठा हूँ।"

"आई लव यू माधव," कहकर दीपिका माधव की गोद मे सिर रखकर सो गयी।

घटी के घनघनान की जो तेज ध्वनि हुई रात की नीरवता मे तो दीपिका चौक पडी, "मैं देखता हूँ कौन है।"

"कही गुण्डे तो नही आ गये ?" दीपिका ने माधव को पकड लिया।

"कमाल है! जवाब नही तुम्हारा भी! देखने से पहिले ही क्या क्या सोच लेती हो तुम!" कुछ ऊच स्वर मे बोले माधव, और "मुझे देखकर आने दो!" बडे नाटकीय रूप से बनाये गये मुलायमियत के स्वर मे।

दीपिका ने जब उसकी गोद नही छोडी तो माधव ने दीपिका की गदन के ठीक नीचे रीढ की हड्डी मे एक मुक्का मारा और साथ ही जोर से बोले—"प्लीज छोड दो मुझे," ताकि मुक्के की आवाज सुनाई न दे। फिर अपनी गोद मे रखी उसकी बायी बाह के मासल भाग पर नोच कर अपने आप को छुडाकर खडे हो गये माधव।

शयन कक्ष का एक दरवाजा यद्यपि बाहर के बराण्डे मे खुलता था लेकिन वह बन्द ही रखा जाता था। दूसरा दरवाजा जो अदर के बराण्डे मे खुलता था उसमे होकर बैठक मे से निकल कर माधव बाहर के बराण्डे मे पहुँचे तथा दरवाजा खोलते हुए दोनो डाक्टस से क्षमायाचना की कि उन्हे असमय कष्ट दिया। फिर वे उन्हे बठक मे ले गये तथा दानो डाक्टस, माधव तथा काकूजी बैठक मे बैठ गये। वहा पर माधव ने उन्हे नीची लकिन विश्वासपूर्ण आवाज मे बताया कि दीपिका कभी गुण्डे गुण्डे चिल्लाती है तो कभी ऊटपटाग बोलती है, काकूजी भी बोले कि घर का जो भी व्यक्ति उसे समझाने की कोशिश करता है उसे ही गालिया देने लगती है। माधव ने कहा "मैं तो सोचता हूँ कि उसे शामक औषधिया देकर थोडी दर के लिये शान्त कर दिया जाये तथा उसके बाद इलाज क लिये जयपुर ले जाया जाये।"

काकूजी अतिथि कक्ष मे अपनी पत्नी से अपनी पात्रता के सूत्रो का वर्णन करने चले गये जबकि माधव दोनो डाक्टस के साथ शयनकक्ष मे पहुँचे जहा दीपिका अस्त व्यस्त सी रजाई ओढकर लेटी पडी थी।

"दीपिका, देखो तो कौन आये हैं ?"

"माधव!" चीख पडी दीपिका। उसमे उठने की ताकत भी नही बची थी। "गुण्डे!"

"हूँ हूँ देखिये न, कैसे बात करती है !"

माधव डाक्टर्स को बैठक मे ले गया । फिर दीपिका के पास आकर बोला कि "बाहर बैठक मे डाक्टस बैठे है, जो तुम्हे देखने आये है, तुम चलकर बैठो ।"

"माधव मुझे तुम्हारे प्यार के अलावा कुछ भी नही चाहिये । तुम मेरे बन कर रहो तो मुझे कुछ भी नही होगा ।"

"वह अलग बात है लेकिन अभी तो तुम डाक्टर्स से बात कर ही लो अन्यथा सच मे म गुण्डे बुला दूगा ।"

माधव का सहारा लेकर दीपिका उठी और बैठकखाने मे माधव के पास वाली कुर्सी को माधव के और नजदीक सरका कर उस पर बैठ गयी ।

"आपने अभी हमे गुण्डे कैसे समझ लिया था ?"

'क्योकि माधव कह रहे थे कि वह लेकर आयेंगे ।"

"आपकी तबियत कैसी है ? डॉ राठौर ने पूछा तो बोली, "मेरी तबियत ता ठीक है लेकिन तीन दिन से खाना नही खाने के कारण कमजोरी थी । पर आप के यहा बहुत सी स्वादिष्ट चीजे खायी है जिनसे अब थोडी ताकत आ गयी है, थोडी और आ जायेगी ।

"आप को कही कोई दद आदि तो नही ?"

"नही जी ।"

"नीद आ रही है ?"

"हाँ जी ।"

"अच्छा, हम सुबह फिर आयेगे ।" कह कर दोनो डॉक्टस जाने के लिये उद्यत हो गये तो माधव बाहर का ताला लगाकर खुद अपनी ऑफिस की जीप चलाकर छोड कर आये । और वापस आकर शयनकक्ष मे ही सो गये । दीपिका को सपने आते रहे ऐसे जिनमे कभी पहाड की ऊँचाई पर होती थी तो कभी उसकी तलहटी मे होती थी कभी तूफानी समुद्र के बीच मे तो कभी झरने के बहाव के साथ बह रही होती थी

लेकिन यह सब उसके नियन्त्रण से बाहर था। वह स्वेच्छा से कही नही जा या ठहर सकती थी।

अगले दिन सुबह से वक्त सामान्य रूप से ही तनावयुक्त था। दीपिका ने उठकर अपने आप को काम मे खपाना शुरू किया। तार पर से सबके कपडे उतारे और घर मे प्रेस खराब होने के कारण प्रेस के कपडे चपरासी के हाथ सामने वाली धोबिन के यहाँ भेजे तथा बाकी कपडे तह कर करके यथास्थान रखने का उपक्रम करने लगी। जब अतिथि कक्ष मे रखने गयी तभी सासजी ने घोषणा की कि वह आज सपरिवार जयपुर जा रही हैं जहाँ पर कि शातिदेवी नौकरी करती थी। उन्होने दीपिका का कार्यक्रम भी पूछा तो उसने बताया कि वह कुछ दिन रहेगी। साथ मे यह भी जोड दिया कि अब तक वह लडते रहे है, शायद चैन से भी कुछ दिन बीत जाये।

दोनो सास बहू ने मिलकर दोपहर का भोजन पकाया और सभी ने गर्म-गम खा भी लिया। दीपिका ने प्रस्ताव रखा कि वह शाम के लिये पराठे सब्जी बनाकर रख दे लेकिन सासजी ने प्रत्युत्तर दिया कि काकूजी को इस उम्र मे ठडा खाना माफिक नही बैठता तथा वे साझ तक तो जयपुर पहुँच ही जायेंगे अत वहा जाकर पकाना ही उपयुक्त होगा।

जब वे लोग निकल ही रहे थे कि जीप के ड्राइवर को एक छीक आ गयी। इस पर दीपिका ने कहा, "मम्मी अभी नही जाइये—पाच मिनट ठहर कर पानी पीकर जाइये," तो काकूजी ने कहा, "क्यो तुम्हे तो अच्छा ही है हम सब लोग मर जाये तो!"

"कैसे?"

"जलती हो तुम हमसे!"

"म तो बिल्कुल नही जलती।"

"तुम माधव से क्या कह रही थी कि बिहारी को हरदम गोद मे लिये रहते हो!"

"हाँ इस बात से तो मुझे तकलीफ होती ही है। मै कहती हूँ दूसरो के बच्चो को भी प्यार करो लेकिन पहिले अपनो को तो करो। शानी ने अपनी साडी का पल्लू अपनी आखो से लगा लिया था और सुबक रही थी।

"जब अपने घर मे कोई नही पूछता तो मैं यहा भाई से उम्मीद करती हूँ कि वह मेरे बच्चे को प्यार देंगे।"

दीपिका ने कहा, "काकूजी, यही स्थिति है जिससे मै अपने आपको बचाना चाहती हूँ कि समृद्धि और सौहार्द को माधव का प्यार न मिले। और मैं भाइयो से इनके लिये प्यार की भीख मागू। मैं इस चीज के खिलाफ हू।"

अब शानी आगे आयी, "देखो दीपिका, ज्यादा बढकर बोलना अच्छा नही होता।"

"अरे जाओ जाओ, तुम मुझ क्या समझाओगी! तुम तो अपने भाई से अपने बच्चे को पालने के जीवन भर के वादे ले रही थी।" शानी कुछ कहने लगी थी कि माधव ने उसे इशारे से रोक दिया। यद्यपि शानी रुआसी हो आयी थी लेकिन चुप हो गयी।

यूँ लबे बहस मुबाहिसे के बाद जीप रवाना हुई। जब ड्राइवर को हटा कर माधव स्टीयरिंग व्हील पर बैठने लगे तो दीपिका ने कहा, "माधव, प्लीज ड्राइवर को चलाने दो! हर गाडी पर बैठन लगते हो! यह चीज सुरक्षित नही होती, मान जाओ।" माधव पहले तो दीपिका की ऐसी सलाहे मान लेते थे। वह कहते थे, "बडा ध्यान रखती हो तुम मेरा! मुझ बहुत अच्छा लगता है।" लेकिन अब इस वक्त विद्रूप की जो मुस्कान काकूजी के चेहरे पर थी, वह सक्रमित होकर माधव के चेहरे पर पहुँच गयी थी और एक झटके के साथ जीप आगे बढ गयी।

माधव अपने माता-पिता तथा अन्य परिजनो को बस मे बिठाकर जब दफ्तर पहुँचे उस समय घडी चार बजा रही थी। बाबू जिन अत्यावश्यक फाइलो को लेकर उपस्थित थे वह उसन जल्दी-जल्दी निपटायी। मेज पर बोझा थोडा कम किया, दफ्तर के एक बाबू को फटकारा। और पाच बजे सभी के साथ उठ गये।

× × × ×

अब वह ड्राइवर के साथ डा शर्मा के क्लीनिक मे पहुँचा। क्लीनिक का वक्त शाम चार से छ बजे का था। डा शर्मा ने जब उसके आने का उद्देश्य पूछा तो कुछ सहमा सा बैठा रहा और बोला, बाद मे बताऊँगा, पहिले तुम सारे मरीजो को निबटा दो। मरीज लगभग सवा छ बजे तक निबट गये। फिर उसने डा शर्मा से कहा, "मेरी अकेले घर जाने की हिम्मत नही हो रही है। पहिले तो घर मे कई लोग थे जो "शॉक एब्जोवर" का काम करते थे। मेरी पत्नी तो इतनी वाही तबाही बकती है इतना ऊटपटाग बोलती है कि घर की शाति भग कर देती है। अगर गुस्से मे मैं हाथ उठाने लगू तो इतनी चीख चिल्लाहट मचाती है कि भीडे इकटठी हो जायें। एक बार वह भीड इकट्ठी कर भी चुकी है। अब हम ऐसी पोस्ट पर है कि ऐसी घटनाओ से तो हमारी इज्जत की हलक होती है। कृपया आप मेरे साथ चलिये।"

डाक्टर दिनेश शर्मा जिलाधीश माधव छाबडा के कुछ विशेप शुक्रगुजार थे क्योकि उन्होने उनके दसवी पास चाचा के लडके को जिसे घर के लोग एकदम ही नाकारा मान चुके थे अपने दफ्तर मे बाबू के पद पर नियुक्ति दिलायी थी। वैसे माधव छाबडा का यह स्टाइल था कि वह सामान्य प्रक्रिया के बाहर जाकर किसी युवक विशेष पर खास मेहरबान हो जाते—चाहे उसे विशेष कोटा मे जमीन दिलवा कर या नौकरी दिलाकर। जहा भी उनकी नियुक्ति अब तक हो चुकी थी वहा-वहा वह अपने ऐसे चमचे छोड चुके थे और ये व्यक्ति भी वे ऐसे छाटते थे जो लबे समय तक उनके प्रभाव मे ही रहते। माधव उनसे कोई रिश्वत तो नही लेते थे लेकिन कभी उनके घर जाकर यू ही बैठ जाते और सारा घर उनकी सेवा मे बिछ जाता और अगर माधव की इच्छा होती तो उनके यहा खाना खा लेते और उनके घर मे मां, वहिन सबसे बोल बतिया लेते तथा लडके का पिता, अगर घर मे होता तो परिस्थिति के अनुसार उससे उसके लडके की कमियो के बारे मे बात करते। इन घरो मे माधव मुक्तरूप से लेटते-बैठते, एक नीद ले लेते जबकि सारा घर सकोच के कारण सिमट रहा होता और जब घर वाले कहते कि इतने बडे साहब, आपको तकलीफ हो रही होगी यहा पर, तो जवाब देते कि हम तो इससे भी ज्यादा मुफलिसी मे पले हैं और आवश्यकता होने पर अवसर के अनुकूल उदाहरण भी देते।

डॉ दिनेश शर्मा जब चलने लगे तो माधव छाबड़ा ने उनसे पक्के तौर पर जानने के लिये पूछ लिया कि उन्होंने शामक इंजेक्शन तथा नींद वाले इंजेक्शन तो रख लिये हैं न !

"जी हा, रख लिये हैं ।"

"आजकल कौन से शामक उपयोग मे आ रहे हैं?" माधव ने अपने लहजे को सामान्य रखने का प्रयास करते हुए कहा—"कृपया मुझे उनके नाम बता दीजिये ताकि अगर आप की अनुपस्थिति मे वह उत्तेजित हो जाये या उन्हे नींद न आये यानि एक दम इमरजेंसी हो जाये तो मैं खुद लगा दू ।" जीप सड़क पर बिना हिचकोलो के दौड़ रही थी ।

डॉ शर्मा को एकदम विचार आया कि माधव अपनी पत्नी से सार साये बैठ है, बोले, ' जी, मैं हाजिर हो जाऊँगा, जब आपको दिक्कत हो तो आप फोन कर दीजियेगा ।"

"फोन तो आजकल इतनी बार डैड होते है कि बस ! मै किसी चपरासी को भी घर पर रात को रोकना पसद करता नहीं ।" जीप की पीछे वाली सीट पर रखा हुआ डाक्टर का ब्रीफकेस माधव ने "मेडिकल किट," उचारते हुए, अपनी गोद मे रख लिया । "कैसे खुलता है?" डॉ शर्मा ने जेब मे से चाबी का गुच्छा निकाला और ब्रीफकस की चाबी उसमे से छाटकर माधव के आगे कर दी ।

बीच मे बैठे हुए माधव ने ब्रीफकेस खोलकर उसका ढक्कन खड़ा कर लिया और पूछा, ' इनमे से शामक औषधि कौनसी है?" "कई तरह की हैं । यह "काम्पाज" की गोली है—यह "मार्फिन" कैंसर के रोगियो को सुलाने के लिये काम मे ली जाती है और यह दिल के रोगियो के लिये दर्द निवारक है ।"

"इतने नीचे काम्पोज इंजेक्शन दे देते हैं या फिर 'कार्टीजन' इंजेक्शन भी देते हैं। रोगी यदि बहुत कमजोर हो तो एक इंजेक्शन नन्हीं विटामिन का ही दे दो—एक दो घंटे तक नहीं उठेगा।

माधव ने पूछा—"अभी यदि हमारी यो बहुत उत्तेजित होगी तो आप उन्हें कौन सा इंजेक्शन दोगे ?" डाक्टर शर्मा को विचार मग्न देख कर थोडी देर बाद माधव फिर बोले, "मैं पूछ रहा हूँ अगर किसी का दिमाग चला हुआ हो तो उसकी उत्तेजना को नियंत्रित करने के लिये रोकने के लिये कौन सा इंजेक्शन देते हैं ?"

"पहिले तो "काम्पोज" और फिर चरम अवस्था मे "मार्फिन"।

"आप इन दोनो इंजेक्शन की कीमत बता दीजिये।" कहते हुए माधव ने उठा लिये। "आप भी मजाक करते हैं छाबड़ा साहब। मेरे पास तो ये सैम्पल मे आये हुए हैं, कीमत मुझे मालूम भी नहीं है, आप यूँ ही ले लीजिये।"

माधव छाबडा का घर आ गया था। दीपिका ने कुण्डी खोल दी जीप की आवाज सुनकर, तथा अन्य लोग भी आये देखकर अन्दर के कमरे में चली गयी। माधव अन्दर आये और बोले कि बाहर बैठक मे चलो।

"क्यो ?"

उन्होंने कोई जवाब नही दिया और वापस लौट गये।

फिर समृद्धि और सौहाद आये। "अम्मा, पापा बुला रहे हैं बाहर।"

"अच्छा मुझे उठाओ तो।" दोनो बच्चो ने दीपिका का एक एक हाथ थाम लिया और उठकर दीपिका बैठक म आ गयी। वहाँ माधव ने उसे बैठने को सीट दी और कहा, "हम कपडे बदल कर आते हैं।" डॉ शर्मा दीपिका से शिक्षा, शिशु पालन, दिनचर्या, फिल्म तथा राजनीति पर भी बात करते रहे और दीपिका भी सामान्य भाव से जवाब देती

रही। यद्यपि उसका कुछ ध्यान शयन कक्ष की ओर लगा रहा जहा माधव कपडे बदलने गये थे।

माधव ने शयन कक्ष मे जाकर सबसे पहले अपनी जेब मे रखी शामक इजेक्शन की शीशियो को निकाला फिर उनकी वतनी डॉ शर्मा के ब्रीफकेस मे रखे चिकित्सा केन्द्र की सील लगे एक "प्रस्क्रिप्शन पेपर" पर लिख ली फिर एक ऐसे ही अन्य कागज पर तेज रफ्तार से लिख दी। यद्यपि उन्हे वर्तनी याद होना कठिन नही था लेकिन इस वक्त वह कोई खतरा मोल लेना नही चाहते थे। फिर उन्होने अपनी शट उतारी और वनियान पेन्ट पहने हुए ही बैठक मे आये।

"क्या कपडे नही मिले ?" पूछते हुए वह सोचने लगी कि मैंने रात को पहिनने वाले कुरता-पाजामा, नाइट सूट व धोती तीनो ही जोडी धोकर व प्रेस करवाकर अलमारी मे बायी ओर रख दिये थे दिख जाने चाहिये थे—क्योकि बाहर जाने के कपडे दायी ओर रखे जाते हे।

"हमे डाक्टर साहब को छोडने जाना होगा, इसलिये नही बदले।" माधव ने जवाब दिया। फिर बोले, "तुमने डाक्टर साहब के लिये कुछ चाय नाश्ते की व्यवस्था नही की।"

उठकर रसोई मे पहुँच गयी दीपिका। क्या पकौडिया बनाये या बाजार से ड्राइवर को भेजकर कुछ मगाये, क्या करे, एक तो यह प्रश्न था दूसरा यह कि माधव भी अभी चाय लेगे या काली कॉफी। दीपिका ने दो कप चाय के लिये पानी चढाकर बच्चो को भेजकर माधव को बुलवाया।

दीपिका ने अपने दोनो प्रश्न पूछ लिये तो वे बोले, तुम खुद निणय नही ले सकती ? चाय मैं ही बना कर ले जाता हूँ।" वह पत्ती, चीनी, दूध भगौनी मे डालने लगे।

"क्या पकौडी बना दू ?"

"कौन खायेगा इतनी भारी होती हैं, तुम खुद ही खा लेना।"

"बाजार से मगाऊँ कुछ ?"

"क्या ?"

"जो तुम कहो ।"

"अच्छा तुम से भर पाया मैं तो !"

"माधव चाय कप मे छान कर बैठक मे ले गये ।"

दीपिका स्तम्भित सी होकर रसोई मे सासजी की बिछायी बोरी पर बैठने लगी थी कि उसे लगा कि उसके साथ भी उसकी सासजी की स्थिति परिस्थितियो की पुनरावृति हो रही है लेकिन उसे उनकी जैसी प्रतिक्रिया दिखाकर बिसूरना नही है । वह शयन कक्ष मे चली गयी और शवासन मे लेट गयी । वह विचार कर रही थी कि माधव उसे अपमानित करने के लिये ही ऐसा व्यवहार करते है जैसा कि अभी उन्होने रसोई मे किया । यह मुझसे किस बात का बदला ले रहे है ? इनके प्रति कभी तिल भर भी दुर्भावना क्या रखी है मैंने ?

दीपिका को इस बात का आभास तक नही था कि माधव के जिस उच्छृखलतापूर्ण, समाज की रीति-नीति को तोडने वाले समाज द्वारा अमान्य एव असामान्य व्यवहार व योजनाओ की जो जानकारी उसे हो गयी थी और जिसे जग जाहिर करने की उसने घोषणा कर दी थी उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप माधव अपने विकृत सम्बन्धो की हिफाजत तथा समाज मे उच्च प्रतिष्ठा बनाये रखने की खातिर दीपिका के व्यक्तित्व को विकृत, अस्वस्थ व असामान्य प्रदर्शित कराने वाले प्रमाण-पत्र प्राप्त कर उसके परखचे उडाने हेतु षड्यन्त्र रच चुके थे ।

× × × ×

दीपिका शवासन मे लेटी हुई थी । सोच रही थी, मैंने ठीक ही किया जो आज चाय बनाते वक्त माधव ने मुझसे यह कार्यभार छीना तो इसे पुन प्राप्त करने के लिये उससे कोई छीना-झपटी नही की । वह सोच रही थी कि अब वह अपनी छुट्टिया बढवा लेगी और माधव के

घर मे कुछ दिन रहेगी। यद्यपि उसने यह कहावत सुन रखी थी कि "आदमी का दिल उसके शरीर मे ही कैद नही होता," यानी शारीरिक रूप से अगर किसी की निकटता हासिल कर लो तो यह आवश्यक नही वह आन्तरिक प्रसन्नता दे देगी। इस वास्तविकता की गहराई को तथ्यात्मक रूप से नही समझा था कि माधव व उसके सबधो पर अब यही बात लागू होती है पर उसकी मुहब्बत हासिल करने के लिये वह क्या करे—शात थकित मन से वह यही सोच रही थी कि हल्की सी नीद उस पर तारी हो गयी।

लेकिन जैसे साधारण नीद मे सोया हुआ व्यक्ति विभिन्न बाते सुनने म सोया रहेगा पर स्वय के बारे मे बात चलने पर जाग जाता है उसी तरह लबे समय तक धीमी दबी आवाज मे माधव कुछ बोलते रहे तब दीपिका सोयी रही लेकिन जब डॉ शर्मा की साफ आवाज "बिल्कुल नार्मल ह," सुनाई दी तो चौक कर उठ गयी। डाक्टर दिनेश कह रहे थे—"जी नही मैं कोई दवाओ की सिफारिश नही करता," तो वह उठ बैठी थी। डॉ साहब को विदा करने के लिये वह भी बाहर के दरवाजे तक आ गयी और माधव से बोली, 'कौन नार्मल है ?" एकदम से सिटपिटा कर बोले माधव—"वो—डाक्टर शर्मा की कुतिया ने बच्चे दिये हैं—नार्मल है वो, डॉ साहब उसे कोई दवाये नही देने है, सब ठीक है।" वह फिर डॉ साहब को छोडने जीप लेकर चले गये।

दीपिका दोपहर बाद वरिष्ठ परिजनो के जाने के बाद से ही घर मकान की सार सभाल मे लगी हुई थी। अपने हिसाब से उसने खूब सफाई कर ली थी। माधव के लिये रात के खाने की तैयारी कर रखी थी। समृद्धि व सौहाद को खाना खिला दिया था और अब वह बिस्तर मे ऊँघ रही थी और सोच रही थी कि बडी शाति के साथ परिस्थितिया का मुकाबला करेगी।

माधव ने जीप मे बठे-बठे ही पहिने तो खूब शराब पी ली फिर जीप मे से उतरे और अन्दर आये। फिर उन्होने वही बल वाला लोहे का सरिया उठाया और दीपिका की पिटाई लगाना शुरू कर दिया। दीपिका चौक कर उठ बैठी। माधव गरजे, "हाँ बोलो क्या सबध हैं इन्दिरा गाँधी और लोहिया के ?"

"लोहिया कौन है ?"

"हमारे और दीदी के क्या सबब हैं ?"

"मुझे नही मालूम ।"

"तो तेरे बाप और अमरीकन नानी के क्या सम्बन्ध थे ?"

"उनके बहुत स्नेह पूर्ण संबंध थे ।"

"अरे, कुत्ते की औलाद ! हमारे संबधो पर कीचड उछालती है तू ! खूब समझते हैं हम तेरे नाटक !" सारे वक्त माधव खूब उछल उछल कर दीपिका को लोहे के डंडे से मार रहे थे और स्वय ही चीख चिल्ला कर चिंघाड रहे थे। यह दीपिका को यातना देने का एक बडा अजीब तरीका लगा।

"माधव मैं तुम्हे इतना प्यार करती हूँ और तुम डरा रहे हो मुझे।"

"हम डरा रहे है ? कैसे डरा रहे है ? डर क्या होता है ?" माधव कुर्सी पर बैठ गये थे व दीपिका पिटाई से गिरकर जमीन पर लेटी थी।

"डर का सबसे अच्छा उदाहरण मैंने चारलोटी ब्रोन्टी की पुस्तक 'जेन आयर' मे पढा है। वह लडकी एक अँधेरे कमरे मे कैद कर दी गई थी फिर उसे छत मे से जब एक रोशनी अपनी ओर आती हुई दिखायी दी जिससे वह डरने लगी कि उसके साथ क्या होने वाला है !"

"हमने तुम्हे अँधेरे कमरे मे कैद किया है ?"

"नही।"

"फिर तुम ये बकवास क्यो करती हो ?" फिर समझाने के अंदाज मे बोले, "पागल हो गई हो तुम।"

"मेरी तकलीफ यह है कि तुम मुझे प्यार नही करते और कोई भी बात नही माधव !"

माधव ने घर के सब दरवाजे खुले छोड दिये थे ताकि हो सके तो भीड इकट्ठी हो जाये लेकिन भीड तो आई नही। अब माधव ने डॉ

घर मे कुछ दिन रहेगी। यद्यपि उसने यह कहावत सुन रखी थी कि "आदमी का दिल उसके शरीर मे ही कैद नही होता," यानी शारीरिक रूप से अगर किसी की निकटता हासिल कर लो तो यह आवश्यक नही वह आन्तरिक प्रसन्नता दे देगी। इस वास्तविकता की गहराई को तथ्यात्मक रूप से नही समझा था कि माधव व उसके सबधो पर अब यही बात लागू होती है पर उसकी मुहब्बत हासिल करने के लिये वह क्या करे—शात थकित मन मे वह यही सोच रही थी कि हलकी सी नीद उस पर तारी हो गयी।

लेकिन जैसे साधारण नीद मे सोया हुआ व्यक्ति विभिन्न बाते सुनने मे सोया रहेगा पर स्वय के बारे मे बात चलने पर जाग जाता है उसी तरह लबे समय तक धीमी दबी आवाज मे माधव कुछ बोलते रहे तब दीपिका सोयी रही लेकिन जब डॉ शर्मा की साफ आवाज "बिल्कुल नामल है," सुनाई दी तो चौक कर उठ गयी। डाक्टर दिनेश कह रहे थे—"जी नही मैं कोई दवाओ की सिफारिश नही करता," तो वह उठ बैठी थी। डॉ साहब को विदा करने के लिये वह भी बाहर के दरवाजे तक आ गयी और माधव से बोली, "कौन नार्मल है?" एकदम से मिटपिटा कर बोले माधव—"वो—डाक्टर शर्मा की कुतिया ने बच्चे दिये है—नामल है वो, डॉ साहब उसे कोई दवाये नही देते है, सब ठीक है।" वह फिर डॉ साहब को छोडने जीप लेकर चले गये।

दीपिका दोपहर बाद वरिष्ठ परिजनो के जाने के बाद से ही घर मकान की सार सभाल मे लगी हुई थी। अपने हिसाब मे उसने खूब सफाई कर ली थी। माधव के लिये रात के खाने की तैयारी कर रखी थी। समृद्धि व सौहाद को खाना खिला दिया था और अब वह बिस्तर मे ऊँघ रही थी और सोच रही थी कि बडी शाति के साथ परिस्थितिया का मुकाबला करेगी।

माधव ने जीप मे बठे-बैठे ही पहिले तो खूब शराब पी ली फिर जीप मे से उतरे और अन्दर आये। फिर उन्होने वही बल वाला लोहे का सरिया उठाया और दीपिका की पिटाई लगाना शुरू कर दिया। दीपिका चौंक कर उठ बैठी। माधव गरजे, "हा बोलो क्या सबध हैं इन्दिरा गाँधी और लोहिया के?"



"लाहिया कौन है ?"

"हमारे और दीदी के क्या सम्ब ह ?"

"मुझे नही मालूम।"

"तो तेरे वाप और अमरीकन नानी के क्या सम्बन्ध थे ?"

"उनके बहुत स्नेह पूर्ण सबध थे।"

"अरे, कुत्ते की औलाद ! हमारे सबधो पर कीचड उछालती है तू ! खूब समझते हैं हम तेरे नाटक !" सारे वक्त माधव खूब उछल उछल कर दीपिका को लोहे के डडे से मार रहे थे और स्वय ही चीख चिल्ला कर चिघाड रहे थे। यह दीपिका को यातना देने का एक बडा अजीब तरीका लगा।

"माधव मैं तुम्ह इतना प्यार करती हूँ और तुम डरा रहे हो मुझे।"

"हम डरा रहे हैं ? कैसे डरा रह है ? डर क्या होता है ?" माधव कुर्सी पर बैठ गये थे व दीपिका पिटाई मे गिरकर जमीन पर लेटी थी।

"डर का सबसे अच्छा उदाहरण मैंने चारलोटी ब्रोन्टी की पुस्तक 'जेन आयर' मे पढा है। वह लडकी एक अँधेरे कमरे मे वद कर दी गई थी फिर उसे छन म मे जब एक रोशनी अपनी ओर आती हुई दिखायी दी जिससे वह डरने लगी कि उसके साथ क्या होने वाला है !"

"हमने तुम्हे अँधेरे कमरे मे कैद किया है ?"

"नही।"

"फिर तुम ये बकवास क्यो करती हो ?" फिर समझाने के अदाज मे बोले, "पागल हो गई हो तुम।"

"मेरी तकलीफ यह है कि तुम मुझे प्यार नही करते और कोई भी वात नही माधव !"

माधव ने घर के सब दरवाजे खुले छोड दिये थे ताकि हो सके तो भीड इकट्ठी हो जाये लेकिन भीड तो आई नही। अब माधव ने डॉ

राठौड को जो जीप ड्राइवर के बुलाने पर अकेले वहा आ गये थे। स्थानीय अस्पताल भेजा, और उनके द्वारा जयपुर रवाना होने के लिये एम्बुलेंस मगा भेजी। तब तक स्वय ने एक प्लास्टिक की सिरिंज मे भरकर काम्पोज का इजेक्शन स्वय दीपिका की कलाई के पीछे लगा दिया। "आइ लव यू माधव, आइ लव यू।" यही कहती रही दीपिका और एम्बुलेंस मे भी माधव की गोद मे सिर रख कर ही सोयी रही। माधव की कमर को उसने अपने दोनों हाथो मे कस कर लपेट लिया था। और जैसे ही वह हिलते तो, "माधव, कहा जा रहे हो तुम ?" बोलने लगती।"

"लोग देख रहे हैं न।" माधव ने यू कह कर कई बार अपने को छुडाने का प्रयास किया। लेकिन दीपिका हर बार उसे और कसकर पकड लेती। और माधव बैठे रहे।

यूं तो माधव को भरोसा था कि वह दीपिका को मानसिक चिकित्सालय मे भर्ती करा ही देगे पर 'कहा ल जाये ?' यह सोच रहे थे। राजकीय चिकित्सालय मे तो बडी पूछताछ के बाद तथा जगह मिलने पर ही भर्ती करते है और किसी डाक्टर से वहा व्यक्तिगत परिचय भी नही है लकिन बीकानेर रोड पर आते जाते उन्होने डॉ पाठक का मानसिक चिकित्सालय देखा था। वहा पर तो एक ही डाक्टर प्रभारी होगा तथा प्राइवेट होने के कारण वहा भर्ती कराना आसान होगा क्योकि हर रोगी वहाँ डा की पूरी फीस, हर सुविधा की पूरी कीमत एव लाभाश अवश्य देता है और उसी से डाक्टर की जीविका है—तथा उसी मे उसके सस्थान का खर्चा चलता है लेकिन वह साथ ही मे डर रहे थे कही डाक्टर ने उन्हे डाटा कि "यू ही शामक इजेक्शन क्यू लगाया है ?" तो ! "शामक इजेक्शन से तो हर अच्छा भला व्यक्ति नीद मे सो जायेगा !" यह बात जोर देकर कहगे तो !

तब वह कह देगे कि हमने तो लगाया नही डाक्टर कही खुद इस बात का प्रमाण कलाई मे पीछे की ओर हुए मोटे छेद को देख कर न देने लगे यह प्रमाण नष्ट करने के लिये इस स्थान को जला देना चाहिये।

माधव ने सिगरेट सुलगायी और उसका ढेर सारा धुआ दीपिका के मुह पर छोडा। दीपिका ने चेहरा न तो बिगाडा न ही मोडा। माधव ने

सोचा यह इतनी गहरी नीद मे है कि सिगरेट का दाग सहन कर लेगी। उसने दीपिका की कलाई पकड ली और एक नीद का झोका सा लेते हुए जलती हुई सिगरेट दीपिका की कलाई के इजेक्शन लगाये हुए स्थान पर लगा दी।

"कौन है ? कौन हो तुम ?" कह कर दीपिका उठ बैठी। अपनी आवाज मे चाशनी घोलकर माधव बोले, "अरे दीपिका, हमे नही पहचानती ?"

दीपिका माधव की गोद मे उसकी कमर को दोनो हाथो से घेर कर सो चुकी थी और माधव एम्बुलेंस के एक कोने मे घुटनो मे मुंह दिये ऊंघते हुए बैठे, दीपिका की अचानक आवाज से चौंके हुये एक सहायक कमचारी को सुनाकर कह रहे थे—"हमे नही पहचानती, जाने क्या हो गया है इन्हे !" सामने की बर्थ पर दोनो निश्छल बालक निश्चित भाव से सो रहे थे।

× × × ×

डॉ पाठक एम बी बी एस, एम एस, एम डी, सुबह छ बजे अपने विस्तर मे ही थे। उनकी नीद खुल गयी थी लेकिन वह उठे नही थे। नया दिन शुरु हो रहा था लेकिन उनके दिल मे कुछ उत्साह नही था। वह सोच रहे थे कि पिछले हफ्ते से कोई नया रोगी नही आया। यू तो वह यही चाहते थे कि लोगो मे मानसिक रोग हो ही नही। लेकिन घनी जनसख्या के कुछ प्रतिशत मे तो होगे ही, यह भी वह जानते थे। तो उनका आवासीय अस्पताल फिर खाली सा क्यू हो रहा है ? पिछली होली पर उनके यहा के सभी कमरे भरे हुए थे तथा तीन रोगी बरामदो मे विस्तर लगा कर रखे गये थे जिनके रिश्तेदार इन्तजार कर रहे थे कि कब कमरे खाली हो तथा कब वे अपने रोगी को कमरे मे रखें। लेकिन इस बार तो पाच कमरे बिल्कुल खाली पडे है और श्रीमान राय की भी शायद आज छुट्टी करनी होगी। कमरो के खाली ही बने रहने का क्या यह अर्थ है कि उनकी साख घट रही है या यह भी जिन्दगी मे आवश्यक उतार-

इज्जत, ऐसा दूरी युक्त आकर्षण देखा था कि उसे लगता था इसके साथ जिंदगी की बात बन जायेगी—वेलेंटीना ने ही एक दिन उनसे विस्तार से उनकी वैवाहिक योजना सबधी विचार पूछ लिये थे और जब उन्होने कहा था कि वह ऐसी जीवन सगिनी चाहेगे जो चिकित्सकीय क्षेत्र की ज्ञाता हो, अगर नौकरी न करना चाहे तो न करे लेकिन इससे अपने व्यवसाय मे वह अधिक आश्वस्त रहेगे कि कभी उससे सलाह ले सकते है तो वेलेंटीना ने सोच लिया था वह स्वय उनके लिये एक अनुकूल पत्नी सिद्ध हो सकेगी क्योकि वह मानसिक धरातल पर स्वीकार की गयी पत्नी होगी। उसी मुलाकात मे उसने डा पाठक से कह दिया था—मुझे भी "इडिया" दिखाइयेगा। तब डा पाठक ने उसे गम्भीरता से नही लिया था लेकिन जब उसने बार-बार इस बात को कहा तो उन्होने स्पष्ट कहा कि बिना किसी पक्के नजदीकी रिश्ते के भारत मे किसी औरत का किसी मर्द के साथ घूमना ठीक नही समझा जाता। "रिश्ते बनाने मे तो ऑबजेक्शन" होगे आपको !" टीना ने उचित समझदारी से कहा था। तब डाक्टर पाठक उसकी मशा जान गये थे।

'मुहब्बत का रिश्ता तो सब बाधाओ को पार कर लेता है न !" कहकर उन्होने लाजयुक्त ललाई चेहरे पर बिखेरती टीना का हाथ थाम लिया था और उसी दिन पहली बार वह उसे कॉफी पिलाने एक रेस्ट्रा मे लेकर गये थे। डा पाठक के इम्तहान जिस हफ्ते पूरे हुए उसी शनिवार की शाम उन दोनो का विवाह सीधे-सादे तरीके से पास ही के कैथलिक चर्च मे हो गया था। यद्यपि डा पाठक के भारत लौटने पर उनके माता-पिता ने हिन्दू रीति से फेरे लगवा कर विवाह कराया और दावत भी दी लेकिन वे आशकित ही रहे कि यह अग्रेज लडकी कभी किन्ही बातो से व्यथित होकर वापस इग्लड चली जायेगी।

लेकिन वेलेंटीना तो डा पाठक के साथ सहजीवन को अपने लिये एक चुनौती के रूप मे लेकर आयी थी। और वह लार्ड जीसस से यही प्रार्थना करती थी वह उसे इतनी ताकत दे कि वह एक अच्छी पत्नी व अच्छी औरत साबित हो सके।

टीना ने एक करवट बदली और अपना हाथ डा पाठक के गिर्द लपेट लिया। डा पाठक सोचने लगे टेलीफोन का बिल, बिजली का बिल, पानी का बिल, स्टाफ की तनख्वाह मिलाकर दस हजार देय हैं

चढाव का ही एक हिस्सा मात्र है ? पास ही मे उनकी पत्नी टीना सोयी हुई थी। टीना से उन्होने तब शादी की जब कि वह मानसिक विज्ञान मे अग्रिम अध्ययन करने के उद्देश्य से इग्लैंड गये थे। वहा विलिंगटन अस्पताल मे वह एक "फेलो" बन गये थे। सुबह के वक्त वह अपने डिग्री के लिये कक्षाओ मे उपस्थित हो जाते तथा शेष समय मे वह विलिंगटन अस्पताल की मानसिक चिकित्सा शाखा मे डा स्मिट के सहायक का काय करते। डा स्मिट उन्हे कभी जिम्मेदारी का, जिसमे उन्हे स्वनिर्णय लेना पडे, ऐसा काय नही सौपते लेकिन डा स्मिट के काम करने के तरीको का अध्ययन करने के अतिरिक्त जब वह आत्म-निरीक्षण करते कि ऐसी स्थिति मे वह स्वय क्या करते तो वह अपने व उनके निर्णय मे समानता से चकित हो जाते। उनके जैसा बनने की कामना करते। वही उनमे यह असतोप भी बढता जा रहा था कि यहा इग्लड मे रह कर उन्ह कभी एक जिम्मेदार स्वविवेक पर निभर डाक्टर बनने का अवसर नही मिलेगा, यश एव कीर्ति तो दूर की वात है।

और यही बात उन्होने डा स्मिट की पुत्री वेलेन्टीना से कह दी कि वह कोस पूरा होते ही भारत का रास्ता नापगे—वेलेटीना ने भी चिकित्सा विज्ञान के डिग्री कोस मे प्रवेश ले रखा था—यद्यपि उसकी रुचि एक आरामपूर्ण जीवन की ओर अधिक थी—वह डा पाठक से कई बार अपने चिकित्सा विज्ञान के पाठय पर प्रश्न पूछ लेती थी। उसने जब डा पाठक की योजना सुनी तो उसे लगा कि वह इस डाक्टर युवक के साथ एक वैभवपूर्ण जीवन बिता सकती है—एक शात जीवन, जिसमे वह खूब साहित्य पढेगी व खूब लोगो से मिलेगी। उसको डा पाठक मे एक साथ निभाने वाले व्यक्ति की झलक मिली जो उसकी खुशी को ताजिन्दगी महत्व देगा। यहा के आदमी शायद स्माट ज्यादा होगे और ज्यादा तकपूर्ण भी लेकिन अपने "स्व" के लिये जियेगे—वक्त के साथ पसद बदलने पर पत्नी बदलने मे हिचकिचायेगे नही। कितने तलाक होने लगे है यहा, पापा ने भी तो तीन शादिया कर डाली है। जिन मम्मी की वह सतान है—वह पापा की तीसरी पत्नी हैं तथा पापा उनके दूसरे पति है। क्या उसे भी एक फुटबॉल की तरह एक से दूसरे आदमी की ओर उछलना होगा! किस-किस के बच्चे पैदा करेगी वह और कहा-कहा उन्ह छोडेगी! डा पाठक की आखो मे उसने अपने लिये ऐसी

इज्जत, ऐसा दूरी युक्त आकर्षण देखा था कि उसे लगता था इसके साथ जिंदगी की बात बन जायेगी—वेलेंटीना ने ही एक दिन उनसे विस्तार से उनकी वैवाहिक योजना सबधी विचार पूछ लिये थे और जब उन्होंने कहा था कि वह ऐसी जीवन सगिनी चाहेगे जो चिकित्सकीय क्षेत्र की ज्ञाता हो, अगर नौकरी न करना चाहे तो न करे लेकिन इससे अपने व्यवसाय मे वह अधिक आश्वस्त रहेगे कि कभी उससे सलाह ले सकते है तो वेलेटीना ने सोच लिया था वह स्वय उनके लिये एक अनुकूल पत्नी सिद्ध हो सकेगी क्योकि वह मानसिक धरातल पर स्वीकार की गयी पत्नी होगी। उसी मुलाकात मे उसने डा पाठक से कह दिया था—मुझे भी "इडिया" दिखाइयेगा। तब डा पाठक ने उसे गम्भीरता से नही लिया था लेकिन जब उसने बार-बार इस बात को कहा तो उन्होने स्पष्ट कहा कि बिना किसी पक्के नजदीकी रिश्ते के भारत मे किसी औरत का किसी मर्द के साथ घूमना ठीक नही समझा जाता। "रिश्ते बनाने मे तो आबजेक्शन" होंगे आपको!" टीना ने उचित समझदारी से कहा था। तब डाक्टर पाठक उसकी मशा जान गये थे।

'मुहब्बत का रिश्ता तो सब बाधाओ को पार कर लेता है न!" कहकर उन्होने लाजयुक्त ललाई चेहरे पर बिखेरती टीना का हाथ थाम लिया था और उसी दिन पहली बार वह उसे कॉफी पिलाने एक रेस्ट्रा में लेकर गये थे। डा पाठक के इम्तहान जिस हफ्ते पूरे हुए उसी शनिवार की शाम उन दोनो का विवाह सीधे-सादे तरीके से पास ही के कैथलिक चर्च मे हो गया था। यद्यपि डा पाठक के भारत लौटने पर उनके माता पिता ने हिन्दू रीति से फेरे लगवा कर विवाह कराया और दावत भी दी लेकिन वे आशकित ही रहे कि यह अग्रेज लडकी कभी किन्ही बातो से व्यथित होकर वापस इग्लैड चली जायेगी।

लेकिन वेलेटीना तो डा पाठक के साथ सहजीवन को अपने लिये एक चुनौती के रूप मे लेकर आयी थी। और वह लार्ड जीसस से यही प्रार्थना करती थी वह उसे इतनी ताकत दे कि वह एक अच्छी पत्नी व अच्छी औरत साबित हो सके।

टीना ने एक करवट बदली और अपना हाथ डा पाठक के गिर्द लपेट लिया। डा पाठक सोचने लगे टेलीफोन का बिल, बिजली का बिल, पानी का बिल, स्टाफ की तनख्वाह मिलाकर दस हजार देय हैं

ग्रौर पिछले माह की ग्रामदनी है—ग्यारह हजार ग्रौर बैक मे जमा है—साढे दस हजार रुपये। पहिले तो काफी धन अग्रिम एव अतिरिक्त जमा रहा करता था। यही ढर्रा चलता रहा तो टीना को तो बिल्कुल तगहाली मे रहना होगा। पिछले हफ्ते वह समय न होने का बहाना करके उसे कपडे दिलाने भी नही ले गये। हे भगवान! कोई ऐसा रोगी भेजो जिसके धनी रिश्तेदार बडी धनराशि नजराना स्वरूप ही देकर जाये।

"पो! पो!" बाहर हार्न बजा। 'कौन है? देखने दो चौकीदार को! जो भी हो, उपयुक्त कमचारियो द्वारा ही ग्राये—यह कैसा लगेगा कि हार्न सुनकर डाक्टर खुद दौडा चला ग्राये।'

बाहर दरवाजे खुलने बद होने की ग्राहटे तथा ग्रादमियो की ग्रावाजे सुनायी दी। फिर, "सा'ब! कोई पेशेन्ट ग्राये है।"

"ग्राते है।" कह कर ग्रपने ऊपर से टीना का हाथ उठाकर बिस्तर पर रखा, उसका माथा चूमा ग्रौर फिर डा पाठक बाथरूम की ग्रोर बढ गये।

नीद से बोझिल टीना ने मुस्कुरा कर पूछा, "चाय बना दू ग्रभी?"

"नही, ग्राकर पियेगे।"

जब डाक्टर बाहर ग्राये तब तक रोगिणी का स्ट्रेचर, एम्बुलस से उतार कर पहिये वाले स्ट्रेचर पर रख दिया गया था। डा पाठक ने देखा रोगिणी के शरीर पर चोटो के निशान थे। वह गहरी बेहोशी मे थी। यू तो डाक्टर उसे देखकर स्थिति समझ गये थे फिर भी ग्राख को हाथ से खोलकर देखा ग्रौर उसे निश्चित कर लिया। "कमरा न० 3 मे रख दो," चौकीदार को कह दिया ग्रौर माधव को ग्रपने परामर्श कक्ष मे ले गये।

"क्या 'केस हिस्ट्री' है?"

"जी, मैं क्या कह सकता हूँ मैं एक इज्जतदार ग्रादमी हूँ ग्रौर ये हमारे घरवालो के बारे मे, दुनिया के बारे मे जाने क्या-क्या बोलने लगती हैं कि—बस मेरा हाथ उठ गया।"

"कोई शामक दवा दी है क्या अभी ?"

"जी हाँ, इतनी शोरपूर्ण, इतनी हिंसा पर उतारू हो रही थी यह कि मैंने वही के डा दिनेश शर्मा को बुलवाया और वह एक काम्पोज का का इजेक्शन दे गये। मुझसे कभी कहती है तुम मर जाओ, कभी कहती हैं तुम्हे मार डालूगी।"

"घर मे कौन-कौन है ?" डा पाठक ने "राइटिंग पैड" अपने सामने खीचा, माधव हाथ जोडकर खडे हो गये—"घर मे सभी हैं—ये सबसे सामान्य है बस मुझे देखकर हिंसा पर उतारू हो जाती है। मैं कुछ कहने की मन स्थिति मे नही हूँ।" माधव ने यू नजरे झुका ली जैसे बहुत व्यथा झेल चुके हो व झेल रहे हो। डा पाठक सहानुभूतिपूर्ण होने की कोशिश कर रहे थे। माधव ने आगे जोडा, "मैं तो इनके सामने आने मे डरता हूँ। अभी फोन करके इनके घरवालो को बुलवाये देता हूँ।" उन्होने अपनी पिछली जेब से अपना पर्स निकाला। उसमे तीन हजार रुपये रखे हुये थे। दो हजार माधव की तनख्वाह थी और एक हजार उन्होने होली पर बैंक से निकाले थे। डा साहब आप अपना इलाज का खर्चा ले लीजिये—माधव ने गिनकर ढाई हजार रुपये डा पाठक की ओर बढाये। "और जो ऊपर से लगेगे मैं लेकर हाजिर हो जाऊँगा। मेरा सम्पर्क सूत्र लिखे देता हूँ'—कहते हुए माधव ने जिस कागज पर ऊपर बीचो-बीच केस हिस्ट्री लिखा गया था उसी पर अपनी बहिन शाति देवी के सलग्न मकान वाले पडौसी का फोन न 52389 तथा सतोष का 92421 अकित कर दिये—वास्तव मे कितनी सही केस हिस्ट्री लिखी थी माधव ने ! बस कुछ पलायन, कुछ आर्थिक चिन्ता मे समझौता हो गया और एक औरत के सम्मान की हत्या हो गयी।

× × × ×

दीपिका की जब आखे खुली तो उसने पाया कि डा पाठक उस पर झुके हुए हैं। उसने उनमे एक ऐसे व्यक्ति की झलक देखी जो उसकी

तकलीफ को समझता हो। दीपिका ने अपने को उनके प्रति आभारी महसूस किया। पास ही जमीन पर टाट बिछा कर उसकी माता सयोगिता बैठी हुई थी।

"माधव कहा है ?"

"वह तो शाति देवी के घर गये है।"

"मेरे लिये कुछ नही कह गये वह ?"

"तुम्हारे लिये इन्हे छोड गये है।"

सयोगिता ने सामने की खाट पर इशारा किया जहा कि दो हट्टे-कट्टे चपरासी आडे लेट रहे थे जबकि उनके सिर दीवार के सहारे लगे खडे थे। वे उसे अनास्था व सदेह की नजर से देख रहे थे।

"अम्मा इन्हे बाहर भेज दो।"

"माधव के हुक्म से ये यही रहते हैं बाहर नही जाते।"

"उनका हुक्म सिर माथे पर, आखिर वह मेरे पति है।"

सयोगिता चुप हो गयी।

"अम्मा तुम, कब आयी ?"

"बेटी मैं आज ही आयी हूँ। उमा ने मुझे फोन करके बुलाया है।"

"अम्मा तुम्हारी गाय की देखभाल कौन करेगा ?"

"पडोसिन नीलम देखभाल कर लेगी। तू जल्दी अच्छी हो जा।"

"मुझे क्या हुआ है ?"

"तेरा माधव के साथ क्या कोई झगडा हुआ था बेटी ?"

"अम्मा वह मुझे लोहे के डडे से मारते है क्योकि मैंने कहा था कि मैं उनके शाति देवी व सतोष के साथ सबधो के बारे मे कलक्टर साहब व अन्य लोगो से सलाह लूगी।

× × × ×

डा पाठक के अस्पताल मे दीपिका को इ सुलिन के इजेक्शन दिये गये। उसके बदन की सारी ताकत निचुड जाती। माता सयोगिता पास ही थी परन्तु बोलना बतियाना तो दूर उसमे आख खोलने की भी ताकत न होती।

डा पाठक ने सयोगिता से कहा वह उसे खूब तेज मीठा सूजी का हलवा और लगभग दस चम्मच चीनी मिलाकर एक गिलास दूध दिन मे तीन चार बार देती रहे। माता सयोगिता कमरे के एक कोने मे जमीन पर टाट बिछाकर बैठी रहती और भगवान के नाम की माला फेरती रहती। वह दीपिका के चेहरे पर निगाह जमाये रखती। और प्रार्थना करती रहती, "हे भगवान यदि यह बच्ची ठीक राह पर है, जैसा मेरा विश्वास है कि है, तो इसे स्वास्थ्य दो। परन्तु यदि यह गलत रास्ते पर चल रही हो, जिसकी जानकारी मुझे न हो, तो कृपया इसे खत्म हो जाने दो।" दीपिका को देखने उमा आती, डैन आते—सयोगिता को असली सहारा, भावनात्मक व मानसिक, उमा ने ही दिया। वह इस पक्ष मे थी कि माधव, जिसने पिटाई लगा कर लडकी के सारे बदन पर जख्म किये हुए है, उसे पुलिस मे दे दिया जाये। परन्तु दीपिका बेहोशी मे भी सारे समय बडबडाती रहती, "माधव, आई लव यू।" अत वह स्वय माधव के विरुद्ध गवाही न देगी, इस आशका के कारण, माधव के स्वय को बचाने के लिये अपने प्रभाव का उपयोग कर बच निकलने की सभावना के कारण तथा पारिवारिक रिश्ता मे यातना के बीच पुलिस की उदासीनता की नीति के कारण वह बात को आगे न बढा पायी।

त्रिवेणी भी आती और "क्या सही है, क्या गलत है" इस पर अपना माथा न खपा कर काकूजी जो कह उसी पर चलना उनका धर्म

है, इस बात से आश्वस्त होकर दिन मे तीन घटे दीपिका के कक्ष मे बैठने की अपनी "टर्म," अपनी अवधि पूरी करती जब कि सयोगिता स्नान व भोजन के लिये उमा व डैन के घर जाती। काकूजी ने कहा था, "वहा जाकर बैठो और टोह लेती रहो ताकि माधव पर कोई इल्जाम आता हो तो उसके खिलाफ हम बोल सके।" जो पिता व माता अपने पुत्र को निश्छल, सहज व जिस पर उसका अधिकार था, वह प्यार न दे सके, उसके अपराधिक काय करने मे उसके पक्के साथी बन गये थे।

माधव जब आते तो इशारे से एक पलग पर आडे लेटे हुए दोनो चपरासियो को इशारे से बुला लेते, एक दिन दीपिका ने अपने पास की खिडकी मे से उन्हे इशारा करते हुए माधव की एक झलक देख ली थी। उसने आवाज लगायी, "आइये माधव! माधव सुनो!" पर वह तो जानबूझ कर दूर सरक गये और इतनी तेज आवाज मे कि दीपिका सुन ले, कीमतसिह व साहबसिह से कह रहे थे "उत्तेजित तो नही हुई थी?"

वे बोले, "नही साहब।"

"अच्छा हम चलते हैं अगर ये उत्तेजित हो तो हमे फोन करना। नम्बर याद है दोनो?"

"हाँ साहब।"

"अच्छा!" कह कर माधव चल दिये। मम्मी ने पूछने पर बताया कि माधव लिपिको की नियुक्ति हेतु साक्षात्कार लेने अलवर गये हैं।

जब यह वार्ता दीपिका ने अपने कानो से सुन ली और उनका बाहर का कायक्रम जान लिया। तो उसे दिल मे माधव से कोई उम्मीद न रही और इसके तीसरे दिन अस्पताल मे कुल एक सप्ताह के ठहराव के बाद उसे छुट्टी मिल गयी और वह उमा व डैन के घर उनके फाम पर रहने चली गयी।

× × × ×

उमा व डैन के फलो के वगीचे मे पेडो के वीच वने छोटे से उस पक्की झोपडीनुमा मकान मे रहना अपने आप मे एक अद्वितीय अनुभव था । प्रकृति का नैकटय, जब जो फल खाने की इच्छा हो, वही तोडकर खाने की सुविधा, एकदम ताजा फलो का पहिले न चखे स्वाद का वैशिष्टय, उमा की निश्छल प्रम द्वारा प्रेरित होकर उसके स्वास्थ्य हेतु उपचार के लिये दवा खरीदने व खिलाने की व्यवस्था तथा माता सयोगिता द्वारा की गई आदश गह व्यवस्था, डैन भाई के उसे अपनी जीप मे होटल जाते वक्त घुमा लाने के कायक्रम तथा उनकी घर वाहर हँसने हँसाने की आदत के वीच दीपिका ने पहली वार उनके साथ निवास किया । यदि डैन भाई दीपिका का गम्भीर चिन्ता मे खोयी हुई देखते ता कहते, "आज पता है दीपिका, होटल मे क्या हुआ ?"

"क्या हुआ था ?" दीपिका उदासीनता से कहती ।

"एक आदमी आया और वोला, "होटल का एक कमरे का किराया कितना है ?"

"मैंने कहा, "छोटे कमरे का पचास तथा वड का सौ रुपये प्रतिदिन ।"

"तो वोला, "मेर पास पिचहत्तर रुपये है, आप दोनो के वीच के आकार का एक कमरा झट तैयार करा दो ।" तो उसे वरबस हँसी आ ही जाती । यद्यपि दीपिका जानती थी कि ऐसा कुछ नही हुआ होगा परन्तु उसके प्रति स्नेह के कारण, उसे हँसती हुई देखने की खातिर उन्होने जो यह चुटकुला वनाया है तो उसका दिल उनके प्रति कृतज्ञता से भर आता । हँसी को तो सारी दुनिया के चिकित्सा वैज्ञानिक सवश्रेष्ठ पोषक (टॉनिक) मान चुके है, इसके अतिरिक्त अनुभव कहता है कि कृतज्ञता भी एक महान सकारात्मक भाव है । वह पाती कि उसका तनाव वहुत कम हो गया है । और जो विचार लगातार उसके दिमाग पर हथौड की चोटें लगा-लगा कर उसमे छेद किये दे रहा था कि "मेरी क्या गलती थी कि माधव ने मुझे त्याग दिया," वह हथौडा दिमाग पर छेद करना वद कर देता और उसे वस्तुनिष्ठ होकर सोचने मे मदद मिलती ।

लेकिन अनावश्यक रूप से इसुलिन के इजेक्शन और उसके वाद अप्रत्याशित आदश व्यवहार ने दीपिका के ऊपर कुछ ऐसा असर डाला

कि उसे यूँ लगने लगा कि हर व्यक्ति से इसी श्रेष्ठ व्यवहार की अधिकारिणी है।"

मुदित भाई पुराने विगलित नोटो का एक ब्रीफकेस लेकर जयपुर के खजाने मे जमा कराने आये जहा दफ्तरी कार्यवाही के बाद उन्हे कई अधिकारियो की उपस्थिति मे कोष भवन के बीचो-बीच स्थित आगन मे जलाया जाना था तो दीपिका को बहुत बुरा लगा कि यह मुदित भाई क्यू नही विशेष अनुमति लेकर उसे भी यह दृश्य दिखाने ले गये। जब मुदित भाई शाम को घर लौटे तो उसने उनकी शक्ल देखते ही बोलना शुरु कर दिया—"कुछ भी हो मुदित भाई, डैन भाई, डैन भाई है और आप आप ही हो।"

मुदित भाई हतप्रभ तो हो गये परन्तु बोलने की खातिर बोले, "वह तो है ही कि डैन डैन, तथा मै, मै ही हूँ।"

"मेरा मतलब यह नही है। आप इतना भी नही समझ रहे क्या? मेरा मतलब है कि हमसे डैन भाई ने बहुत अच्छा और आपने बहुत बुरा व्यवहार किया।"

"कैसे?" मुदित भाई को कुछ प्रत्युतर तो देना ही था।

"आप अक्सर रोजाना मेरी पिटाई लगाते थे जबकि डैन भाई तो इतनी खुशी से हमे घुमाने ले जाते हैं, पिक्चर व अपने दोस्तो के यहा ले जाते हैं कि लगता है, भाई हो तो ऐसा।"

मुदित भाई का कलेजा मुह को आ रहा था वह नजरें झुकाये-झुकाये ही बोले, "मैं कपडे बदल आऊ जरा।" और दूसरे कमरे में चले गये।

उक्त वार्तालाप उमा ने भी सुना और डैन से सलाह कर दीपिका को वह किसी अच्छे मनोवैज्ञानिक चिकित्सक को दिखाना चाहती थी। डा पाठक के यहा दीपिका के भर्ती होने व इलाज को इस परिवार ने औचित्य के साथ नही देखा था। अत अब वे उसे राजकीय मनोवैज्ञानिक चिकित्सालय मे ले गये।

वहा प्रभारी चिकित्सक को उन्होने पिछले इलाज के "प्रैस्क्रिप्शन" के कागजात दिखाये तो उन्होने प्रश्न किया, "क्या ये किसी अवस्था मे उत्तेजित होने लगी थी ?"

"कैसे डाक्टर साहब ?"

"जैसे किसी को मारे पीटें या वस्तुओ की तोडफोड करे ?"

दोनो ने सयोगिता की ओर देखा, "नही ऐसा इसने कभी नही किया क्यू कि हमने देखा भी नही तथा यदि अपने श्वसुर कुल वालो के समक्ष किया होता तो वे अवश्य कहते क्यूकि वे तो इसकी बात बात के तिल के ताड बनाया करते थे।"

जब दम्पति ने यही बात अपने शब्दो मे डाक्टर से कही तो उन्होने कहा कि फिर मुझे दुख है कि यह "फॉल्स मेडीकेशन," गलत दवा प्रयोग का मामला है तथा इसकी एन्टीडोट, इसकी काट के रूप मे दीपिका को विद्युत के झटके लगाने होगे। यद्यपि यह एक खतरनाक इलाज है लेकिन व्यावहारिक रूप से खतरा न्यूनतम है।"

उमा ने अपने कमजीवन के आरम्भ मे एक बगीचे मे एक पैस्ट कन्ट्रोलर का काम किया था और यह काय करते वक्त देखा था कि यदि किसी पौध मे कोई रोगाणु न हो और उन्हे उसकी दवा दे दी जाये तो उपचार स्वरूप वहा की मिट्टी भी हटानी होती है। दीपिका को इन्सुलिन दे देकर उसे एक प्रकार से निरस्त्र कर दिया गया है तो उसके एवज मे वह भी दूसरो के साथ ऐसा ही करती है जिसका इलाज यही हो सकता है कि वह अपनी जडो मे से जीवन रस खीचे, भरे दिल से परिजनो ने दीपिका का वहा छोडा।

मानसिक चिकित्सालय, जेल, पुलिस थाना आदि के नाम पर सभ्य समाज मे नाक भौ सिकोडी जाती है और इनके बारे मे कोई बात करना अच्छा नही माना जाता परन्तु दीपिका ने बाद मे ये जाना कि कुछ विषयो को टैबू बना लना, उन पर वार्ता न करना गुत्थियो व उलझनो को बढाता है जबकि खुलकर वार्तालाप करने से हमारे विचारो मे सुलझाव आता है व हम स्वस्थतर अनुभव करते हैं। यद्यपि ये तथ्य तो अब अधिक से अधिक लोग पहिचान रहे है कि जल मे बन्द हर व्यक्ति अपराधी नही

होता। प्रभावशाली लोगो की रंजिश के शिकार अनेक निरपराध अन्दर व अपराधी बाहर होते हैं। उसी प्रकार मानसिक चिकित्सालय मे बन्द हर व्यक्ति पागल नही होता। दीपिका ने ये तथ्य प्रमाणित करने वाले उदाहरण वहा देखे। उसने अन्दर बन्द महिलाओ मे असामान्य व्यवहार के प्रकार, कारण व दिये जाते इलाज देखे तथा इस माध्यम से तथा समाज मे पनप रही असमानता व अत्याचार की सीमा तक उनका पोषण करने वालो की हठधर्मिता मे उसका परिचय हुआ। अनेक दुर्भावनाओ की शिकार महिलाओ के बारे मे जानकर वह स्वय को भी पहिचानी और उसका निर्णय था कि अपनी स्वय की नीव पर खडे होना ही आत्म सम्मान से जिंदा रहने का तरीका है।

जैविक बनावट मे खामियो के कारण असामान्य रोगियो को अलग निकाल दे तो मानसिक रोगियो के रोग के पीछे जो दो कारण हैं, वे है—

1 व्यक्ति की स्वय की गलत मनोवृत्तियाँ तथा 2 दूसरे लोगो के द्वारा उसका दमनपूर्ण शोषण और सबसे अधिक मामलो मे 3 इन दोनो का सयोग यानि व्यक्ति को इसाफ न मिलना व स्वय की कमियो के कारण प्रतिकार करने मे असमर्थता।

इन रोगो से निकलने के भी रास्ते है–अन्य लोगो को भी स्वय की तरह समझना एव स्वय का अन्यो की तरह अह भाव को अपने ऊपर हावी न होने देना-वह हम यू विचार कर रोक सकते है कि इस विशाल ब्रह्माड मे धरती एक छोटा सा बिन्दु है और हम अरबो मानवो मे से एक हैं, हमारा अस्तित्व ब्रह्माण्ड मे धरती पर के एक कण से भी कम है तथा हम मर्त्य है।

आत्मानुशासन यानि स्वय ही विवेक द्वारा सही रास्ते पर चलना यह वह सडक है जो हमारी यात्रा को सुगम बनाती है।

यदि हम स्वानुशासन का अभ्यास करते है तो इसका अर्थ है कि हमने आधी जीत हासिल कर ली, यानि हम रास्ता ढूढ चुके है, शेष बचा है तो हमारा लक्ष्य निर्धारण, हम सही मजिल चुनकर ही तो सही जगह पहुचेंगे हम दिल्ली जाने वाली सडक पर चलकर ही तो दिल्ली पहुँचेंगे।

इनके अलावा उच्च मनोबल व दृढ इच्छाशक्ति व अन्य सद्गुणो का भी मानसिक स्वास्थ्य मे अपना अपना महत्व है।

मानसिक चिकित्सालय से स्वस्थ होने के प्रमाण पत्र के साथ ही उसे छुट्टी दे दी गयी लेकिन दीपिका अभी भी मानो एक दु स्वप्न मे जीती थी। सारे वक्त वह इस भाव के नीचे दबी रहती कि उसे दूध मे से मक्खी की तरह निकाल फेंक दिया गया है। वह सोचती कि सतोष व शानी, माधव की सगति मे अब वैसा ही महसूस कर रही होगी जैसा कि वह स्वय किया करती थी स्नेहित, सतुष्ट, महत्वपूर्ण और ऐसे कि जसे दुनिया उसके कब्जे मे हो। और वह खुद, एक ऐसे मरुस्थल की यात्री बन गयी है जिसे आराम के लिये कही छाव भी नसीब न हो। यादे उसका पीछा नही छोडती थी। उसे वे क्षण याद आते जब माधव गहरी कामना के साथ उसे एकटक ताकता था और उसकी कामनाओ की क्रियान्विति पर दीपिका की भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक तृप्ति निभर करते थे अत उनकी झलक पाते ही दीपिका का हृदय जोर-जोर से धडकने लगता था, तीव्र गति से स्पन्दित होने लगता था। उसकी एक निगाह उसके कई दिनो को सार्थक कर देती थी। उसका यह हाल पाच वष तक रहा था और अब वह सोचती थी कि यही हाल सतोष का होगा।

उसे वे अवसर याद आते जबकि माधव उसे गणमान्य व्यक्तियो के यहा ले जाते, और दुनिया म उसका परिचय कराते थे। माधव एक योग्य व ईमानदार अधिकारी थे—अपने काय को पूण दक्षता व निष्ठा से करते, अपने अध्ययन मे छोटी-छोटी बातो का भी ध्यान रखते—अपना श्रम व समय अपने हाथ मे लिय गये काय मे बिताते। वह दूसरा के धन पर कभी निगाह रखते ही न थे कि उसे अपने लिये प्राप्त करने की सोचते, इसी कारण उनकी अभिव्यक्तियो मे ऐसी स्पष्टता, खुलापन एव अपनी निस्वाथता के कारण ऐसा साहस था कि वह किसी व्यक्ति को अप्रिय लगने वाली बात भी आसानी से कह देते। अय व्यक्ति जो माधव से असहमत होने पर उसका विरोध करते वो भी उनकी निष्ठा और ईमानदारी की प्रशसा तो करते ही थे।

वह याद करती कि जब माधव टूर पर जाते या किसी तनाव के कारण दीपिका से हफ्तों तक ठीक से बात न करते, उसमे रुचि न दिखाते तब भी दीपिका पिछले प्रेमपूर्ण बिताये गये क्षणो पर ही अपना

ध्यान केन्द्रित रखती, उनकी देखभाल व सेवा तथा अपनी नौकरी तथा गृहस्थी के अन्य कर्त्तव्यों का पालन करती रहती जब तक कि वह उसकी ओर उन्मुख न हो जाते।

इसी कारण दीपिका का मनोबल भी ऊंचा होता तथा वह तनाव मुक्त महसूस करती। वह माधव की आभारी महसूस करती थी कि उन्होंने उसे अपना साथ दिया लेकिन अब उसकी चिन्ता यह थी कि वह सोचती थी कि यही मंच अब माधव ने सनोप का दे दिया होगा—जैसे कि एक बालक की प्रिय वस्तु छीन कर दूसरे को दे दी जाये। लेकिन जब बिना उसकी गलती पर माधव न पीट पीट कर उसे चित्त कर दिया, इन्जेक्शन लगाकर बेहोश कर दिया और मानसिक चिकित्सालय में भर्ती करा दिया तो अब वह उससे क्या उम्मीद रखे? उससे कोई उम्मीद न रखे, और अन्य किसी से नहीं रखने का औचित्य अगर उसके सामने स्पष्ट हो तो वह क्या करे, कहां से प्यार ढूंढे, कहां जिन्दगी ढूंढे? घर पर बच्चे उससे अपने स्कूलों का, अपने साथियों का वर्णन करते तो वह ध्यान से सुनती तथा उपयुक्त प्रतिक्रिया भी प्रदर्शित करती जो कि एक स्नेहिल माता की होनी चाहिये लेकिन उसे यह चिन्ता थी कि वह माधव के बिना बच्चों को कैसे पालेगी।

स्कूल में भी वह कक्षायें लेने के अतिरिक्त सारे वक्त कापियां जांचने तथा अन्य कार्य करने में बिता देती। लेकिन मध्यकाल अवकाश में वह कुछ दिनों से श्रीमती रागिनी गुप्ता के कक्ष में बैठने लगी थी। वैसे तो दीपिका श्रीमती रागिनी गुप्ता के उच्च मनोबल तथा प्रसन्नतापूर्ण धारणा से पहिले से ही प्रभावित थी लेकिन उसने उन्हें कई बार झगड़ों में शामिल होते हुए देख लिया था। जिन व्यक्तियों के साथ उनकी सर्वोत्तम धारणा होती उनके साथ ही तू-तू, मैं-मैं भी हो जाती और इस घटना के बाद उनका मनोबल ऊँचा तथा दूसरे व्यक्ति का सामान्य या नीचा होता था।

दीपिका को आश्चर्य होता था कि यह श्रीमती रागिनी गुप्ता स्कूल की प्रधानाचार्य महोदया से भी उन्हें बिल्कुल बराबर के स्तर पर रखकर व्यवहार करती जबकि दीपिका का यह दृढ़ विश्वास था कि अपने नियंत्रक अधिकारी को ऊंचा स्थान दो, उनकी हर आज्ञा को निष्ठापूर्वक मानो,

उन्हें पूरा सम्मान दो, उनकी कमियो पर ध्यान न दो, आवश्यकता पडने पर उनकी व्यक्तिगत सुविधा का ध्यान रखो और अपनी परेशानी तो उन्हे तभी बताओ जब वे उसे दूर करने मे समथ हो। जब उनसे उनकी सामथ्य के अन्दर की रियायत लेनी हो तो स्थिति की पूरा व्याख्या कर दो, तब वे अवश्य ही मदद करेंगी ऐसा उसका विश्वास था जो कि उसके अनुभव से पक्का होता गया था।

वैसे तो रागिनी दीपिका को हमेशा ही अपने भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष मे आकर बैठने का निमन्त्रण देती रहती थी लेकिन दीपिका इसी भय से नही जाती थी कि उनके सम्बन्ध कही बिगाड की राह पर न आ जाये। लेकिन इन्ही दिनो विद्यालय मे प्रयोगशाला सहायक के नये पद का सृजन हुआ और यह पद सम्हाला एक नव-स्नातिका कु० धरती सिन्हा ने। इस बच्ची की लम्बाई थी पाच फीट चार इच जो कि दीपिका के विद्यार्थी काल मे सहपाठियो की आकाक्षा वाली ऊँचाई थी। उसके नैन नक्श तथा आकृति मानो साचे मे ढले हुए थे। हमेशा मुस्कुराने को उत्सुक, ताजगी बिखेरने वाली यह बच्ची इस अल्प वतनिक पद पर आ लगी थी। दीपिका ने इससे जब थोडी बात-चीत की तो इसने भी उसे प्रयोगशाला कक्ष मे आकर बैठने का निमन्त्रण दिया और दीपिका नियमित रूप से तो नही वरन अक्सर वहा बैठने लगी।

भारत मे यदि महिलाये एक साथ बठने लगे और मित्रता स्थापित होने की कोई सभावना हो तो उसकी सबसे पहिली शत तो यह है कि वे विस्तार से अपने परिवार के सदस्यो का तथा उनके कारण उनके जीवन मे मिले सुख-दुख का वरान करें। रागिनी गुप्ता के पति एक उच्च पदस्थ अधिकारी थे और वह उन्हे चाहते भी बहुत थे लेकिन उनकी वास्तविक पीडा यह थी कि अपनी माता, बहिनो एव भाइयो के समक्ष वह उन्हे महत्व नही देते थे। धरती के दो बहिनें तथा दो भाई थे। बडी बहिन की शादी हो चुकी थी अब सबसे बडे भाई की बारी थी। धरती की चिन्ता यह थी कि उसका रूप यौवन कम होने से पहिले ही उसकी शादी अच्छी जगह हो जानी चाहिये। दीपिका भी इस सगत मे खुली। उसने बताया कि पाच वप तक तो वह अपने पति के साथ रही लेकिन उसके बाद उसके पति ने एक दूसरी औरत सन्तोष के साथ

रहना शुरू कर दिया था। फिर पति का तबादला बाहर हो गया लेकिन कुछ वर्ष पूर्व जब वह एक बार उनके घर गयी तो वहा उनके माता पिता तथा बहिन व भाजा उपस्थित थे। वह सबकी सेवा करती रही। उसके पति ने एक निगाह भी उसे नही देखा, कोई बात नही लेकिन उसने जब पति को स्वय से दूर रहने के वादे करते सुन लिया तो वह अत्यन्त व्यथित हुई। वह घर के सामने बने हुए मन्दिर मे स्वेच्छा से पहली बार जाने का उपक्रम कर रही थी कि पीछे से उसके पति आ गये।

"कहा जा रही हो?"

"सामने मन्दिर मे।"

"क्या?"

"भगवान जी से पूछूगी मेरी क्या गलती है जो मेरे पति मेरी निष्ठापूर्ण सेवा के बाद भी नाराज रहते है।"

"बकवास बद करो, मुझे मालूम है तुम कलैक्टर साहब के यहा जा रही हो मेरी शिकायत करने।"

"नही अभी तो नही जा रही हूँ लेकिन जाऊँगी जरूर किसी दिन।"

ये बाते सुनकर दीपिका के पति उसकी पिटाई लगाते हुए उसे घर ले आये। अपने मित्र डाक्टर से नीद का इजेक्शन लगवा दिया और फिर मानसिक चिकित्सालय मे डाल दिया कि यह न जाने क्या-क्या बकवास कर रही है।

मानसिक चिकित्सालय के डाक्टर ने उसे इन्सुलिन के इजेक्शन दिये जिससे उसके शरीर की सारी ताकत जैसे निचुड जाती थी। उन्होने परिचारको से उसे भारी चीनीयुक्त व्यजन खिलाने को कहा। परिचारक का कार्य उसकी माता ने किया और उसे पहिले ही उनसे कोई शिकायत नही थी। अगर छोटी-मोटी होंगी भी तो वे जाती रहीं लेकिन वह अब इतनी साहसी हो गयी थी कि किसी का अन्याय सहन न करती। पूर्व मे जिन लोगो ने उस पर अन्याय किये वे दूर रहे, तो ठीक था, लेकिन अगर वह परम हितैषी होने का अभिनय करना चाहे तो दीपिका उन्हें

खुलकर डपट देती थी—यह एक दूसरी वास्तविक बीमारी बन गयी—अब की बार विद्युत झटको के द्वारा मानसिक चिकित्सालय मे उसका इलाज हुआ।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सालय मे ठीक होने के पास जो रोगी आ जाते हैं उनकी डाक्टस के साथ एक मीटिंग होती है। दीपिका ने इस मीटिंग मे किसी अन्य रोगी के बारे मे टिप्पणी करते हुए कहा था कि कोई भी काम अगर हम तनावयुक्त होकर करते हैं तो उसके परिणाम दुखद ही होंगे। हमारी सामान्य मन स्थिति हमारे मानसिक स्वास्थ्य की निर्णायक है, परन्तु वह स्वय अपने मामले मे इस बात को भूल चुकी थी। उसे चिन्ता थी कि परिस्थितियो मे कोई परिवतन नही हुआ है, कही वह फिर से रोगग्रस्त न हो जाय। उसने अपना इलाज करने वाले डाक्टस से यह बात कही तो उन्होने यही जवाब दिये कि हम आपको दवा देते रहेंगे और आप बीमार नही हागी। परन्तु यह रीटा थी जिसने कि इस समस्या का वास्तविक हल उसे बताया। उसने कहा, "इसके लिये तुम्हे चिन्ता छोडनी होगी और इस तथ्य को समझना होगा कि आप किसी दूसरे व्यक्ति को बदल नही सकते, ऐसे प्रयत्न व्यथ सिद्ध होंगे।"

अत दीपिका ने सतत् चिन्ता तो त्यागी परन्तु उसे यही बात त्रस्त व पस्त किये रहती थी कि सतोप, मधुसूदन, शानी तथा विहारी माधव के साथ पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाते हुये कितना अच्छा महसूस करते होंगे!

श्रीमती रागिनी गुप्ता ने उसकी पूरी बात सुनकर यू गौर किया। "यह तो सम्भव नही है कि वह लोग तुम्हारी तरह खुश हो सकते हो। उनका सामाजिक जीवन तुम्हारी तरह खुशगवार होन का क्या सवाल है? अच्छा बताओ वे कौनसे व्यक्ति होंगे जो उनके सम्बन्धो के बारे मे जानकर उन्हे अपने घर मे बिठाना, उनका स्वागत करना, उनकी खातिर करना पसन्द करेंगे? तुम्हारी और उनकी मन स्थिति मे "सामाजिक स्थिति" का अन्तर है। क्या तुमने कभी इस बात पर गौर नही किया?"

यह बात दीपिका को एक तीर की तरह लगी जो सही जगह पहुँच गया व आगे चोट को भरने वाला एक मरहम लगा हुआ था। दीपिका

के बहुत प्रकार के दुखदायी विचार इस कथन के सामने पस्त हो गये। अब वह समझने लगी कि उसके पति की क्या गलती है। उसे पत्नी से प्यार न सही, बहुत से लोगो को नही होता, बच्चा से प्यार विशेष न सही जबकि यह अधिकाश लोगो को होता है लेकिन अगर उसे सतोष से व शानी से भी सच्चा प्यार था तो उसे उनके उन्नयन के लिये मानवीय स्तर पर प्रयत्न करने थे, यह तो अनुचित था कि दीपिका और अपने बच्चो को छोडने के वादे कर रहे है।

उन्ही दिनो दीपिका ने फ्रॉयड के शिष्य एडलर जुग को पढा। अब तक उसने मनोविज्ञान के क्षत्र मे फ्रॉयड पढा था जिसका कहना था कि मानव प्रयत्नो की प्रेरणा सेक्स होता है। एडलर जुग एक अच्छा शिष्य था जिसने अपने शिक्षक की विचार शृखला को आधार बनाया और आगे बढकर ये निष्कप निकाले कि व्यक्ति अपने जीवन मे साथकता की तलाश करता है। सेक्स ही अकेला प्रेरक नही है, एक मुस्कान, थपथपाये जाना तथा शाबासी, डाट, आशीर्वाद इन क्रियाओ का यौन-चेष्टा मे कोई सम्बन्ध नही है परन्तु ये भी जीवन को निर्धारित व सयमित करने वाले प्ररक हैं, दीपिका को जुग की इन बातो मे सचाई जान पडी क्योकि वह आगे आने वाले जीवन मे सेक्स रहित जीवन जीने जा रही थी लेकिन वह निरर्थक नही हो, इस सम्भावना के प्रति आश्वस्त करता था। जुग के विचार दीपिका मे चल रहे इस द्वन्द का उत्तर थे कि "यदि एक औरत का पति उसे छोड दे तो क्या वह मर जाये ?" उत्तर था, "नही, उसे जीना चाहिये अपने बच्चो के लिये, ज्ञान प्राप्ति के लिये, स्वय अपने लिये और अपने जीवन मे साथकता की तलाश के लिये।"

माइकल जैक्सन पश्चिमी देशो मे पॉप सगीत का बेताज बादशाह है। एक बार एक घण्टे का कायक्रम उसके जीवन, काय तथा जीवन पद्धति के बारे मे टेलीविजन पर प्रसारित किया गया। इसमे बताया गया कि जब उसके मस्तिष्क मे कोई धुन नही आ पाती तो वह अपने मस्तिष्क को उद्दीप्त करने के लिये विद्युत के झटके लेता है। और तब उसके मस्तिष्क मे स्वर लहरिया उभर कर आती हैं। दीपिका को सबसे बडी तकलीफ तथा माधव के प्रति रोष इसी कारण थे कि उन्हाने उसे इतना नीचे गिरा दिया कि उसे विद्युत झटके लगवाने के लिये भेजा गया। माइकल जैक्सन की कहानी सुनकर तो वह दग रह गई। और उसन सोचा, कि जमीन पर गिरकर, थोडा रोकर, जैसे बच्चा

फिर से उठकर चलने लगता है वही जीवन की वास्तविक गति है। उसे भी अपने जीवन की उन्नति के लिये प्रयत्न करन चाहिये। जिन्दा रहते हुए जीवन खत्म नही हो जाता।

दीपिका ने अपने व्यवसाय मे उन्नति के लिये आगे अध्ययन करना शुरू किया। यद्यपि वह सारे वक्त परीक्षा की तैयारी ही नहीं करती रहती थी पर तु पाठ्यक्रम पढने से, पढने का उसे जो शौक था वह पुनर्जीवित हो गया। वह शेक्सपियर, बर्नार्ड शॉ, फ्रांसिस बकन, मैथ्यू आरनल्ड को रातो को जाग जाग कर पढती। चार्ल्स डिकन्स ने उस पर गहरा प्रभाव डाला। हि दी मे प्रेमचन्द, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, अमृता प्रीतम, शिवानी ने उसे झकझोर दिया। इसके अलावा दीपिका के स्वास्थ्य लाभ की प्रक्रिया मे लोगो की उत्साहजनक टिप्पणियो ने भारी योगदान दिया। सहकर्मी श्रीमती सूर्या जो कि जि दगी पर गहरी पकड रखती थी, और समस्त सहकर्मी एव अधिकारी जिनके सुझावो एव अध्ययन के नतीजो के कायल थे वह एक साथी अध्यापिका से कह रही थी, "ग्यारहवी" कक्षा की छात्रायें दीपिका से पढना चाहती है, वे आपस मे कह रही थी "हाय रे! दीपिका मिस ही हमको पढाने आये! उन्ही को हमारी कक्षा मिले!"

इसके अलावा दीपिका अपने प्रति किये गये एक जूनियर डाक्टर मिस कृष्णा शर्मा के उपकार को भी नही भूलती थी जिन्होने उससे चुपके से कहा था कि "मैं तुम्हे हमेशा स्वस्थ रहने का गुर बता दूंगी," और जब उसने कहा "बताइये," तो वह बोली, "अभी नही। तुम्हारे जाते वक्त बताऊगी," और उस उपयुक्त समय पर उन्होने बता दिया कि "तुम कभी दवाई खाना मत छोडना।" यद्यपि भगवान की प्रार्थना तथा सतत् कम करने के द्वारा एक दिन दीपिका को यह एक निर्णायक अनुभूति हो गयी थी अब उसे और अधिक दवा नही खानी चाहिये पर तु इन डाक्टर न उसके प्रति सकडो रोगियो के बीच जो विशेष सद्भावना दिखायी थी उसे दीपिका कभी नही भूली और उनके प्रति आभारी होने से दीपिका को स्वस्थ रहने की प्रेरणा दी।

दीपिका ने अपनी छोटी छोटी सफलताओ को गिनना और उनसे खुशी अनुभव करना सीखा। एक बार एक साथी अध्यापिका का सौ रुपये का नोट गिर गया। स्कूल की छुट्टी हो चुकी थी अत सभी भागने

की जल्दी मे थे परन्तु दीपिका ने उनकी सहायता के लिये ठहरना उचित समझा। उसने बाई को बुलाया, स्टॉफ रूम खुलवाया और वह सौ रुपये का नोट मेज के नीचे जब मिल गया और साथी अध्यापिका ने उसे ठहरने के लिये धन्यवाद दिया तो दीपिका को खुशी हुई। लगा कि उसने एक अच्छा काम किया है। खुशी क्या है ? हमने अच्छा व्यवहार किया है इस बात की अनुभूति ही खुशी है।

दीपिका के स्वास्थ्य लाभ मे एक बडा योगदान इस बात का भी रहा वह माधव को खूब पत्र लिखती थी। उसने मानसिक चिकित्सालय के डाक्टर से कहा था, "डाक्टर साहब, मेरी समस्या यह है कि मुझे अपन पति की बहुत याद आती है जबकि वह हमसे मिलना भी गवारा नही करते।" और डाक्टर साहब ने जवाब दिया था, "आप उन्हे पत्र लिखा करो।" दीपिका ने डाक्टर साहब की इस सलाह को गाठ मे बाध लिया था और वह रोजाना रात मे बच्चो को सुलाने के बाद माधव को पत्र लिखने बैठ जाती। सामान्यत उसके पत्र यू होते—

आदरणीय प्रिय माधव,

कैसे है आप ? उम्मीद है कि अच्छे होगे हम लाग ठीक तरह से है सिवाय इस बात के कि हम आपको बहुत याद करते है। आप पता नही हमसे मिलने कब आओगे।

आप को यह जानकर खुशी होगी कि सौहाद अपने स्कूल मे होने वाले नाटक के लिये आज चुन लिया गया है—नाटक का शीषक है "जुल्म से जग" सौहाद एक जागरूक ग्रामीण बना है इसमे, उसके लिये कुरता पाजामा खरीदने है—आप कृपया सौ रुपये जरूर भेज देना।

समृद्धि अपनी कक्षा म सस्कृत म उच्चतम अक लायी है 10/10 वह कह रही है कि पापा को भी सस्कृत पसन्द है और मुझे भी। उसने बहुत सुन्दर राखिया बनानी भी सीखी हैं।

हा कल सौहाद ने एक बडी प्यारी बात कही आप भी हँस दोगे। मैं कह रही थी कि ये जो पडित जो विवाह आदि के मुहूत निकालत है वे स्वय अपनी सुविधा के अनुसार निकालते है कि उन्नीस तारीख को माथुर साहब के यहा शादी है तो बीस को गोयल साहब के यहा रखवा

एकाकी, नि सवाद मर जायेगे। पीडा पाकर मानव को उससे बचे रहने के उपाय भी ढूढने चाहिये और दूसरो की उन्नति मे सहयोग देना व अपनी उन्नति के लिये सतत् लगे रहना चाहिये। अपने काय को निष्ठा-पूर्वक करना उसे खुश रहने का एक माध्यम प्रतीत होता व इसमे उसे साथकता का आभास होता। सगीत फिर से उसे विशेप खुशी देने लगा।

× × × ×

अपनी कमिया दूर करने के लिये दीपिका छोटे-छोटे चाटस बनाती। जैसे कि उसकी आदत थी कि जब कभी तनाव हो, या पानी-पीने या अन्य किसी कारण से रसोई मे जाये तो नमकीन, या दाल या कोई फल उठा कर खाने लगती। उसने खाने की अलमारी के ऊपर एक छोटा सा चाट बना कर लगाया—

क्या भोजन खाना ही तुम्हारे जीवन का उद्देश्य है ?

फिर कुछ दिन दिन बाद दूसरा लगाया।

दीपिका तुम इतना खाओ, इतना ठूसो, इतना टूगो कि कोई पहचान ही ना सके कि तुम एक फुटबॉल हो या भैस ।

जब इस वाक्य ने भी उसे उद्वेलित करना कम कर दिया तो उसने अगला चाट लगाया—

खाद्य-अखाद्य कुतरते रहना चूहो का काम है।

इन तथा अन्य तरीको से दीपिका अपनी कमियो को दूर करने की चेष्टा करती रही। वह सुबह जल्दी उठकर दौड लगाने जाती—सडक पर अन्य स्त्रिया, पुरुष व बच्चे भी उसे दौडते मिलते, तो उसे अच्छा लगता।

उमा की सलाह पर दीपिका ने जो सुखद, सुविधाजनक मकान किराये पर लिया था, उसी मे एक इजीनियर सजानी भी निवास करते थे। दीपिका और वह अलग-अलग अखबार खरीदते थे। अत दूसरे अखबार का भी लाभ उठाने के लिये वह एक दूसरे से थोडी सी बातचीत कर लेते थे। कुछ दिन बाद दीपिका को मालूम हुआ कि इनके माता पिता की मृत्यु हो चुकी है तथा भारतीय तरीके से इनकी शादी की बातचीत करने वाला कोई नही है। दीपिका ने प्रस्ताव किया हमारी अनेक सहकर्मी है जो कि आपको पसद आ सकती है और उनसे दीपिका ने श्री सजानी को मिलाने का प्रस्ताव किया। कुछ दिन तक उन्होने कोई जवाब नही दिया। दीपिका ने अपनी मकान मालकिन से कहा कि आप उनसे बात करियेगा। उन्होने अपने पति के द्वारा बात की। एक हफ्ते बाद दीपिका की मकान मालकिन आयी और बोली कि सजानी कह रहा है कि दीपिका बडी मुसीबत मे है मैं इससे विवाह कर इसको सहयोग देने के लिये तयार हूँ। दीपिका ऐसे किसी प्रस्ताव पर विचार नही कर सकती थी। क्योकि वह प्रतिबद्ध थी। यह प्रतिबद्धता के प्रति आस्था स्त्रियो को भटकाव से बचाती है और उन्हे नैतिक बल प्रदान करती है। लेकिन उसे यह प्रस्ताव तरगित तो कर ही गया और उसका आत्मविश्वास इस घटना से बढा ही।

× × × ×

दीपिका अपने निजी दुख के बारे मे सोचती तो पाती कि यह माधव का नशे की ओर पलायनवाद था जिसके कारण वह अपने कर्तव्यों को छोडकर, अपने प्राकृतिक बधनो से स्वच्छन्द हो गये थे। जब वह इस बारे मे उनसे कुछ कहती तो कुतर्क करने लगते। दीपिका सोचती, जो

पलायनवाद माधव जैसे दीप्त मतेज व्यक्ति की समझ को धुधला कर सकता है वह अनपढ तथा उमसे कम जागरुक इन्सानो को तो अवश्य ही भटका सकता है। ऐसे व्यक्तियों के परिजनों, पत्नियों, बच्चो, भाई-बहिनो एव माता-पिताओ के मन को कितनी तकलीफ होती होगी, इसकी कल्पना वह कर सकती थी। अत उसने मानसिक चिकित्सालय के 'नशा मुक्ति प्रकोष्ठ' मे अपनी अश कालिक सेवाये देने की इच्छा प्रगट की और जब डा लतीफ ने सहर्ष व धन्यवादपूर्वक उसे अनुमति दे दी तो उसे मर्मान्तक प्रसन्नता हुई।

उसने अपने सुबह के दो घट रोगियो को भोजन, इजेक्शन आदि के लिये पकड कर लाने व उनकी तकलीफें डाक्टर से बयान करने के काम को अपनी दिनचर्या का एक हिस्सा बना लिया। यह काय वह एक पूजा की भावना से करती। इलाज के दौरान नशे चगुल मे फसे व्यक्ति बदन मे दद, शरीर ऐठना, जी घबराना, नींद न आने से पीडित होते और अपनी स्थिति की शिकायत करते तो दीपिका उन्ह याद दिलाती, यह तो कुछ ही समय की बात है—बाद मे तो वे अपने परिवार के साथ खुशी से रहगे। यदि गफलत मे भी रोगी ऐसे सभाषरण करते कि नशा करना तो रुतबे की बात है तो दीपिका तब भी उन्ह समझाती कि नशा सिफ पलायन का रास्ता है और इसका समर्थन सिर्फ वे करते हैं जो सोचते है कि यदि वे दूसरो को नशे के लिये प्रेरित न करे तो अकेले ही पीडा भोगेगे। मानव की मानवता जिन्दगी का हिम्मत से मुकाबला करने मे है—खोखला करने वाले व्यसनो को त्यागना ही चाहिये।

× × × ×

लेकिन दीपिका के स्वय को यू व्यस्त रखने के कारण जिन्दगी मे से कटुता गायब हो गई हो ऐसा नहीं हुआ।

माधव के साथ रहने के काल मे उन्होने एक मकान के लिये राजस्थान आवासन मडल को आवेदन पत्र भेजा था। दीपिका के प्रति

लाड प्रदर्शित करते हुए माधव ने आवेदन पत्र उसके नाम से ही भरा और जब फाम जमा कराने के छ वष बाद उसे यह आवटित कर दिया गया तो दीपिका ने वहा निवास करना शुरू कर दिया। इस स्थान की स्थानीयता मे यह मुश्किल थी कि उसके आसपास दूर-दूर तक बस्ती नही थी। सरकार ने सडक बनाने के लिये भूमि प्राप्त की और अभी वहा रोडी ही डाल पायी थी कि एक गृह निर्माण सहकारी समिति ने सरकार के विरुद्ध मुकदमा दायर कर दिया। उसने अदालत मे दावा ठोक दिया कि सडक बनवाने से पूर्व उसे पूरा मुआवजा दिया जाये और जैसा कि भारत मे कोई समाचार नही बनता कि महीनो मामला अनिर्णीत पडा रहा। दीपिका को एक बार इसी सडक पर से जब रात को जाना पडा तो उसके साथ एक हादसा होते-होते बच गया। दीपिका बच निकली तो उसने भगवान को धन्यवाद दिया व माधव को खूब याद किया।

उस दिन कुछ नेतागण शहर मे पधारे थे। वे दोपहर बाद एक सभा को सम्बोधित करने वाले थे परन्तु सुरक्षा व्यवस्था इतनी कडी की गयी थी कि सुबह से ही उस मुख्य माग पर जनता का आवागमन रोक दिया गया था जिस पर होकर उन्हे शाम को गुजरना था। और यह उनके जाने के बाद ही चालू होना था। यही मार्ग दीपिका के मुहल्ले को शहर से जोडता था। पूर्वान्ह मे सावजनिक वाहन टढे मेढे रास्ते से होते हुए निकले थे और दीपिका कुछ देर से अपने कायस्थल पर पहुँच सकी थी। परन्तु सन्ध्या छ बजे कायस्थल से वापसी मे पहिले तो उसने ढेर सारा घर का सामान खरीदा और धुँधलका होने पर जब वह बस स्टैण्ड पहुची तो उसने देखा कि वहा से बहुत कम वाहन रवाना हो रह थे और उनमे से दीपिका के घर की ओर जाने वाला काई न था। आधा घण्टा से अधिक के इन्तजार के बाद वह एक अन्य वाहन मे बैठ गयी जो कि उसके मोहल्ले की समानान्तर सडक पर जा रहा था।

बस मे खूब भीड थी और कण्डक्टर कुछ गुस्से मे था। उसने बडे असुखद तरीके से टिकट मागा। "रुपया खुल्ला दो, नही तो नीच उतरो।" वह बाला। कई बार तो ऐसी बातो पर ध्यान नही जाता पर कभी-कभी जाता भी है। उसने चलती बस मे खडे-खडे सामान से भरे दो बडे थल बाँये हाथ मे पक्डकर उसी हाथ से ऊपर का डडा पक्ड लिया और उसी

कधे पर लटकते पस मे से दो रुपये का नोट निकाल कर कहा, "खुला न हो तो यह रख लेना," और अपने को उसने अत्यन्त असुविधा मे महसूस किया। थोडी दूर वाहनोचित गति से चलकर यह बस भी रुक गयी क्यूकि समानान्तर सडक बन्द होने का कारण यहा ज्यादा भीड हो जाने से यातायात अवरुद्ध हो गया था।

दो मिनट, पाच मिनट बस के स्थिर रहने पर 'कन्डक्टर' पीछ से बस की छत पर चढ गया और वापस आकर बोला कि आधे घटे तक गाडी हिल नही सकती एक किलोमीटर तक तिल धरने को जगह नही दिखती। दीपिका ने निगाह घुमाकर देखा। यहा से दो मिनट के रास्ते पर उसके खाती की दुकान थी जो उसके, घर के जाली के दो किवाड लगाने का वादा पिछले रविवार यानि दस दिन पहिले के लिये बोला था, उसका मकान भी उसकी दूकान से पाच मिनट के रास्ते पर था। दीपिका ने सोचा कि वह उससे तकाजा कर आये ताकि यह काम आगामी रविवार को तो हो जाये।

वह उसकी दूकान पर पहुची तो उसने पाया वहा न तो मुख्य खाती था न ही उसके नियमित कारीगरो मे से कोई था। जो आदमी वहा बैठा था वह अदक्ष तरीके से कोई लकडी छील रहा था। बोला, 'मै तो कभी-कभी यहा आ जाता हू, यह मेरा शौकिया धधा है।"

"नवल जी कहा है ?" इस प्रश्न के उत्तर मे उसने बताया कि दादा तो किवाड लगाने सागानेर गया था, शकर को लेकर, अब वह ट्रैफिक मे फस गया होगा कही। दीपिका वहा दीवान पर रखी कापी पर यह सदेश दर्ज कर आयी, "भैया, इस रविवार को दोनो किवाड लगाकर हमारा काम पूरा कर दो—बहुत चक्कर कटवा चुके हो।" व अन्त मे उसने अपना नाम व पता लिख दिया। वह वापस मुख्य सडक पर पहुची तो उसे अपना पिछला वाहन वही खडा मिल गया जहा वह छोड गयी थी। कडक्टर ने फिर से किराया देने को कहा तो उसने कहा, "पहिले पिछला बकाया लौटा दो आप।" बस दस मिनट रुकी रहने के बाद दो मिनट पैदल आदमी की चाल से चलती। जब कोई जना नेताओ की इस व्यवस्था के प्रति अपना गुस्सा व्यक्त करता तो अन्य बहुत से लोग उसे चुप कराने मे व्यस्त हो जाते। आखिरकार रात साढे आठ बज

बस ने दीपिका को उस स्थल पर छोड़ा जहां से लगभग दो किलोमीटर ऊबड़ खाबड़ कच्चे अंधेरे रास्ते पर पैदल चल कर वह अपने घर पहुंच सकती थी। उसने आसमान की ओर देखा। आज की अमावस्या को तारे भी नही चमक रहे थे क्यूंकि वे कुछ ऐसे बादलो के ऊपर छुपे हुए थे जो भूमि पर घनघोर अंधकार की सृष्टि कर रहे थे। उसने आगे का रास्ता देखा। यह वही जगह थी जिस पर सडक बनाने के लिये सरकार ने पहिला काम मोटे पत्थर बिछवाने का ही किया था कि एक सहकारी गृह निर्माण समिति ने अदालत मे दावा ठोक दिया कि यह भूमि उसकी है और उसे बिना मुआवजा चुकाये यहा कोई सडक नही बनायी जा सकती। बिल्कुल अंधेरे मे दो किलोमीटर ! वह सिहर उठी। आज उसकी सहकर्मी श्रीमती मानसी सचदेव बता रही थी कि उनकी पुत्री को चिमनपुरा नामक गाव के कॉलेज मे व्याख्याता के पद का नियुक्ति पत्र मिला है—वहा का कालेज भी बहुत सुन्दर बना हुआ है। उसमे संगमरमर व कोटा स्टोन इफरात से लगे है परन्तु वहा राज्य परिवहन की बस नही जा सकती—क्यू कि वहा तक सडक नही बनी हुई है—अत छ किलोमीटर तक पैदल चलना पडता है, दीपिका को यह सुनकर क्षोभ तो हुआ था कि एक सेठ 50 वर्ष पहिले एक भव्य कॉलेज बनवा गये अपने गाव मे और सरकार ने उसका अधिग्रहण तो किया परन्तु लोकतान्त्रिक होने पर भी, चालीस वर्ष मे भी वहा तक सडक नही बनवायी। जब श्रीमती सचदेव बोल रही थी कि वह अपनी पुत्री को को वहा नही भेजेगी तो उसे लगा था कि वह कुछ ज्यादती ही कर रही थी परन्तु अभी इस वक्त उसे उनका यह कथन सही लगा कि नौकरी लडकी की सुरक्षा से बढकर नही है।

सडक पर न जाने कहा से आकर पानी इकट्ठा हो गया था और कोई रोशनी न होने पर भी ऐसे चमक रहा था जसे कोई गदला सा आईना। उस गदले जल ने अपना अस्तित्व यूं व्यक्त कर दिया कि दीपिका उससे बच कर निकल ही सकी। कुछ दिन पूर्व जब वह अपने बच्चो के साथ इस रोड पर सध्या के समय आ रही थी पुत्र बोल उठा था—यह स्थान सुरक्षित नही है तो दीपिका ने उसे डपट दिया था—यूं बोलने से डर लगता है—डराओ नही हमे हिम्मत से जीने दो। यह तो बाद मे ही माना कि कबूतर के आंख बद कर लेने से बिल्ली गायब नही हो जाती। कुछ दूर जाने पर दायी ओर बने छितरे मकानो म स

एक स्कूटर आया। दीपिका के चेहरे पर रोशनी पडी तो वह थोडी सी डर गयी क्योकि स्कूटर वाला अपने स्कूटर को दीपिका की ओर बढाते हुए रोकने लगा था। लेकिन तभी पीछे से एक लडका दौडता हुआ आया "भैया, ओ भैया, गद्दे लेते आना आप गुप्ताजी के यहा से।" स्कूटर वाले ने कहा, "अच्छा, ठीक है।" और वह अपनी बायी ओर बढ गया जो दिशा दीपिका के पीछे की ओर थी।

इस रोड को जल्दी से पार करना चाहिये। जल्दी के लिये, उसे याद आया, उसे गाइडिग की ट्रेनिग मे सिखाया गया था कि पूरी ताकत से तो दौडो नही लेकिन एक फर्लांग हल्की दौड व एक फर्लांग तेज चाल से चलो तो लबी दूरी जल्दी तय होती है साथ ही थकान भी कम होती है—उसने हल्की दौड दौडना शुरू किया—राहत मिली—तेज-तेज चल रही थी वह जबकि एक कुत्ता जो सडक पर बायी ओर था, उसने रोना शुरू किया—बिल्कुल काला सुचिक्कन सुडौल कुत्ता था—ओह अम्मा! अम्मा ने बचपन मे बताया था कि कुत्ते तब रोते है जब उन्हे भूत दिखाई देते हैं। उफ, क्या आसपास आत्माये मडरा रही है—उसे दायी ओर घोर अधकार के विस्तार के बीच मे काले से कुछ धब्बे दिखे—ये कोई काले कागज बिखरे उड रहे थे या प्रेतात्माये विचर रही थी? अचानक दो छलाग लगाकर वह काला कुत्ता दीपिका से अपनी नजर मिलाकर जार-जोर से रोने लगा जैसे उसे कोई चेतावनी दे रहा हो। ऊऽ ऊऽ ऊऽ ऊऽ, ऊऽ ऊऽ ऊऽ ऊऽ।

कुत्ता रो रहा था—दीपिका ने दौडना शुरू किया—"हे भगवान! हे भगवान!" हाफ रही थी और फुसफुसा रही थी—दीपिका ने भूतो की काट सुन रखी थी—हनुमान चालीसा का पाठ—वह तो उसे आता नही था—

"हे भगवान! हे भगवान!" का जाप जारी था—

हनुमानजी तो रामजी के कहने मे रहते है!

और रामजी ही भगवान होंगे—या भगवान रामजी से भी बडे होंगे!

हे भगवान! हे भगवान! दीपिका हल्की दौड दोड रही थी।

अमावस की रात थी। हल्के-हल्के बादल होने के कारण तारे भी आसमान मे नही चमक रहे थे। घुप अंधेरे मे दीपिका दौडती जा रही थी, हे भगवान! —हे भगवान! फुसफुसाते हुए।

पीछे से कोई गाडी आ रही थी। दीपिका की गलती जिसे उसने बाद मे जाना वह यह थी कि उसने पीछे मुडकर देख लिया था क्योकि आदमियो के मन मे कलुष शायद उसके बाद मे ही जागा था। फुस-फसाहटें तभी शुरू हुई थी। गाडी की रोशनी तेज व गति धीमी थी।

"हऽऽहऽ! कितनी सुन्दर है!"

"आज पहली बार ही एक लाख का मुंह देखा है और पहली बार ही इतना सुन्दर चेहरा!"

"चेहरा वेहरा कुछ नही, शरीर देख!"

"साडी देख रहा है!"

"अरे बिल्कुल बिना साडी के! इसकी चाल देख! क्या कसाव है!" दीपिका को इन फुसफुसाहटो ने अन्दर तक कपा दिया।

"भाग रही है, लगता है डरी हुई है!" फुसफुसाहट सुनाई दी।

दीपिका ने अपनी चाल धीमी कर दी।

गाडी ने भी अपनी गति और धीमी कर दी।

"अरे, यह तो रुक गयी!"

गाडी रुक गयी थी!

दीपिका ने दायी ओर सडक से नीचे उतर कर भागना शुरू किया, "भैया, अरे भैया!" मानो उसने खतरा भाप लिया हो! उसकी आवाज भय से विकृत थी।

"क्या करती है, आगे सापो के बिल हैं!"

'साप किसे खाएगा?" तत्काल तीव्र कपित आवाज मे बोली दीपिका!

"वो देख साप !" मैटाडोर की हैड लाइट की रोशनी मे सापो को रेगते हुए उसने देख लिया लेकिन उधर से पलटी नही। सापो पर स अपने पैर बचाती हुई उधर ही बढती रही।

गाडी रवाना हो गयी।

दीपिका भी दौडने लगी। दौडती रही। फिर उसे बजरी पर कुछ ध्वनि सुनाई दी। वह पीछे मुडी। एक अधेड आदमी खरामा खरामा साइक्लि पर आ रहा था—दीपिका चिल्लाने लगी। "भैया, भैया !" दौड तो वह भी मुख्य रास्ते की तरफ रही थी और आदमी उसके पीछे ही था लेकिन उसने बोलने के लिये बोल ही दिया।

"क्या है बहिन ?" आदमी ने अपनी साइकिल की रफ्तार थोडी तेज कर दी। "भैया हाइवे यहा से कितनी दूरी पर होगा ?"

"बहन वो तो पौन किलोमीटर होगा।"

"अच्छा भैया ! मैं दौडती हूँ और आप की साइकिल के साथ साथ रहने की कोशिश करूगी। मुझे हाइवे दिखा दो भैया !" यद्यपि हाइवे की रोशनिया बिल्कुल साफ दिखाई दे रही थी—और आते जाते ट्रको की लाइटस भी दिखाई दे रही थी। फिर भी दीपिका बोलती रही। तभी उसे ध्यान आया कि हाइवे चालू हो गया है। नेतागण आये नही या आकर लौट गये ? जो भी हो, सडक चलनी तो शुरु हुई।

वह चारो ओर देख रही थी अचानक कुत्ता, वही प्यारा, सुडौल, सुचिक्कन, काला कुत्ता आ गया—दीपिका जान गयी कि अगर उसने सघर्ष किया होता तो कुत्ते ने सहायता का रुख रखा होता उफ, कितनी आभारी है वह उस कुत्ते की ! कुत्तो मे सुपरनेचुरल पावर होती है उसके दिल को छू गयी अम्मा की कहावत। मेरी प्यारी अम्मा कितनी पहुँची हुई है। साइकिल वाला आदमी काफी जोर लगाकर साइकिल चला पा रहा था क्योकि सडक पर डामर नही बिछा हुआ था।

हाइवे के पास वह गाडी, नीली मेटाडोर खडी थी। जिसमे वे दो बदमाश थे—दीपिका यथासभव सामान्य स्वर मे बोलने लगी कि व सुन ले, "भैया मुझे पता ही नही था कि आप हमारे पिछवाड की गली

मे ही रहते हो। लेकिन आपको तकलीफ होगी। मैं तो पदल ही घर चली जाऊँगी।"

"नही बहिन, मैं आपको छोड देता हूँ।"

"अच्छा जब आप इतना जोर देते हो तो यही सही। लेकिन हाइवे पार जब डामर वाली रोड आयेगी तभी मे आपकी साइकिल पर बैठूगी।"

दीपिका ने अपने स्वर को यथासभव सामान्य बनाये रखा लेकिन इतने जोर से बोली कि वे दुष्ट जरूर सुन ले और फिर उसकी साइकिल के पीछे बैठकर अपने घर की गली तक आ गयी।

× × × ×

प्रेम मरता नही। स्नेह कभी व्यर्थ नही जाता।

दीपिका सोचती यद्यपि उसने माधव को दिलोजान से प्यार किया था परन्तु गहराई से सोचने पर पाती कि यह उसने माधव की सदभावना व प्रेम के प्रत्युत्तर मे ही किया था—गडबडी यह हुई कि माधव दीपिका का शरीर थुल-थुल वेडौल होने के कारण "प्रेम खत्म हुआ" सोचने लगे थे तथा अपने प्रतिमेय के, स्वय के परिवार की अपेक्षा रिश्तदारो व अन्य लोगो को अधिक महत्व देने के दोष के भी अनुकर्त्ता बन गये थे और उन्होने उसे जो मानसिक चिकित्सालय मे भेज दिया उसके पीछे भी, दीपिका से द्वेष नही वरन् अनजाने मे परिस्थिति विगडती चली गई थी और जसे ही उन्हे लगा कि दुनिया उनके द्वारा लिये गये गलत निर्णयों को जान जायेगी तो, उस विकट स्थिति से स्वय को बचाने का ही भाव था, क्यूकि एक बुराई से दूसरी बुराई पैदा होती है।

वह शानी, बिहारी व सतोष, मधुसूदन से मिलते थे परन्तु अब बिहारी व मधुसूदन मे समृद्धि और सौहार्द की ही कल्पना किया करते। लेकिन तनाव युक्त होने पर वह शराब पीने लगते और बीडी, सिगरेट

से धूम्रपान करने लगते थे फिर उन्हे एक दिन सिरोसिस हो गया उनके लिवर मे तीव्र सक्रमण हो गया।

डाक्टर ने जवाब दे दिया कि अब उनका बचना मुश्किल है। माधव अस्पताल मे काकूजी, मम्मी, दीदी, सतोष, मधुसूदन, शानी व बिहारी से घिरे रहते। तथा वे ही हर तरह से उनका ध्यान करते—खून चढवाना, दवाये लाना। अस्पताल मे, गम्भीर रोगियो की देखभाल मे चक्कर कम तो नही होते।

सभी परिचारक दीपिका से कहते तुम बाहर चली जाओ, तुम्हे देखकर इनकी तबियत न बिगड जाये। दीपिका माधव को एक नज़र देख कर बाहर घास पर जाकर बैठ जाती और प्राथना करती, "हे भगवान उनके दूर रहने पर भी, वही मेरा सहारा है, आपके स्वग मे कोई कमी न आती हो तो उनका जीवन बख्श दो भगवान!" और घटो ध्यानमग्न बैठी रहती, वह जल्दी सुबह बच्चो का भोजन पकाकर अस्पताल मे जाती, माधव को एक झलक देखकर बाहर जाकर बैठ जाती और शाम का धुधलका गहराने पर, फिर से माधव को देखकर लौटने का विचार रखती तथा परन्तु जब प्राथना करने मे उसका ध्यान न रमता तो भी एक चक्कर उनके कक्ष तक लगा आती। एक दिन यू ही बीच मे वह माधव के कक्ष का चक्कर लगाने गयी तो आस-पास कोई परिचारक न था। माधव ने आवाज लगायी, "दीपिका!" तो वह उनके पास तक गई। बीमारी की हालत मे उनका सारा शरीर नि चेष्ट था। बोले, "मेरे बच्चे " आगे वह क्या बुदबुदाये दीपिका समझ नही पायी परन्तु वह जान गयी कि माधव उन्हे मिलना पसन्द करेगे! शायद!

इतने मे काकूजी आ गये और माधव की ओर आखें तरेरते हुए बोले, "क्यू अपनी ताकत बाल बोल कर खच कर रहे हो माधव? तबियत कैसे ठीक होगी फिर?" और फिर वही निगाह और पनी कर दीपिका की ओर मोड दी। दीपिका तो बच्चो को बुलाने के लिये पडोसियो के फोन पर सदेश देने के लिये मुड गयी। रास्ते मे उसे ख्याल आया कि वह रघु को भी बुला ले तो क्या स्वय उसे ही भावनात्मक सहारा मिलेगा? वह तो माधव के समस्त परिचारको का भी प्रिय है।

यद्यपि तार देने जाते वक्त उसका दिल धडक रहा था परन्तु हिचकिचा-हट जैसी कोई बात नही थी । उसने तार मे लिखा—

माधव बीमार है । असुविधा न हो तो आओ । दीपिका ।

फिर तार बाबू को पैसे देकर वह अस्पताल आ गयी ।

बच्चे माधव से मिलने आये तो उन्होंने शानी से कहा, "शानी इन्हे कोई अच्छी सी चीज लाकर दो । मैं इन्हे खाते हुए देखना चाहता हू ।' शानी ने उन्हे बेरुखी से बिस्कुट के दो पैकेट अन्दर से निकाल कर दिये पर बच्चे अकेले खाने को तैयार न थे अत सभी ने एक-एक बिस्किट लिया । दीपिका दूर से ही देख रही थी । माधव की आखो की कोरो से आसू टपक रहे थे ।

रघु जब आये तो दीपिका बाहर अस्पताल के अहाते मे ही बैठी हुई थी । माधव के बिस्तर तक जाने तक वह उससे माधव की बीमारी का वर्णन पूछते सुनते रहे । उन्होंने उसके बाहर बैठने का कारण पूछा तो दीपिका मुस्कुरा दी ।

रघु को देखते ही माधव बोले, "अच्छे आये तुम ! मैं तुमसे कुछ पूछना भी चाहता हूँ ।"

"क्या ?"

"तुमने मुझे जिस धन का मनीआडर नही भेजा, उसका क्या किया था ?"

"मैं ने कोई धन नही रोका । रसीद भी काकूजी को दे दी थी ।" तो काकूजी बोले, "अरे बेटा, तुम्हारे घर छोडने के बाद वह मनीआडर वापस आ गया था ।

"जब मैंने इस बारे से तुम से बात करनी चाही थी तो तुमने कहा था, "मैं इस बारे मे कुछ नही सुनना चाहता ।" मेरा तो उस धन को किसी काम में लेने के लिये मन नही मानता था अत मैंने उसे भी अपने मित्र के इलाज मे लगा दिया था ।"

"और मेरे पत्र ?"

"तीन पत्र हमे एक माह बाद रिटर्न्ड लेटर ऑफिस से मिले थे। उन पर मेरा दौसा का पता लिखा था—वहा के कमचारी मेरे परिचित थे और तुम्हारा नाम माधव जानते थे। साथ ही यह भी कि तुम मुझे काकूजी कहते हो। वे पत्र मेरे पास सदूक मे सुरक्षित रखे है। तू ठीक हो जा फिर देखना उन्हे।"

माधव बोले, "मुझे नही देखने।" और सभी को प्रसन्नता—मिश्रित आश्चय हुआ जबकि वह यू कह कर करवट ले गये। इतने दिनो से तो हिल भी न पाते थे। रघु भागकर डॉक्टर को बुला लाये तो उन्होने नब्ज देखी और कहा, खतरे के तीन दिन बीत गये है—हालत सुधर रही है, अब ये खतरे से बाहर है।

रघु ने कहा "माधव, अपने दिल पर इतना बडा बोझ लेकर कैसे जिये तुम—मैं शर्मिन्दा हूँ।"

"यू कह कर मुझे शर्मिन्दा न करो मेरे भाई। दोनो की आखें भर आयी थी।"

"यदि पिछली गलतफहमी दूर करनी है तो क्यू न अपन कुछ दिन साथ रहकर हँसी खुशी गुजारे ?"

माधव को लगा कि उनके बिना बिहारी कैसे रहेगा और शेष काय कैसे होगे—वह तो बीमारी मात्र मे ही काय से अवकाश लेने का सोचते थे। धीरे से बोले, "मेरे बिना ।"

"किसी के बिना दुनिया का कोई काम नही रुक जाता।" और उसके कधे पर हौले से हाथ मारा। एक-दो माह की छुट्टी ले लो और दार्जिलिंग मे स्वास्थ्य लाभ करना।"

"और कौन चलेगा ?" माधव बोले।

"आप सभी चलो।" रघु ने प्रस्ताव किया।

काकूजी बोले, "मैं तो अगर माधव चलेगा तो चलूगा। इससे इतना दूर रह लिया, अब सुबह शाम इसे सामने देखकर ही चैन पाता हूँ।"

"आप तो सबसे पहिले हैं। पिता से पहिले हैं आपका स्थान या पीछे, मैं तो यही नही समझ पाया।'

"शानी, बिहारी की तैयारी कर लेना और तुम भी "

रघु ने बाधा डाली, "शानी या तो अपने पति को साथ लेकर चले या उनकी अनुमति लेकर।"

"वह एक ठीक आदमी नही है।" काकूजी बोले।

"क्या खराबी है उसमे?' का जवाब जब किसी ने नही दिया तो रघु ने उनसे मिलने का निश्चय किया। उनकी लम्बी व गहन बातचीत हुई जिससे रघु ने निष्कर्ष निकाला कि उसकी पत्नी रचना वर्मा को उस पर कुछ शक हो गया था तथा उसी शक को वास्तविकता मान कर उसने शानी से बयान कर दिया, यद्यपि शादी का वादा भी वही करवा गयी थी। "तब से शानी तो मुझ से कभी रुख मिलाती नही है, मैं कोई जबरदस्ती कर सकता नही, उसके इसी व्यवहार को नियति मान कर स्वीकार कर लिया है मैंने।" वर्मा साहब के ये शब्द रघु के मस्तिष्क मे गूज रहे थे।

"यह भी गलतफहमी का ही एक मामला है माधव।" माधव एक दिन मे इतने सारी वास्तविकताओ से परदे हटते हुए देखकर चकित होते जा रहे थे।" स्वस्थतर भी हो रहे थे।

'आपको स्वस्थ देखकर मेरी ड्यूटी पूरी हुई, नमस्ते।" कहकर सतोष चली गयी।

"दीपिका को ले चलें?" माधव ने मानो अपनी गलती मानते हुए पूछा। दीपिका की राय मागी गयी तो उसने कहा, अभी मेरा चलने का मानस नही है। फिर कभी देखा जायेगा।"

मम्मी के जाने के बारे मे काकूजी ने कहा, "व्यू व्यय मे खर्चा बढाते हो?" तो मम्मी ने इसे गम्भीरता से लिया और बोली, "अब तो मैं दस बार आग्रह करने पर भी नही जाऊँगी। उन्होने दीपिका से कहा, स्त्रीत्व के "सास बहू के, ये बन्धन यदि आदर व ममता के धागो से बने हो तो जीवन को सरस बनाने के लिये पर्याप्त हैं।" वह दीपिका के साथ कुछ दिन ठहरने के लिये उसके घर चली गयी।